

B9ED212DST

हिन्दी भाषा शिक्षण - II

बी. एड.

(द्वितीय सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

Copyright © 2025, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad

All right reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing form the publisher (registrar@manuu.edu.in)

ISBN : 978-81-980312-5-9
Course : Pedagogy of Hindi - II
First Edition : August 2024
Copies : 200
Price : 360/-

Programme Coordinator (B. Ed.)

Prof. Sayyad Aman Ubed, Professor (Education), CDOE, MANUU

Editorial Board/Editors

Prof. Mushtaq Ahmed I. Patel (Chairperson)
Professor, CDOE, MANUU

Prof. Sayyad Aman Ubed (Member)
Programme Coordinator, B.Ed. (ODL) (Language Editor)

Prof. Shaikh Shaheen Altaf (Member)
HOD, Dept. of Edu & Training, MANUU

Dr. Shaikh Wasim (Member Convener)
Associate Professor, CDOE, MANUU

Prof. Siddiqui Mohd Mahmood (Member)
Senior Professor, Dept. of Edu & Training, MANUU

Dr. Sameena Basu (Member)
Associate Professor, CDOE, MANUU

(Late) Prof. Najmus Saher (Member)
Professor, CDOE, MANUU

Prof. Patan Rahim Khan
Professor, Dept. of Hindi, MANUU (Content Editor)

Production

Prof. Nikhath Jahan, Professor
(Urdu), CDOE, MANUU

Mr. P Habibulla, Assistant
Registrar, Purchase & Stores
Section, MANUU

Dr. Mohd Akmal Khan, Assistant
Professor (C), CDOE, MANUU

Mohd Abdul Naseer, Section
Officer, CDOE, MANUU

Shaik Ismail, UDC, CDOE,
MANUU

Faheemuddin, LDC, Purchase &
Stores Section, MANUU

On behalf of the Registrar, Published by:

Centre for Distance and Online Education

Maulana Azad National Urdu University

Gachibowli, Hyderabad-500032 (TG), India

Director: dir.dde@manuu.edu.in Publication: ddepublication@manuu.edu.in

Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

CRC Prepared by: Dr. Mohd Akmal Khan, Asst. Prof. (C), CDOE, MANUU

Title Page: Dr. Mohd Akmal Khan, Asst. Prof. (C), CDOE, MANUU

Printed at: Print Time & Business Enterprises

सूची

	सन्देश	कुलपति	4
	संदेश	निदेशक	5
	प्रस्तावना	प्रोग्राम-समन्वयक	6
इकाई संख्या	इकाई	लेखक	पृ. सं.
1	भाषा अर्जन	डॉ. प्रविनी पंडागले सहायक प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, भोपाल, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी	7
2	भाषा सीखने एवं सिखाने की विभिन्न दृष्टियाँ		20
3	भाषा सीखने एवं सिखाने की बहुभाषिक दृष्टि		36
4	भारतीय भाषा दृष्टिकोण		48
5	पाठ्यक्रम का परिचय व उद्देश्य	प्रो. अश्वनी प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद	60
6	हिन्दी भाषा की पाठ्य-पुस्तक		75
7	विषय सामग्री के चयन की दृष्टि से महत्वपूर्ण शैक्षिक संदर्भ		91
8	सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण और विश्लेषण		107
9	मूल्यांकन का परिचय	डॉ. प्रवीण कुमार सृजन सहायक प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, वाराणसी, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी	121
10	मौलिकता और भाषा प्रयोग में सृजनात्मकता		139
11	भाषा विकास की प्रगति का आंकलन		150
12	भाषा विकास की प्रगति का आकलन		169
13	प्रश्न पत्र का परिचय व उद्देश्य	डॉ. पूजा सिंह सहायक प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, नूह, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी	183
14	प्रश्न पत्र रचना एवं परिणामों का विश्लेषण		195
15	प्रश्नों का स्वरूप और आधार बिन्दु		211
16	परिवेशीय सजगता वाले प्रश्न		229
	प्रश्न पत्र का नमूना		250

संदेश

मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है जिसे NAAC द्वारा ग्रेड A+ प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य है, 1. उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार, 2. उर्दू माध्यम में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को सरल भाषा में उपलब्ध कराना, 3. पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा माध्यमों के द्वारा शिक्षा प्रदान करना, 4. महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। ये विशेषताएँ इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग और विशिष्ट बनाती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने पर विशेष बल दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान प्रसार का मुख्य उद्देश्य यह है कि उर्दू जानने वाले समुदाय को समकालीन ज्ञान और विभिन्न विषयों तक सहज पहुँच मिल सके। लंबे समय तक उर्दू में पाठ्य सामग्री की कमी रही है। अब उर्दू विश्वविद्यालय के पास उर्दू में 350 से अधिक पुस्तकों का भंडार है, और यह संख्या हर सेमेस्टर के साथ बढ़ती जा रही है।

उर्दू विश्वविद्यालय को यह गर्व है कि वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार मातृभाषा/घरेलू भाषा में सामग्री उपलब्ध कराने के राष्ट्रीय मिशन का हिस्सा है। इसके परिणामस्वरूप, उर्दू भाषी समुदाय अब अद्यतन ज्ञान, उभरते हुए क्षेत्रों की जानकारी और मौजूदा विषयों में नवीन ज्ञान प्राप्त करने में पिछड़ा हुआ नहीं रह गया है, क्योंकि अब उर्दू में पढ़ने योग्य सामग्री उपलब्ध है। इन ज्ञान क्षेत्रों से संबंधित विषय-वस्तु की उपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति एक नई जागरूकता उत्पन्न की है, जो उर्दू जानने वाले समुदाय की बौद्धिक प्रगति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु, विश्वविद्यालय का दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र संबंधित विषयों में स्व-अध्ययन सामग्री तैयार करना सुनिश्चित करता है। विश्वविद्यालय दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा के छात्रों को यह स्व-अध्ययन सामग्री निःशुल्क प्रदान करता है। यही सामग्री ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए नाममात्र मूल्य पर भी उपलब्ध है। शिक्षण तक पहुँच को और अधिक व्यापक बनाने के उद्देश्य से उर्दू/हिन्दी/अंग्रेज़ी/अरबी में स्व-अध्ययन सामग्री(eSLM) विश्वविद्यालय की वेबसाइट से निःशुल्क डाउनलोड की जा सकती है।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि संबंधित संकाय के परिश्रम और लेखकों के पूर्ण सहयोग से चारवर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम के अंतर्गत बी.ए.(आनर्स), बी. एस. सी.(आनर्स) और बी.काम. (आनर्स) पाठ्यक्रमों के लिए पुस्तकों के प्रकाशन की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर आरंभ हो चुकी है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को सुविधा प्रदान करने हेतु स्व-अध्ययन सामग्री(Self-Learning Material) की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मेरा विश्वास है कि हम अपनी स्व-अध्ययन सामग्री के माध्यम से एक व्यापक समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे और इस विश्वविद्यालय के उद्देश्य को सफलतापूर्वक निभाते हुए देश में अपनी उपस्थिति को सार्थक सिद्ध कर पाएँगे। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन
कुलपति

संदेश

वर्तमान युग में दूरस्थ शिक्षा को पूरी दुनिया में एक बहुत ही प्रभावशाली और उपयोगी शिक्षा प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है और बड़ी संख्या में लोग इस शिक्षा प्रणाली से लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय ने भी उर्दू भाषी जनसंख्या की शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी स्थापना के समय से ही दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के साथ हुई थी और नियमित कार्यक्रमों की शुरुआत 2004 से हुई, इसके पश्चात विभिन्न विभागों की स्थापना की गई।

भारत में शिक्षा प्रणाली को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (Centre for Distance and Online Education) के तहत चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम, जो ओपेन और दूरस्थ शिक्षा मोड में हैं, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो द्वारा अनुमोदित हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो ने दूरस्थ और नियमित शिक्षा के पाठ्यक्रमों को समन्वित करने पर जोर दिया है, ताकि दूरस्थ शिक्षा के छात्रों के स्तर को बढ़ाया जा सके। चूंकि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय एक जूल मोड विश्वविद्यालय है, जो दूरस्थ और पारंपरिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है, इसलिए UGC-DEB के दिशानिर्देशों के अनुरूप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (CBCS) लागू किया गया और स्नातक एवं स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के लिए नई स्व-अध्ययन सामग्री तैयार की गई है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र फिलहाल उन्नीस (19) कार्यक्रम चला रहा है, जिनमें स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कार्यक्रम शामिल हैं। इसके साथ ही, तकनीकी कौशल आधारित कार्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। इस केंद्र ने अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) के अनुसार जुलाई 2025 से 4-वर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम प्रारंभ किया है। ऑनर्स कार्यक्रम B.A., B.Sc. और B.Com राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (NCF) के अनुसार डिजाइन किए गए हैं, जो छात्रों को ऑनर्स डिग्री प्राप्त करने में सहायता करेंगे। वर्ष 2025-2026 से MBA कार्यक्रम ODL मोड में शुरू किया गया है।

छात्रों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बैंगलोर, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची तथा श्रीनगर) और 6 उप-क्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, वाराणसी तथा अमरावती) का एक विशाल नेटवर्क स्थापित किया गया है। इसके अलावा, विजयवाड़ा में एक विस्तार केंद्र भी स्थापित किया गया है। इन क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत 157 से अधिक लर्नर सपोर्ट सेंटर (LSCs) और बीस कार्यक्रम केंद्र एक साथ संचालित किए जा रहे हैं, ताकि छात्रों को शैक्षणिक और प्रशासनिक सहायता प्रदान की जा सके। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र अपनी शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों में ICT का पूर्ण उपयोग करता है, और अपने सभी कार्यक्रमों में प्रवेश केवल ऑनलाइन मोड से ही प्रदान करता है।

छात्रों के लिए स्व-अध्ययन सामग्री (SLM) की सॉफ्ट कॉपी दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाती है और ऑडियो व वीडियो रिकॉर्डिंग के लिंक भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इसके अलावा ई-मेल और व्हाट्सएप समूहों की सुविधाएँ छात्रों को प्रदान की जा रही हैं, जिनके माध्यम से पाठ्यक्रम पंजीकरण, असाइनमेंट, काउंसलिंग, परीक्षाओं आदि जैसे कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के बारे में छात्रों को सूचित किया जाता है। नियमित काउंसलिंग के अलावा, पिछले दो वर्षों से छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए अतिरिक्त ऑनलाइन रेमेडियल काउंसलिंग की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

आशा है कि दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी आबादी को समकालीन शिक्षा की मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के अनुसार शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कार्यक्रमों में बदलाव किए गए हैं, इससे ओपेन और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी और कुशल बनाने में मदद मिलेगी।

प्रो .मोहम्मद रज़ाउल्लाह खान

निदेशक,

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

भूमिका

हिन्दी भाषा शिक्षण पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यालय स्तर पर हिन्दी शिक्षण के लिए प्रभावी शिक्षक तैयार करना है। इस पाठ्यक्रम में यह प्रयास किया गया है कि हिन्दी शिक्षण के शिक्षा शास्त्रीय सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करके उनके व्यावहारिक प्रयोग करने की क्षमता आप में विकसित हो सके। इसमें आपको ऐसी सामग्री प्रदान करने का प्रयास किया गया है जिससे आप के भाषा तथा साहित्य विषयक ज्ञान का नवीकरण होने के साथ-साथ उसका समुन्नयन व संवर्धन भी हो।

हिन्दी को राजभाषा का दर्जा स्वतंत्र भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को दिया था। भारतीय संविधान की धारा 350-क. में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं और धारा 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश दिए गये हैं। इस तरह हिन्दी के पठन व शिक्षण को संवैधानिक रूप से मान्यता दी गई है। अध्यापन के क्षेत्र में हिन्दी अध्यापक की मांग बढ़ती जा रही है। सूचना व संप्रेषण के युग में सोशल मीडिया बुनियादी जरूरत बन गया है। इंटरनेट की पहुँच ग्रामीण क्षेत्रों तक आसानी से हो गई है जिस कारण भारत में आज हिन्दी का बोलबाला बढ़ रहा है। आज हिन्दी के शिक्षक को इन सभी बातों को ध्यान में रखना होगा। सूचना व संप्रेषण तकनीक ने सभी भाषाओं के पढ़ने-पढ़ाने के तौर तरीकों में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। आज हिन्दी शिक्षक को भी वर्तमान दौर में नई शिक्षण विधियों से परिचित होना होगा जिस से वह शिक्षण की प्रक्रिया में अपने आपको पिछड़ा महसूस ना करें। इस पाठ्यक्रम में यह कोशिश की गई है कि आप हिन्दी की आधुनिक शिक्षण विधियों से परिचित होकर कक्षा में आसान तरीकों से हिन्दी अध्यापन करें जिस से विद्यार्थी व अध्यापक दोनों सहजता का अनुभव करें।

इस पुस्तक में कुल सोलह इकाइयाँ हैं। पहली और दूसरी इकाई में भाषा का अर्थ, परिभाषा और भाषा के विभिन्न रूपों की चर्चा की गई है। तीसरी इकाई में राजभाषा के बारे बताया गया है। चौथी एवं पांचवीं इकाई में भाषायी दक्षताएँ एवं शिक्षा समितियों रिपोर्ट में भाषा की स्थिति को बताया गया है। इकाई छठवीं से आठवीं तक भाषा कौशल पर प्रकाश डाला गया है। इकाई नौवीं से ग्यारह तक में भाषा शिक्षण की विधियाँ, व्याकरण अनुवाद और ढाँचागत अथवा संरचनात्मक प्रणालियों की बात की गई है। इकाई बारह से लेकर पंद्रह तक सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षण कौशल, सृजनात्मक भाषा के विविध रूप की चर्चा की गई है। और अंत में इकाई सोलह में हिन्दी साहित्य के नाटक, कविता विधाओं पर प्रकाश डाला गया है। आशा है इस पुस्तक के अध्ययन से भाषा शिक्षार्थी भाषा के विविध गतिविधियों के साथ-साथ उस भाषा कौशल के आधार पर प्रयोग कर सकेंगे।

इस समस्त पाठ सामग्री को तैयार करते समय सरलता, सहजता, बोधगम्यता, प्रामाणिकता और पारदर्शिता का विशेष ध्यान रखा गया है। इस कार्य में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, ग्रंथकारों और संपादकों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

प्रो. सय्यद अमन उबेद

पाठ्यक्रम समन्वयक

इकाई 1 – भाषा अर्जन

इकाई की रूपरेखा

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 भाषा अधिगम का दार्शनिक आधार
- 1.4 भाषा अधिगम का सामाजिक आधार
- 1.5 भाषा का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण
 - 1.5.1 रुदन
 - 1.5.2 बलबलाना
 - 1.5.3 हाव-भाव
 - 1.5.4. संवेगात्मक अभिव्यक्ति
 - 1.5.5. दूसरों के द्वारा कही गई बात समझना
 - 1.5.6. शब्दावली का निर्माण करना
 - 1.5.7 शब्दों का वाक्य में संगठन
 - 1.5.8 उच्चारण
 - 1.5.9 भाषा विकास का अधिकार
- 1.6 भाषा में दार्शनिक दृष्टिकोण
- 1.7 सारांश
- 1.8 शब्दावली
- 1.9 अधिगम प्रतिफल
- 1.10 इकाई के अंत की गतिविधियाँ
- 1.11 संदर्भ

1.1 प्रस्तावना

अधिगम मनुष्य के जीवन की एक ऐसी व्यापक प्रक्रिया है जो निरंतर एवं जीवन पर्यंत चलती रहती है। जन्म होने के पश्चात ही बालक सीखना प्रारंभ कर देता है और जन्म से लेकर वह अपने जीवन के अंत तक कुछ ना कुछ सीखते रहता है। हमें हमारी संस्कृति एवं सभ्यता को जानने के लिए और भाषा के दार्शनिक आधार को समझने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा हमारी दार्शनिक संस्कृति को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने का काम करती है। साथ ही भाषा राष्ट्र की दार्शनिक धरोहर को पीढ़ी दर पीढ़ी बनाए रखने में सक्षम होती है। प्रत्येक राष्ट्र को अपने दार्शनिक भाषा की आवश्यकता होती है जो उसे अपनी एक पहचान देती है और राष्ट्र का विकास भी उसी से होता है। भाषा के द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, वाणी तथा भावों को एक-दूसरों तक पहुंचाने अथवा दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त की गई बातों को समझने के योग्य होता है। बच्चा परिवार में अपने माता-पिता, पड़ोस, साथी आदि के साथ वार्तालाप व बातचीत शुरू करता है और यह बातचीत इसकी भाषा सीखने की प्रक्रिया के अंतर्गत आती है। बच्चे पर भाषा सीखने के लिए उसके वातावरण और अंतःक्रिया का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। भाषा को औपचारिक रूप और अनौपचारिक रूप में यदि बच्चा सीख लेता है तो उसकी भाषा का ज्ञान समृद्ध होता है। भाषा शिक्षण हमें कहीं न कहीं इस योग्य बनाती है कि हम हमारे सुख-दुख, संवेग जैसे- हर्ष, वात्सल्य, क्रोध, भय आदि भाव को एक दूसरे के समक्ष प्रस्तुत कर उसे सीख सकें।

भाषा अधिगम के दार्शनिक आधार की बात करें तो यह एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है, इस क्रिया को प्रत्ययात्मक चिंतन कहते हैं। जब बच्चा गाय को देखकर, अनुकरण में गाय कहता है पर वह गाय और बैल में अंतर नहीं कर सकता। प्रत्यक्ष ज्ञान के बाद बच्चा किसी भी पदार्थ के गुण-अवगुण का विश्लेषण करने लगता है। इस तरह इसे प्रत्यय की दूसरी सीढ़ी माना गया है अर्थात् विश्लेषण करने के बाद बच्चा गाय के विषय में अपने ज्ञान को अनुभव के माध्यम से बताता है कि विविध रंगों के बाद भी सभी गायों में एक समानता है। इसके बाद बच्चा गाय, बैल, ऊंट आदि में धीरे-धीरे अंतर समझ कर उसमें समानता-असमानता को वर्गीकृत करने लगता है। बालक को विभिन्न वस्तुएं दिखाकर उसके भाषा ज्ञान का भी विकास किया जा सकता है। मान्टेसरी विधि में भाषा-शिक्षण के लिए इस विधि का भरपूर प्रयोग किया जाता है। तीन से चार वर्ष की आयु में बालक सरल वाक्य का प्रयोग करने लगता है, 4 से 5 वर्ष की आयु के

शीघ्रतापूर्वक भाषा का अर्जन कर लेते हैं। यदि उनके साथी नियमित भाषा की दृष्टि से पारंगत होते हैं तो उनका भी भाषा का विकास तीव्र गति से होने लगता है।

भाषा अधिगम के दार्शनिक आधारों में, बच्चों में सुनने और बोलने के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाने चाहिए ताकि उनकी भाषा का सशक्त एवं निरंतर विकास हो सके। इस विकास के क्रम में भाषा की कई विशेषताओं को हम देख सकते हैं साथ ही महसूस कर सकते हैं। किसी भी भाषा का विकास तीव्र गति से नहीं होता। यह हमारी परंपरा से विकसित होते रहता है क्योंकि दार्शनिक आधारों के जरिये हम ये कह सकते हैं कि भाषा का विकास कोई एक व्यक्ति नहीं कर सकता।

भाषा दर्शन के माध्यम से संस्कृति सम्वाहिका का कार्य करती है। एक दिन में बच्चा या कोई भी इंसान भाषा नहीं सीख सकता बल्कि इसे बनने में काफी वक्त लग जाता है। दार्शनिक महाभाष्यकार अपने भाष्य में लिखते हैं कि, “यदि हमें घड़े की आवश्यकता होती है तो हम कुम्हार के पास जाकर कहते हैं कि तुम हमारे लिए घड़ा बना दो परंतु इस प्रकार की व्यवस्था भाषा के साथ संभव नहीं हो सकती है।” भाषा तो एक बहती हुई नदी की भांति है जो किसी पहाड़ से अपने लिए एक जगह बना लेती है और अनेक धाराओं के साथ मिलकर व पोषित होकर महानदी का रूप धारण कर लेती है। कोई भी व्यक्ति भाषा को अर्जित करके उसके विकास में अपना योगदान तो दे सकता है परंतु अकेला व्यक्ति भाषा का निर्माण नहीं कर सकता। भाषा का अस्तित्व तो समाज और परंपरा से ही संभव है। बालक जिस परिवेश या परिवार में पैदा होता है और उसने जिस भाषा में व्यवहार को देखा है उसे ही धीरे-धीरे सीखने और समझने लगता है। भाषा की एक नियमबद्धता होती है यह कई व्याकरण या नियमों के साथ बच्चों में उत्पन्न की जा सकती है। भाषा सीखते समय बच्चा पूरी तरह से अनभिज्ञ रहता है। भाषा का दार्शनिक आधार एक जटिल मानसिक प्रकृति है। इस क्रिया को प्रत्ययात्मक चिंतन भी कहते हैं। प्रत्ययों का निर्माण प्रत्यक्षीकरण के आधार पर होता है। बच्चा गाय को देखकर अनुकरण में गाय कहता है। लेकिन अभी वह गाय और बैल में अंतर नहीं कर सकता। प्रत्यक्ष ज्ञान के पदार्थ के गुणों एवं अवगुणों का विश्लेषण करने लगता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष ज्ञान भाषा की दूसरी सीढ़ी माना गया है। पूर्ण विश्लेषण करने के बाद बालक विविध रंगों के होने के बाद भी सभी गायों में एक समानता है, वे सभी एक ही आकार की हैं, अतः कुछ विशिष्ट गुणों के कारण उसे गाय कहा जाता है। इसके बाद वे गाय और बैल आदि में धीरे-धीरे अंतर को समझने लगता है। इस प्रकार वह पशु विशेष का नाम लेने पर उसका बोध प्रकट करने लगता है। मोंटेसरी विधि भाषा शिक्षण के लिए उपयोग में लाई जाती है। तीन से चार वर्ष के आयु में बच्चे सरल वाक्य का प्रयोग करने लगते हैं, चार-पांच वर्ष की आयु का बच्चा केवल किसी घटना का दर्शक ही नहीं

बनता बल्कि उसका अभिव्यक्तीकरण अच्छे से करना सीख जाता है। वह लम्बे-लम्बे वाक्य को बोलकर बड़े-बड़े शब्दों को बोलना भी शुरू कर देता है। इस तरह भाषा अधिगम के दार्शनिक आधार की वजह से अभिव्यक्ति सशक्त होती चली जाती है और वह विषय-वस्तु को मूर्त से अमूर्त रूप देने की क्षमता का विकास करने लगता है।

1.4 भाषा अधिगम का सामाजिक आधार

भाषा और समाज को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। यह एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं। मनुष्य का अस्तित्व भाषा पर निर्भर करता है। मनुष्य के सामाजिक जीवन और उसके संपूर्ण व्यक्तित्व में भाषा का महत्व कई रूप में हमें दिखाई देता है। व्यक्तित्व के निर्माण में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विचारों को, भावों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है और इससे उसके अंदर छिपी हुई शक्ति बाहर आती है। यह कहा जाता है कि जिसकी अभिव्यक्ति जितनी ज्यादा सशक्त होगी उसका व्यक्तित्व भी उतना ही प्रखर होगा।

मनुष्य, मनुष्य तभी बनता है जब उसके पास अपनी भाषा होती है। भाषा व्यक्ति को अपनी एक पहचान देती है साथ ही उसके बगैर उसकी अस्मिता की पहचान नहीं हो सकती। किसी भी व्यक्ति से यदि उसकी भाषा अलग कर दी जाए तो उसका अस्तित्व ही नहीं बचेगा। भाषा एक सर्वश्रेष्ठ तत्व है जिससे हम मूल्य का निर्माण कर सकते हैं और यही हमारा सामाजिक आधार है। मनुष्य के अलावा जो दूसरे जीव-जंतु हैं वो केवल जीवन जीते हैं जबकि मनुष्य सामाजिक मूल्यों का दृढ़ता से पालन करता है। संसार में सिर्फ इंसान ही एक ऐसा सामाजिक प्राणी है जो जिसमें विचार करने की और सोचने की ताकत होती है।

डॉक्टर भोलानाथ तिवारी के अनुसार- "भाषा परंपरा से चली आ रही है। व्यक्ति उसका अर्जन परंपरा और समाज से करता है। एक व्यक्ति उसमें परिवर्तन आदि तो कर सकता है किंतु उसे उत्पन्न नहीं कर सकता। यदि कोई उसका जनक और जननी है तो समाज और परंपरा। यथार्थतः भाषा केवल मौखिक भाषा को कहना चाहिए। उसका लिखित रूप उसकी मौखिकता पर आधारित है और उसी के पीछे-पीछे चलता है।"

हमारी सामाजिक रचना एवं सोच ने ही भाषा को जन्म दिया है। कुछ समुदाय ने अपनी भाषा ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य आदि का विकास किया है और समाज में रहकर ही सामाजिक भाषा को अर्जित भी किया है। प्रत्येक समाज की अपनी एक बोली होती है जो उस पर अमिट छाप छोड़ती है यानी कि समाज से ही हम भाषा को समझ सकते हैं और भाषा को समाज से समझ सकते हैं। इसे प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक वायगोत्स्की ने काफी आसानी से समझाने की कोशिश

की है। भाषा और समाज यह एक दूसरे के पूरक है। भाषा को समाज का अभिन्न अंग माना गया है। व्यक्ति के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती जैसे समाज अपने अस्तित्व के लिए भाषा पर निर्भर है वैसे ही भाषा भी पूर्णतया समाज पर निर्भर है। कोई भी व्यक्ति अकेला समाज के बिना जीवन व्यतीत नहीं कर सकता है, उसे समाज की मदद लेनी ही पड़ती है और वह समाज में भाषा के माध्यम से जुड़ा हुआ रहता है। जहां तक भाषा की उत्पत्ति की बात है इसकी उत्पत्ति सामाजिक रचना और समाज में विचार-विनिमय की आवश्यकता से हुई है। व्यक्ति अपनी आवश्यकता की पूर्ति भाषा का प्रयोग करके करता है। जब तक वह समाज के द्वारा किसी भी भाषा को नहीं बोलेगा तब तक उसके अंदर भाषा की निर्मिती नहीं हो सकती है।

1.5 भाषा का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण



एक नवजात शिशु की सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि वह अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को अन्य तक नहीं पहुंचा सकता तथा दूसरे के द्वारा कही गई बातों को या हाव-भाव, शब्दों को नहीं समझ सकता। भाषा के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए भाषा विकास से तात्पर्य यह एक ऐसी योग्यता से होता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचार, जरूरत, इच्छाओं को दूसरे तक सूचित कर सकता है या पहुंचा सकता है। मनोवैज्ञानिक भाषा दृष्टिकोण से भाषा के कई चरण हो सकते हैं-

1.5.1 रुदन: जब बच्चा उसकी कोई आवश्यकता या जरूरत होती है और वह बोल नहीं पाता ऐसे में रुदन या रोना उसकी पहली भाषा होती है, जिससे वह अपनी आवश्यकताओं की जानकारी दूसरों को देता है।

1.5.2 बलबलाना : यह भाषा की दूसरी अवस्था है। मनोवैज्ञानिक रूप से इस अवस्था में नवजात शिशु स्वर एवं ध्वनियों का प्रयोग अधिक करता है। माना कि उसके ध्वनियों का कोई अर्थ नहीं होता। वह इसका प्रयोग खुद के खेलने के लिए करता है उसे इससे काफी मजा आता

है। कुछ महीने के बाद वह बलबलाना शुरू कर देता है बशर्ते माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्य द्वारा उसे बलबलाने का प्रशिक्षण दिया जाता हो जिससे उनका स्वर यंत्र परिपक्व हो जाता है।



1.5.3 हाव-भाव: पूरे शरीर के अंगों के द्वारा की गई प्रतिक्रिया वास्तव में भाषा के प्रतिस्थापित तथा पूरक रूप है। भाषा के पूरक के रूप में बोली गई या उसके द्वारा किये गए हाव-भाव, कुछ भाषा अर्थ को जोड़ने की कोशिश करते हैं।

1.5.4. संवेगात्मक अभिव्यक्ति: मनोवैज्ञानिक भाषा के दृष्टिकोण से यह सुखद संवेग हो सकता है जैसे- हंसना, हाथों को फैलाना, रोना, रूठना आदि द्वारा व्यक्त कर सकता है। यह 12-13 महीने की अवस्था में देखने को मिलता है। मनोवैज्ञानिकों ने बालकों के भाषा विकास के लिए उनके द्वारा निकाली गयी ध्वनियों को, दूसरों के समझने लायक शब्दों में व्यक्त करना एवं उसका सही-सही अर्थ भी लगाने की कोशिश की है।

1.5.5. दूसरों के द्वारा कही गई बात समझना: भाषा विकास की यह वह अवस्था है इसमें बालक परिवार के सदस्यों द्वारा बोले जाने वाले शब्दों को समझने की कोशिश करता है। इसके लिए आवश्यक है कि परिवार के सदस्य भी शब्दों का सही प्रयोग करें। अधिकतर शिशु भाव तथा हाव-भाव के द्वारा परिवार के सदस्यों की भाषा को ग्रहण करने की कोशिश करता है।

1.5.6. शब्दावली का निर्माण करना: सामान्य रूप से बालक पहले उन शब्दों को सीखता है जो उनकी जरूरत या भूख अभिप्रेरणा से संबंधित होती है। जैसे बालक कुछ शब्दों को सीखता है और उसे अपने अनुभव के आधार पर नए-नए अर्थ लगाता है। यह अवस्था बच्चों की 18 महीने में होती है। 18 महीने का बच्चा औसतन 10 शब्दों का प्रयोग करता है, 25 महीने का बालक औसतन 29 शब्द का प्रयोग करता है, 2 वर्ष के बालक का औसत 200 से 300 शब्दों का होता है और जब वह पाठशाला में जाना प्रारंभ करता है तो उसका शब्दकोश धीरे-धीरे बढ़ने लगता है।

1.5.7 शब्दों का वाक्य में संगठन: इसमें शब्दों को मिलाकर वाक्य बनाया जाता है। 2 वर्ष की अवस्था में बालक में यह योग्यता आती है कि वह शब्दों को मिलाकर वाक्य में बदले। 2 ½ साल की उम्र में बालक संज्ञा तथा क्रिया शब्दों को मिलाकर छोटे-छोटे वाक्य बनाने की कोशिश करता है। जब वह 5 साल का हो जाता है तो एक शब्द को दूसरे शब्दों से कैसे जोड़ा जाए इसकी समझ भी उसे आती है।

1.5.8 उच्चारण : यह भाषा की वह अवस्था है जिसके अंतर्गत बालक शब्दों का धीरे-धीरे उच्चारण करता है लेकिन इसके लिए जरूरी है कि माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्य द्वारा बोले गए शब्दों का उच्चारण सही हो।

1.5.9 भाषा विकास का अधिकार: यह भाषा की वह अवस्था है जिसमें बालक को शब्दों, अक्षरों, वर्णों, वाक्यों का सही-सही प्रयोग करना आता है। रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान, भाषा विज्ञान आदि का पूर्ण ज्ञान हो जाता है और उसका लिखित और मौखिक भाषा पर अच्छा नियंत्रण हो जाता है।

1.6 भाषा में दार्शनिक दृष्टिकोण

दर्शन यह एक विशाल क्षेत्र है, जिसके अंतर्गत सभी विषयों का समावेश होता है। एक तरह से यह सागर है जिसमें सभी नदियां आकर मिलती हैं। इसमें आत्मा-परमात्मा एवं सत्य-असत्य आदि के बारे में विचार किया जाता है। भाषा के संबंध में भी इसके विभिन्न तत्वों पर

दार्शनिक आधार या दृष्टिकोण प्रदान किया गया है। दर्शन के आधार में शब्द, वाक्य और अर्थ के संदर्भ में विविध दृष्टियों से चर्चा हुई है। इसके अलावा भाषा में अभिव्यक्ति का निर्माण कैसे होता है? यह हमारे मन, मस्तिष्क, आत्मा से कैसे जुड़ी है? इसका भी दार्शनिक दृष्टिकोण से विचार किया गया है। कई तरह के विचारों का समावेश दार्शनिक दृष्टिकोण में किया गया है जैसे-भाषा का मूल्य हमारे विचारों एवं हाव-भाव में कितना सामर्थ्यपूर्ण है? किसी अर्थ विशेष के लिए शब्द संकेत कैसे काम करता है? वह शब्द अपने अर्थ को कितना अभिव्यक्त कर सकता है? आदि। भाषा के विभिन्न इकाइयों के संबंध में दर्शन, चिंतन एवं व्याख्या की आवश्यकताओं को समझना थोड़ा गहन स्तर का कार्य है। हम सब जानते हैं कि सभी भाषाओं में कई शब्द होते हैं और उन शब्दों के अपने-अपने अर्थ होते हैं और उन शब्दों को दार्शनिक चिंतन की आवश्यकता महसूस होती है। उदाहरण के लिए यदि हम गाय शब्द लेते हैं यह तीन ध्वनियों से मिलकर बना है ग + आ + य । इस शब्द का एक निश्चित अर्थ है। हमारे संसार में यह पशु के रूप में देखे गए हैं। गाय शब्द बोलते ही बच्चे को इसका बोध हो जाता है। यदि आप से कोई कहे कि गाय को पानी पिला दो तो आपके आस-पास में जो भी गाय नाम का प्राणी होगा आप उसे पानी पिला देंगे। यदि आप सोचिए कि एक गौशाला है और उसमें 100 गायें हैं और जब कोई आपसे कहे कि गाय को पानी पिला दो तो उसमें से आपको पूछना पड़ेगा कि कौन सी गाय को पानी पिलाना है क्योंकि सभी गायों के आकार, रूप, संरचना में कुछ ना कुछ अंतर होगा लेकिन सामान्य रूप से उनमें एक विशेष प्रकार का समान गुण होता है जिसे हम गाय कहते हैं। इसीलिए गाय शब्द का जो अर्थ है वह उनमें से कोई गाय विशेष नहीं है, बल्कि उनके गुणों का किया गया अमूर्तिकरण है। वह मूर्तिकरण कैसे होता है? उसके लिए कोई मानसिक प्रक्रिया होती है? इन सब बातों तक पहुंचने के लिए हमें दार्शनिक चिंतन तक जाना पड़ता है। इसी प्रकार से दर्शन भाषा संबंधी ज्ञान की व्याख्या में सहायक होता है।

1.7 सारांश

हमें हमारी संस्कृति एवं सभ्यता को जानने के लिए एवं भाषा के दार्शनिक आधार को समझने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा हमारी दार्शनिक संस्कृति को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने का काम करती है। साथ ही भाषा राष्ट्र की दार्शनिक धरोहर को पीढ़ी दर पीढ़ी बनाए रखने में सक्षम होती है। प्रत्येक राष्ट्र को अपने दार्शनिक भाषा की आवश्यकता होती है जो उसे एक अपनी पहचान देती है और राष्ट्र का विकास भी उसी से होता है। भाषा के द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, वाणी तथा भाव को एक-दूसरों तक पहुंचाने के लिए अथवा दूसरों द्वारा

अभिव्यक्त की गई बातों को समझने के योग्य होता है। इस इकाई में इन मुख्य मुद्दों पर चर्चा की गई है – भाषा अधिगम का दार्शनिक आधार, भाषा अधिगम का सामाजिक आधार, भाषा का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के अंतर्गत रुदन, बलबलाना, हाव-भाव, संवेगात्मक अभिव्यक्ति, दूसरों के द्वारा कही गई बात समझना, शब्दावली का निर्माण करना, शब्दों का वाक्य में संगठन, उच्चारण, भाषा विकास का अधिकार, भाषा में दार्शनिक दृष्टिकोण आदि।

1.8 शब्दावली

धरोहर - धरोहर भारतीय संस्कृति की पूंजी होती है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती है। ये हमें हमारे पूर्वजों से मिलती है।

मूर्तिकरण - किसी भी वस्तु को सजीवता प्रदान करना जो आसानी से समझ में आ जाए वह मूर्तिकरण कहलाता है।

प्रत्ययात्मक चिंतन - यह थोड़ा उच्च स्तर का चिंतन है। जब बालक में संप्रत्यय की निर्मिती शुरू हो जाती है तब वह चिंतन करता है।

प्रत्यक्ष ज्ञान - प्रति का अर्थ 'सामने' और अक्ष का अर्थ 'आँख', यानी प्रत्यक्ष का अर्थ 'आँख के सामने' होता है। जो वस्तु आँखों के सामने आकर उसके संप्रत्यय का अर्थ आसानी से लगा ले उसे प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं।

अर्जन - जब हम किसी नए ज्ञान को हासिल करते हैं या किसी वस्तु को प्राप्त करते हैं तो उसे अर्जन कहा जाता है, अर्जन यानी प्राप्त करना, कमाना आदि।

दार्शनिक आधार - यह शब्द किसी भी विषय या वस्तु के लिए विशिष्ट आधार के रूप में भाव और सार दोनों को समाहित करता है, जिसे हम किसी चीज़ के लिए विस्तृत या व्यापक आधार के रूप में देखते हैं।

जटिल मानसिक प्रकृति - व्यक्ति के मन में जीवन के उस एक पहलू पर केंद्रित कई विचार, भावनाएँ, यादें, हीनता की भावनाएँ और दृढ़ संकल्प हो सकते हैं।

वर्गीकृत - चीज़ों या वस्तुओं को उनके प्रकार के अनुसार उन्हें समूहों में विभाजित करना या यह कहना कि कोई चीज़ या व्यक्ति किस समूह या प्रकार का है।

1.9 अधिगम प्रतिफल

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत छात्र :

- भाषा की सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जानने में सक्षम होगा।
 - भाषा के दार्शनिक आधार को समझने में सक्षम होगा।
 - भाषा के सामाजिक आधार को समझने में सक्षम होगा।
 - भाषा के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को जानने में सक्षम होगा।
 - भाषा के दार्शनिक दृष्टिकोण को जानने में सक्षम होगा।
-

1.10 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. अधिगम मनुष्य के जीवन की एक ऐसी व्यापक प्रक्रिया है जो-

- (अ) निश्चित समय तक चलती है। (ब) निरंतर एवं जीवन पर्यंत चलती रहती है।
(स) प्रौढावस्था तक चलती है। (द) इनमें से कोई नहीं

2. भाषा को किस रूप में यदि बच्चा सीख लेता है तो उसकी भाषा का ज्ञान समृद्ध होता है?

- (अ) औपचारिक रूप (ब) अनौपचारिक (स) औपचारिक और अनौपचारिक (द) इनमें से कुछ नहीं।

3. 18 महीने का बच्चा औसतन कितने शब्दों का प्रयोग करता है?

- (अ) 10 (ब) 20 (स) 30 (द) 40

4. हमारी भाषा को किसने जन्म दिया है?

- (अ) पड़ोस (ब) सामाजिक रचना (स) परिवार (द) इनमें से कुछ नहीं।

5. जब बच्चा 5 साल का हो जाता है तो वह -

- (अ) एक शब्द को दूसरे शब्दों में कैसे जोड़ा जाए इसकी समझ भी उसे आती है।
(ब) एक अक्षर को दूसरे अक्षर में कैसे जोड़ा जाए इसकी समझ भी उसे आती है।
(स) फरटिदार भाषा बोलता है (द) इनमें से कुछ नहीं

6. बच्चे की पहली भाषा होती है -

- (अ) हँसना (ब) बलबलाना (स) रुदन या रोना (द) इनमें से कुछ नहीं।

7. भाषा का दार्शनिक आधार क्या है?

- (अ) जटिल मानसिक प्रकृति (ब) सरल मानसिक प्रकृति (स) साधारण मानसिक प्रकृति (द) उच्च मानसिक प्रकृति

8. "यदि हमें घड़े की आवश्यकता होती है तो हम कुम्हार के पास जाकर कहते हैं कि तुम हमारे लिए घड़ा बना दो परंतु इस प्रकार की व्यवस्था भाषा के साथ संभव नहीं हो सकती है। "यह कथन किसका है-

(अ) दार्शनिक महाभाष्यकार (ब) दार्शनिक रूसो (स) दार्शनिक प्लेटो (द) इनमें से कोई नहीं।

9. भाषा-समीक्षा का अर्थ है -

(अ) किसी भी विषय वस्तु के गुण-दोष के बारे में अपने विचार अभिव्यक्त करना।

(ब) किसी भी वस्तु के केवल गुण देखना (स) किसी भी वस्तु की बुराइयां करना (द) उपरोक्त सभी

10. "भाषा परंपरा से चली आ रही है। व्यक्ति उसका अर्जन परंपरा और समाज से करता है। एक व्यक्ति उसमें परिवर्तन आदि तो कर सकता है किंतु उसे उत्पन्न नहीं कर सकता।" यह कथन किसका है -

(अ) श्यामसुंदर तिवारी (ब) भोला प्रसाद (स) डॉक्टर भोलानाथ तिवारी (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तर कुंजी

1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5 (अ) 6 . (स) 7. (अ) 8. (अ) 9. (अ) 10. (स)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा विकास का अधिकार को स्पष्ट करें।

2. शब्दों का वाक्य में संगठन किस तरह से विकसित किया जा सकता है?

3. मनोवैज्ञानिक भाषा दृष्टिकोण से भाषा के पांच चरणों को लिखे।

4. शब्दावली का निर्माण बालकों में कब होता है?

5. भाषा और समाज का क्या सम्बन्ध है स्पष्ट करें।

6. भाषा में हाव-भाव को स्पष्ट कीजिए ।

7. भाषा में संवेगात्मक अभिव्यक्ति का क्या स्थान है?

8. भाषा विकास का अधिकार कैसे होता है?

9. भाषा शिक्षण को प्रस्तावित कीजिए ।

10. भाषा का दार्शनिक आधार एक जटिल मानसिक प्रकृति है, समझाईए ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा अधिगम के दार्शनिक आधार को स्पष्ट करें।

2. भाषा अधिगम के सामाजिक आधार पर विस्तृत चर्चा करें।
3. भाषा शिक्षण - एक दृष्टि पर निबंध लिखें।
4. भाषा का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को परिभाषित कर उस पर विस्तृत चर्चा करें।
5. मनोवैज्ञानिक भाषा दृष्टिकोण से भाषा के सभी चरणों पर प्रकाश डालिए।

1.11 सन्दर्भ

1. रावत, आर., हिंदी भाषा शिक्षण, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा
2. पंडागले, पी., हिंदी शिक्षण, अजय पब्लिशर्स, भोपाल
3. <https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/1586>
4. <https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/BhashaShikshanBhag-II.pdf>

इकाई – 2 भाषा सीखने एवं सिखाने की विभिन्न दृष्टियाँ

इकाई की रूपरेखा

- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 उद्देश्य
- 2.3 भाषा अर्जन
- 2.4. भाषा अर्जन की विधियां
 - 2.4.1 अनुकरण या नकल
 - 2.4.2 आदत
 - 2.4.3 पुनरावृत्ति
 - 2.4.4 सरलता
- 2.5 भाषा अर्जन को प्रभावित करने वाले घटक
 - 2.5.1 परिवार का वातावरण
 - 2.5.2 सीखने की इच्छा शक्ति
 - 2.5.3 भाषा का विद्यार्थी के जीवन से संबंध
 - 2.5.4 विद्यार्थियों की मानसिक एवं शारीरिक क्षमता
 - 2.5.5 शब्द भंडार
- 2.6 भाषा अधिगम
- 2.7 भाषा अधिगम का महत्व
- 2.8 भाषा अधिगम की विशेषताएं
 - 2.8.1 स्वाभाविक स्थितियों में भाषा का प्रयोग
 - 2.8.2 भाषा के मानक रूप
 - 2.8.3 आदतों का निर्माण

- 2.8.4 संस्कृति संदर्भ
- 2.9 समग्र भाषा दृष्टिकोण
 - 2.9.1 बच्चों का अनुभव
 - 2.9.2 चुनने की स्वतंत्रता
 - 2.9.3 विद्यार्थियों की जिम्मेदारी
 - 2.9.4 अर्थपूर्णता
 - 2.9.5 भाषा कौशल का एकीकरण
 - 2.9.6 कक्षा का वातावरण
 - 2.9.7 अभिभावकों की भागीदारी
- 2.10 रचनात्मक दृष्टिकोण
 - 2.10.1 अर्जन अधिगम परिकल्पना
 - 2.10.2 निगरानी परिकल्पना
 - 2.10.3 स्वाभाविक क्रम परिकल्पना
 - 2.10.4 अदा प्रक्रिया
 - 2.10.5 भावनात्मक फिल्टर
- 2.11 सारांश
- 2.12 शब्दावली
- 2.13 अधिगम प्रतिफल
- 2.14 इकाई के अंत की गतिविधियाँ
- 2.15 सन्दर्भ

2.1 प्रस्तावना

मनुष्य अपनी आयु के भिन्न-भिन्न स्तरों पर किस प्रकार भाषा का प्रयोग करता है? यह जानना आवश्यक है क्योंकि भाषा के अभाव में आप कुछ भी अर्जन करने लिए सक्षम नहीं होंगे। आपको यह नहीं पता होगा कि दूसरे क्या सोचते हैं या अनुभव करते हैं अर्थात् भाषा का, भाषा अर्जन में महत्वपूर्ण स्थान है। परिवार में जब पहली बार बच्चा अपनी माता को माँ/बाबा कहना

प्रारंभ करता है और इसे अनवरत दोहराते रहता है तो यह माता और पिता के लिए खुशी का क्षण होता है। धीरे-धीरे बच्चा मां और बाबा कहना सीख लेता है तो और अपनी जरूरत को, भाव को, विचारों को संप्रेषित करने के लिए कुछ समय बाद दो या दो से अधिक शब्दों को जोड़कर बोलने लगता है। परिवार में जब बच्चा मातृभाषा के माध्यम से संप्रेषण करना सीख लेता है इस प्रक्रिया को भाषा-अर्जन की प्रक्रिया कहते हैं। यह एक अनौपचारिक प्रक्रिया है। यह समाज या परिवार में रहकर ही सीखी जा सकती है।

अक्सर ये माना जाता है कि शिक्षक भाषा को पढ़ाता है और विद्यार्थी उसे सीखता चला जाता है अर्थात् शिक्षक-विद्यार्थी के मध्य जो भी भाषिक अंतःक्रिया होती है वह उसे ग्रहण करता है और उसका उपयोग समाज की जरूरत और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए करता है। मनोविज्ञान, भाषा विज्ञान तथा जीव विज्ञान के क्षेत्र में चिंतन की वृद्धि के साथ भाषा अधिगम में वह अंतरदृष्टि विकसित हुई जिससे भाषा की प्रकृति तथा अधिगम की प्रकृति दोनों को बेहतर समझ निर्मित की। बच्चा भाषा अर्जन करने के लिए पाठशाला में नहीं जाता वह अपने परिवार के सदस्यों के साथ उनकी भाषा को धीरे-धीरे ग्रहण करते चला जाता है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप -

भाषा अर्जन को समझ सकेंगे।

परिवार या समाज से भाषा कैसे अर्जित की जा सकती है यह जान सकेंगे।

भाषा-अधिगम के महत्व को समझ सकेंगे।

भाषा के समग्र दृष्टिकोण को जान पाएंगे।

भाषा के रचनात्मक दृष्टिकोण के महत्व को समझ सकेंगे।

भाषा के अर्जन एवं अधिगम की प्रक्रिया में अंतर कर सकेंगे।

2.3 भाषा अर्जन

अर्जन एक ऐसा शब्द है जिसमें उसे क्या सीखना है? कब सीखना है? कहाँ सीखना है? इस बारे में वह सचेत नहीं रहता है। यह एक अनौपचारिक प्रक्रिया होती है। वह अपने मित्रों से, परिवार से, पड़ोस से, जिस भाषा का प्रयोग करता है या उनसे जो भाषा सीखता है वह भाषा अर्जन की प्रक्रिया कहलाती है। परिवार या पड़ोस में रहकर उसे भाषा अर्जित करते समय अलग

भाषा का अधिगम एवं अर्जन



से व्याकरण सीखने की आवश्यकता नहीं होती है। वह बिना व्याकरण के ही भाषा के नियम, रूप, सिद्धांत को समझ जाता है। यह एक स्वाभाविक क्रिया है इसलिए इसे अर्जन कहना उचित है।

भाषा अर्जन की समझ एक निश्चित विचार से प्रारंभ हुई है। जो अनुकूलित अधिगम के रूप में भाषा

के व्यवहारवादी दृष्टिकोण से बहुत भिन्न थी। विद्यार्थी या बच्चा जब भाषा बोलना प्रारंभ करता है तब वह उससे पहले उसने कभी नहीं सुना होता है ना ही इसके लिए उसने कोई उद्दीपन प्राप्त किया होता है। मनुष्य एक ऐसा सामाजिक प्राणी है जिसमें भाषा अर्जन के लिए जन्मजात क्षमता होती है जिसके माध्यम से वह अपनी बात को अभिव्यक्ति करते हैं। नॉम चोमस्की ने यह स्पष्टीकरण दिया कि "मनुष्यों में भाषा अधिगम की जन्मजात शक्ति होती है जिसके माध्यम से वे असंख्य अभिव्यक्तियाँ कर सकते हैं।"

विद्यार्थी परिवेश से भाषा संरचनाओं के जटिल ज्ञान का निर्माण नहीं कर सकता क्योंकि यह ज्ञान उन्हें केवल प्रकृति के द्वारा ही दिया जाता है। जैविक दृष्टि से आधारित मानव भाषा क्षमता का भाग है। इसे भाषा अधिग्रहण यन्त्र (language acquisition device - LAD) कहा जाता है। यह एक अवचेतन स्तर पर कार्य करता है इसकी सहायता से विद्यार्थियों में भाषा से संबंधित कई परिकल्पनाओं की निर्मित होती है। जिसकी जांच परीक्षण भी वह प्राप्त करता है। चाम्स्की ने इसे क्षमता कहा है जो नियमों का आंतरिक ज्ञान है और निष्पादन से इसका विभेद करता है। जो वाक् या लेखन में ज्ञान का प्रयोग है।

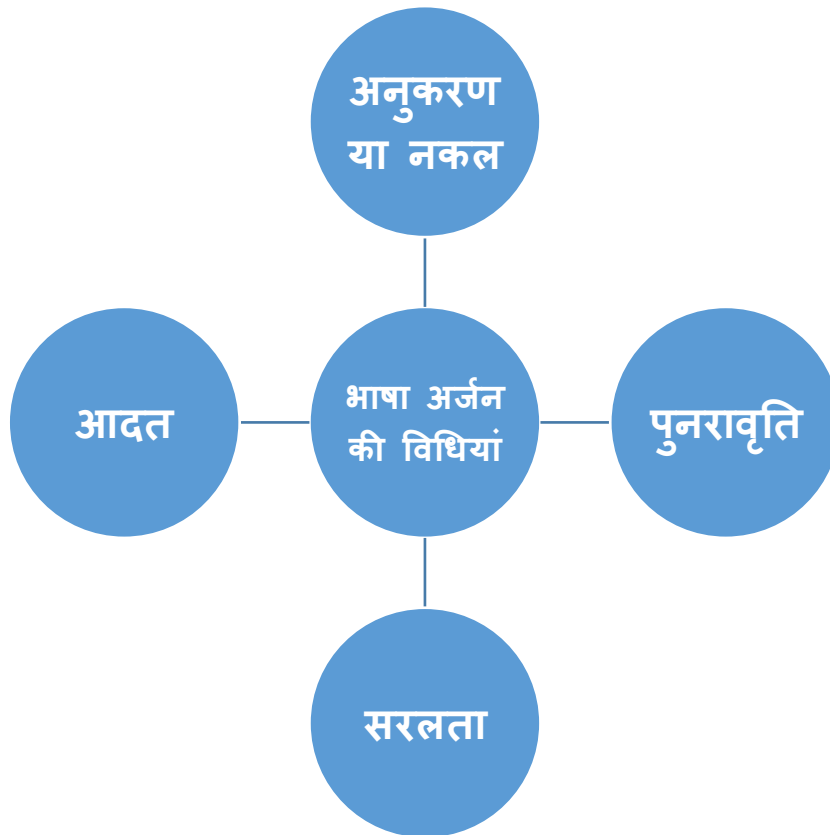
भाषा अर्जन में बच्चा अनुकरण नहीं करता है जबकि भाषा अधिगम में बच्चा अनुकरण करता है। उसकी भाषा वैसी होती है जैसे कोई वयस्क या बड़ा इंसान हो। उदाहरण के रूप में जब बच्चा अंग्रेजी भाषा का अर्जन करता है तो भूतकाल के नियमित नियमों का प्रयोग करता है - eated, readed आदि। जबकि वयस्क बोलते हैं - ate, read आदि। इससे दर्शाता है कि इन क्रिया के नियमित और अनियमित के स्थान पर वह सामान्य मानते हैं और भूतकाल को दर्शाने के लिए सभी क्रिया के शब्दों में अंत में ed लगाते हैं। अतः यह निर्णायक रूप से सिद्ध होता है

कि अर्जन परिकल्पना निर्माण, नियम रचना के पद का अनुसरण करता है। यह एक मानसिक योग्यता है अनुकरणात्मक व्यवहार नहीं।

चोमस्की के अनुसार, "भाषा अर्जन की क्षमता बालकों में जन्मजात होती है और वह भाषा की व्यवस्था को पहचानने की शक्ति के साथ पैदा होती है।"

वायगोत्स्की के अनुसार, "भाषा अर्जन बालक परिवेश और समाज के माध्यम से करता है और यह भाषा दो प्रकार की होती है। आत्म केंद्रित और बाह्य केंद्रित। जो क्रमशः स्व संवाद और समाज संवाद के लिए प्रयोग की जाती है।

2.4. भाषा अर्जन की विधियां



2.4.1 अनुकरण या नकल - बालक जब भाषा के सिद्धांत, रूप, विज्ञान को सुनता है तो वह उसे बिना कुछ समझे दोहराने लगता है अर्थात वह धीरे-धीरे नियमों को आत्मसात कर अपने बोलचाल में प्रयोग करने लगता है।

2.4.2 आदत - भाषा के नियम और विज्ञान को विद्यार्थी बार-बार को अपनी आदत में लाते हैं, जो उनके बोलचाल में शामिल होने लगता है।

2.4.3 पुनरावृत्ति - भाषा के नियमों को बच्चा अपने परिवार में बार-बार सुनता है जिससे वह उसे स्मरण हो जाता है और वह अपने व्यवहार में उसे प्रयोग में लाता है।

2.4.4 सरलता - बालक जन्म के बाद कुछ समय तक केवल ध्वनियों का जैसे रुदन, बलबलाना आदि का प्रयोग करता है। धीरे-धीरे वह अपने आस-पास रहने वाले सदस्यों के मुख से विभिन्न ध्वनियों को सुनता है और धीरे-धीरे उसे समझने लगता है।

2.5 भाषा अर्जन को प्रभावित करने वाले घटक

2.5.1 परिवार का वातावरण - बालक अपने परिवार के सदस्यों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा की नकल एवं अनुकरण कर अपनी भाषा सीखता है। परिवार उसका पहला स्कूल होता है जिसमें वह अपनी भाषा की अभिव्यक्ति को सीखता है। यदि परिवार में किसी सदस्य का उच्चारण गलत होता है तो वह भी गलत उच्चारण सीखता है।

2.5.2 सीखने की इच्छा शक्ति - बालक भाषा तब तक नहीं सीख सकते हैं जब तक स्वयं उसकी इच्छा ना हो। अतः द्वितीय भाषा को सीखने के लिए उसके अंदर एक इच्छा शक्ति होना अत्यंत आवश्यक है।

2.5.3 भाषा का विद्यार्थी के जीवन से संबंध - यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है कि बालक उन विषय-वस्तु को जल्दी सीख लेता है जिसका संबंध उसके रोज के क्रिया-कलापों से होता है।

2.5.4 विद्यार्थियों की मानसिक एवं शारीरिक क्षमता - जिन बालक के स्वर यंत्र का विकास होता है और अंगों की परिपक्वता होती है उन बालकों का उसकी भाषा पर नियंत्रण होता है।

2.5.5 शब्द भंडार - भाषा के विकास में शब्द भंडार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्णों से शब्द बनते हैं और शब्दों के माध्यम से वाक्य का निर्माण होता है और वाक्य यदि बच्चा सीख लेता है तो भाषा उसे आने लगती है। भाषा के माध्यम से वह अपने भाव और विचारों को उचित रूप से अभिव्यक्त करने लगता है।

2.6 भाषा अधिगम

भाषा अधिगम यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। अधि का अर्थ भली प्रकार तथा गम का अर्थ अर्थात् किसी भी विषय-वस्तु के करीब भली प्रकार से जाना और जानकारी प्राप्त

करना है। मनुष्य अपने जीवन काल के हर क्षण में कुछ न कुछ ज्ञान प्राप्त करते रहता है या कुछ न कुछ नया सीखते रहता है। अनुभव के माध्यम से ही उसके व्यवहार में परिवर्तन आता है जो चिरकाल तक रहता है वह अधिगम कहलाता है।

गेट्स के अनुसार, "प्रशिक्षण एवं अनुभव के द्वारा व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों को अधिगम कहते हैं।"

क्रानबैक के अनुसार, "प्रारंभिक सीखना अनुभव के परिणाम स्वरूप व्यवहार में होने वाले परिवर्तन द्वारा व्यक्त होता है।"

भाषा अधिगम दो आधार पर निर्भर करती है औपचारिक और अनौपचारिक। अनौपचारिक प्रक्रिया के माध्यम से बच्चा सहज रूप से सीखता है और औपचारिक अधिगम में बच्चा उद्देश्यपूर्ण, विषय-वस्तु आदि शिक्षक के द्वारा नियंत्रित होती है। माना कि अधिगम प्रक्रिया सरल प्रतीत होती है परंतु यह जटिल प्रक्रिया है। अतः सीखना या अधिगम करना वह प्रक्रिया है जिसमें प्रशिक्षण एवं अनुभव के द्वारा बालक के व्यवहार में इस तरह परिवर्तन होता है कि वह नई कार्य-कुशलता को प्राप्त कर एवं नए आदतों को अपने जीवन में शामिल कर सामाजिक समायोजन करने में समर्थ होता है। कहा जाता है कि भाषा व्यक्तित्व का निर्माण करती है। भाषा अधिगम के साथ भाषा की संवेदना और भाव को भी समझना जरूरी है। साथ ही भाषा में प्रयुक्त ध्वनियां, वाणी, वर्ण, शब्दों, वाक्य और प्रस्तुतिकरण के तरीके को समझना है तो भाषा को अधिक अच्छी तरह जान पाता है।

2.7 भाषा अधिगम का महत्व

भाषा सीखने की प्रक्रिया में भाषा अधिगम का विशेष महत्व है। भाषा अधिगम का आशय बालक के भाषा व्यवहार में, ज्ञान, अनुभव, प्रशिक्षण के फलस्वरूप उसमें व्यवहार परिवर्तन है। भाषा शिक्षण के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों में श्रवण, बोलना, पढ़ना, लिखना जैसे कौशलों का विकास करता है तथा परिष्कृत करता है। भाषा अर्जन में अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण स्थान है। जब बच्चा पाठशाला में प्रवेश लेता है तो इसकी विधिवत शिक्षा आरंभ हो जाती है साथ ही वह भाषा सीखने के तत्वों को अपने अभ्यास में लाने लगता है। भाषा के अधिगम के दौरान कई तत्व प्रयोग में लाये जाते हैं जो निम्नलिखित है -

प्रत्येक क्रिया के लिए एक उद्दीपन की जरूरत है जिसके कारण वह अनुक्रिया प्रारंभ कर देता है। बालक प्रारंभिक भाषा अनुकूलन द्वारा अधिगम करता है जैसे यदि उसे प्यास लगी है तो

वह एक ध्वनि द्वारा, चिह्न द्वारा, संकेत द्वारा अपनी बात परिवार के सदस्यों तक पहुंचाएगा। यदि वह इस व्यवहार में सफल होता है तो पुनर्बलन होगा और उसके मन में सहचार्य द्वारा शब्द और वस्तु का संबंध हो जाएगा।

हर बालक में अपनी सूझ होती है। चोमस्की ने कहा है कि भाषा सीखने के दौरान बालक कोरी प्लेट नहीं होता है उसके पास एक जन्मजात भाषा अर्जन युक्ति होती है। जिसके द्वारा वह भाषा की मूलभूत संरचनाओं को ग्रहण करता है और अपनी अंतर्दृष्टि द्वारा कई तरह की संरचनाओं का उत्पादन करता है। इसी युक्ति के द्वारा वह सही-गलत में अंतर कर सकता है। उसके अंदर जो सूझ होती है वह इस बात का पता लगाती है कि यह वाक्य सही है अथवा गलत और इसी वजह से वह अशुद्ध उच्चारण या वाक्यों से बचता है और सही वाक्य का प्रयोग करता है। अतः यह कह सकते हैं कि भाषा अधिगम में अधिगम की अनेक विधियों का भी योगदान रहता है।

2.8 भाषा अधिगम की विशेषताएं

भाषा अधिगम की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नलिखित हैं -

2.8.1 स्वाभाविक स्थितियों में भाषा का प्रयोग- भाषा अधिगम करते समय विद्यार्थियों में भाषण योग्यताओं का विकास जरूरी है क्योंकि भाषा को रट कर नहीं सिखाया जा सकता। उसे भाषण नियमों से अवगत कराना होता है। अतः भाषा शिक्षण शिक्षार्थियों में भाषा की अंतर्दृष्टि विकसित करने पर अधिक जोर देता है।

2.8.2 भाषा के मानक रूप - जब बालक समाज में प्रवेश करता है तब उसे भाषा के कई रूप देखने को मिलते हैं किंतु औपचारिक शिक्षक का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य भाषा के प्रामाणिक या मानक रूप से विद्यार्थियों को अवगत कराना है तथा उसका उपयोग या प्रयोग की कुशलता भी विकसित कराना है।

2.8.3 आदतों का निर्माण- भाषा एक अभ्यास है एक आदत है और शिक्षक का उद्देश्य है बच्चों में भाषा की उचित आदतों का निर्माण करना। भाषा की आदतों के निर्माण में तथा उसे विकसित करने के लिए विषय-वस्तु के चयन, प्रस्तुतीकरण आदि का ज्ञान उचित परिवेश में रहकर देना जरूरी है साथ ही शिक्षण-सामग्री, शिक्षण विधि, प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया आदि का होना भी आवश्यक है, ताकि वह भाषण कौशल पर अधिकार प्राप्त कर सकें।

2.8.4 संस्कृति संदर्भ- भाषा और संस्कृति का प्राचीन काल से ही एक गहरा नाता है। रॉबर्ट लेडो के अनुसार, "बालक मातृभाषा के अधिगम में भाषाई संस्कृति को सहज एवं स्वाभाविक रूप से आत्मसात करता है। संस्कृति की समझ विकसित होने पर भाषा अधिगम की प्रक्रिया समुचित रूप से गतिशील होती है एवं भाषा व्यवहार की कुशलता में क्रमिक उन्नति होती है।"

2.9 समग्र भाषा दृष्टिकोण

ज्ञान को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटना समग्र भाषा का दृष्टिकोण नहीं हो सकता है। बच्चे अपने आस-पास कई घटनाओं को देखते रहते हैं और उनसे यदि पूछा जाए कि आज उन्होंने क्या-क्या देखा तो घटना का विवरण वह समग्र रूप में देते हैं। जैसे एक बच्चा मैदान में क्रिकेट खेल रहा है वह मैदान में हुए सारे क्रियाकलापों का विवरण छोटे-छोटे अंश में न देकर समग्रता के साथ देता है। समग्रता का साधारण अर्थ होता है सम्पूर्णता। वह उन सारी बातों को बताने की कोशिश करता है जो उसने महसूस किया। इस प्रकार के तत्वों को मूल आधार बनाकर वायगोत्सकी ने कहा कि, "लिखित भाषा का विकास भी वाचिक भाषा की तरह होता है यही समग्र भाषा दृष्टि का असर है। संदर्भ व्यक्त करना सीखना सहज होता है उसी प्रकार संदर्भ में लिखना-सीखना भी आसान हो जाता है।"

समग्र भाषा दृष्टिकोण किसी भी एक भाषा कौशल पर आधारित नहीं है। भाषा को एक कौशल में बांधना अनुचित है क्योंकि भाषा को जानने और समझने के लिए उसे अलग-अलग कौशल में नहीं बल्कि उसे समग्रता की दृष्टिकोण से ही देखना चाहिए। समग्र भाषा की संकल्पना प्याजे, चोमस्की, गुड्स आदि के शोध पर आधारित है। समग्र भाषा दृष्टिकोण में विश्वास करने वाले अध्यापक यह मानते हैं कि भाषा के कौशल आपस में गुथे हुए हैं। अतः उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटना गलत होगा। इसीलिए समग्र भाषा के आधार पर हर बच्चा अधिगम करता है क्योंकि वह अपने वातावरण को देखता, समझता तथा उसे अभिव्यक्त भी करता है।

समग्र भाषा दृष्टिकोण के अंतर्गत इसके कुछ सहायक सिद्धांत हैं जो निम्नलिखित हैं-

2.9.1 बच्चों का अनुभव- समग्र भाषा के अंतर्गत बच्चे किसी नए ज्ञान को सीखने से पहले पुराने ज्ञान को उसके साथ जोड़ने की कोशिश करते हैं। इस प्रक्रिया में शिक्षक बच्चों की रुचि, उनकी अवलोकन क्षमता, बौद्धिक क्षमता, विषय-वस्तु के प्रति रुचि आदि को समझता है। इन बातों का ध्यान शिक्षक देते हैं क्योंकि बातचीत या वार्तालाप की प्रक्रिया के दौरान बच्चों को पढ़ना-लिखना, अधिगम करना मजेदार लगने लगता है। इस तरह से वह अपने अनुभव के साथ नई

चीजों को जोड़ने लगते हैं साथ ही शिक्षक भी विषय-वस्तु का निर्माण करने के लिए बच्चों की मदद करते हैं।

2.9.2 चुनने की स्वतंत्रता - पारंपरिक शिक्षण पद्धति में चुनने की स्वतंत्रता नहीं होती थी, परंतु आज की शिक्षा प्रणाली एनईपी 2020 में बाल-केंद्रित शिक्षा पर अधिक जोर दिया जाता है। सीखने के मुख्य बिंदुओं को बच्चे किस विषय-वस्तु, कहानी को चयनित कर पढ़ेंगे यह आजादी शिक्षक अपने बच्चों को देते हैं ताकि वह बड़े मजे के साथ इसे पढ़ते हैं। शिक्षक कक्षा में कई कहानीयां और कविता की किताबें रखते हैं और उसके बारे में बताते हैं तत्पश्चात् उन्हें चुनने का अवसर देते हैं। इस प्रकार समग्र भाषा के दृष्टिकोण को समझने के लिए शिक्षक बेहतर विकल्प हो सकता है जो बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देता है।

2.9.3 विद्यार्थियों की जिम्मेदारी - समग्र शिक्षा दृष्टिकोण के अंतर्गत इसमें जब बालक अपने विषय-वस्तु को अपनी खुशी से चुनता है तो यह उसकी स्वयं की जिम्मेदारी होती है कि वह समग्र रूप से विषय-वस्तु को पढ़े और लिखें। शिक्षक उन्हें फीडबैक देते हैं और फीडबैक को ध्यान में रखकर छात्र अपनी की हुई गलतियों को दुरुस्त करने की कोशिश करते हैं। गलतियों को स्वीकार कर भाषा को सीखना आदर्श विद्यार्थी की निशानी होती है।

2.9.4 अर्थपूर्णता - जब कक्षा में शिक्षक बच्चों को किसी कठिन शब्द का अर्थ बता रहे हैं तो हर समय उन्हें आसानी से अर्थ बताने से उनके भाषायी कौशल के विकास में बाधा पहुंच सकती है। जरूरत है बच्चों को पहले उसके अर्थ को सोचने दे यदि उन्हें कठिनाई का सामना होता है तो बच्चों को उसके अर्थ के तरफ ले जाए क्योंकि बच्चों को आसानी से अर्थ बता दिया जाएगा तो भाषा सीखने की प्रक्रिया की प्राकृतिक गति, प्रवाह और प्रेरणा वह कभी हासिल नहीं कर पाएगा।

2.9.5 भाषा कौशल का एकीकरण - समग्र भाषा दृष्टिकोण के अंतर्गत कक्षा में सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना जैसे कौशलों को बच्चे निश्चित क्रम में नहीं सीखते हैं बल्कि एक दूसरे के साथ जोड़कर ही वह इसे सीखते हैं। भाषाई कौशल के अंतर्गत बच्चे व्याकरण, नियम, उच्चारण, हस्तलेखन और अभिव्यक्तिकरण को एक निश्चित प्राकृतिक वातावरण में एक-दूसरे के साथ जोड़कर सीखते चले जाते हैं। विषय-वस्तु की अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया में बच्चे विज्ञान, गणित, भाषा, कला, खेल, खाना बनाना, पर्यावरण अध्ययन में भाषा प्रक्रिया शामिल रहती है। शिक्षक इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि यह सारी प्रक्रिया भाषा सीखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि किसी भी विषय-वस्तु को बिना भाषा के नहीं सीखा जा सकता है।

2.9.6 कक्षा का वातावरण - बच्चों को समग्र भाषा का ज्ञान देने में कक्षा का वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे बच्चों की सीखने की प्रक्रिया की उत्पादकता में वृद्धि होती है। कक्षा के वातावरण में एक समूह होता है जिसके साथ मिलजुल कर भाषिक कौशलों को सीख जा सकता है जिससे बच्चे संपूर्णता प्राप्त कर सके।

2.9.7 अभिभावकों की भागीदारी - समग्र भाषा दृष्टिकोण में केवल शिक्षक ही महत्वपूर्ण भूमिका नहीं रखता है बल्कि अभिभावक भी इसमें महत्वपूर्ण हिस्सा ले सकते हैं और घर पर बच्चों के साथ कहानी, कविता का वाचन कर सकते हैं, जिससे बालकों की भाषा में सुधार हो सकता है।

2.10 रचनात्मक दृष्टिकोण

भाषा के रचनात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत किसी भी सोच या विचार को विद्यार्थियों के समक्ष स्वतंत्र रूप से रखा जाता है, उस पर किसी भी तरह का बंधन नहीं होता। किसी विषय-वस्तु की रचना करने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भाषा में भिन्नता आ सकती है और वह अपने आस-पास या अपने घरेलू भाषा के माध्यम से भाषा के विविध प्रयोग के जरिए अपनी रचनात्मकता साबित करेंगे। इन सब प्रक्रिया में वह जान सकते हैं सुनना और बोलना साथ ही पढ़ना और लिखना, ये दोनों ऐसे कौशल है जो आपस में अंतःसंबंध करते हैं।

भाषा के विकास के संदर्भ में पियाजे का मानना है कि, "क्रिया के कारण भाषा का विकास होता है उनका मानना है कि बच्चे की भाषा के विकास में उसके द्वारा पूर्व में की गई क्रियाएं होती है, क्रिया को आत्मसात करने के लिए भाषा विकसित होती है। "पियाजे के अनुसार जानने के दो पक्ष होते हैं आकृतिमूलक तथा क्रियामूलक। आकृति मूलक का अर्थ है कोई वस्तु इंद्रियों को जैसी लग रही है। क्रियामूलक का अर्थ है वस्तु में परिवर्तन हेतु उस पर क्रिया करना। भाषा के विकास की दृष्टि से क्रियामूलक पक्ष को महत्वपूर्ण मानते हैं। आकृति मूलक पक्ष तो कच्चे माल की तरह है जिस पर क्रिया करके उसे नया रूप प्रदान किया जा सकता है। जैसे रचनात्मक शिक्षण के लिए जरूरी है कि यदि कक्षा में शिक्षक के द्वारा "पानी की कहानी" इस विषय-वस्तु का अध्ययन किया गया तो विद्यार्थियों को "सोफे की कहानी", "नदी की कहानी", "कलम की कहानी" आदि पर सोचने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। ऐसा किया जाना सीखने के क्रियामूलक पक्ष को जीवंत करना है। इस प्रक्रिया में वे विद्यार्थी जिनके पास इन विषयों से संबंधित जानकारी है वे उसके बारे में सोचेंगे अर्थात् पूर्व अनुभव का प्रयोग करेंगे, उसका

मूल्यांकन करेंगे और अपने साथियों के साथ उसे अभिव्यक्त करेंगे। यह सारे विषय आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। विद्यार्थी अपनी मानसिक स्तर के अनुकूल किसी विषय-वस्तु का चयन करके उस के बारे में सोचता है तो वह उसकी रचनात्मकता कहलाती है।

रचनात्मक दृष्टि ऐसी रणनीति है जिसमें भाषा कौशल और पूर्वानुभव का प्रयोग होता है। जिससे बच्चा इस ज्ञान और जानकारी के आधार पर नई समझ को विकसित करता है। रचनात्मक दृष्टिकोण को देने वाले प्रसिद्ध शिक्षाविद क्रेसन थे। उन्होंने बताया कि भाषा सीखते समय चार आंतरिक प्रक्रियाएं काम करती हैं - अवचेतन, पृथ्वीकरण, शुद्धिकरण एवं निगरानी।

भाषा अर्जन हेतु उन्होंने पांच परिकल्पनाओं का निर्माण किया-

2.10.1 अर्जन अधिगम परिकल्पना - भाषा ज्ञान को अवचेतन मन ग्रहण करके संप्रेषण के माध्यम से मस्तिष्क में एकत्र करता है। यह प्रक्रिया मातृभाषा के अर्जन में प्रयोग होती है किंतु भाषा अधिगम एक चेतन प्रक्रिया है इसमें व्याकरण के नियम, रूप, विज्ञान आदि को स्वीकार किया जाता है और बालक इसकी जानकारी पहले से रखता है।

2.10.2 निगरानी परिकल्पना - यह भाषा ग्रहण एवं अधिगम किस तरह से अर्जित किया जाता है इसकी व्याख्या करती है। अधिगम प्रक्रिया की निगरानी के माध्यम से यह पता लगाया जाता है कि जो शब्द उच्चारित किया गया है वह शब्द सही है या नहीं। उसमें जरूरी परिवर्तन करके उसे शुद्ध किया जा सकता है लेकिन क्रेसन ने यह भी बताया है कि कभी-कभी यह निगरानी भाषा के सीखने में बाधा का काम भी करती है। यदि बालक का ध्यान भाषा के शुद्धतम रूप पर हुआ तो यह भाषा के प्रवाह को प्रभावित करता है।

2.10.3 स्वाभाविक क्रम परिकल्पना - क्रेसन के अनुसार अधिगमकर्ता भाषा के कुछ अंशों का अर्जन एक ऐसे क्रम में करता है जिसकी भविष्यवाणी की जा सकती है। किसी भी भाषा में कुछ व्याकरणीय संरचना व तत्व पहले अर्जित करता है, कुछ का बाद में अर्थात् अर्जन एक स्वाभाविक क्रम के रूप में बोलता है। इस परिकल्पना के अनुसार भाषा अर्जन अपने स्वतंत्र रूप में अपने स्वाभाविक क्रम को अपनाता है।

2.10.4 अदा प्रक्रिया - इस प्रक्रिया के अंतर्गत भाषा अर्जन तभी होता है जब बालक किसी भी विषय-वस्तु को अपनी एक अदा के द्वारा अभिव्यक्त करता है। बालक संप्रेषित संदेश का बोध कर पाता है अर्थात् कोई भी संप्रत्यय वह तभी सीखता है जब बालक उसका बोध कर पाए।

2.10.5 भावनात्मक फिल्टर - क्रेसन के अनुसार भाषा अर्जन में एक रुकावट बहुत अहम भूमिका निभाती है जो कि भावनात्मक फिल्टर है अर्थात् कुछ ऐसे चर जो कि अधिगम में बाधा उत्पन्न करते हैं और अदा को मस्तिष्क तक पहुंचने में एक रुकावट का काम करते हैं। जैसे- चिंता, प्रेरणा की कमी, तनाव एवं मानसिक दबाव। यह वे तनाव चर है जो भाषा अर्जन एवं अधिगम पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। क्रेसन की इस सिद्धांत की काफी आलोचना भी की गई किंतु यह रचनात्मक दृष्टिकोण का एक अहम सिद्धांत माना जाता है जो बताता है कि बालक किस प्रकार एक स्वाभाविक क्रम में या स्वयं की निगरानी में भाषा का अर्जन एवं अधिगम करता है।

2.11 सारांश

परिवार में जब पहली बार बच्चा अपनी माता को माँ/बाबा कहना प्रारंभ करता है और इसे अनवरत दोहराते रहता है तो यह माता और पिता के लिए खुशी का क्षण होता है। धीरे-धीरे बच्चा मां और बाबा कहना सीख लेता है और अपनी जरूरत को, भाव को, विचारों को संप्रेषित करने के लिए कुछ समय बाद दो या दो से अधिक शब्दों को जोड़कर बोलने लगता है। परिवार में जब बच्चा मातृभाषा के माध्यम से संप्रेषण करना सीख लेता है इस प्रक्रिया को भाषा-अर्जन की प्रक्रिया कहते हैं। यह एक अनौपचारिक प्रक्रिया है। यह समाज या परिवार में रहकर ही सीखी जा सकती है। इस इकाई में कुछ मुख्य तत्वों पर चर्चा की गयी है - भाषा अर्जन, भाषा अर्जन की विधियां - अनुकरण या नकल, आदत, पुनरावृत्ति, सरलता, भाषा अर्जन को प्रभावित करने वाले घटक, परिवार का वातावरण, सीखने की इच्छा शक्ति, भाषा का विद्यार्थी के जीवन से संबंध, विद्यार्थियों की मानसिक एवं शारीरिक क्षमता, शब्द भंडार आदि। भाषा अधिगम, भाषा अधिगम का महत्व, भाषा अधिगम की विशेषताएं जैसे - स्वाभाविक स्थितियों में भाषा का प्रयोग, भाषा के मानक रूप, आदतों का निर्माण, संस्कृति संदर्भ आदि। समग्र भाषा दृष्टिकोण में चुनने की स्वतंत्रता, विद्यार्थियों की जिम्मेदारी, अर्थपूर्णता, भाषा कौशल का एकीकरण, कक्षा का वातावरण आदि पर चर्चा की गयी तथा रचनात्मक दृष्टिकोण में अर्जन अधिगम परिकल्पना, निगरानी परिकल्पना, स्वाभाविक क्रम परिकल्पना, अदा प्रक्रिया, भावनात्मक फिल्टर आदि पर प्रकाश डाला गया।

2.12 शब्दावली

अंतरदृष्टि - किसी के मन के भावों को, विचारों को या किसी व्यक्ति या चीज़ के बारे में कुछ आवश्यक जानने में मदद करता है।

क्रियामूलक - जो क्रिया नैसर्गिक एवं प्राकृतिक रूप से सक्रिय प्रक्रिया करती है।

परिकल्पना - जब आप तर्क के आधार पर अपनी कोई बात रखते हैं उसे परिकल्पना कहते हैं यह एक मानसिक धारणा भी कहलाती है जिसकी सही और गलत की जांच की जाती है।

अवचेतन - जो चेतना में तो होता है पर सचेतन अवस्था में नहीं होता पर थोड़ा प्रयास करने से चेतना में लाया जाता है।

परिष्कृत - यहां पर इसका प्रयोग भाषा के कौशल को निखारने के लिए प्रयोग में लाया गया है।

संप्रेषण - संप्रेषण अभिव्यक्तिकरण का एक साधन या एक परस्पर क्रिया है, जिसमें एक पक्ष संदेश का संप्रेषण करता है, दूसरा पक्ष उस संदेश को ग्रहण करता है।

पुनर्बलन - ऐसी कोई क्रिया जो हमारी अनुक्रिया की संख्या में वृद्धि करती है पुनर्बलन कहलाती है, यह सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों हो सकती है।

उद्दीपन - अनुक्रिया की प्रक्रिया को मजबूत करने के लिए हमें उत्तेजना की जरूरत पड़ती है उसे उद्दीपन कहा जाता है।

2.13 अधिगम प्रतिफल

भाषा अर्जन को समझ सकने में सक्षम होगा।

परिवार या समाज में भाषा कैसे अर्जित की जा सकती है यह जान सकने में सक्षम होगा।

भाषा-अधिगम के महत्व को समझ सकने में सक्षम होगा।

भाषा के समग्र दृष्टिकोण को जान सकने में सक्षम होगा।

भाषा के रचनात्मक दृष्टिकोण के महत्व को समझ सकने में सक्षम होगा।

भाषा की अर्जन एवं अधिगम की प्रक्रिया में अंतर कर सकने में सक्षम होगा।

2.14 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

अति लघुत्तरीय प्रश्न

1. परिवार में जब बच्चा मातृभाषा के माध्यम से संप्रेषण करना सीख लेता है इस प्रक्रिया में क्या कहते हैं?

(अ) मातृभाषा (ब) भाषा-अर्जन (स) भाषा सिखाना (द) उपरोक्त सभी।

2. भाषा-अर्जन क्या है?

(अ) एक अनौपचारिक प्रक्रिया (ब) एक औपचारिक प्रक्रिया (स) एक अनौपचारिक एवं औपचारिक प्रक्रिया (द) ये सभी

3. भाषा-अर्जन में भाषा के नियम, रूप, सिद्धांत को समझ जाता है।

(अ) बिना व्याकरण (ब) व्याकरण (स)दोनों के साथ

4. "मनुष्यों में भाषा अधिगम की जन्मजात शक्ति होती है जिसके माध्यम से वे असंख्य

अभिव्यक्तियाँ कर सकते हैं।" यह कथन किसका है ?

(अ) वूड्वर्थ (ब) स्किनर (स) नॉम चोमस्की (द) फ़्रायड।

5. भाषा अर्जन को प्रभावित करने वाले घटक

(अ) पुस्तक (ब) व्याकरण (स) परिवार (द) ये सभी।

6. भाषा अधिगम की विधिवत शिक्षा कहाँ आरंभ होती है

(अ) मित्र (ब) शाला (स) परिवार (द) यह सभी

7. समग्रता का साधारण अर्थ होता है।

(अ) सरलता (ब) सम्पूर्णता (स) सहजता (द) यह सभी

8. शिक्षा प्रणाली एन ई पी 2020 में किस पर अधिक जोर दिया जाता है।

(अ) शिक्षक केन्द्रित (ब) बाल-केंद्रित शिक्षा (स) पुस्तक (द) ये सभी

9. अधिगम कितने शब्दों से मिलकर बना है ?

(अ)4 (ब) 3 (स) 2 (द) इनमें से कोई नहीं।

10."क्रिया के कारण भाषा का विकास होता है उनका मानना है कि बच्चे की भाषा के विकास में

उसके द्वारा पूर्व में की गई क्रियाएं होती है, क्रिया को आत्मसात करने के लिए भाषा विकसित होती है।" यह कथन किसने कहा है -

(अ) पियाजे (ब) स्किनर (स) वायगोत्सकी (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर कुंजी

1. (ब) 2. (अ) 3. (अ) 4. (स) 5 (स) 6 . (ब) 7. (ब) 8. (ब) 9. (स) 10. (अ)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा अर्जन को परिभाषित कीजिए।
2. भाषा अधिगम में आदतों के निर्माण को समझाइए।
3. निगरानी परिकल्पना किसे कहते हैं?
4. भाषा अर्जन और भाषा अधिगम में क्या अंतर है ?
5. समग्र भाषा दृष्टिकोण में बच्चों के अनुभव को स्पष्ट कीजिए।
6. अर्जन अधिगम परिकल्पना को समझाईये।
7. भाषा कौशल का एकीकरण को संक्षिप्त में लिखे।

8. भाषा अर्जन को प्रभावित करने वाले 'घटक' परिवार का वातावरण की भूमिका को बताएँ।
9. समग्र भाषा दृष्टिकोण के अंतर्गत बच्चों की रुचि पर लिखें।
10. भाषा के मानक रूप कौनसे हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा अधिगम पर एक निबंध लिखिए।
2. भाषा अर्जन के महत्व को परिभाषित करके उसके महत्व को स्पष्ट कीजिए।
3. भाषा के रचनात्मक दृष्टिकोण को विश्लेषित कीजिए।
4. समग्र भाषा दृष्टिकोण के सिद्धांतों को लिखिए।
5. भाषा अर्जन की विधियों और उसे प्रभावित करने वाले घटकों पर रोशनी डालिए।

2.15 सन्दर्भ

रावत, आर., हिन्दी भाषा शिक्षण, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा

पंडागले, पी., हिन्दी शिक्षण, अजय पब्लिशर्स, भोपाल

डी.डी.ई., हिन्दी भाषा शिक्षण, एम ए एन यू यू, हैदराबाद

<https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/1586>

<https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/BhashaShikshanBhag->

[II.pdf](#)

इकाई – 3 भाषा सीखने एवं सिखाने की बहुभाषिक दृष्टि

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बहुभाषिकता

3.4 नोम चोमस्की की बहुभाषिक दृष्टिकोण

3.4.1 जन्मजात क्षमता

3.4.2 वातावरण का महत्व

3.4.3 आपस में संबंध

3.4.4 भाषा अधिग्रहण यंत्र (LAD)

3.4.5 सार्वभौमिक व्याकरण

3.5 वायगोत्स्की का बहुभाषिक दृष्टिकोण

3.5.1 अनुकरणीय सीखना

3.5.2 निर्देशात्मक सीखना

3.5.3 सहकारी अधिगम

3.6 लिव वायगोत्स्की के अनुसार भाषा के प्रकार

3.6.1 विचारों एवं भाषा की उत्पत्ति

3.6.2 संप्रत्यय निर्माण

3.7 वायगोत्स्की का सिद्धांत भाषा को तीन भागों में विभाजित किया है-

3.7.1 सामाजिक वाक

3.7.2 मूक अन्तःवाक

3.7.3 निजी वाक

- 3.8 सारांश
- 3.9 शब्दावली
- 3.10 अधिगम प्रतिफल
- 3.11 इकाई के अंत की गतिविधियाँ
- 3.12 सन्दर्भ

3.1 प्रस्तावना

बहुभाषिकता हमारे जीवन का एक अहम अंग है। जो हमारे संस्कृति एवं सामाजिक अस्मिता से जुड़ा हुआ है। हमें बहुभाषिक होना इसलिए जरूरी है कि हम एक-दूसरे से जुड़े रहे और उन्हें समझ सकें। आज के युग में हमारे देश के लोग दूसरे देश के लोगों से मिलते-जुलते हैं। साथ ही आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में भी अपना स्थान बनाए रख रहे हैं। इसलिए हमें उनकी संस्कृति को समझने और हमारी संस्कृति को उनके साथ साझा करने के लिए बहुभाषिकता का होना अत्यंत जरूरी समझा गया है। आज के प्रासंगिक युग में एक भाषा, एक समाज, एक संस्कृति को कोई जगह नहीं मिल पा रही है बल्कि बहुभाषा, बहुसंस्कृति को अहम् माना जा रहा है। हमें यह स्वीकार करना ही होगा कि यह सभी तत्व बच्चों के भावी जीवन से जुड़े हुए हैं इसलिए बच्चों की भाषा सम्बन्धी समझ को मजबूत करने के लिए उनको स्कूल से जोड़ना जरूरी है, इसकी प्रमुख भूमिका है। प्रत्येक बच्चा अपने घर से घरेलू भाषा का इस्तेमाल करके शाला में प्रवेश करता है। मातृभाषा में तो वह काफी मजबूत हो जाता है जिससे उसे अन्य भाषा को लिखने और पढ़ने में भी आसानी हो जाती है।

शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसको आधार बना कर हम बहुभाषिक हो सकते हैं। किसी भी भाषा कौशल को समझने से पहले हमें उसके विज्ञान को समझना होगा। 4 से 5 साल की उम्र तक यह विकास सुदृढ़ नहीं होता है क्योंकि बालकों के हाथों की कोमल इंद्रियां लेखन कार्य के लिए योग्य नहीं होती, उसे लिखने में मुश्किलें होती हैं इसलिए पढ़ने से इस कौशल को शुरू किया जाता है और फिर वह धीरे-धीरे लिखना भी प्रारंभ कर देता है। मातृभाषा के साथ यदि दूसरी भाषा एवं तीसरी भाषा जुड़ जाए तो हमारा पूरा भारत देश एक मजबूत राष्ट्र और बहुभाषिक राष्ट्र बन जाएगा।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप -

- भाषा सीखने एवं सिखाने की बहुभाषिक दृष्टि की संकल्पना को समझ सकेंगे।
- चॉमस्की के बहुभाषिक दृष्टिकोण को जान सकेंगे।
- वायगोत्सकी के बहुभाषिक दृष्टिकोण को जान सकेंगे।
- चॉमस्की एवं वायगोत्सकी के बहुभाषिक दृष्टिकोण में अंतर कर सकेंगे।
- वायगोत्सकी के भाषा के तीन भागों का अध्ययन कर सकेंगे।

3.3 सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बहुभाषिकता

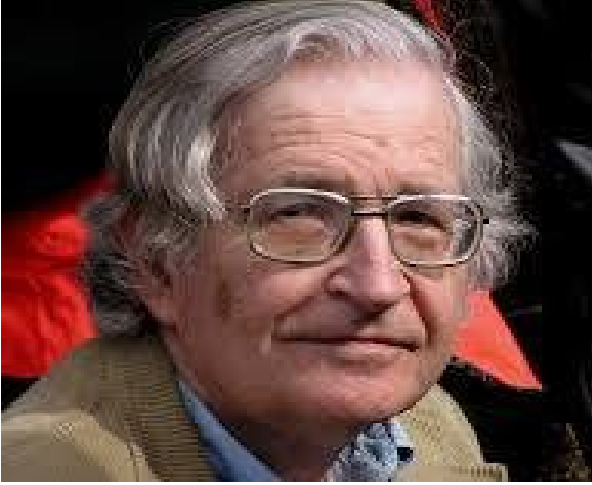
हमारा भारत संस्कृति, जनसंख्या एवं भाषाओं की दृष्टि से एक विशाल राष्ट्र है। हमारे समाज, संस्कृति एवं भाषाओं की विशालता न केवल बड़ी है बल्कि यह विविधता लिए हुए हैं। इसलिए हमारा भारत देश अनेकता में एकता के लिए जाना जाता है। प्राचीन काल से ही भारत एक बहुभाषी देश रहा है। कई भाषाओं, समाज एवं संस्कृति के लिए यह एक अखिल भारतीय पहचान बना चुका है।

कक्षा-कक्ष में भी हम अक्सर देखते हैं कि यदि 50 विद्यार्थी हैं तो उनकी भी भाषा तरह-तरह की होती है। बहुभाषिकता को कायम रखने में पाठशाला महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। विद्यार्थियों में भिन्न-भिन्न भाषाओं को सीखने की अभिप्रेरणा उत्पन्न करने के साथ उन्हें इनके फायदे भी बताये जाने ज़रूरी है जैसे- एक राज्य से दूसरे राज्य, एक देश से दूसरे देश में नौकरी प्राप्त करना, विविध प्रकार के चित्रपट को देख कर अपना मनोरंजन करना, पत्रिकाएं, पुस्तकों को पढ़ना या एक शहर से दूसरे शहर में अपनी यात्राएं करना आदि।

जो बच्चे जिस भाषा का प्रयोग घर में करते हैं उन्हें स्कूल में भी करते हैं इन दोनों भाषाओं में अंतर होता है यदि कक्षा-कक्ष में बोले जाने वाली भाषा बच्चों के घर की भाषा से निम्न है तो वह कक्षा में केवल मजाक बनकर रह जाता है। इस तरह की भावना बच्चों में ना पनपे इसके लिए बहुभाषा के प्रति सम्मान की भावना सभी बच्चों में पाठशाला के माध्यम से पैदा की जानी चाहिए। भाषा यदि अलग है तो निश्चित रूप से पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने में, सीखने की विधियों एवं प्रक्रियाओं में, सीखने के वातावरण में कुछ कठिनाइयों का बच्चों को सामना करना पड़ता है।

3.4 नोम चामस्की की बहुभाषिक दृष्टिकोण

नोम चामस्की अमेरिका के मनोवैज्ञानिक थे। जिन्होंने भाषा संबंधी विचारों और तथ्यों का प्रतिपादन किया। चामस्की को भाषा विकास का जनक भी कहा जाता है साथ ही उन्हें आधुनिक भाषा विकास का जनक भी कहा जाता है जिसके कारण इन्हें भाषा मनोवैज्ञानिक या भाषाविद के रूप में पहचाना जाता है। यह एक व्यवहारवादी विचारक भी रहे हैं। चामस्की के अनुसार बालक में व्याकरण एवं भाषा को सीखने की क्षमता जन्मजात होती है। चामस्की के अनुसार वह बहुभाषिकता को इस तरह परिभाषित करते हैं कि बालक में अनेक भाषा को



सीखने की क्षमता जन्मजात होती है अर्थात् भाषा अर्जन करने की क्षमता बचपन से ही विद्यार्थी में निहित होती है।

भाषा को अर्जन करने की एक क्षमता कुछ निश्चित समय तक होती है। बालक की बहुभाषा अधिग्रहण क्षमता जो होती है उसकी शुरुआत 5 वर्ष से हो जाती है उसके पश्चात उन्हें किसी भाषा को सिखाने में थोड़ी

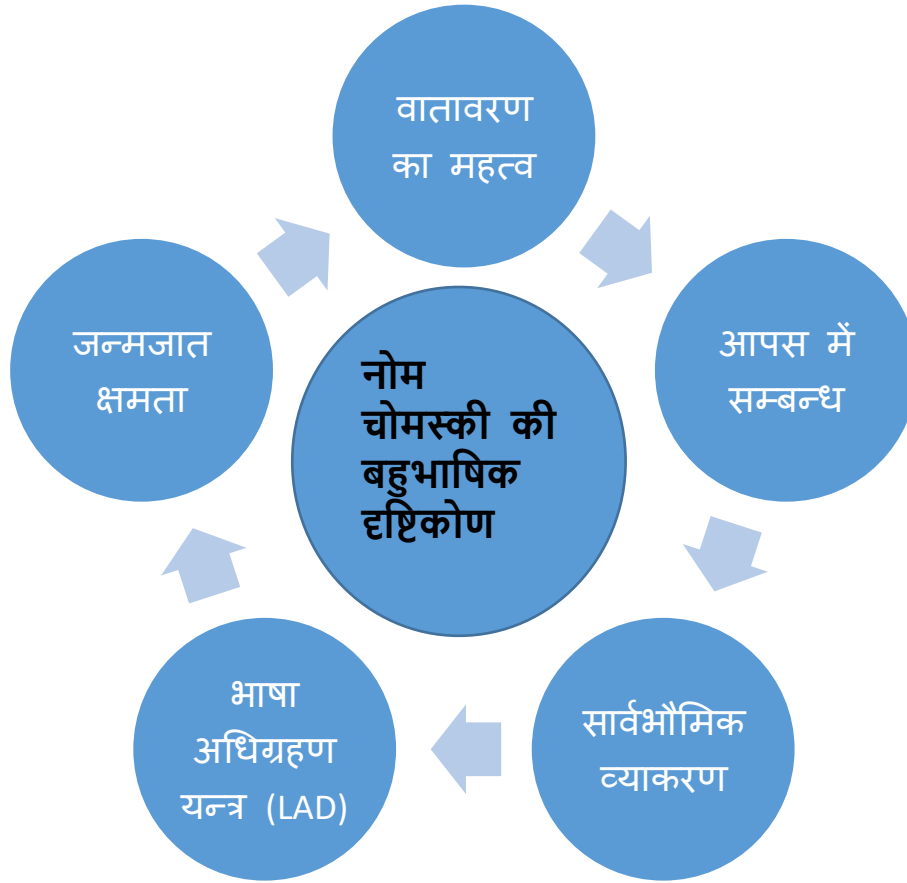
कठिनताओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है भाषा को सीखने की क्षमता कम होते जाती है। उनके अनुसार प्रत्येक बच्चे में भाषा अधिग्रहण यंत्र (LAD) होता है इसकी सहायता से वह किसी भी भाषा को तीव्र गति से सीख पाते हैं। यह यंत्र हमारे दिमाग का एक भाग होता है जिसे निकाला नहीं जा सकता या देखा नहीं जा सकता। यह प्रकृति की देन है।

सामान्य शब्दों में यदि कहा जाए तो यह God Gift है जो बालक में जन्मजात होता है, परंतु भाषा को सीखने की क्षमता का क्रियान्वयन रूप वातावरण द्वारा दिया जाता है अर्थात् भाषा को सिखाने हेतु वातावरण और संस्कृति का भी एक स्थान होता है। बहुभाषिकता की विशेषताएं निम्न प्रकार से हैं -

3.4.1 जन्मजात क्षमता - बालक जन्म से ही अनेक भाषा को और उसके व्याकरण को सीखने की क्षमता विकसित करके लाता है। यह एक अनुवांशिक एवं सार्वभौमिक प्रक्रिया होती है।

3.4.2 वातावरण का महत्व - चोमस्की मानते हैं कि चाहे भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात रूप में होती है परंतु उसके तत्वों को, सिद्धांतों को सीखने के लिए या उसे विकसित करने के लिए दूसरा महत्वपूर्ण तत्व वातावरण है।

3.4.3 आपस में संबंध - चोमस्की मानते हैं कि दुनिया में जितनी भी भाषा बोली जाती है उसका एक-दूसरे के साथ संबंध होता है। जैसे- व्याकरण के अनुसार किसी भी भाषा को संज्ञा, क्रिया, विशेषण, संधि, उपसर्ग आदि में विभक्त नहीं किया जा सकता है।



3.4.4 भाषा अधिग्रहण यंत्र (LAD) – चामस्की के अनुसार यह दिमाग का एक भाग होता है। जो बहुभाषिकता के लिए कार्य करता है। इसकी क्षमता शुरुआती 5 वर्ष में अधिक होती है तत्पश्चात धीरे-धीरे इसकी प्रभावशीलता में कमी आने लगती है।

3.4.5 सार्वभौमिक व्याकरण – चामस्की के अनुसार भाषा सीखने के लिए व्याकरण को सिखना और उसकी शुद्धता की मात्रा को बढ़ाना जरूरी है। उनके अनुसार भाषा को सिखाना और व्याकरण को सीखने की प्रक्रिया सार्वभौमिक होती है।

जब विद्यार्थी भाषा को सीखते हैं तो उसके लिए दो स्तरों का प्रयोग करते हैं।

3.4.5.1 सतही संरचना - चामस्की के अनुसार इस संरचना में विद्यार्थी सिर्फ भाषा की ध्वनियों और शब्दों का ज्ञान प्राप्त करते हैं परंतु इसके अर्थ को समझ पाने में वे असमर्थ होते हैं। शब्द के अर्थ को विस्तृत रूप से समझने में वे असफल रहते हैं। जैसे- खाना, पीना, मम्मी, पापा आदि।

3.4.5.2 गहरी संरचना - इसमें बालक शब्दों एवं ध्वनियों के अर्थ को भी समझने लगते हैं और साथ ही इसकी विस्तृत व्याख्या करने में सक्षम हो जाते हैं। इसके अंतर्गत विद्यार्थी किसी वस्तु को परिभाषित करने के लिए उचित शब्दों का चयन कर पाते हैं और धीरे-धीरे उसके भाषण विकास की परिपक्वता होने लगती है।

3.5 वायगोत्स्की का बहुभाषिक दृष्टिकोण



वायगोत्स्की एक सोवियत मनोवैज्ञानिक थे। जो बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास पर अपने कार्य के लिए जाने जाते थे। सोवियत मनोवैज्ञानिक वायगोत्स्की ने सामाजिक- सांस्कृतिक सिद्धांत प्रतिपादित किया है। उन्होंने बहुभाषिकता को कुछ तत्वों में बताया है। जैसे- यह मौन और आंतरिक वाक् है जिसमें शब्दों या शब्द छवियों का उपयोग श्रव्य व दृश्य रूप से बोलने के बजाय विचार में व्यक्त किया जाता है।

इस प्रकार की क्षमता तब आती है जब बच्चा लगभग 7 वर्ष का हो या उससे अधिक का होता है।

आंतरिक भाषण एक सिद्धांत है जो बहुभाषिकता को अभिप्रेरित करता है। आंतरिक भाषण स्व-निर्देशित संवाद का एक रूप है यह मौन में स्वयं से बातें करता है। वायगोत्स्की के अनुसार संज्ञानात्मक विकास में भाषा और चिंतन का प्रमुख स्थान है। बालक जैसे ही भाषा सीखता है वह भीतरी संभाषण प्रारंभ कर देता है सभी बालक अपने अंदर आत्म-वार्तालाप की आदत बना लेते हैं। यही वार्तालाप आगे जाकर उनका चिंतन, मनन या विचार बन कर सामने आता है। निज भाषण यह छोटे बच्चों द्वारा जोर से उत्पन्न भाषण को संदर्भित करता है जिसके द्वारा स्वयं को या दूसरों को संबोधित किया जाता है, कभी-कभी श्रोता के लिए इसे समझना मुश्किल होता है।

वायगोत्स्की के अनुसार बालक में भाषा दो प्रकार के भाषण द्वारा सीखी जाती है-

आंतरिक भाषण या स्पीच- यह विचारों से उत्पन्न थिंकिंग या मस्तिष्क से उत्पन्न विचार या आंतरिक वाणी को आंतरिक स्पीच कहते हैं।

बाहरी भाषण या स्पीच - इसे शाब्दिक भाषा भी कहा जाता है। इसमें बालक अपने विचारों को ध्वनियों में परिवर्तित कर देता है अर्थात् दूसरों से बातचीत करता है उसे बाहरी भाषण या स्पीच कहा जाता है।

वायगोत्स्की ने कहा था कि बालक में पहले विचार आते हैं फिर भाषा आती है। विचार और भाषा एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। वायगोत्स्की के अनुसार, "भाषा यंत्र यह सामाजिक अंतर क्रिया के द्वारा अपनी ही एक संस्कृति से दूसरे संस्कृति तक स्थानांतरित करता है जो बहुभाषिकता के लिए फायदेमंद है। भाषा के सभी गुण जैसे विचार, भाव, अनुभव, कौशल, ज्ञान, नैतिकता आदि अनुभव वह निम्न प्रकार से प्राप्त करता है।

3.5.1 अनुकरणीय सीखना - बालक अनुकरण के द्वारा भाषा का अधिगम एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंच जाते हैं या प्रकट करते हैं।

3.5.2 निर्देशात्मक सीखना - इसमें बालक किसी प्रौढ़ व्यक्ति जैसे अध्यापक या अभिभावक के निर्देशों के माध्यम से ही स्वयं को ज्ञान से परिपूर्ण करता है और भाषा को सीख कर उसे अभिव्यक्त करने के सक्षम बनता है।

3.5.3 सहकारी अधिगम - इसमें बालक अपने साथियों के साथ भाषा के विशिष्ट कौशल को समूह बना कर ग्रहण करते हैं अर्थात् समान उम्र के बालकों के साथ भाषा अधिगम करते हैं। कुल मिलाकर इन तीनों में सामाजिक अंतर क्रिया होती है जो बहुभाषिकता को बढ़ावा देती है अर्थात् एक संस्कृति का बच्चा दूसरे संस्कृति के बच्चे के साथ, एक भाषा का बच्चा दूसरे भाषा के बच्चों के साथ आपस में अंतर-क्रिया करते हैं और बहुभाषिकता को बढ़ावा देते हैं।

3.6 लिव वायगोत्स्की के अनुसार भाषा के प्रकार

बहुभाषिक दृष्टिकोण के अंतर्गत लिव वायगोत्स्की ने कहा है कि एक छोटा बच्चा अवधारणा निर्माण की दिशा में पहला कदम तब उठाता है जब वह कई वस्तुओं को संगठित समूह या ढेर में एक साथ रखता है। जिसमें अलग-अलग वस्तुएं होती हैं जो एक साथ सामूहिक कृत होती है, बच्चा उन सभी वस्तुओं के नाम को जानने के लिए उत्साहित रहता है क्योंकि वह सभी वस्तुओं के बहु अर्थ जानना चाहता है। स्वाभाविक रूप से बच्चों की धारणा उस स्तर पर, शब्द का अर्थ बच्चों के लिए अलग-अलग वस्तुओं के एक अस्पष्ट समन्वित समूह से अधिक कुछ नहीं दर्शाता है जो किसी तरह या अन्य तरीके से उसके दिमाग में एक छवि में एकजुट हो गए हैं। कई शब्द बच्चे और वयस्कों के लिए विशेष रूप से एक ही अर्थ रखते हैं बच्चे के अभ्यस्त परिवेश में ठोस वस्तुओं का जिक्र करने वाले शब्द। किसी शब्द के बच्चों और वयस्कों के अर्थ अक्सर एक ही ठोस वस्तुओं में मिलते हैं और यह आपसी समझ सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त है।

जैसा कि हम जानते हैं कि वायगोत्स्की ने एक सांस्कृतिक और जैव-सामाजिक विकास के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है साथ ही उन्होंने बताया है कि भाषा के विकास में, वार्तालाप में

बातचीत की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिसके माध्यम से सामाजिक अंतर्क्रिया द्वारा भाषा का विकास तीव्र गति से होता है, जिसमें प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे से अपने भाव को अभिव्यक्त करता है और विचारों को एक दूसरे के साथ साझा करता है। समाज में एक दूसरे के साथ बातचीत, वार्तालाप करने की अंतर क्रिया में बहुभाषिकता यह बहुत बड़ी निशानी है। बहुभाषिकता का अर्थ एक ऐसे व्यक्ति से है जो दो से अधिक भाषाओं का प्रयोग अपने बातचीत में करता है।

अगर देखा जाए तो विश्व में बहुभाषिक लोगों की संख्या एक भाषी लोगों की संख्या से बहुत अधिक है। विद्वानों का मत है कि बहुभाषिकता किसी भी व्यक्ति के ज्ञान व व्यक्तित्व के विकास के लिए बहुत उपयोगी होती है। वायगोत्स्की के अनुसार संप्रेषण के उद्देश्य से सामाजिक अंतर्क्रिया के द्वारा भाषा का विकास होता है, मनुष्य एक-दूसरे के साथ अपने भाव और विचारों को अभिव्यक्त करके समाज में जो लोग होते हैं उनके साथ अंतर्क्रिया करता है। वायगोत्स्की ने दर्शनशास्त्र, भाषा-विज्ञान, साहित्य एवं मनोविज्ञान में कार्य किया। उसका विचारों की उत्पत्ति तथा भाषा और शब्द निर्माण के साथ बहुत गहरा संबंध है।

3.6.1 विचारों एवं भाषा की उत्पत्ति - मनुष्य के मन में हर समय कई भाव उत्पन्न होते रहते हैं जिसे वह अपने विचारों के माध्यम से भाषा का प्रयोग करके अभिव्यक्त करता है। यह एक शाब्दिक प्रक्रिया हो सकती है। वायगोत्स्की ने कहा है कि 2 वर्ष की अवस्था में यह क्रिया प्रारंभ हो जाती है। उसे अपने विचारों को एवं भाव को अभिव्यक्त करने के लिए कुछ शब्द मिल जाते हैं जिसकी सहायता से वह अपनी ज़रूरतें एक-दूसरे के साथ बांटते हैं। भाषा के जरिए वे अपनी ज़रूरत को एक दूसरे के साथ अभिव्यक्त करते हैं। इस आयु तक आते-आते उसके विचारों की संरचना का निर्माण होने लगता है। उसमें तार्किक चिंतन एवं मनन करने के भाव उत्पन्न होने लगते हैं। सर्वप्रथम भाषा का प्रयोग केवल सामाजिक अंतर क्रिया के उद्देश्य से होता है लेकिन उसकी वैचारिक संरचना का निर्माण भी होने लगता है।

3.6.2 संप्रत्यय निर्माण - जब बच्चा यह महसूस करने लगता है कि प्रत्येक चीज का कोई ना कोई एक नाम होता है और जब भी वह कोई नई वस्तु को देखता है तो उसे ऐसा महसूस होने लगता है कि इसका क्या नाम हो सकता है? जब उसे वस्तु का नाम सोचने में कठिनाई होती है तब वह अपने आसपास के लोगों से या परिवार के सदस्यों से पूछता है। इस प्रकार उसमें आरंभिक शब्द का निर्माण होने लगता है। संप्रत्यय को ध्यान में रखकर उनके शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया बनते जाती है। शब्द किसी भी भाषा की एक छोटी इकाई होती है और प्रत्येक भाषा में शब्द का एक भंडार होता है और ऐसे अनेक शब्द होते हैं जिनको बच्चा पहली बार सुनता है

और इसका प्रयोग अपने अनुभव के आधार पर स्वयं से करने लगता है। जहां तक शब्द निर्माण की बात है वह बच्चे को प्रारंभिक अवस्था में महसूस होने लगता है।

3.7 वायगोत्स्की के भाषा संबंधी सिद्धांतों के बारे में विस्तार से बताया है। वायगोत्स्की का सिद्धांत भाषा को तीन भागों में विभाजित किया है:

- सामाजिक वाक
- मूक अन्तः वाक और
- निजी वाक।

3.7.1 सामाजिक वाक् : इसमें वह भाषा शामिल है जो बच्चा समाज या अपने आसपास के लोगों के साथ संप्रेषण करता है ताकि वह अपनी जरूरतों को पूरा कर सके। यह वाक् लगभग 2 वर्ष की आयु से शुरू होता है।

3.7.2 मूक अन्तः वाक् : यह वह भाषा है जो बच्चा स्वयं से बात करता है, लेकिन कोई दूसरा व्यक्ति उसको नहीं सुन पाता। यह वाक् लगभग 3 साल की आयु से शुरू होता है और इससे बच्चा अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए स्वयं को निर्देशित करने का काम करता है।

3.7.3 निजी वाक् : यह वाक् उस समय शुरू होता है जब बच्चा स्वयं से बात करता है और बौद्धिक कार्यों में भाग लेता है। इसमें बच्चा स्वयं से बात करता है लेकिन दूसरे व्यक्ति उसको सुन सकते हैं। यह वाक् लगभग 3 साल की आयु से शुरू होता है।

वायगोत्स्की के अनुसार, इन भिन्न वाक्यों का उपयोग भाषा की वैचारिक संरचना बनाने में मदद करती है।

3.8 सारांश

आज के युग में हमारे देश के लोग दूसरे देश के लोगों से मिलते-जुलते हैं। साथ ही आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में भी अपना स्थान बनाए रख रहे हैं। इसलिए हमें उनकी संस्कृति को समझने और हमारी संस्कृति को उनके साथ साझा करने के लिए बहुभाषिकता का होना अत्यंत जरूरी समझा गया है। आज के प्रासंगिक युग में एक भाषा, एक समाज, एक संस्कृति को कोई जगह नहीं मिल पा रही है बल्कि बहुभाषा, बहुसंस्कृति को अहम् माना जा रहा है। हमें यह स्वीकार करना ही होगा कि यह सभी तत्व बच्चों के भावी जीवन से जुड़े हुए हैं इसलिए बच्चों की भाषा सम्बन्धी समझ को मजबूत करने के लिए उनको स्कूल से जोड़ना जरूरी है। इस इकाई में मुख्य मुद्दों पर चर्चा की गयी – सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बहुभाषिकता, नोम चोमस्की की

बहुभाषिक दृष्टिकोण के अंतर्गत जन्मजात क्षमता, वातावरण का महत्व, आपस में संबंध, भाषा अधिग्रहण यंत्र (LAD), सार्वभौमिक व्याकरण। साथ ही वायगोत्स्की का बहुभाषिक दृष्टिकोण- अनुकरणीय सीखना, निर्देशात्मक सीखना, सहकारी अधिगम, लिव वायगोत्स्की के अनुसार भाषा के तीन प्रकार - विचारों एवं भाषा की उत्पत्ति, संप्रत्यय निर्माण, वायगोत्स्की का सिद्धांत भाषा को तीन भागों में विभाजित किया है- सामाजिक वाक, मूक अन्तःवाक, निजी वाक आदि।

3.9 शब्दावली

अन्तःवाक – जब इंसान खुद से ही बात करता है और अपने तंत्रिका तंत्र को विकसित करके उसके द्वारा बाकी दुनिया से संवाद स्थापित करते हैं उसे अन्तः वाक् कहा जाता है।

निर्देशात्मक सीखना - निर्देशात्मक शब्द/कार्य शब्द वे शब्द या वाक्यांश हैं जो आपको बताते हैं कि क्या करना है।

अनुकरणीय - जब कोई चीज/ वस्तु / घटना अच्छी होती है तो सब उसकी नकल करना चाहते हैं या उसके जैसा होने की कोशिश करते हैं यह अनुकरणीय प्रक्रिया है।

बहुभाषिकता - बहुभाषिकता में जब एक व्यक्ति द्वारा या एक सामाजिक समूह के भीतर एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग किया जाता है।

संज्ञानात्मक विकास - यह एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसमें विचारों के द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। संज्ञानात्मक विकास शब्द का प्रयोग मानसिक विकास के विस्तृत अर्थ में किया जाता है।

सार्वभौमिक – सम्पूर्ण विश्व में फैला हुआ।

3.10 अधिगम प्रतिफल

भाषा सीखने एवं सिखाने की बहुभाषिक दृष्टि की संकल्पना को समझ सकने में सक्षम होगा।

चॉमस्की के बहुभाषिक दृष्टिकोण को जान सकने में सक्षम होगा।

वायगोत्स्की के बहुभाषिक दृष्टिकोण को जान सकने में सक्षम होगा।

चॉमस्की एवं वायगोत्स्की के बहुभाषिक दृष्टिकोण में अंतर कर सकने में सक्षम होगा।

वायगोत्स्की के भाषा के तीन भागों का अध्ययन कर सकने में सक्षम होगा।

3.11 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

अति लघुत्तरीय प्रश्न

1. नोम चोमस्की कहाँ के मनोवैज्ञानिक थे ?

- (अ) रूस (ब) अमेरिका
(स) भारत (द) इंडोनेशिया

2. "बालक में व्याकरण एवं भाषा को सीखने की क्षमता जन्मजात होती है।" यह कथन किसने कहा है -

- (अ) चोमस्की के अनुसार (ब) स्किनर के अनुसार
(स) वायगोत्स्की के अनुसार (द) इनमें से कोई नहीं

3. प्राचीन काल से ही भारत एक -

- (अ) एक भाषी देश रहा है। (ब) बहुभाषी देश रहा है। (स) दोनों

4. चोमस्की के अनुसार प्रत्येक बच्चे में ये होता है -

- (अ) LBD (ब) LED (स) LAD (द) LPD

5. किसने एक सांस्कृतिक और जैव-सामाजिक विकास के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है

- (अ) वायगोत्स्की (ब) चोमस्की (स) स्किनर (द) वूड्वर्थ

6. वायगोत्स्की का सिद्धांत भाषा को कितने भागों में विभाजित किया है

- (अ) तीन (ब) चार (स) दो (द) इनमें से कोई नहीं

7. "भाषा यंत्र यह सामाजिक अंतर क्रिया के द्वारा अपनी ही एक संस्कृति से दूसरे संस्कृति तक स्थानांतरित करता है जो बहुभाषिकता के लिए फायदेमंद है।" यह कथन किसने दिया -

- (अ) वायगोत्स्की (ब) चोमस्की (स) स्किनर (द) वूड्वर्थ

8. LAD कहाँ का एक भाग होता है?

- (अ) दिमाग (ब) हस्त (स) गला (द) इनमें से कोई नहीं

9. वायगोत्स्की कहाँ के मनोवैज्ञानिक थे?

- (अ) फ्रांस (ब) रूस (स) सोवियत (द) इनमें से कोई नहीं।

10. वायगोत्स्की के अनुसार बालक में भाषा कितने प्रकार के भाषण द्वारा सीखी जाती है-

- (अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर कुंजी

1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5 (अ) 6 . (अ) 7. (अ) 8. (अ) 9. (स) 10. (अ)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सीखने सिखाने की बहुभाषिकता पर टिप्पणी लिखिए।
2. भाषा में संप्रत्यय निर्माण के महत्व को समझाइए।
3. वायगोत्स्की के अनुसार बालक में भाषा कितने प्रकार की होती है ?

4. बहुभाषिकता को परिभाषित कीजिए।
5. कक्षा कक्ष में बहु-भाषिकता को कैसे विकसित किया जा सकता है?
6. विचारों एवं भाषा की उत्पत्ति को विश्लेषित कीजिए।
7. सहकारी अधिगम क्या है?
8. बाहरी एवं आंतरिक भाषण क्या है?
9. अनुकरणीय सीखना को परिभाषित कीजिए।
10. निर्देशात्मक सीखना किसे कहते हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वायगोत्स्की ने एक सांस्कृतिक और जैव-सामाजिक विकास के सिद्धांत का प्रतिपादन किया इस पर निबंध लिखिए।
2. चाम्स्की के बहुभाषिक दृष्टिकोण को विस्तार से लिखिए।
3. बहुभाषिकता की विशेषताओं पर रोशनी डालें।
4. चाम्स्की और वायगोत्स्की के बहुभाषिक दृष्टिकोण में अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. चाम्स्की के भाषा अधिग्रहण यंत्र (LAD) पर निबंध लिखिए।

3.12 सन्दर्भ

चतुर्वेदी,शिखा,हिन्दी शिक्षण,आर लाल बुक डिपो,मेरठ।

डी.डी.ई.,हिन्दी भाषा शिक्षण,एम ए एन यू यू,हैदराबाद

<https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/1586>

<https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/BhashaShikshanBhag-II.pdf>

इकाई – 4 भारतीय भाषा दृष्टिकोण

इकाई की रूपरेखा

- 4.1 प्रस्तावना
- 4.2 उद्देश्य
- 4.3 पाणिनि का भारतीय भाषा दृष्टिकोण
- 4.4 पाणिनि और आधुनिक भाषा विज्ञान
- 4.5 भाषा यानी व्यक्त वाणी
- 4.6 कामता प्रसाद गुरु
- 4.7 किशोरी दास वाजपेयी
- 4.8 सारांश
- 4.9 शब्दावली
- 4.10 अधिगम प्रतिफल
- 4.11 इकाई के अंत की गतिविधियाँ
- 4.12 सन्दर्भ

4.1 प्रस्तावना

भाषा वह वस्तु है जिसके माध्यम से हम विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं और साथ ही हम बातचीत में ध्वनियों का भी प्रयोग करते हैं। भाषा औष्ठ, जिह्वा से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों का एक समूह है। व्यक्ति नाद की वह समष्टि है इसकी सहायता से किसी एक समाज या देश के लोग अपने भाव को विचारों को एक दूसरे के साथ प्रकट करते हैं। सामान्यतः विचारों का आदान-प्रदान ही भाषा है। भाषा के दृष्टिकोण के अंतर्गत भाषा का निर्माण, इसका विकास यही हमारी संस्कृति, सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान है। हमारे पृथ्वी में हजारों प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं।

प्रयोग में लाई गयी भाषा को लिपि रूप में व्यक्त करने के लिए कई लेखन पद्धतियों की सहायता लेनी पड़ती है। भाषा और लेखन, भाव अभिव्यक्तीकरण के दो अनिवार्य घटक हैं। एक

भाषा को एक लिपि में लिखी जा सकती है और दो या अधिक भाषाओं की एक लिपि हो सकती है। उदाहरण- पंजाबी, गुरुमुखी, मराठी, गुजराती, संस्कृत आदि सभी देवनागरी लिपि में लिखी जा सकती है।

परिभाषा

डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा है कि, "भाषा मुख से उच्चरित उस परंपरागत, सार्थक एवं व्यक्त ध्वनि संकेत को व्यक्त को कहते हैं जिसकी सहायता से मानव में विचार एवं भाव को आदान-प्रदान करते हैं तथा जिसको वह स्वेच्छानुसार अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।"

डॉ सरयू प्रसाद अग्रवाल के अनुसार, "भाषा वाणी द्वारा व्यक्त स्वच्छंद प्रतिकों की वह रीतिबद्ध पद्धति है जिससे मानव समाज अपने भाव का परस्पर आदान-प्रदान करते हुए एक दूसरे को सहयोग देता है।"

मैक्स मूलर के अनुसार, "भाषा और कुछ नहीं केवल मानव की चतुर बुद्धि द्वारा अविष्कृत एक ऐसा उपाय है जिसकी मदद से हम अपने विचार सरलता और तत्परता से दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं और चाहते हैं कि इसकी व्याख्या प्रकृति की उपज के रूप में नहीं बल्कि मनुष्यकृत पदार्थ के रूप में करना उचित है।"

इन्हीं भाषा के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर ऐसे ही तीन प्रमुख भारतीय शिक्षाविदों ने भी भाषा के दृष्टिकोण को विश्लेषित किया है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप -

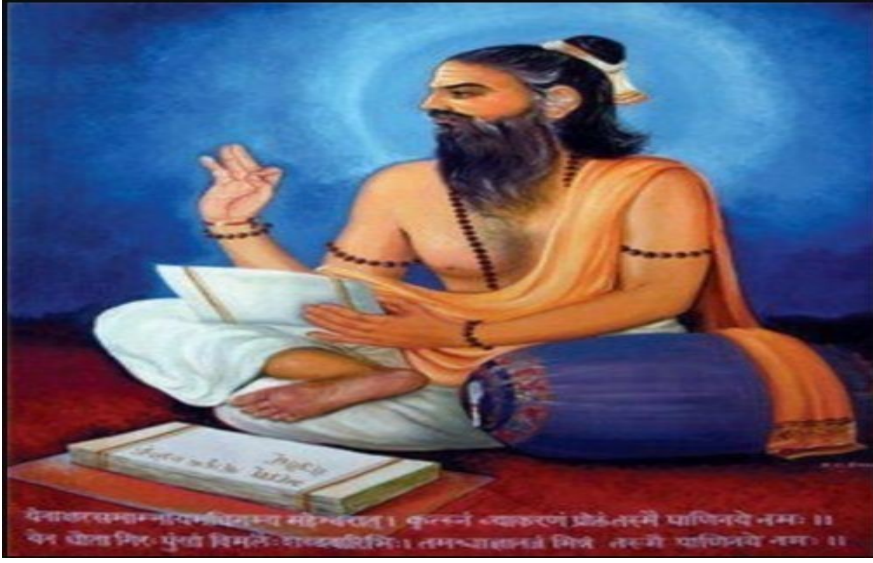
- भारतीय भाषा के दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।
- पाणिनि के भारतीय भाषा के दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।
- कामता प्रसाद गुरु के भारतीय भाषा के दृष्टिकोण को जान सकेंगे।
- किशोरी दास वाजपेयी के भारतीय भाषा के दृष्टिकोण को जान सकेंगे।
- तीनों भाषाविदों के भारतीय भाषा के दृष्टिकोण में अंतर बता सकेंगे।

4.3 पाणिनि का भारतीय भाषा दृष्टिकोण

पाणिनि वास्तव में संस्कृत भाषा के महान वैयाकरण हैं, जिन्होंने व्याकरण शास्त्र को संरचित किया और उसे संपूर्णता और व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया। उनका अभ्यास गंधार क्षेत्र

में हुआ था, जो आधुनिक लहुर में स्थित है। पाणिनि का जन्म शलातुर नामक ग्राम में हुआ था, जो वर्तमान में लहुर के निकट स्थित है। उनके पिता का नाम पणिन और माता का नाम दाक्षी था। पाणिनि ने अपने गुरुओं के ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया और उनके भेदों को समझा। इस प्रकार, उन्हें लगा कि व्याकरण शास्त्रों को व्यवस्थित और संरचित करने की आवश्यकता है।

उन्होंने अपने अद्वितीय कार्य "अष्टाध्यायी" के माध्यम से इस कार्य को पूरा किया, जो



व्याकरण का महत्वपूर्ण और समृद्ध ग्रंथ है। पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' में संस्कृत भाषा के नियमों, वाक्य विन्यास, संज्ञा, कारक, समास, तत्सम-तद्भव शब्दों के निर्माण, धातु और तद्भव के लक्षण, लिंग, वचन, कार्य,

उपसर्ग, प्रत्यय, विभक्ति, अव्यय, समास, वाक्य प्रकार, वाच्य, आदि के सिद्धांतों का विवेचन किया गया है। उन्होंने संस्कृत भाषा के व्याकरण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पाणिनि का व्याकरण अष्टाध्यायी का महत्वपूर्ण योगदान संस्कृत भाषा के विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। उनके व्याकरण को संज्ञा-धातु-क्रिया-समास-संधि-तत्पुरुष-अव्ययीभाव के रूप में विस्तार से वर्णित किया गया है।

पाणिनि का व्याकरण उस समय के समाज, सांस्कृतिक और भाषाई परिपेक्ष्य में एक अद्वितीय योगदान है। उनके अष्टाध्यायी में व्याकरण के नियमों, विधियों और व्याकरणीय अवधारणाओं का सुव्यवस्थित संग्रह है। इसके अलावा, उन्होंने सामान्य भाषाओं में अनुवाद करने के लिए विशेष नियमों का उल्लेख भी किया है।

पाणिनि के व्याकरण का प्रयोग न केवल संस्कृत भाषा को समझने में मदद करता है, बल्कि यह भाषा विज्ञान, भाषा-अध्ययन और अनुसंधान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण है। उनका

व्याकरण अद्वितीय है और उनकी विद्वत्ता को समझने के लिए आज भी उन्हें संस्कृत भाषा के प्रामाणिक स्रोत के रूप में माना जाता है।

पाणिनि एक संस्कृत ज्ञाता थे और उन्होंने ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान एवं स्वर विज्ञान पर विस्तृत सिद्धांत का प्रतिपादन किया। भाषा विज्ञान के जन्मदाता के रूप में पाणिनि को पूरे विश्व में जाना जाता है। संस्कृत शब्द का शाब्दिक अर्थ श्रेष्ठ है क्योंकि यह माना जाता है कि यह देवों की भाषा है और इस देवों की भाषा के संदर्भ में व्याकरण या भाषा विश्लेषण है।

4.4 पाणिनि और आधुनिक भाषा विज्ञान

आधुनिक भाषा विज्ञान में भाषा की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास और उसके विभिन्न पहलुओं का वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन भाषा के संरचना, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ, भाषा उपयोग और भाषा संबंधित विभिन्न प्रकार के गतिविधियों को समझने में मदद करता है।

आधुनिक भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि भाषा विज्ञान व्याकरण से भिन्न है जबकि व्याकरण में किसी भाषा का कार्यात्मक अध्ययन किया जाता है, भाषा विज्ञानी भाषा का अत्यंत व्यापक अध्ययन करता है, जिसमें भाषा के सभी पहलुओं को शामिल किया जाता है।

आधुनिक भाषा विज्ञान का महत्व पश्चिमी विद्वानों के मस्तिष्क की देन के रूप में जाना जाता है। यह विज्ञान संस्कृत-साहित्य और साहित्यिक ग्रंथों में भी पाए जाने वाले भाषा, विचार, और विषयों के सूक्ष्म विवेचन के आधार पर भी आधारित है। इसके लिए संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध भाषा-विचार-विषयक सामग्री आधुनिक भाषा विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण शिक्षाग्रंथ की भूमिका निभाती है।

इस प्रकार, आधुनिक भाषा विज्ञान और पाणिनि के कार्य के बीच गहरा संबंध है, क्योंकि उन्होंने भाषा के सिद्धांतों और विधानों को समझने और उन्हें सुगमता से समझने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस तरह, पाणिनि का अध्ययन आधुनिक भाषा विज्ञान के लिए भी महत्वपूर्ण है।

4.5 भाषा यानी व्यक्त वाणी

भाषा मानव समाज में एक महत्वपूर्ण साधन है जिसके माध्यम से विचारों, भावनाओं और अभिव्यक्तियों का आदान-प्रदान होता है। पशु-पक्षियों के लिए ध्वनियों का उपयोग उनके

भाव को प्रकट करने के लिए होता है, जो उनके आवाज और अभिव्यक्ति में पाया जाता है। इस प्रकार, पशु-पक्षियों के लिए ध्वनियाँ एक प्राकृतिक भाषा का रूप लेती हैं।

हालांकि, मानव भाषा की विशेषता यह है कि वह व्यक्तिवाचक होती है। भाषा के रूप में, “मानव वाक्” स्पष्टता, संवेदनशीलता, और समझदारी के साथ भावनाओं का संवहन करती है। यह भाषा विज्ञान के प्रेरणास्त्रोत के रूप में काम करती है, जो भाषा के अर्थ, संरचना और प्रयोग को समझने का प्रयास करता है।

अतः भाषा मानव समाज के लिए अधिक महत्वपूर्ण होती है, जबकि पशु-पक्षियों के लिए ध्वनियाँ उनके भावों को प्रकट करने के लिए होती हैं। भाषा व्यक्ति-वाचक होती है जो व्यक्ति के अभिव्यक्तियों को समझने में सहायक होती है। अतः भाषा मानव समाज में संवेदनशीलता और समझ के माध्यम के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

4.6 कामता प्रसाद गुरु



हिंदी भारत मां के माथे की बिंदी है। यह कहावत उन प्रेमियों के लिए है जो हिंदी का आदर सत्कार करते हैं। जिस प्रकार माथे की बिंदी से व्यक्ति का व्यक्तित्व पूर्ण हो जाता है उसी प्रकार हिंदी भी भारत को पूर्णता की ओर ले जाती है। भाषा के व्याकरण के बिना कोई भी भाषा अधूरी है और

इसका श्रेय जबलपुर के कामता प्रसाद गुरु को जाता है। उनका जन्म सागर में हुआ परंतु उनका संपूर्ण जीवन जबलपुर में ही बीता। हिंदी के महान वैयाकरण आचार्य कामता प्रसाद गुरु द्वारा लिखी गई हिंदी व्याकरण को विद्वानों ने भी मान्यता दी। गुरुजी का जन्म सागर के परकोटा मोहल्ले में 24 दिसंबर 1875 को पंडित गंगा प्रसाद गुरु के यहां हुआ था। गुरुजी की प्रारंभिक

शिक्षा सागर में हुई। उन्होंने हाईस्कूल से एंट्रेंस की परीक्षा सन 1892 में उत्तीर्ण की। माता-पिता की एकमात्र संतान होने के कारण उच्च शिक्षा के लिए वह बाहर नहीं जा सके।

हिंदी काव्य जगत में पद्य पुष्पवली के माध्यम से प्रविष्ट हुई "बेटी की विदा" गुरुजी की अत्यंत मर्म स्पर्शी रचना है। इसमें मनोविज्ञान के धरातल पर मात्र हृदय की सूक्ष्मतिसूक्ष्म अभिव्यंजना चित्रित हुई है। इस रचना को पाठकों ने सर्वाधिक पसंद किया है।

1926 में लगभग दीक्षितपुरा में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. अभिजात कृष्ण त्रिपाठी बताते हैं कि आचार्य कामता प्रसाद गुरु ने 1913 में ही हिंदी व्याकरण की पुस्तक लिखी थी जिसे प्रख्यात हिंदी विद्वानों की समिति ने सर्वसम्मति से 1920 में मान्यता प्रदान की। इनकी व्याकरण को मान्यता प्रदान करने के लिए 14 अक्टूबर 1920 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के सदस्य द्वारा एक कमेटी बनाई गई थी। उनकी प्रसिद्धि इतनी थी कि मोहल्ले के पास स्थित तिराहा उनके नाम से मशहूर हो गया था जो आज भी गुरु तिराहा के नाम से जाना जाता है। गुरुजी ने हिंदी के लिए जो कार्य किया उसने जबलपुर का गौरव बनाया।

कामता प्रसाद गुरु एक उत्कृष्ट हिंदी व्याकरणकार थे, जिन्होंने अपने योगदान के माध्यम से हिंदी भाषा के व्याकरण को महत्वपूर्ण और सर्वाधिक प्रामाणिक बनाया। उन्होंने बालसखा और सरस्वती जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया और हिंदी व्याकरण के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण काम किया। उनकी लेखनी से निकली हिंदी व्याकरण सामग्री को काशी में प्रकाशित किया गया, जिसे हिंदी भाषा का सबसे महत्वपूर्ण और प्रामाणिक व्याकरण माना जाता है।

कामता प्रसाद गुरु के योगदान के कारण ही हिंदी व्याकरण को स्वर्ण युग का उदाहरण माना जाता है। उनके द्वारा लिखित व्याकरण पुस्तकें बहुत प्रसिद्ध हैं और विदेशों में इसके अनुवाद भी किए गए हैं। उनके व्याकरण सिद्धांतों ने हिंदी भाषा को मजबूती और समृद्धि दी, जिससे उसका प्रयोग विविध क्षेत्रों में बढ़ा।

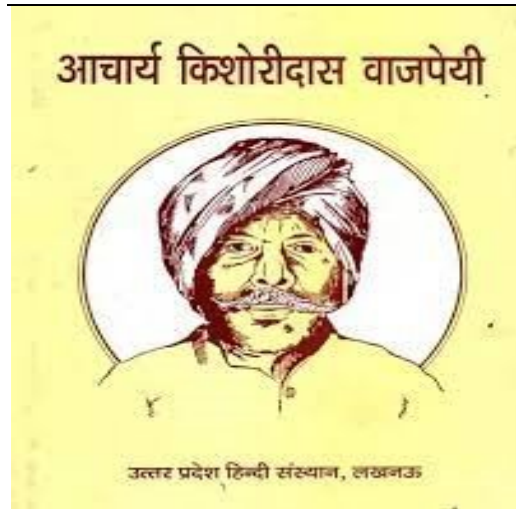
कामता प्रसाद गुरु की पहली हिंदी व्याकरण पुस्तक थी जिसका आधार उनके पहले से ही प्रकाशित किए गए कामों पर था, जो कि उनके व्याकरण के शोध और अध्ययन का परिणाम थे। इससे पहले, उनकी दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं, लेकिन उन्हें व्याकरण शोध के क्षेत्र में प्रसिद्धि नहीं मिली थी। उनकी प्रमुख पुस्तक के प्रकाशन के बाद ही उन्हें व्याकरण शोध के क्षेत्र में मान्यता प्राप्त हुई।

गुरु के अध्ययन ने यह धारणा दिलाई कि व्याकरण एक शोध का विषय है, जो कि अन्य भाषाओं के व्याकरण पर भी प्रभाव डालता है। उन्होंने अंग्रेजी व्याकरण का भी विस्तृत अध्ययन

किया और उसका प्रभाव उनकी पुस्तक पर दिखाई दिया। इस विषय में उनकी पुस्तक ने व्याकरण अनुसंधान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया।

उनकी विरासत के सच्चे उत्तराधिकारी के रूप में किशोरी दास वाजपेयी का उल्लेख करना उनके महत्वपूर्ण योगदान का सम्मान करता है, जिन्होंने उनकी विचारधारा और काम को आगे बढ़ाने का काम किया।

4.7 किशोरी दास वाजपेयी



किशोरी दास का जन्म सन् 1898 में रामनगर जिला कानपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उन्होंने लाहौर से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वाजपेयी जी के जीवन पर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के कृपापूर्ण प्रोत्साहन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आचार्य द्विवेदी जी ने हिंदी भाषा के व्याकरण सम्मत परिष्कार का जो आंदोलन चलाया था उस रथ की लगाम को वाजपेई जी जीवन पर्यंत थामें रहे थे। वाजपेयी जी पहले ऐसे भाषाविद थे जिन्होंने हिंदी व्याकरण के

अंग्रेजी आधार को अस्वीकार कर उसे संस्कृत के आधार पर प्रतिष्ठित किया।

संस्कृत का आधार स्वीकार करते हुए उन्होंने हिंदी भाषा की जो अपनी मूल प्रकृति है उसकी न केवल रक्षा की बल्कि उसका वैज्ञानिक आधार दृढता से प्रतिपादित भी किया। कुछ सहृदय एवं मूल्यांकन करने वाले विद्वानों में उन्हें "हिंदी का पाणिनि" तक घोषित किया है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने कह कर उनसे हिंदी शब्द अनुशासन लिखवा लिया। वाजपेयीजी ने "सुदामा" नाम से नाटक भी लिखा।

'तरंगिणी' नामक संग्रह में उनकी ब्रज-कविताएं और दोहें संकलित है। "हिंदी शब्दानुशासन" तो उनके जीवन का मुख्य ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त इसी विषय पर उनकी एक और कृति राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण भी है। वाजपेयी जी के भाषा शास्त्रीय स्वरूप को जानने के लिए उनकी अन्य पुस्तक भारतीय भाषा विज्ञान का अध्ययन आज की पीढ़ी के लिए अहम् है।

किशोरी दास वाजपेयी हिंदी और संस्कृत के एक प्रमुख साहित्यकार, व्याकरण आचार्य और विद्वान थे। उन्हें हिंदी और संस्कृत के क्षेत्र में उनकी महानता के लिए प्रसिद्धी प्राप्त है। उन्हें हिंदी के "आधुनिक पाणिनि" के रूप में जाना जाता है क्योंकि उनका योगदान हिंदी व्याकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

किशोरी दास वाजपेयी ने हिंदी और संस्कृत भाषा, साहित्य और व्याकरण के क्षेत्र में अपने विशेष ज्ञान का प्रकटीकरण किया। उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की और शिक्षा के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया। उनकी शैक्षिक योग्यता और विद्वत्ता का परिचय वे अपने शिक्षानुभवों के माध्यम से दिलाते थे।

किशोरी दास वाजपेयी के योगदान ने हिंदी और संस्कृत भाषा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान को प्राप्त किया है और उन्हें उनके योगदान की सराहना और स्मृति में रखा जाता है।

किशोरी दास वाजपेयी स्वतंत्रता संग्राम के समय में हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले थे। उन्होंने हिंदी भाषा के विज्ञान और व्याकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुसंधान किए और उसे समृद्ध किया। उनका काम न केवल हिंदी भाषा के लिए महत्वपूर्ण रहा, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज को भी एक साथ मिलाकर रखने के लिए भी योगदान दिया। उनकी साझेदारी समाज के भाषा और सांस्कृतिक एकता को मजबूत करने में काम आई। इस प्रकार, उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

किशोरी दास वाजपेयी का योगदान भाषा विज्ञान, व्याकरण और शब्दशास्त्र में महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने भाषा के अन्वेषण और विश्लेषण में अपने योगदान के माध्यम से हिंदी को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में प्रोत्साहित किया। उनकी विचारधारा और लेखन कार्य अद्भुत था और उन पर अंग्रेजी का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा, जिससे उनके कार्य को भारतीय दृष्टि से समझा जा सकता है।

किशोरी दास वाजपेयी को हिंदी का प्रथम वैज्ञानिक भी कहा जाता है, जो कि उनके अनुसंधान और विश्लेषण के माध्यम से भाषा विज्ञान को महत्वपूर्ण दृष्टिकोण से समझने में मदद करता है। उनका योगदान हिंदी भाषा के विकास में बहुत महत्वपूर्ण रहा है, खासकर भाषा विज्ञान, व्याकरण, साहित्य, समालोचना और पत्रकारिता जैसे क्षेत्रों में।

उनके कृतित्व एवं समृद्ध विचारधारा के कारण उन्होंने भाषा विज्ञान और संबंधित क्षेत्रों में एक अद्भुत क्रांति ला दी। उनके अद्भुत कर्मठ व्यक्तित्व ने हिंदी भाषा और संस्कृति को समृद्धि और प्रगति की राह पर आगे बढ़ाया।

आपकी अच्छी हिंदी, अच्छी हिंदी का नमूना, हिंदी शब्दानुशासन, लेखन कला, ब्रजभाषा का व्याकरण, राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण, हिंदी शब्द मीमांसा, हिंदी की वर्तनी,

शब्द विश्लेषण, भारतीय भाषा विज्ञान आदि प्रमुख पुस्तकों को उन्होंने शुद्ध भारतीय दृष्टि से लिखा।

यह व्यक्ति हिंदी को स्वतंत्र भाषा के रूप में विकसित करने के प्रयास में सक्रिय रहा है, जिससे भाषा का प्रचलन और उसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ सके। इनके लेखन और शोध काम में मानव धर्म, मीमांसा, सुभाष चंद्र बोस, आदि के अनुभव और संस्कृति के पांच अध्यायों का उल्लेख है, जो उनके विचारों और अनुसंधान के महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाते हैं।

उन्होंने हिंदी व्याकरण को संस्कृत के आधार पर भी प्रतिष्ठित किया है, जिससे भाषा के वैज्ञानिक और तात्त्विक पहलुओं को समझा और प्रकट किया जा सके। उन्हें हिंदी के पाणिनि तक घोषित किया जाना एक महत्वपूर्ण गौरव है, जिससे उनके योगदान की महत्व का पता चलता है।

4.8 सारांश

व्यक्ति नाद की वह समष्टि है जिसकी सहायता से किसी एक समाज या देश के लोग अपने भाव को, विचारों को एक दूसरे के साथ प्रकट करते हैं। सामान्यतः विचारों का आदान-प्रदान ही भाषा है। भाषा के दृष्टिकोण के अंतर्गत भाषा का निर्माण, इसका विकास यही हमारी संस्कृति, सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान है। हमारे पृथ्वी में हजारों प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं।

प्रयोग में लाई गयी भाषा को लिपि रूप में व्यक्त करने के लिए कई लेखन पद्धतियों की सहायता लेनी पड़ती है। भाषा और लेखन, भाव अभिव्यक्तीकरण के दो अनिवार्य घटक हैं। एक भाषा को एक लिपि में लिखी जा सकती है और दो या अधिक भाषाओं की एक लिपि हो सकती है। इस इकाई के अंतर्गत मुख्य मुद्दों पर चर्चा की गयी है – पाणिनि का भारतीय भाषा दृष्टिकोण, पाणिनि और आधुनिक भाषा विज्ञान, भाषा यानी व्यक्त वाणी, कामता प्रसाद गुरु एवं किशोरी दास वाजपेयी आदि।

4.9 शब्दावली

समष्टि - एक ऐसी चीज़ जो संपूर्ण होते हुए भी, जिसमें कई अलग-अलग भाग होते हैं।

मानव वाक् - मानवों में ध्वनि वाक्-यंत्र कंठ नलिका द्वारा उत्पन्न होती है। शरीर का यह भाग मानव वाक्-यंत्र कहलाता है।

अभिव्यंजना - अक्षरों एवं शब्द-संकेतों के सूक्ष्म प्रयोग द्वारा भावों-विचारों का सुंदर अभिव्यक्तिकरण ।

मीमांसा - किसी भी विषय पर गहराई/गहनता से किए गए विचार-विमर्श, चिंतन-मनन को मीमांसा कहते हैं ।

शब्दानुशासन - अगर शब्दों को अनुशासन में नहीं रखेंगे तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। शब्दों को सही जगह लिखने और रखने को शब्दानुशासन कहते हैं।

प्रकटीकरण - भाव और विचारों को अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया प्रकटीकरण कहलाती है।

विश्लेषणात्मक - किसी विषय-वस्तु में स्थित विचारों को अलग-अलग करना विश्लेषणात्मक कहलाता है।

अनुसंधान - किसी समस्या के व्यवस्थित अध्ययन करने को या खोज करने या अन्वेषण की प्रक्रिया को जो किसी समस्या से सम्बन्धित ज्ञान को बढ़ाने के लिए निष्पक्ष प्रयास किया जाता है उसे अनुसंधान कहते हैं।

4.10 अधिगम प्रतिफल

भारतीय भाषा के दृष्टिकोण को समझ सकने में सक्षम होगा ।

पाणिनि के भारतीय भाषा के दृष्टिकोण को समझ सकने में सक्षम होगा ।

कामता प्रसाद गुरु के भारतीय भाषा के दृष्टिकोण को जान सकने में सक्षम होगा ।

किशोरी दास वाजपेयी के भारतीय भाषा के दृष्टिकोण को जान सकने में सक्षम होगा ।

तीनो भाषाविदों के भारतीय भाषा के दृष्टिकोण में अंतर बता सकने में सक्षम होगा ।

4.11 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

अति लघुत्तरीय प्रश्न

1. पाणिनि का जन्म कहाँ हुआ था?

(अ) शलातुर

(ब) लातूर

(स) झाँसी

(द) पालनपुर

2. पाणिनि के पिता का नाम क्या था?

(अ) प्रजापति

(ब) रामकृष्ण

(स) पणिन

(द) इनमें से कोई नहीं

3. पाणिनि की प्रसिद्ध पुस्तक का नाम क्या था?

- (अ) अष्टाध्याय (ब) त्रिअध्याय
(स)दोनों (द) इनमें से कोई नहीं

4. कामता प्रसाद गुरु एक उत्कृष्ट हिंदी के -

- (अ) पत्रकार (ब) साहित्यकार
(स) व्याकरणकार (द) शिक्षक

5. "भाषा वाणी द्वारा व्यक्त स्वच्छंद प्रतिकों की वह रीतिबद्ध पद्धति है जिससे मानव समाज में अपने भाव का परस्पर आदान-प्रदान करते हुए एक दूसरे को सहयोग देता है।" यह कथन किसने कहा -

- (अ) डॉ सरयू प्रसाद अग्रवाल (ब) चोमस्की
(स) स्किनर (द) वूड्वर्थ

6. किस ने "सुदामा" नाम से नाटक लिखा?

- (अ) किशोरी दास वाजपेयी (ब)पाणिनि
(स) कृष्ण प्रसाद (द) इनमें से कोई नहीं

7. कामता प्रसाद गुरु का जन्म कहाँ हुआ?

- (अ)ग्वालियर (ब) जबलपुर
(स) सागर (द) सतना

8. "हिंदी का पाणिनि" किसे घोषित किया है?

- (अ) जयशंकर प्रसाद (ब) किशोरी दास वाजपेयी
(स) प्रेमचंद (द) इनमें से कोई नहीं

9. कामता प्रसाद गुरु जी की अत्यंत मर्म स्पर्शी रचना है

- (अ)बिटिया रानी (ब) बड़े घर की बेटी
(स) बेटी की विदा (द) इनमें से कोई नहीं।

10. भाषा विज्ञान के जन्मदाता के रूप में किसे पूरे विश्व में जाना जाता है?

- (अ) कामता प्रसाद (ब) किशोरी दास वाजपेयी
(स) पाणिनि (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर कुंजी

1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5 (अ) 6 . (अ) 7. (स) 8. (ब) 9. (स) 10. (स)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा को प्रस्तावित करते हुए उसकी परिभाषा लिखें।

2. किशोरी दास वाजपेयी को हिंदी का प्रथम वैज्ञानिक क्यों कहा जाता है?
3. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किशोरी दास वाजपेयी के बारे में क्या कहा ?
4. किशोरी दास वाजपेई ने हिंदी और संस्कृत में अपनी विशिष्ट पहचान कैसे बनाई ?
5. कामता प्रसाद गुरु एक उत्कृष्ट हिंदी व्याकरणकार थे, टिप्पणी लिखें ।
6. तरंगिणी नामक संग्रह में क्या संकलित है?
7. कामता प्रसाद गुरु के अध्ययन ने उन्हें क्या धारणा दिलाई?
8. वाजपेयीजी ने किस नाम से नाटक लिखा?
9. कामता प्रसाद गुरु की पहली हिंदी व्याकरण पुस्तक के क्या आधार थे ?
10. भाषा वाणी को समझाईये ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. “पाणिनि का भारतीय भाषा दृष्टिकोण” इस पर निबंध लिखिए।
2. कामता प्रसाद गुरु और भाषा शिक्षण के दृष्टिकोण पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।
3. पाणिनि और आधुनिक भाषा विज्ञान पर रोशनी डालें ।
4. कामता प्रसाद गुरु और भाषा शिक्षण के दृष्टिकोण पर को विस्तृत रूप से समझाईये ।
5. कामता प्रसाद गुरु और पाणिनि के भाषा शिक्षण के दृष्टिकोण के अंतर को समझाईये।

4.12 सन्दर्भ

चतुर्वेदी,शिखा,हिन्दी शिक्षण,आर लाल बुक डिपो,मेरठ ।

डी.डी.ई.,हिन्दी भाषा शिक्षण, एम ए एन यू यू,हैदराबाद

<https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/1586>

<https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/BhashaShikshanBhag-II.pdf>

इकाई 5 – पाठ्यक्रम का परिचय व उद्देश्य

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 पाठ्यक्रम की परिभाषा, परिचय व उद्देश्य

5.4 हिंदी व बोलियों का अध्ययन, बोली की परिभाषा, वाणी और भाषा

5.5 पाठ्यक्रम का अर्थ, सिद्धांत, आधार एवं पाठ्यक्रम की विशेषताएं

5.6 पाठ्यक्रम के प्रकार प्रारंभिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में भाषा

5.7 सारांश

5.8 शब्दावली

5.9 अधिगम प्रतिफल

5.10 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

5.11 सन्दर्भ

5.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हमने पाठ्यक्रम की परिभाषा, उसके उद्देश्यों और विभिन्न दृष्टिकोणों के माध्यम से उसके स्वरूप को समझा। हमने जाना कि पाठ्यक्रम केवल एक विषय सूची नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक प्रक्रिया है, जो विद्यार्थियों को क्या, क्यों और कैसे सीखना है – इसका व्यवस्थित ढांचा प्रस्तुत करती है। पाठ्यक्रम का निर्माण शिक्षण के उद्देश्यों, मूल्यों, सामाजिक संदर्भ और बालक की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इसके साथ ही यह इकाई हमें यह भी बताती है कि एक अच्छा पाठ्यक्रम बालक की संज्ञानात्मक, भावात्मक और कौशलात्मक क्षमताओं के विकास में कैसे सहायक होता है। अंततः, यह स्पष्ट किया गया कि प्रभावी पाठ्यक्रम निर्माण शिक्षकों, शिक्षाविदों, अभिभावकों और नीति-निर्माताओं की सामूहिक भागीदारी से ही संभव है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- पाठ्यक्रम की परिभाषा व स्वरूप को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
 - पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांतों व कारकों की पहचान कर सकेंगे।
 - पाठ्यक्रम निर्माण में सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक आवश्यकताओं की भूमिका को समझ सकेंगे।
 - पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक के संबंध को विश्लेषित कर सकेंगे।
 - शिक्षण योजना निर्माण में पाठ्यक्रम की भूमिका को स्पष्ट रूप से व्याख्यायित कर सकेंगे।
-

5.3 पाठ्यक्रम की परिभाषा, परिचय व उद्देश्य

जॉन डीवी के अनुसार 'पाठ्यक्रम एक सतत पुनर्निर्माण है, जो बच्चे के वर्तमान अनुभव से सत्य के संगठित निकायों द्वारा दर्शाए गए अनुभव की ओर बढ़ता है जिसे हम अध्ययन कहते हैं। विभिन्न अध्ययन स्वयं अनुभव हैं - वे जाति के हैं। फ्रैंकलिन बॉबिट के मत में पाठ्यक्रम अनुभवों की पूरी श्रृंखला है, निर्देशित और अनिर्देशित दोनों, जो व्यक्ति की क्षमताओं को प्रकट करने से संबंधित हैं। हेरोल्ड ओ. रग्ग का भी मत है कि पाठ्यक्रम, अनुभवों और उद्यमों का एक क्रम है जो शिक्षार्थी के लिए अधिकतम जीवंतता रखता है। शिक्षार्थी को वह विकास प्रदान करता है जो जीवन की स्थितियों का सामना करने और उन्हें नियंत्रित करने में सबसे अधिक सहायक होता है। हॉलिस कैसवेल और कैम्बेल के अनुसार शिक्षा में पाठ्यक्रम उन सभी अनुभवों से बना है जो बच्चों को शिक्षकों के मार्गदर्शन में प्राप्त होते हैं। इस प्रकार, अध्ययन के क्षेत्र के रूप में माना जाने वाला पाठ्यक्रम किसी भी तरह की सीमित विषय-वस्तु का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि एक प्रक्रिया या कार्यविधि है। राल्फ टायलर का मानना है कि पाठ्यक्रम, विद्यालय द्वारा अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए नियोजित और निर्देशित सभी शिक्षण अनुभव हैं। इस तरह पाठ्यक्रम "न केवल इस संदर्भ में कि चीजें कैसी होनी चाहिए... बल्कि वास्तविक कक्षाओं में चीजें कैसी हैं" वर्णनात्मक पाठ्यक्रम को परिभाषित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकने वाला एक और शब्द अनुभव है। अनुभवात्मक पाठ्यक्रम क्रिया में पाठ्यक्रम की "झलक" प्रदान करता है।

रॉबर्ट गैग्ने, 1967 ने परिभाषा दी है कि पाठ्यक्रम सामग्री इकाइयों का एक क्रम है जिसे

इस तरह से व्यवस्थित किया जाता है कि प्रत्येक इकाई का अधिगम एक ही कार्य के रूप में पूरा किया जा सकता है, बशर्ते कि निर्दिष्ट पूर्व इकाइयों (क्रम में) द्वारा वर्णित क्षमताओं को पहले से ही शिक्षार्थी द्वारा महारत हासिल कर ली गई हो।

जेम्स पॉपहम और ईवा बेकर, 1970 की परिभाषा है कि पाठ्यक्रम, सभी नियोजित अधिगम परिणाम हैं जिनके लिए स्कूल जिम्मेदार है। . . . पाठ्यक्रम निर्देश के वांछित परिणामों को संदर्भित करता है।

जे. एल. मैकब्रायन और आर. ब्रांट, 1997 के अनुसार पाठ्यक्रम, एक लिखित योजना को संदर्भित करता है जिसमें यह बताया जाता है कि छात्रों को क्या पढ़ाया जाएगा (अध्ययन का एक पाठ्यक्रम)। पाठ्यक्रम किसी दिए गए स्कूल में पेश किए जाने वाले सभी पाठ्यक्रमों या अध्ययन के किसी विशेष क्षेत्र में स्कूल में पेश किए जाने वाले सभी पाठ्यक्रमों को संदर्भित कर सकता है।

पाठ्यक्रम का परिचय व अर्थ

पाठ्यक्रम शब्द लैटिन भाषा का है। इसका अर्थ है 'रेस कोर्स' और शिक्षा में इसका अर्थ है 'छात्रों का कार्य क्षेत्र' या 'छात्रों का रेस कोर्स'। कोर्स शब्द का अर्थ है पाठ्यक्रम और रेस का अर्थ है छात्रों के अनुभव और गतिविधियाँ। पाठ्यक्रम निर्देशात्मक और शिक्षाप्रद कार्यक्रम है जिसका पालन करके छात्र अपने लक्ष्यों, आदर्शों और जीवन की आकांक्षाओं को प्राप्त करते हैं। यह पाठ्यक्रम है जिसके माध्यम से स्कूली शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों को ठोस अभिव्यक्ति मिलती है। सीखना योजनाबद्ध और निर्देशित होता है। हमें पहले से ही यह निर्दिष्ट करना होगा कि हम क्या हासिल करना चाहते हैं और हमें इसे कैसे करना है।

परिभाषा स्कूली शिक्षा को संदर्भित करती है। हमें यह पहचानना चाहिए कि पाठ्यक्रम सिद्धांत और अभ्यास की हमारी वर्तमान समझ स्कूल में और विषय और पाठ जैसे अन्य स्कूली विचारों के संबंध में उभरी है। हम पाठ्यक्रम सिद्धांत और अभ्यास के दृष्टिकोण के चार तरीकों पर गौर करने जा रहे हैं-

- संचारित किए जाने वाले ज्ञान के एक निकाय के रूप में पाठ्यक्रम।
- छात्रों में कुछ निश्चित लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयास के रूप में पाठ्यक्रम - उत्पाद।
- प्रक्रिया के रूप में पाठ्यक्रम।
- अभ्यास के रूप में पाठ्यक्रम।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- पाठ्यक्रम संबंधी लक्ष्य सामान्य, दीर्घकालिक शैक्षिक परिणाम हैं जिन्हें स्कूल प्रणाली अपने पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त करने की अपेक्षा करती है। इस परिभाषा में तीन महत्वपूर्ण तत्व शामिल हैं। सबसे पहले, लक्ष्यों को उद्देश्यों की तुलना में बहुत अधिक सामान्य रूप से बताया जाता है। इस प्रकार, हिंदी भाषा कला के लिए एक लक्ष्य लेखन और बोलने के माध्यम से विचारों को संप्रेषित करना सीखना हो सकता है। पाँचवीं कक्षा की भाषा कला के लिए एक उद्देश्य बहुत अधिक विशिष्ट होगा समुदाय में सुधार का सुझाव देते हुए, उचित व्यावसायिक-पत्र फॉर्म के साथ एक पत्र लिखें। दूसरा, लक्ष्य दीर्घकालिक होते हैं, न कि अल्पकालिक परिणाम। स्कूल प्रणाली को उम्मीद है कि 12 साल की औपचारिक स्कूली शिक्षा के बाद, उसके छात्र सिस्टम द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर लेंगे। अंत में, पाठ्यक्रम संबंधी लक्ष्य वे परिणाम हैं जिन्हें स्कूल प्रणाली अपने पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त करने की उम्मीद करती है। यहाँ, शैक्षिक लक्ष्यों और पाठ्यक्रम संबंधी लक्ष्यों के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है। शैक्षिक लक्ष्य दीर्घकालिक परिणाम हैं जिन्हें स्कूल प्रणाली पूरी शैक्षिक प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त करने की अपेक्षा करती है, जिस पर उसका नियंत्रण है, जैसा कि ब्राउन (2006) ने शिक्षकों, अभिभावकों और नियोक्ताओं के साथ किए गए एक सर्वेक्षण से पाया कि उनके अनुसार छात्रों को किस प्रकार के कौशल विकसित करने चाहिए। सर्वेक्षण प्रतिक्रियाओं की प्राथमिकता सूची निम्नलिखित है
 - आलोचनात्मक सोच कौशल।
 - समस्या-समाधान रणनीतियाँ और प्रभावी निर्णय लेने के कौशल।
 - रचनात्मक सोच प्रक्रियाएँ।
 - प्रभावी मौखिक और लिखित संचार कौशल।
 - बुनियादी पढ़ने, गणित और लेखन क्षमताएँ।
 - समस्याओं को हल करने के लिए अनुसंधान का उपयोग कब और कैसे करना है, इसका ज्ञान।
 - प्रभावी पारस्परिक कौशल।

- प्रौद्योगिकी कौशल।
- अच्छे स्वास्थ्य और स्वच्छता की आदतों का ज्ञान।
- विविध संस्कृतियों और जातीयताओं की स्वीकृति और समझ।
- पैसे का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने का ज्ञान।
- सीखने को जारी रखने की इच्छा, रणनीतियाँ और क्षमता, पाठ्यचर्या नीतियाँ और पाठ्यचर्या लक्ष्य किस प्रकार परस्पर संबंधित हैं?

5.4 हिंदी व बोलियों का अध्ययन, बोली की परिभाषा, बोली और भाषा

हिन्दी की बोलियों का अध्ययन

बोली के माध्यम से ही भाषाओं का विकास हुआ है। साथ ही अनेकों बोलियां मिलकर किसी एक भाषा को प्रगतिशील बनाती है। सरल शब्दों में, जब मानव अपने मन के भावों को व्यक्त करने के लिए ध्वनियों का इस्तेमाल करता है, तो उसे ही बोली कहा जाता है। जिसका प्रयोग मानव से लेकर पशु पक्षी भी करते हैं। यानि इंसानों की तरह पशु पक्षियों की भी अलग अलग बोलियां हुआ करती हैं। जिनका उच्चारण प्रायः मुख, जीभ और कंठ के द्वारा किया जाता है। जैसे- कुत्ता भौंकता है, शेर दहाड़ता है और कोयल गाती है। साथ ही बोली को कई लोग उपभाषा और विभाषा कहकर भी संबोधित करते हैं। बोली की भाषा की भांति कोई लिपि नहीं होती है बल्कि यह प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा प्रयोग किए जाने पर निर्भर करती है। बोली का इस्तेमाल अधिकतर एक सीमित परिपाटी के अंतर्गत ही होता है। इसे ना तो लिखा जाता है और ना ही इसका साहित्य मौजूद है। बोली को सिर्फ बोलने के उद्देश्य से प्रयोग में लाया जाता है।

संसार में अनेक भाषाएँ व बोलियाँ हैं। गणना करने वालों ने बताया कि संसार में 2796 भाषाएँ व बोलियाँ हैं। जन भाषा या बोली तो कोस-कोस पर बदलती है और क्षण-क्षण बदलती है। जैसा कि इस लोकोक्ति में कहा गया है- चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी अर्थात् प्रत्येक चौथे कोस पर कुछ-न-कुछ परिवर्तन अवश्य हो जाता है। इसलिये इतने बड़े संसार में यदि इतनी अधिक भाषाएँ व बोलियाँ हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में 179 भाषाएँ व 544 बोलियाँ थी। भाषा को समाज की स्थिर सम्पत्ति बनाना व्याकरण का काम है। जब भाषा और बोली में पर्याप्त अन्तर आ जाता है। तब इस व्याकरण को भी बदलना पड़ता है। जहाँ तक हिन्दी भाषा का प्रश्न है यू.एन.ओ. भाषा सर्वेक्षण

के अनुसार यह संसार में चतुर्थ स्थान की अधिकारिणी है। विश्वमात्री श्रीमित्री लाल के अनुसार हिन्दी को समझने वाले व बोलने वाले भारत से बाहर कम से कम 13 करोड़ व्यक्ति हैं। हमारे भारत में बहुत सी बोलियां बोली जाती हैं। जोकि पश्चिम, पूर्व, बिहार, पहाड़ और राजस्थानी इलाकों में अलग अलग प्रकार से बोली जाती हैं। जोकि निम्न प्रकार से हैं-ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेली, कन्नौजी, बघेली, हरियाणवी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, कुमाऊनी, मैथिली, नागपुरी, मालवी, खोरठा, भोजपुरी, हड़ौती, पंचपरगनिया, मगही आदि।

एक भाषा के अन्तर्गत कई बोलियां होती हैं। बोली का क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा होता है और भाषा का बड़ा। एक भाषा के अन्तर्गत एक या एक से अधिक बोलियाँ सामान्यतः पायी जाती हैं। जैसे- हिन्दी क्षेत्र में खड़ी बोली, ब्रज, अवधी आदि बोलियाँ हैं।

बोली की परिभाषा

बोली मुख्य रूप से भाषा का ही छोटा भाग होती है। जिसका प्रयोग प्रति व्यक्ति पर अलग तरीके से निर्भर करता है। साथ ही जब किसी प्रकार की बोली लिखित रूप में आ जाती है, तब वह भाषा बन जाती है। इसकी अपनी कोई लिपि नहीं होती है और इसका विस्तार केवल क्षेत्रीय सीमाओं तक स्थिर रहता है। इस प्रकार, जब कोई भाषा अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग प्रकार से प्रयोग में लाई जाती है, तो उसे बोली कहते हैं।

श्री भोलानाथ तिवारी ने बोली की परिभाषा इस प्रकार दी है- “बोली किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते हैं जो ध्वनि, रूप, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों में भिन्न होता है, किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलने वाले उसे समझ ना सके, साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं भी बोलने वालों के उच्चारण, रूप रचना, वाक्य-गठन, अर्थ, शब्द समूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत स्पष्ट और महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं होती।”

बोली और भाषा

जब दो व्यक्ति आपस में अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए ध्वनियों का इस्तेमाल करते हैं, तो वह बोली कहलाती है। उस ध्वनि को जब लिखित रूप में परिभाषित किया जाता है, तब वहां लिपि होती है। और जब ध्वनियों को लिपि और व्याकरण के माध्यम से मुख से

उच्चारित किया जाता है, तब वहां भाषा प्रयोग में लाई जाती है। मुख्य रूप से लिपि और बोली भाषा को सृष्टता प्रदान करती हैं।

5.5 पाठ्यक्रम का अर्थ, सिद्धांत, आधार एवं पाठ्यक्रम की विशेषताएँ

पाठ्यक्रम का अर्थ: पाठ्यक्रम नियोजित अनुभवों का एक मानक-आधारित अनुक्रम है जहाँ छात्र अभ्यास करते हैं और विषय-वस्तु तथा अनुप्रयुक्त शिक्षण कौशल में दक्षता प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम सभी शिक्षकों के लिए केंद्रीय मार्गदर्शक है कि शिक्षण और सीखने के लिए क्या आवश्यक है, ताकि प्रत्येक छात्र को कठोर शैक्षणिक अनुभवों तक पहुँच प्राप्त हो सके।

पाठ्यक्रम के सिद्धांत: पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत अंतर्निहित दिशा-निर्देश हैं जो पाठ्यक्रम के विकास और डिजाइन को प्रभावित करते हैं। ये सिद्धांत यह सुनिश्चित करने के लिए एक रूपरेखा के रूप में कार्य करते हैं कि पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों के लिए प्रभावी, प्रासंगिक और सार्थक हो। पाठ्यक्रम निर्माण के कुछ प्रमुख सिद्धांतों में शामिल हैं-

सीखने के लक्ष्यों के साथ संरेखण: पाठ्यक्रम को विशिष्ट रूप में सीखने के लक्ष्यों के साथ संरेखित किया जाना चाहिए जो शिक्षार्थियों के लिए प्रासंगिक और सार्थक हों। इन लक्ष्यों को शिक्षार्थियों और शिक्षकों को अच्छी तरह से सूचित और संप्रेषित किया जाना चाहिए।

प्रासंगिक और प्रामाणिक पाठ्यक्रम: शिक्षार्थियों के जीवन और अनुभवों के लिए प्रासंगिक और प्रामाणिक होना चाहिए। इसे शिक्षार्थियों की रुचियों, संस्कृति और पृष्ठभूमि से जुड़ने के लिए डिजाइन किया जाना चाहिए।

लचीलापन और अनुकूलनशील पाठ्यक्रम: शिक्षार्थियों की बदलती जरूरतों और रुचियों को पूरा करने के लिए लचीला और अनुकूलनीय होना चाहिए। इसे विभिन्न शिक्षण शैलियों और प्राथमिकताओं को समायोजित करने के लिए डिजाइन किया जाना चाहिए।

सहयोग और भागीदारी: पाठ्यक्रम को शिक्षार्थियों, शिक्षकों और अन्य हितधारकों के बीच सहयोग और भागीदारी को प्रोत्साहित करना चाहिए। इसे शिक्षार्थियों को अपने स्वयं के सीखने में सक्रिय भूमिका निभाने और पाठ्यक्रम के डिजाइन और विकास में योगदान करने के अवसर प्रदान करने चाहिए।

निरंतर सुधार: पाठ्यक्रम का लगातार मूल्यांकन किया जाना चाहिए और शिक्षार्थियों, शिक्षकों और अन्य हितधारकों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर इसमें सुधार किया जाना चाहिए। यह प्रक्रिया निरंतर और गतिशील होनी चाहिए और इसका उद्देश्य पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता और प्रासंगिकता में सुधार होना चाहिए।

प्रौद्योगिकी का एकीकरण: पाठ्यक्रम को सीखने के परिणामों को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी को प्रभावी ढंग से एकीकृत करने के लिए डिजाइन किया जाना चाहिए। इसमें सीखने के अनुभव को समर्थन और बढ़ाने के लिए डिजिटल संसाधनों, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और प्रौद्योगिकी के अन्य रूपों का उपयोग शामिल है।

कुल मिलाकर, पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांतों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि पाठ्यक्रम विशिष्ट शिक्षण लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रासंगिक, सार्थक और प्रभावी हो। ये सिद्धांत एक गतिशील और प्रभावी पाठ्यक्रम बनाने के लिए संरक्षण, प्रासंगिकता, लचीलापन, सहयोग, निरंतर सुधार और प्रौद्योगिकी के एकीकरण के महत्व पर जोर देते हैं।

पाठ्यक्रम का आधार:

पाठ्यक्रम के दार्शनिक आधार: प्रत्येक पाठ्यक्रम की नींव में, पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया में सीधे तौर पर शामिल लोगों का शैक्षिक दर्शन होता है। दर्शन साध्य है और शिक्षा उस साध्य को प्राप्त करने का साधन है। दर्शन जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है और शिक्षा उस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करती।

पाठ्यक्रम के समाजशास्त्रीय आधार: समाज स्कूल के पाठ्यक्रम को प्रभावित करता है। प्रत्येक समाज, समुदाय या राष्ट्र का बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करना एक आवश्यक सामाजिक दायित्व है। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और प्रगति का साधन बनाना। संस्कृति को संरक्षित करना और इसे छोटे बच्चों तक पहुँचाना। भावी समाज के लिए शिक्षार्थियों को तैयार करना। इस प्रकार समाजशास्त्रीय विचार समाज की बेहतरी और प्रगति के लिए एक उपयोगी पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं।

पाठ्यक्रम के मनोवैज्ञानिक आधार: शिक्षा बच्चे के लिए है। बच्चा शैक्षिक प्रक्रिया का केंद्र है। शिक्षा के माध्यम से शिक्षार्थियों के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है। व्यवहार के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। यह पाठ्यक्रम डेवलपर्स को यह तय करने में मदद करता है कि पाठ्यक्रम में क्या सामग्री और सीखने के अनुभव शामिल किए जा सकते हैं।

पाठ्यक्रम की विशेषताएं

उद्देश्यपूर्णता: पाठ्यक्रम की विशेषताओं में उद्देश्यपूर्णता शिक्षा के लिए स्पष्ट लक्ष्यों और उद्देश्यों को संदर्भित करती है।

लचीलापन: आज की बदलती शैक्षिक दुनिया में, लचीलापन सबसे महत्वपूर्ण है। यह हमें छात्रों

की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुसार समायोजित करने देता है।

संरेखण: संरेखण का अर्थ है यह सुनिश्चित करना कि पाठ्यक्रम के सभी भाग एक साथ अच्छी तरह से फिट हों।

प्रामाणिकता: पाठ्यक्रम डिजाइन में प्रामाणिकता सीखने को वास्तविक और उपयोगी बनाने पर ध्यान केंद्रित करती है, इसे अकादमी के बाहर के प्रभावों से जोड़ती है।

निरंतर सुधार: पाठ्यक्रम हर समय बदलता और बेहतर होता रहता है। यह सिर्फ एक वस्तु नहीं है जो एक जैसी रहती है। इसका मतलब यह भी है कि नए विचारों और समाज की जरूरतों के आधार पर कक्षा को सुव्यवस्थित करना।

5.6 पाठ्यक्रम के प्रकार: प्रारंभिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में भाषा

लिखित पाठ्यक्रम: लिखित पाठ्यक्रम वह होता है जिसे औपचारिक रूप से लिखित रूप में रखा जाता है और पढ़ाने के लिए प्रलेखित किया जाता है। इन सामग्रियों में शिक्षक के निर्देश दस्तावेज, फिल्में, पाठ और अन्य सामग्री शामिल हो सकती है जिसकी उन्हें जरूरत होती है।

अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम: इस प्रकार का पाठ्यक्रम यह दर्शाता है कि शिक्षक वास्तव में कैसे पढ़ाते हैं। यह कम पूर्वानुमानित और कम मानकीकृत प्रकार का पाठ्यक्रम है क्योंकि शिक्षक जिस तरह से सामग्री प्रदान करता है वह एक से दूसरे में भिन्न हो सकता है। पढ़ाया गया पाठ्यक्रम विशेष शिक्षा में छात्रों या उन लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जिन्हें किसी अन्य प्रकार के विशेष समर्थन की आवश्यकता होती है।

समर्थित पाठ्यक्रम: एक समर्थित पाठ्यक्रम में कक्षा के अंदर और बाहर पाए जाने वाले अतिरिक्त उपकरण, संसाधन और सीखने के अनुभव शामिल होते हैं। इनमें पाठ्य-पुस्तकें, फील्ड ट्रिप, सॉफ्टवेयर और तकनीक के अलावा छात्रों को जोड़ने के लिए अन्य नवीन तकनीकें शामिल हैं।

मूल्यांकित पाठ्यक्रम: मूल्यांकित पाठ्यक्रम को परीक्षण पाठ्यक्रम के रूप में भी जाना जाता है। यह छात्रों की सफलता को मापने के लिए प्रश्नोंत्तरी, परीक्षण और अन्य प्रकार के तरीकों को संदर्भित करता है। इसमें कई अलग-अलग मूल्यांकन तकनीकें शामिल हो सकती हैं, जिनमें प्रस्तुतियाँ, एक पोर्टफोलियो, एक प्रदर्शन और साथ ही राज्य और संघीय मानकीकृत परीक्षण शामिल हैं।

अनुशंसित पाठ्यक्रम: अनुशंसित पाठ्यक्रम विभिन्न स्रोतों से आ सकता है, जिसमें राष्ट्रीय स्तर

पर मान्यता प्राप्त शोधकर्ता, नीति निर्माता और विधायक और अन्य शामिल हैं। जिन्हें शिक्षकों को कक्षा में प्राथमिकता देनी चाहिए।

छिपा हुआ पाठ्यक्रम: छिपे हुए पाठ्यक्रम की योजना नहीं बनाई जाती है, लेकिन इसका छात्रों द्वारा सीखी जाने वाली चीजों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम को हमेशा संप्रेषित या औपचारिक रूप से नहीं लिखा जाता है और इसमें निहित नियम, अनिर्दिष्ट अपेक्षाएँ और संस्कृति के मानदंड और मूल्य शामिल होते हैं।

बहिष्कृत पाठ्यक्रम: बहिष्कृत पाठ्यक्रम को शून्य पाठ्यक्रम के रूप में भी जाना जाता है। यह उस विषय को संदर्भित करता है जिसे पाठ्यक्रम में नहीं पढ़ाया जाता है।

सीखने के लिए पाठ्यक्रम: एक सीखा हुआ पाठ्यक्रम यह दर्शाता है कि छात्र किसी पाठ्यक्रम से क्या सीखते हैं। इसमें विषय वस्तु और ज्ञान शामिल है जो उन्होंने पाठ्यक्रम से सीखा है।

भारत में विद्यालय स्तर पर त्रिभाषा सूत्र के आधार पर भाषाओं का अध्ययन किया जाता है। त्रि-भाषा फॉर्मूला बहुभाषावाद और भाषाई विविधता को बढ़ावा देने के लिए भारत में लागू की गई एक भाषा नीति है। इसे शुरुआत में 1964 में शिक्षा आयोग द्वारा प्रस्तावित किया गया था और बाद में 1968 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा इसका समर्थन किया गया।

त्रिभाषा सूत्र का उद्देश्य भाषाई विविधता, सांस्कृतिक समझ और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है। यह छात्रों को अपनी पहली भाषा में कुशल होने के साथ-साथ व्यापक रूप से बोली जाने वाली भारतीय भाषा और एक अतिरिक्त भाषा में दक्षता हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह दृष्टिकोण छात्रों को संचार कौशल, संज्ञानात्मक क्षमता और विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं की व्यापक समझ विकसित करने में मदद करता है। त्रि-भाषा फॉर्मूले का कार्यान्वयन भारत के राज्यों में अलग-अलग है, क्योंकि देश कई क्षेत्रीय भाषाओं के साथ भाषाई रूप से विविध है। कुछ राज्यों की अपनी भाषा नीतियां हैं जो तीन-भाषा फॉर्मूले से आगे जाती हैं, जिससे अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं को शामिल करने की अनुमति मिलती है। लक्ष्य एक संतुलित भाषा शिक्षा प्रणाली बनाना है जो कई भाषाओं में दक्षता को बढ़ावा देते हुए देश की भाषाई विविधता का सम्मान करती है।

पहली भाषा: यह मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा होगी।

दूसरी भाषा: हिंदी भाषी राज्यों में यह अन्य आधुनिक भारतीय भाषाएं या अंग्रेजी होगी। गैर-हिंदी भाषी राज्यों में यह हिन्दी या अंग्रेजी होगी।

तीसरी भाषा: हिंदी भाषी राज्यों में यह अंग्रेजी या आधुनिक भारतीय भाषा होगी। अहिन्दी भाषी राज्य में यह अंग्रेजी अथवा आधुनिक भारतीय भाषा होगी।

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के कारण, देश की कोई राष्ट्रीय भाषा नहीं है, लेकिन 22 आधिकारिक भाषाएँ (अंग्रेजी सहित) हैं। चूंकि राज्यों का गठन भाषाई आधार पर किया गया था, इसलिए 28 राज्यों में से प्रत्येक की अपनी मूल भाषा आधिकारिक भाषा के रूप में है। अंग्रेजी अपनी स्थिति के कारण, अधिकांश भारतीयों के लिए एक आकांक्षा भाषा है - क्योंकि अंग्रेजी सीखना आर्थिक समृद्धि और सामाजिक स्थिति के टिकट के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार भारत में लगभग सभी निजी स्कूल अंग्रेजी माध्यम हैं। कई पब्लिक स्कूलों में, राजनीतिक मजबूरियों के कारण, प्राथमिक स्कूल की भाषा के रूप में राज्य की आधिकारिक भाषाएँ होती हैं। कक्षा 5 से अंग्रेजी को दूसरी भाषा के रूप में पेश किया जाता है। कुछ राज्यों में कक्षा 6 से एक गैर-देशी तीसरी भाषा सीखना भी अनिवार्य है। सार्वजनिक स्कूलों में सामान्य भाषा को प्राथमिकता न देना निजी स्कूलों में उच्च नामांकन अनुपात (ग्रामीण क्षेत्रों में 44 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 65 प्रतिशत) का एक प्रमुख कारण है। बड़ी संख्या में शहरी और ग्रामीण माता-पिता यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि उनके बच्चे अपनी मूल भाषा के साथ-साथ सामान्य भाषा में भी महारत हासिल करें।

5.7 सारांश

इस इकाई में हमने पाठ्यक्रम की परिभाषा, उसके उद्देश्यों और विभिन्न दृष्टिकोणों के माध्यम से उसके स्वरूप को समझा। हमने जाना कि पाठ्यक्रम केवल एक विषय सूची नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक प्रक्रिया है, जो विद्यार्थियों को क्या, क्यों और कैसे सीखना है - इसका व्यवस्थित ढांचा प्रस्तुत करती है। पाठ्यक्रम का निर्माण शिक्षण के उद्देश्यों, मूल्यों, सामाजिक संदर्भ और बालक की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इसके साथ ही यह इकाई हमें यह भी बताती है कि एक अच्छा पाठ्यक्रम बालक की संज्ञानात्मक, भावात्मक और कौशलात्मक क्षमताओं के विकास में कैसे सहायक होता है। अंततः, यह स्पष्ट किया गया कि प्रभावी पाठ्यक्रम निर्माण शिक्षकों, शिक्षाविदों, अभिभावकों और नीति-निर्माताओं की

सामूहिक भागीदारी से ही संभव है।

5.8 शब्दावली

शब्द	अर्थ
पाठ्यक्रम (Curriculum)	अध्ययन की वह संपूर्ण रूपरेखा जिसमें क्या, क्यों, कब और कैसे पढ़ाना है, यह तय किया जाता है।
शिक्षण योजना	शिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रम को लागू करने हेतु पूर्वनिर्धारित गतिविधियों और पाठों की रूपरेखा।
लक्ष्य (Aims)	शिक्षा प्रणाली द्वारा प्राप्त किए जाने वाले दीर्घकालिक उद्देश्यों को कहा जाता है।
उद्देश्य (Objectives)	पाठ्यक्रम में निर्धारित वे अपेक्षित परिणाम जो विद्यार्थियों के व्यवहार या ज्ञान में परिवर्तन लाने हेतु तय किए जाते हैं।
सामाजिक संदर्भ	पाठ्यक्रम निर्माण में समाज की संस्कृति, मूल्यों और आवश्यकताओं की भूमिका।
बौद्धिक विकास	विद्यार्थियों की सोचने, समझने, विश्लेषण करने की क्षमता में वृद्धि।
व्यवहारिक पक्ष	शिक्षा की वह दिशा जो विद्यार्थियों को रोजमर्रा के जीवन में ज्ञान का प्रयोग सिखाती है।
पाठ्यपुस्तक	पाठ्यक्रम के अनुसार निर्मित विषयवस्तु को संकलित करने वाली पुस्तक।
शैक्षिक आवश्यकता	छात्रों की सीखने से संबंधित मानसिक, सामाजिक या भावनात्मक जरूरतें।
शिक्षा नीति	किसी देश या संस्था द्वारा तय की गई दिशा-निर्देशक नीतियाँ जिनके आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण होता है।

5.9 अधिगम प्रतिफल

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात छात्र:

1. पाठ्यक्रम की परिभाषा व स्वरूप को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
2. पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांतों व कारकों की पहचान कर सकेंगे।
3. पाठ्यक्रम निर्माण में सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक आवश्यकताओं की भूमिका को समझ सकेंगे।
4. पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक के संबंध को विश्लेषित कर सकेंगे।

5. शिक्षण योजना निर्माण में पाठ्यक्रम की भूमिका को स्पष्ट रूप से व्याख्यायित कर सकेंगे।

5.10 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

बहुविकल्पी प्रश्न (MCQs)

- पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?
(अ) केवल परीक्षा लेना (ब) शिक्षकों का मूल्यांकन
(स) छात्रों के समग्र विकास को दिशा देना (द) पाठ्यपुस्तक वितरण
- पाठ्यक्रम का निर्माण किन तत्वों पर आधारित होता है?
(अ) समाज, संस्कृति और विद्यार्थी की आवश्यकता (ब) केवल पाठ्यपुस्तक
(स) परीक्षा परिणाम (द) केवल शिक्षक
- "पाठ्यक्रम" शब्द किस अर्थ में प्रयोग किया जाता है?
(अ) केवल विषय सूची (ब) परीक्षा प्रणाली
(स) सीखने की व्यापक प्रक्रिया (द) कोई भी नहीं
- निम्न में से कौन पाठ्यक्रम निर्माण में योगदान नहीं देता?
(अ) शिक्षक (ब) अभिभावक (स) छात्र (द) दुकानदार
- एक प्रभावी पाठ्यक्रम का क्या लक्षण है?
(अ) केवल तथ्यात्मक जानकारी देना (ब) कक्षा अनुशासन बनाए रखना
(स) छात्रों की विभिन्न क्षमताओं का विकास करना (द) छात्रों को परीक्षा के लिए तैयार करना

उत्तर कुंजी (Answer Key)

1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (द) 5. (स)

लघु उत्तरीय प्रश्न

- हिंदी शिक्षण में कंप्यूटर के प्रयोग के चार लाभ बताइए।
- हिंदी शिक्षण में भाषा प्रयोगशाला के प्रयोग पर नोट लिखिए।
- हिंदी शिक्षण में समाजी मीडिया की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
- हिंदी शिक्षण में पुस्तकालय का क्या महत्व है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हाईस्कूल स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए आप कौनसी आईसीटी (ICT)सामग्री का प्रयोग करेंगे?
2. हिंदी शिक्षण में क्या शिक्षण सामग्री प्रयोग में आती है? उनमें से किन्हीं दो पर उदाहरण सहित अपने विचार व्यक्त कीजिए।
3. हिंदी शिक्षण के प्रयोग के लिए आवश्यक सहायक सामग्री की एक तालिका बनाइये। प्रत्येक सामग्री का महत्व उदाहरण देकर समझाइए।
4. हिंदी शिक्षण में पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्रों व गोष्ठी की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
5. हिंदी शिक्षण में सहायक सामग्री का उचित प्रयोग किस तरह हो सकता है ? विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

5.11 संदर्भ

- चतुर्वेदी, शिखा (2019) हिंदी शिक्षण, आर. लाल बुक डिपो, मेरठा।
- मंगल, उमा (2016) हिंदी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
- शर्मा, दीपा, सिंह, इंद्र, पाठ्यक्रम एवं विद्यालय प्रबंधन, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवानी।
- मधु, नरूला, हिंदी शिक्षण, टवन्टी फर्स्ट सैन्चुरी प्रकाशन, पटियाला।
- शर्मा, शिवमूर्ति, हिंदी भाषा शिक्षण, नीलकमल प्रकाशन, हैदराबाद।
- शर्मा, राजकुमारी, रामशकल, हिंदी शिक्षण, राधा प्रकाशन, आगरा।
- श्रीवास्तव, आर.एस. हिंदी शिक्षण, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर।
- सिंह, निरंजन कुमार, माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
- कुमार, योगेश, आधुनिक हिंदी शिक्षण, ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, नई दिल्ली।
- सिंह, सावित्री, हिंदी शिक्षण, गया प्रसाद एण्ड संस, आगरा।
- स्वयं अधिगम सामग्री, हिंदी शिक्षण प्रविधि, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (1986). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, नई दिल्ली: भारत सरकार ।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (1992). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986: कार्यान्वयी योजना 1992, नई दिल्ली: भारत सरकार।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली: भारत सरकार ।
- Ministry of Education, GOI, <https://www.education.gov.in/en>
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली: भारत सरकार, पृष्ठ संख्या-11
- स्वयं अधिगम सामग्री, हिंदी शिक्षण, मौलाना आजाद नेशनल यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

इकाई 6 – हिन्दी भाषा की पाठ्य-पुस्तक

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 पाठ्य पुस्तक की परिभाषा, पाठ्य पुस्तक के गुण, पाठ्य सामग्री

6.4 पाठ्य पुस्तकों का महत्व, मातृभाषा की पाठ्य पुस्तक की विषय सामग्री

6.5 सहगामी क्रियाएँ

6.6 हिन्दी भाषा की दृष्टि से सहगामी क्रियाएँ

6.7 सारांश

6.8 शब्दावली

6.9 अधिगम प्रतिफल

6.10 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

6.11 सन्दर्भ

6.1 प्रस्तावना

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्य पुस्तकों का महत्व सर्वोपेक्षित है। पाठ्यक्रम की वास्तविक रूपरेखा को पाठ्य पुस्तकों द्वारा ही विस्तार मिलता है जिससे वह शिक्षक तथा छात्र दोनों हेतु सुगम हो जाता है। सीखने के अनुभवों में पाठ्य पुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान है। पुस्तकों के माध्यम से अतीत के ज्ञान एवं अनुभवों को संचित किया जाता है जिससे आने वाली पीढ़ी उसका उपयोग करके लाभान्वित हो सके। पाठ्य-पुस्तक में किसी विषय-विशेष का संगठित ज्ञान एक स्थान पर रखा जाता है। इस तरह अच्छी पाठ्य पुस्तकें शिक्षण-प्रक्रिया में निर्देशन का कार्य करती हैं। अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों हेतु महत्वपूर्ण साधन हैं। पाठ्य पुस्तक अध्ययन की शाखा के विषय को समझाने के लिए विस्तृत संग्रह रखने वाली पुस्तक को कहा जाता है। ये उद्देश्यों के आधार पर रचित संचित ज्ञान का स्रोत होती हैं लेकिन सभी पुस्तकें पाठ्य पुस्तकें नहीं होती।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- पाठ्य पुस्तक की परिभाषा, परिचय व उद्देश्य को जान पाएंगे।
 - हिंदी भाषा की पाठ्य पुस्तक के गुणों को जान पाएंगे।
 - पाठ्य पुस्तक की विशेषताएं का ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे
 - हिंदी शिक्षण में सहगामी क्रियाओं को आयोजित कर सकेंगे।
-

6.3 पाठ्य पुस्तक की परिभाषा, पाठ्य पुस्तक के गुण, पाठ्य सामग्री

पाठ्य पुस्तक की परिभाषा: किसी विषय के ज्ञान को जब एक स्थान पर पुस्तक के रूप में संगठित ढंग से पेश किया जाता है तो उसे पाठ्य पुस्तक की संज्ञा प्रदान की जाती है। पाठ्य पुस्तक के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों के कथनों को यहाँ निम्न प्रकार प्रस्तुत किया गया है-

हैरोलिक के अनुसार- पाठ्य-पुस्तक ज्ञान, आदतों, भावनाओं, क्रियाओं तथा प्रवृत्तियों का संपूर्ण योग है।

हाल-क्वेस्ट के अनुसार- पाठ्य पुस्तक शिक्षण अभिप्रायों के लिए व्यवस्थित प्रजातीय चिन्तन का एक अभिलेख है।

डगलस के अनुसार- अध्यापकों के बहुमत ने अन्तिम विश्लेषण के आधार पर पाठ्य-पुस्तक को वे क्या और किस प्रकार पढ़ायेंगे, की आधारशिला माना है।

लैंज के अनुसार- यह अध्ययन क्षेत्र किसी शाखा की एक प्रमाणित पुस्तक होती है।

क्रॉनबेक के अनुसार- आजकल अमेरिका के शैक्षिक चित्र में पाठ्य पुस्तक केन्द्र बिन्दु है। इसने अनुपम प्रकार के विद्यालय में प्रथम ग्रेड से लेकर कॉलेज-स्तर तक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है।

बेकन के मतानुसार- पाठ्य-पुस्तक कक्षा प्रयोग के लिये विशेषज्ञों द्वारा सावधानी से तैयार की जाती है। यह शिक्षण युक्तियों से भी सुसज्जित होती है पाठ्य-पुस्तक कक्षा-प्रयोग के लिए विशेषज्ञों द्वारा सावधानी से तैयार की जाती है। यह शिक्षण युक्तियों से भी सुसज्जित होती है।

पाठ्य-पुस्तक के गुण

- शिक्षण में व्यावसायिक पाठ्य-पुस्तकों के उपयोग के फायदे और नुकसान दोनों हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनका उपयोग कैसे किया जाता है और उनके उपयोग के संदर्भ क्या हैं। प्रमुख लाभों में से हैं।

- पाठ्य-पुस्तक किसी कार्यक्रम के लिए संरचना और पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।
- पाठ्य-पुस्तकों के बिना किसी कार्यक्रम का कोई केंद्रीय सार नहीं हो सकता है और शिक्षार्थियों को वह पाठ्यक्रम प्राप्त नहीं हो सकता है जिसे व्यवस्थित रूप से योजनाबद्ध और विकसित किया गया है।
- पाठ्य-पुस्तक निर्देश को मानकीकृत करने में मदद करते हैं। किसी कार्यक्रम में पाठ्य-पुस्तक का उपयोग यह सुनिश्चित कर सकता है कि विभिन्न कक्षाओं के छात्रों को समान सामग्री प्राप्त हो और इसलिए उनका परीक्षण भी उसी तरह किया जा सके।
- पाठ्य-पुस्तक गुणवत्ता बनाए रखते हैं। यदि एक अच्छी तरह से विकसित पाठ्य-पुस्तक का उपयोग किया जाता है तो छात्रों को उन सामग्रियों से अवगत कराया जाता है जिन्हें आजमाया और परखा गया है, जो अच्छे सीखने के सिद्धांतों पर आधारित हैं और जिनकी गति उचित है।
- पाठ्य-पुस्तक विभिन्न प्रकार के शिक्षण संसाधन प्रदान करते हैं।
- पाठ्य-पुस्तकों के साथ अक्सर कार्यपुस्तिकाएँ, सीडी और कैसेट, वीडियो, सीडी रोम और व्यापक शिक्षण मार्गदर्शिकाएँ होती हैं, जो शिक्षकों और शिक्षार्थियों के लिए एक समृद्ध और विविध संसाधन प्रदान करती हैं।
- पाठ्यपुस्तके कुशल हैं, वे शिक्षकों का समय बचाते हैं, जिससे शिक्षक सामग्री के उत्पादन के बजाय शिक्षण पर समय दे पाते हैं।
- पाठ्यपुस्तके प्रभावी भाषा मॉडल और इनपुट प्रदान कर सकते हैं। पाठ्यपुस्तके उन शिक्षकों के लिए सहायता प्रदान कर सकती हैं जिनकी पहली भाषा अंग्रेजी नहीं है और जो स्वयं सटीक भाषा इनपुट उत्पन्न करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।
- पाठ्यपुस्तके शिक्षकों को प्रशिक्षित कर सकते हैं। यदि शिक्षकों के पास सीमित शिक्षण अनुभव है, तो शिक्षक मैनुअल के साथ एक पाठ्य-पुस्तक प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम के रूप में काम कर सकती है।
- पाठ्यपुस्तके देखने में आकर्षक हैं। व्यावसायिक पाठ्य-पुस्तकों में आमतौर पर डिजाइन और उत्पादन के उच्च मानक होते हैं और इसलिए वे शिक्षार्थियों और शिक्षकों को आकर्षित करते हैं।
- अर्थव्यवस्था पाठ्य-पुस्तक प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने का सबसे सस्ता तरीका है।
- सुविधा पाठ्य-पुस्तक एक सुविधाजनक पैकेज है। यह बंधा हुआ है, ताकि इसके घटक

एक साथ चिपके रहें और क्रम में रहें, यह हल्का और इतना छोटा है कि आसानी से ले जाया जा सके

स्कूली पाठ्यक्रम में हिंदी का महत्व

सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण: हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं है यह हमारी सांस्कृतिक पहचान का प्रतिबिंब है। यह हमें हमारी जड़ों, इतिहास और परंपराओं से जोड़ता है। पाठ्यक्रम में हिंदी को शामिल करके, स्कूल छात्रों को अपनी विरासत को समझने और उसकी सराहना करने में मदद करते हैं।

भाषाई विविधता को बढ़ावा देना: भारत भाषाओं और बोलियों का मिश्रण है। पाठ्यक्रम में हिंदी को शामिल करने से भाषाई विविधता को बढ़ावा मिलता है और छात्रों को बहुभाषी होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इससे न केवल उन्हें प्रभावी ढंग से संवाद करने में मदद मिलती है बल्कि उनका क्षितिज भी व्यापक होता है।

संज्ञानात्मक कौशल को बढ़ाना: हिंदी सहित कई भाषाएँ सीखने से समस्या-समाधान, मल्टीटास्किंग और रचनात्मकता जैसे संज्ञानात्मक कौशल में वृद्धि होती है। यह याददाश्त को तेज करता है और भाषाई बुद्धिमत्ता को बढ़ाता है।

राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाना: हिंदी हमारे विविधतापूर्ण राष्ट्र में एक एकीकृत भाषा के रूप में कार्य करती है। इसे पाठ्यक्रम में शामिल करने से राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा मिलता है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के छात्रों को एक सामान्य भाषाई मंच पर जुड़ने का मौका मिलता है।

कैरियर के अवसर: हिंदी में प्रवीणता से कैरियर के ढेरों अवसर खुलते हैं। यह न केवल संचार का माध्यम है बल्कि व्यापार, प्रशासन और राजनीति की भाषा भी है।

साहित्यिक विरासत का संरक्षण: हिंदी साहित्य में कविता, गद्य और शास्त्रीय ग्रंथों का समृद्ध खजाना है। पाठ्यक्रम में हिंदी को शामिल करने से छात्रों को इस साहित्यिक विरासत से अवगत कराया जाता है, जिससे साहित्य के प्रति उनकी सराहना विकसित होती है।

6.4 पाठ्य पुस्तकों का महत्व, मातृभाषा की पाठ्य पुस्तक की विषय सामग्री

पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता एवं महत्व

पाठ्य-पुस्तक संरचित शिक्षण, पाठ्यपुस्तकें अक्सर संरचित तरीके से व्यवस्थित की जाती हैं, जानकारी को तार्किक क्रम में प्रस्तुत करती हैं। यह अधिक जटिल विषयों पर जाने से पहले

मूलभूत ज्ञान के निर्माण में सहायता कर सकती हैं।

- पाठ्य पुस्तकें शिक्षकों तथा छात्रों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करती है।
- पाठ्य पुस्तकें छात्रों को विषय वस्तु को संकलित करने में सहायता प्रदान करती है।
- पाठ्य पुस्तकें मन्दबुद्धि तथा प्रतिभाशाली दोनों प्रकार के बालकों के लिए उपयोगी होती है।
- पाठ्य पुस्तक के आधार पर कक्षा-कार्य एवं मूल्यांकन संभव होता है।
- ये परीक्षा के समय छात्रों की सहायक होती है।
- योग्य शिक्षकों का ज्ञान भी अव्यवस्थित होता है। इसलिए उसे व्यवस्थित करने में पाठ्य पुस्तक मददगार होती है। इसी तरह छात्रों के अपूर्ण ज्ञान को परिवर्धित तथा पूर्णता प्रदान करने हेतु मददगार होती है।
- छात्रों का मानसिक स्तर इतना ऊंचा नहीं होता है कि वे विद्यालय में पढ़ायी गई विषय-वस्तु को एक ही बार में आत्मसात कर सकें। उन्हें विषय-वस्तु को कई बार पढ़ना एवं दुहराना पड़ता है। इसीलिए पाठ्य पुस्तक की जरूरत होती है।
- इनके द्वारा छात्रों एवं शिक्षकों के समय की बचत होती है।
- पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से स्वाध्याय द्वारा ज्ञान प्राप्त करने में छात्रों को प्रेरणा प्राप्त होती है।
- पाठ्य पुस्तक के आधार पर प्रत्येक राज्य में, प्रत्येक कक्षा में एक निश्चित पाठ्य वस्तु का अध्यापन संभव होता है तथा इससे छात्रों का मूल्यांकन सामूहिक रूप से किया जा सकता है।
- पाठ्य पुस्तकों से अध्ययन में एकरूपता आती है।
- इनके माध्यम से छात्रों की स्मरण एवं तर्क-शक्ति का विकास होता है।
- पाठ्य पुस्तकें मन्दबुद्धि तथा प्रतिभाशाली दोनों प्रकार के बालकों के लिए उपयोगी होती है।
- पाठ्य पुस्तकें शिक्षकों को कक्षा-स्तर के अनुसार शिक्षण कार्य करने का बोध कराती है।
- विविध शिक्षा आयोगों द्वारा भी पाठ्य पुस्तकों की जरूरत तथा महत्व को स्वीकार किया गया है।
- पाठ्य पुस्तक में विषय-वस्तु को तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है जिससे छात्रों के लिए विषय वस्तु सरल एवं सुगम हो जाती है।

- पाठ्य पुस्तकों में विषय के पाठ्यक्रम की संपूर्ण रूप में व्याख्या की जाती है जिससे शिक्षक उपयुक्त अधिगम अनुभव प्रदान कर सकता है।
- पाठ्य पुस्तकें शिक्षकों तथा छात्रों को विद्वानों के बहुमूल्य विचारों एवं उपयोगी अनुभवों को प्रदान करती है जिससे वे इन अनुभवों का लाभ उठाने में समर्थ हो सकते हैं।

यूनिसेफ (UNISEF) के अनुसार एक ऐसी दुनिया की कल्पना करें जहां आपके द्वारा सीखे गए पहले शब्द सिर्फ ध्वनियां न हों, बल्कि समझ, आत्मविश्वास और सीखने के लिए असीमित प्यार को खोलने वाली कुंजी हों। यह मातृभाषा शिक्षा का वादा होता है।

कई बच्चों को, विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में, कक्षाएँ और शिक्षा की भाषा विदेशी लगती है, जिससे उनके और ज्ञान के बीच एक अदृश्य दीवार बन जाती है। अध्ययनों से पता चलता है कि बच्चे भावनात्मक रूप से संघर्ष कर रहे हैं, आत्मविश्वास खो रहे हैं और उनकी अंतर्निहित जिज्ञासा लुप्त हो रही है। यहीं मातृभाषा शिक्षा की शक्ति चमकती है। जब एक बच्चा अपनी परिचित भाषा में सीखता है, तो दुनिया खुल जाती है।

यह धारणा कि मातृभाषा शिक्षा में महत्वाकांक्षा की कमी है, वैश्विक सफलता की तुलना एक प्रमुख भाषा से करने से उत्पन्न होती है। यह बहुभाषावाद की शक्ति और सुंदरता तथा बच्चे के संज्ञानात्मक और भावनात्मक विकास पर पड़ने वाले गहरे प्रभाव को नजरअंदाज करता है। समझने का एक सेतु है जब बच्चे मातृभाषा में सीखते हैं, तो वे आत्मविश्वास और आसानी से ज्ञान प्राप्त करते हैं। अवधारणाएँ स्पष्ट हो जाती हैं, विचार स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होते हैं, और खोज का आनंद बढ़ जाता है। कल्पना करें कि एक आदिवासी बच्चा अपनी भाषा के माध्यम से गणित को समझता है, जिससे अपनेपन और सक्रिय भागीदारी की भावना को बढ़ावा मिलता है।

एक मजबूत नींव का निर्माण होता है। अध्ययनों से लगातार पता चला है कि जो बच्चे अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं, उनमें विशेष रूप से आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और रचनात्मकता में मजबूत संज्ञानात्मक कौशल विकसित होते हैं। यह ठोस आधार भविष्य की शैक्षणिक सफलता के लिए आधार तैयार करता है, जिससे उन्हें न केवल जटिल विषयों को समझने में मदद मिलती है, बल्कि बाद में उनके सामने आने वाली अन्य भाषाओं में भी उत्कृष्टता प्राप्त होती है। शैक्षणिक लाभों से परे, मातृभाषा शिक्षा आत्म-मूल्य और सांस्कृतिक

पहचान की भावना को बढ़ावा देती है। जब कोई बच्चा अपनी मूल भाषा में खुद को आत्मविश्वास से अभिव्यक्त करता है, तो उनमें आत्म-आश्वासन और अपनी विरासत के साथ गहरा जुड़ाव झलकता है। यह आंतरिक प्रेरणा उनकी सीखने की इच्छा को बढ़ावा देती है और उन्हें उनकी शैक्षिक यात्रा पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

6.5 सहगामी क्रियाएँ – वर्गीकरण

आज के समय में शिक्षा के उद्देश्य भी समसामयिकता के अनुसार हो गए हैं। शिक्षा में विद्यार्थी, अध्यापक व पाठ्यक्रम को शामिल करते हैं। इसमें पाठ्यक्रम गतिविधियों को हम पहले पाठ्येतर गतिविधियों के रूप में जानते थे अब इन्हीं गतिविधियों को पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के तौर पर जानते हैं। पाठ्यक्रम और पाठ्य-सहगामी क्रियाएं दोनों विद्यालयी गतिविधियों का महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं जो कि एक समान उद्देश्य के तौर पर विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देती हैं। ये गतिविधियां विद्यार्थी के बौद्धिक विकास, भावनात्मक विकास, नैतिक विकास और सामाजिक विकास से जुड़ी होती हैं। आज पाठ्यचर्या में वे सब अनुभव शामिल किए जाते हैं जो कि विद्यार्थी को शैक्षिक संस्था, खेल के मैदान, विभिन्न साहित्य व सांस्कृतिक गतिविधियों से मिलते हैं।

डॉ. उमा मंगल के अनुसार- विभिन्न विषयों के शिक्षण कार्य से अतिरिक्त विद्यालय में आयोजित की जाने वाली वे सभी क्रियाएं, जिनसे बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है, पाठ्यक्रम सहगामी या सहपाठ्य क्रियाएं कही जाती हैं। अब इन क्रियाओं को अतिरिक्त क्रियाएं न मानकर सहगामी क्रियाएं माना जाता है जो कि शिक्षा का आवश्यक अंग बन गई है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने कहा है कि 'सहगामी क्रियाएं विद्यालय की गतिविधियों का एक विशेष अंग है। क्योंकि पाठ्यक्रम के कार्य में उचित प्रबन्धात्मक अत्यन्त सावधानी से होनी सम्भव हैं। उचित नीति से ही उनके संचालन द्वारा योग्यता की मात्रा में समुचित विकास हो जाता है।

नवोदय विद्यालय समिति की वेबसाईट पर सह पाठ्यक्रम गतिविधियों की परिभाषा, अर्थ व महत्व को बहुत ही उल्लेखनीय रूप से दर्शाया गया है जो कि हमें पाठ्य-सहगामी क्रियाओं की विस्तृत समझ देती हैं-

‘सह पाठ्यक्रम गतिविधियां बच्चों में व्यक्तित्व के सामंजस्यपूर्ण विकास को सुनिश्चित करती है। औपचारिक शिक्षण अनुभवों का एक विस्तार है और शैक्षणिक गतिविधियों के पूरक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वे रूचि और भाषा कौशल, संचारी कौशल, हिस्टोरिक कौशल और बच्चे के कलात्मक कौशल को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। ज्ञान प्रतिस्पर्धी भावना, मूल्य अभिविन्यास, नेतृत्व टीमवर्क और जीवन के विभिन्न अन्य पहलुओं के लिए विश्लेषणात्मक जोर को बेहतर बनाने में मदद करता है। उक्त सभी गुणों को शामिल करने के लिए, अकादमिक वर्ष में एक अच्छी तरह से योजनाबद्ध सीसीए(CCA) कैलेंडर के अनुसार जेएनवी(JNV) में क्विज, सस्वर पाठ, भाषण, वाद-विवाद, एकल अभियन, फैंसी ड्रेस, प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियां वरिष्ठ और कनिष्ठ स्तर पर अंतर-सदन प्रतियोगिताओं के माध्यम से अक्सर आयोजित की जाती हैं, ताकि छात्रों को योग्यता और आत्मविश्वास प्राप्त हो सके। सह-पाठ्यक्रम संबंधी गतिविधियां उन सभी क्षेत्रों को कवर करती हैं जो समग्र व्यक्तित्व के विकास को सुनिश्चित करते हैं और हरेक के माध्यम से छात्रों को अपनी जन्मजात प्रतिभा और क्षमताओं को विकसित करने के पर्याप्त अवसर जेएनवी प्रदान कर रहा है। इसके अलावा, विद्यालय में इको, साहित्य, विज्ञान, गणित, सांस्कृतिक, कला, संगीत, पाठक, स्वास्थ्य और कल्याण और हिंदी क्लब जैसे विभिन्न क्लब भी अपने क्षेत्र में छात्रों को समृद्ध करने के लिए कई आयोजन करते हैं। इसके अलावा, एक छत के नीचे नवोदय परिवार राष्ट्रीयकरण नीति को बढ़ावा देता है, क्षेत्रीय और धार्मिक त्योहारों को अनोखे सिद्धांत और एकता की भावना के लिए मनाता है।’

<https://www.navodaya.gov.in/nvs/nvs-school/NEEMUCH/hi/acitvites/Co-Curricular-Activities/> (दिनांक, 25.1.2022)

- पाठ्य-सहगामी क्रियाएं सबसे पहले विद्यार्थियों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूचिकर, मनोरंजनात्मक व दिलचस्प बनाती हैं। ये विद्यार्थियों में नई अभिरूचियों के सीखने का अवसर प्रदान करती है। कक्षा के वातावरण को रूचिकर बनाती हैं।
- शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में सामाजिक जीवन का विकास करना है। पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के माध्यम से सामाजिकता व आपसी समझ का विकास होता है। इससे विद्यार्थियों को सामाजिक अवसर प्राप्त होते हैं जिससे वे सामाजिक जीवन के ताने-बाने

को समझ सकते हैं। एक दूसरे से संपर्क बनाना सीखते हैं जो कि भविष्य के जीवन में बहुत काम आते हैं।

- पाठ्य-सहगामी क्रियाओं से विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा का विकास होता है। विद्यार्थी को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से परिस्थितियां प्रदान की जाती हैं जिससे वह तर्कसंगत निर्णय लेकर सही व गलत का सामाजिक जीवन के संदर्भ में उपयोग कर सकें।
- पाठ्य-सहगामी क्रियाओं की सहायता से विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। विद्यार्थी अपने अधिकारों व कर्तव्यों को समझते हुए अच्छा नागरिक बनने की कोशिश करते हैं।
- पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के माध्यम से उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी की सीख विद्यार्थियों को मिलती है। क्योंकि इसमें भागीदारी के द्वारा हम स्वयं काम करना सीखते हैं। एक तरह से यह सिद्धांतों का प्रयोगात्मक रूप हमें प्रदान करती है।
- पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थी सहयोग व समन्वय की भावना को भी सीखते हैं। एकाग्रता को बढ़ाने में बहुत ज्यादा मददगार है जिससे विद्यार्थी के संवेगों का उचित समायोजन हो पाता है।
- ये क्रियाएं हमें शारीरिक व मानसिक रूप से भी मजबूत बनाती हैं साथ ही करके सीखने का वातावरण प्रदान करती हैं। स्वशासन को भी सीख कर हम अपने आप को मानसिक रूप से तैयार करते हैं। स्वशासन के द्वारा हम अपने उपर नियंत्रण करते हैं।
- विद्यार्थियों को नई खोज व सृजनात्मक क्षमताओं को विकसित करने का मौका मिलता है। इस तरह से जीवन में नई चुनौतियों से मुकाबला करना व समायोजन भी सीखते हैं। संवय करके सीखने से आत्मविश्वास भी आता है।
- पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के द्वारा हम अवकाश के समय का सदुपयोग सीखते हैं। जीवन में विभिन्न रुचियों से नीरसता नहीं आती है। एक तरह से विद्यार्थी जीवन में संतुष्टि का महत्व भी सीखते हैं।
- पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के द्वारा विद्यालय व समुदाय के संबंध को भी मजबूती मिलती है। विभिन्न सांस्कृतिक व शैक्षिक गतिविधियों के आयोजन में समुदाय के सहयोग से विद्यार्थी भी सहयोग व समुदाय के महत्व व उपयोगिता को समझते हैं।

6.6 हिंदी भाषा की दृष्टि से सहगामी क्रियाएँ

किसी व्यक्ति में गतिविधि को बढ़ाने के उद्देश्य या कौशल के आधार पर पाठ्य-सहगामी गतिविधियों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। यहां कुछ प्रमुख प्रकार की

सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियां दी गई हैं जो आपने अपने स्कूल या कॉलेज के पाठ्यक्रम के दौरान देखी होंगी।

- **शैक्षणिक गतिविधियां-** बुक क्लब, स्कूल पत्रिका, कविता पाठ, कहानी लेखन, वाद विवाद, प्रदर्शनियों का आयोजन व चार्ट तैयार करना।
- **अवकाश संबंधी-** नमूना बनाना, सिक्का संग्रह, डाक टिकट संग्रह, ट्रेन उत्साही, -, स्मारक भ्रमण, बागवानी व पिकनिक।
- **सामाजिक विकास संबंधी-** स्कालटिंग और गाइडिंग, स्कूल परिषद की गतिविधियां, स्वयंसेवा, त्योहारों या प्रतियोगिताओं की गतिविधियाँ।
- **पिकनिक और भ्रमण-** लंबी पैदल यात्रा, विशेष दौरा, ट्रेकिंग, ऐतिहासिक और भौगोलिक महत्व के स्थानों का भ्रमण, संग्राहलय का दौरा, औद्योगिक दौरे व सेमीनार।
- **शारीरिक संबंधी-** आउटडोर और इनडोर खेल, मास ड्रिल, मास पीटी, एन.सी.सी., योग एरोबिक्स, जुम्बा, नृत्य व खेल आदि।
- **सांस्कृतिक विकास संबंधी-** नृत्य, संगीत, लोक नृत्य, लोकगीत, फैंसी ड्रेस प्रतियोगिताएं, चित्रांकन और रंगाई, रंगमंच नाटक व वार्षिक दिवस।
- **नागरिक मूल्यों से संबंधी -** प्राथमिक उपचार शिविर, स्वच्छता सप्ताह जैसे शिविरों का आयोजन, विशेष दिन का उत्सव।
- **कला और शिल्प संबंधी-** एल्बम बनाना, गुड़िया बनाना, खाना बनाना, फोटोग्राफी, फूलों की सजावट, क्ले मॉडलिंग, कोलाज बनाना, टोकरी बनाना, बुनाई, बागवानी, बुकबाइंडिंग, सिलाई व तैल चित्र आदि।
- **बौद्धिक विकास संबंधी-** प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद, निबंध लेखन, कविता पाठ, कहानी लेखन, स्पेलिंग बीज़ व बुक क्लब।

विद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण संबंधी पाठ्य-सहगामी गतिविधियां

- हिंदी में भाषण प्रतियोगिता
- हिंदी में वाद-विवाद प्रतियोगिता
- कविता पाठ प्रतियोगिता
- हिंदी में विद्यालय प्रकाशन
- हिंदी की विद्यालय पत्रिका
- हिंदी दीवार/भित्ति पत्रिका
- हिंदी की अन्य पत्रिकाएं
- हिंदी साहित्यिक कला और पेंटिंग
- हिंदी में दैनिक मुख्य समाचार लिखना
- हिंदी में दैनिक प्रसिद्ध विचार लिखना
- हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता
- हिंदी में आदर्श वाक्यों को लिखना
- हिंदी में विद्यालय की गतिविधियों का वार्षिक अंक
- हिंदी ऑनलाइन पत्रिका
- हिंदी में नाटक मंचन
- हिंदी में बिना तैयारी के भाषण
- हिंदी के लोकगीतों की प्रतियोगिता
- हिंदी के गानों पर लोक नृत्य प्रतियोगिता
- हिंदी में टेलेंट सर्च शो
- हिंदी में विस्तृत भाषणों का आयोजन
- हिंदी में प्रातः कालीन सभा में संबोधन
- हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकारों के जन्मदिन को मनाना
- हिंदी दिवस का आयोजन
- अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस का आयोजन
- हिंदी में प्रौढ़ शिक्षा कैम्प
- हिंदी क्लब
- हिंदी संगीत क्लब
- हिंदी की पुरानी पुस्तकों के संचय का प्रबंध करना
- हिंदी में निर्धन बच्चों को पुस्तकें बांटना
- हिंदी में विशेष दिवस कार्यक्रमों का आयोजन करना

- हिंदी में अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं का आयोजन
- हिंदी में अंतर्सदनीय प्रतियोगिताएं
- हिंदी की पुस्तकों के लिए पुस्तकालय में सहयोग करना
- हिंदी में विद्यालय के पुरस्कारों को डिजाइन करना
- हिंदी कवि सम्मेलन
- हिंदी में विस्तार भाषण
- हिंदी में गोष्ठी
- हिंदी में बाल फिल्मोत्सव
- हिंदी में कविता व कहानी लेखन
- हिंदी में प्रश्नमंच
- हिंदी में साहित्य सभा
- हिंदी में नाटकी करण/नाट्य प्रस्तुति
- हिंदी में विभिन्न समारोहों का आयोजन जैसे- वार्षिक उत्सव, पुरस्कार वितरण समारोह, अभिभावक दिवस आदि।
- हिंदी साहित्य से संबंधित रूचि के स्थानों का भ्रमण
- हिंदी की दुर्लभ ग्रंथों व पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी
- हिंदी की अन्ताक्षरी
- हिंदी शब्द खेल
- हिंदी में विद्वानों द्वारा भाषण

6.7 सारांश

इस इकाई में हिन्दी भाषा की पाठ्य-पुस्तकों के महत्व, उनकी संरचना, विशेषताओं और शिक्षण में उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा की गई है। पाठ्य-पुस्तकें न केवल ज्ञान का स्रोत हैं बल्कि वे शिक्षक और छात्र के बीच सेतु का कार्य करती हैं। अच्छी पाठ्य-पुस्तक में विषयवस्तु, भाषा शैली, चित्र, गतिविधियाँ और मूल्यपरक सामग्री का समन्वय होता है। इस इकाई में यह भी बताया गया है कि मातृभाषा की पाठ्यपुस्तक किस प्रकार विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में सहायक होती है। सहगामी क्रियाओं के माध्यम से छात्र की सक्रिय भागीदारी और रचनात्मकता को भी बढ़ावा दिया जा सकता है।

6.8 शब्दावली

शब्द	अर्थ
पाठ्य-पुस्तक	वह पुस्तक जिसमें पाठ्यक्रम के अनुसार विषयवस्तु प्रस्तुत की जाती है।
विषयवस्तु	पाठ्यपुस्तक में दी गई शैक्षिक सामग्री।
मातृभाषा	विद्यार्थी की पहली भाषा जिसमें वह सर्वप्रथम अभिव्यक्ति करता है।
सहगामी क्रियाएँ	वह गतिविधियाँ जो शिक्षण को सहायक और रुचिकर बनाती हैं।
मूल्यपरक शिक्षा	नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना से युक्त शिक्षण।
चित्रण	पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त दृश्य-सामग्री जो समझ को सरल बनाती है।
समीक्षा	किसी वस्तु या पाठ्यपुस्तक का गुण-दोष सहित मूल्यांकन।
शिक्षण सहायक	शिक्षक को शिक्षण में मदद करने वाली सामग्री या साधन।
भाषिक कौशल	भाषा के प्रयोग से संबंधित चारों क्षमताएँ – सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना।
रचनात्मकता	कल्पना और नवीनता से युक्त विचारों की अभिव्यक्ति की क्षमता।

6.9 अधिगम प्रतिफल

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी:

1. हिन्दी भाषा की पाठ्य-पुस्तक की परिभाषा और प्रमुख गुणों को समझ सकेंगे।
2. अच्छी पाठ्य-पुस्तक के निर्माण के मानदंडों को स्पष्ट कर सकेंगे।
3. पाठ्य-पुस्तकों की शिक्षण में भूमिका और उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. सहगामी क्रियाओं का चयन कर विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने में सक्षम होंगे।
5. मातृभाषा की पाठ्य-पुस्तक के सामाजिक और शैक्षिक महत्व को व्याख्यायित कर सकेंगे।

6.10 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. पाठ्य-पुस्तक का प्रमुख उद्देश्य क्या होता है?
(अ) परीक्षा लेना (ब) शिक्षकों का मूल्यांकन करना
(स) शिक्षण को आसान और संरचित बनाना (द) केवल पढ़ना
2. हिन्दी भाषा की अच्छी पाठ्य-पुस्तक में क्या होना चाहिए?
(अ) कठिन शब्दावली (ब) केवल लेख
(स) चित्र, गतिविधियाँ और मूल्य (द) केवल व्याकरण
3. पाठ्य-पुस्तकों में सहगामी क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?
(अ) शिक्षक को आराम देना (ब) छात्रों को अनुशासित करना
(स) विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी बढ़ाना (द) पाठ छोटा करना
4. मातृभाषा की पाठ्यपुस्तक किसमें सहायक होती है?
(अ) केवल व्याकरण सिखाने में (ब) उच्च शिक्षा में
(स) छात्र के सर्वांगीण विकास में (द) भाषा की कठिनाई बढ़ाने में
5. पाठ्य-पुस्तकों में चित्रों का क्या कार्य होता है?
(अ) सजावट करना (ब) रंग भरना
(स) समझ को सरल बनाना (द) व्याकरण समझाना

उत्तर कुंजी (Answer Key)

1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (स)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पाठ्य पुस्तक निर्माण के अध्ययन पक्ष की पाँच विशेषताएँ लिखिये।
2. हिंदी की पाठ्य पुस्तक के पाँच गुणों का उल्लेख कीजिए।
3. पाठ्य चर्चा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. विद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए आप कौन सी पाठ्य-सहगामी गतिविधियों का प्रयोग करेंगे ?
2. हिंदी शिक्षण में संबंधी पाठ्य-सहगामी गतिविधियों का उचित प्रयोग किस तरह हो सकता है ? विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
3. पाठ्य पुस्तक का अर्थ बतलाते हुए इसकी आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालिये।
4. हिंदी भाषा की पाठ्य पुस्तकों के गुण दोषों पर प्रकाश डालते हुए सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत कीजिए।

6.11 संदर्भ

- चतुर्वेदी, शिखा (2019) हिंदी शिक्षण, आर. लाल बुक डिपो, मेरठा।
- मंगल, उमा (2016) हिंदी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
- शर्मा, दीपा, सिंह, इंद्र, पाठ्यक्रम एवं विद्यालय प्रबंधन, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवानी।
- मधु, नरूला, हिंदी शिक्षण, टवन्टी फर्स्ट सैन्चुरी प्रकाशन, पटियाला।
- शर्मा, शिवमूर्ति, हिंदी भाषा शिक्षण, नीलकमल प्रकाशन, हैदराबाद।
- शर्मा, राजकुमारी, रामशकल, हिंदी शिक्षण, राधा प्रकाशन, आगरा।
- श्रीवास्तव, आर.एस. हिंदी शिक्षण, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर।
- सिंह, निरंजन कुमार, माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
- कुमार, योगेश, आधुनिक हिंदी शिक्षण, ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, नई दिल्ली।
- सिंह, सावित्री, हिंदी शिक्षण, गया प्रसाद एण्ड संस, आगरा।
- स्वयं अधिगम सामग्री, हिंदी शिक्षण प्रविधि, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (1986). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, नई दिल्ली: भारत सरकार।

- संसाधन विकास मंत्रालय (1992). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986ः कार्यान्वयी योजना 1992, नई दिल्ली: भारत सरकार।मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली: भारत सरकार ।
- Ministry of Education, GOI, <https://www.education.gov.in/en>
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली: भारत सरकार, पृष्ठ संख्या-11
- स्वयं अधिगम सामग्री, हिंदी शिक्षण, मौलाना आजाद नेशनल यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

इकाई 7 – विषय सामग्री के चयन की दृष्टि से महत्वपूर्ण शैक्षिक संदर्भ

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 मूल कर्तव्य, मानव अधिकार, सुविधा वंचित वर्ग के बालक - बालिकाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण

7.4 जीवन कौशलों की शिक्षा से संबद्धता

7.5 सूचना और संचार प्रौद्योगिकी व भूमंडलीकरण का प्रभाव

7.6 भाषिक सामग्री, साहित्यिक रूप एवं विधाएं, मात्रा एवं प्रस्तुतीकरण।

7.7 सारांश

7.8 शब्दावली

7.9 अधिगम प्रतिफल

7.10 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

7.11 सन्दर्भ

7.1 प्रस्तावना

आज के दौर में भाषाओं के माध्यम से विभिन्न मुद्दों जैसे कि मानव अधिकारों की शिक्षा मूल कर्तव्य, सुविधा वंचित वर्ग के बालक- बालिकाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण, जीवन कौशलों की शिक्षा से संबद्धता, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी व भूमंडलीकरण का प्रभाव इत्यादि पर चर्चा करना व समझ बनाना जरूरी है। जब हम बुद्ध, जैन काल के विकास का इतिहास पढ़ा रहे हैं तो धार्मिक स्वतंत्रता व सहिष्णुता संबंधी मानव अधिकारों की संकल्पना को पढ़ा सकते हैं। क्षेत्रीय संस्कृति को पढ़ाते समय सांस्कृतिक विभिन्नता को समझाते हुए सांस्कृतिक अधिकारों की शिक्षा दे सकते हैं। सती और विधवा पुनर्विवाह पढ़ाते समय महिलाओं की समस्याओं की ओर ध्यान करते हुए उनके अधिकारों की चर्चा की जा सकती है। स्वतंत्रता के संघर्ष को पढ़ाते हुए लोकतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है। सरकार के कार्य व कर्तव्यों

को पढ़ाते समय मानवीय अधिकारों के संरक्षण की बात की जा सकती है। संसद और न्यायपालिका की भूमिका व कार्य पढ़ाते समय मानव अधिकारों के संरक्षण को लेकर विद्यार्थियों से चर्चा की जा सकती है। विज्ञान के विषयों में भोजन के बारे में चर्चा करते समय, भोजन का अधिकार, भुखमरी से मुक्ति व स्वास्थ्य अधिकारों की जानकारी दी जा सकती है। प्रदूषण के विषयों के साथ स्वास्थ्य और गुणात्मक पर्यावरण के अधिकार की बात की जा सकती है।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- मानव अधिकारों की शिक्षा के उद्देश्यों को जान पाएंगे।
- हिंदी भाषा में मौलिक कर्तव्यों के अध्ययन को समझ पाएंगे।
- शिक्षा पर वैश्वीकरण के प्रभावों को समझ पाएंगे।
- हिंदी भाषा की विषय वस्तु के माध्यम से जीवन कौशलों की शिक्षा दे सकेंगे।

7.3 मूल कर्तव्य, मानव अधिकार, सुविधा वंचित वर्ग के बालक-बालिकाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण

मूल कर्तव्य: भारतीय मौलिक कर्तव्यों में भारतीय संविधान का पालन करना, राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना, राष्ट्रगान के प्रति सम्मान की भावना रखना और सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना शामिल है। इस संविधान में 42वें संशोधन अधिनियम 1976 के माध्यम से नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों को सूचीबद्ध किया गया। मौलिक कर्तव्यों का विचार रूस के संविधान (तत्कालीन सोवियत संघ) से प्रेरित है। मूल रूप से मौलिक कर्तव्यों की संख्या 10 थी, बाद में 86वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2002 के माध्यम से एक और कर्तव्य जोड़ा गया था। सभी ग्यारह कर्तव्य संविधान के अनुच्छेद 51-ए में सूचीबद्ध हैं। राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों की तरह, मौलिक कर्तव्य भी प्रकृति में गैर-न्यायिक हैं।

- संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रीय गान का आदर करें।
- स्वतंत्रता के लिये राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोये

रखें और उनका पालन करें।

- भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें तथा उसे अक्षुण्ण रखें।
- देश की रक्षा करें और आह्वान किये जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।
- भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा व प्रदेश या वर्ग आधारित सभी प्रकार के भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं।
- हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझें और उसका परिरक्षण करें।
- प्राकृतिक पर्यावरण जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव आते हैं, की रक्षा और संवर्द्धन करें तथा प्राणीमात्र के लिये दया भाव रखें।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।
- सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें।
- व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करें जिससे राष्ट्र प्रगति की ओर निरंतर बढ़ते हुए उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को प्राप्त किया जा सके।
- छह से चौदह वर्ष की आयु के बीच के अपने बच्चे-बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करना (इसे 86वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2002 द्वारा जोड़ा गया)।

मौलिक कर्तव्यों का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को एक निरंतर सचेतक बनाना है। अनुशासन और प्रतिबद्धता की भावना को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। नागरिकों की सक्रिय भागीदारी से राष्ट्रीय लक्ष्यों को साकार करने में मदद करते हैं। मौलिक कर्तव्यों को न केवल कानूनी प्रतिबंधों से बल्कि सामाजिक प्रतिबंधों द्वारा भी लागू किया जाना चाहिए। मौलिक कर्तव्य केवल तकनीकी उद्देश्य नहीं हैं। बल्कि इन्हें सामाजिक परिवर्तन की कुंजी के रूप में शामिल किया गया था। समाज में सार्थक योगदान देने के लिये नागरिकों को पहले संविधान और उसके अंगों को समझना होगा जिसके लिये ष्जन-व्यवस्था और उसकी बारीकियों, शक्तियों और सीमाओं को समझना अनिवार्य है। इसलिये भारत में संवैधानिक संस्कृति का प्रसार बहुत जरूरी है।

मानव अधिकार: मानव अधिकारों की संचेतना सन् 1215 ई. में मैग्नाकार्टा एक्ट के द्वारा इंग्लैंड में पनपी। फिर धीरे-धीरे पश्चिमी देशों में अमेरिकी, फ्रांसीसी, रूसी क्रांति ने मानव अधिकारों

की तरफ जागरूकता बढ़ाई। इन सभी क्रांतियों के द्वारा नागरिकों के मूलभूत अधिकारों की मांग जोर पकड़ने लगी थी। स्वतंत्रता, समानता, न्याय और बंधुता आधुनिक विश्व का संदेश बन गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ का निर्माण मानव अधिकारों के लिए ज़मीनी तौर पर शुरूआत थी। “मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा” 10 दिसंबर 1948 को की गई थी। जिसमें ज्यादातर देशों ने स्वीकृति प्रदान की। 1968 में तेहरान में मानव अधिकारों की अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस, 1978 में वियना में अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस, 1988 में जेनेवा में मानव अधिकारों की शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार इत्यादि ने मानव अधिकारों की शिक्षा की तरफ ध्यान दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1995 से 2004 को मानव अधिकार शिक्षा दशक घोषित किया। इस कार्यक्रम में लगभग 100 अनुच्छेद सीधे तौर पर मानव अधिकारों की शिक्षा और प्रशिक्षण से जुड़े हैं। मानव अधिकार शिक्षा का विश्व कार्यक्रम भी मानव अधिकार कमिश्नर के कार्यालय द्वारा चलाया जा रहा है। जो कि पहले चरण में 2005-2009 में चला है। दूसरे चरण 2010-2014 की भी रूपरेखा तैयार हो गयी है। (<http://ww.2.ohchr.org>)

विद्यालय पाठ्यचर्या में मानव अधिकारों की शिक्षा

- बच्चे व युवा राजनीतिक और सामाजिक वातावरण में आसानी से सामंजस्य कर सकते हैं।
- बच्चों को अपने अधिकारों, बुनियादी स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक वातावरण में शामिल होने के उत्तरदायित्व का ज्ञान जरूरी है।
- यही बच्चे, कल के युवा, मतदाता, सांसद, अध्यापक और पुलिस अधिकारी बनेंगे।

“प्रौढ़ों की अपेक्षा बच्चों में बदलाव आसान है।” कहा जा सकता है कि युवा व बच्चों को लोकतंत्र का अनुकूलन और मानव अधिकारों का संरक्षण करने की शिक्षा देना वास्तव में एक भविष्य के समाज में सकारात्मक निवेश है। 1975 के एन.सी.ई.आर.टी. के राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में कहा है कि “सामाजिक चेतना की जागरूकता के लिए, लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास, सामाजिक अन्याय की अनुभूति और राष्ट्रीय एकता बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसलिए सभी विषयों के शिक्षण में हमें वैज्ञानिक मानवीयता की आत्मा को शामिल करना चाहिए। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (1988) ने चिह्नित किया है कि समतावादी, लोकतांत्रिक, पंथनिरपेक्षता, समानता, सामाजिक बंधनों से मुक्ति, सामान्य नागरिकता की चेतना को विकसित करना चाहिए। यह भी प्रस्तावित किया गया है कि

विद्यालय पाठ्यचर्या विश्व की समस्याओं के प्रति भी नज़रिया रखें जिससे विद्यार्थियों में विश्व की विभिन्न समस्याओं व संस्कृति को समझने का मौका मिले। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में कहा गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली पूरे देश के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की संरचना पर आधारित होगी जिसमें एक 'सामान्य केन्द्रिक' होगा तथा दूसरे अंशों को लचीला बनाया जाएगा। सामान्य केन्द्रिक में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, संवैधानिक कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व तथा राष्ट्रीय अस्मिता से संबंधित अनिवार्य तत्व सम्मिलित होंगे। यह सामान्य तत्व सभी विषयों में पिरोये जाएंगे। इन तत्वों के द्वारा ऐसे मूल्यों को बढ़ावा दिया जाएगा, जैसे भारत की सामान्य सांस्कृतिक धरोहर, समतावाद, लोकतंत्र और धर्म-निरपेक्षता, स्त्री-पुरुषों के बीच समानता, पर्यावरण का संरक्षण, सामाजिक समता, सीमित परिवार का महत्व और वैज्ञानिक मनोवृत्ति। भारत ने सदैव "वसुधैव कुटुम्बकम्" के आदर्शों को संजोया है। इस परम्परा के अनुसार शिक्षा द्वारा विश्वव्यापी दृष्टिकोण सुदृढ़ होगा तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना बढ़ेगी। समानता के उद्देश्य को साकार बनाने के लिए सभी को शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर उपलब्ध कराना ही पर्याप्त नहीं होगा, ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे सभी को शिक्षा में सफलता प्राप्त करने के भी समान अवसर प्राप्त हों। वास्तव में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य ही यह है कि सामाजिक माहौल और जन्म के संयोग से उत्पन्न पूर्वाग्रह और कुठाएँ दूर हों।

कोठारी कमीशन (1964-66) में भी कहा गया है कि लोकतंत्र को न केवल शासन के रूप में अपितु जीवन-शैली के रूप में अपनाना होगा। लोकतांत्रिक प्रवृत्तियों के स्वस्थ विकास से भाषा, सांस्कृतिक स्वरूप, धर्म आदि का अंतर देश के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के लाभदायक और समृद्ध ताने-बाने में बदल सकता है। शिक्षा के सभी कार्यक्रम लोकतांत्रिक मूल्यों को मन में बैठाने के लिए अपनाने चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में कहा है कि शिक्षा के मूल सरोकार आज भी निस्संदेह महत्व रखते हैं। ये हैं - बच्चों को इतना सक्षम बनाना कि वे जीवन का अर्थ समझ सकें और अपनी योग्यताओं का विकास कर सकें, अपने जीवन का एक उद्देश्य निश्चित करें और उसे प्राप्त करने का प्रयास करें तथा दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा करने का अधिकार दे।

सुविधा वंचित वर्ग के बालक- बालिकाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण

विद्यालय में समाज के सभी वर्ग, भाषा, क्षेत्र, धर्म व लिंग के प्रति एक जैसी भावना व

सोच विकसित करने के लिए खेलों का आयोजन किया जाना चाहिए। समावेशी शिक्षा में हर तरह के विद्यार्थी जैसे कि विशिष्ट एवं सामान्य बालक, सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े बालक सभी एक साथ ही शिक्षा ग्रहण करते हैं जिससे शिक्षक से बहुत ज्यादा दक्षता की उम्मीद की जाती है। समावेशी शिक्षा के लिए कक्षा के अनुरूप विभिन्न शिक्षण विधियों के अनुसार प्रशिक्षित अध्यापक होने चाहिए। इसलिए समावेशी शिक्षा की सबसे बड़ी समस्या समावेशी शिक्षक में शिक्षण कौशलों का विकास में कमी होना है। समावेशी शिक्षा की सबसे बड़ी समस्या है कि हमारे विद्यालयों के पास संसाधन मौजूद नहीं हैं। यदि बच्चे शारीरिक रूप से अक्षम है बधिर है ऐसे बालकों को अधिगम में समस्या होती है तो इनकी समस्याओं के अनुसार बच्चों को पढ़ाने के संसाधन होने जरूरी है जिससे उचित शिक्षण विधियों व संसाधनों के द्वारा पढ़ाया जा सके। भारत में भाषाओं के आधार पर भी बहुत विभिन्नता पाई जाती है। समावेशी शिक्षा में हर तरह की भाषा व बोली के बच्चे शिक्षा ग्रहण करने आते हैं लेकिन बच्चों की मातृभाषा के अनुसार पढ़ाने और संवाद करने में समस्या उत्पन्न होती है। समावेशी शिक्षा इतनी आसान नहीं है भाषायी कठिनाई के कारण शिक्षक को बहुत ज्यादा समस्याओं का सामना करना पड़ता है। स्थानीय भाषा, घर की भाषा व क्षेत्रीय भाषा को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए जिससे भाषायी आधार पर अलगाव न होकर समावेश हो सके। हमारे समाज में अभी भी भाषा, रंग, जाति, धर्म, क्षेत्र व अक्षम बच्चों के साथ भेदभाव किया जाता है या उनका समाज में घर परिवार व आस पड़ोस में ऐसा समाजीकरण होता है जो कि बचपन से बच्चों में किसी भी आधार पर हीनभावना भर देते है। समाज के लोगों को अपनी सामाजिक मनोवृत्ति के नकारात्मक भाव को खत्म करना होगा जिससे बच्चों के साथ हम भेदभाव व पक्षपातपूर्ण रवैया को छोड़कर आगे अपने जीवन में कुछ करने को प्रेरित कर सकते हैं। स्कूलों को अभिभावकों के साथ संवाद बनाकर बच्चों की समस्याओं को समझने के लिए प्रेरित किया जा सकता है जिससे सकारात्मक सामाजिक मनोवृत्ति के साथ समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों को पाया जा सके।

7.4 जीवन कौशलों की शिक्षा से सम्बद्धता

जीवन कौशल शिक्षा सभी संस्कृतियों में एक इलाके से दूसरे इलाके तक, एक देश से दूसरे देश में अपने उद्देश्यों। जीवन कौशल शिक्षा तीन महत्वपूर्ण बातों में समान है। सबसे पहले, जीवन कौशल शिक्षा के केंद्र में जीवन कौशल सीखना है। इसे अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार

की क्षमताओं के रूप में परिभाषित किया गया है जो व्यक्तियों को प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम बनाता है

- रोजमर्रा की जिंदगी की मांगों और चुनौतियों के साथ (डब्ल्यूएचओ. 1993) जीवन कौशल।
- ये अनिवार्य रूप से वे क्षमताएं हैं जो युवाओं में मानसिक कल्याण और क्षमता को बढ़ावा देने में मदद करती हैं।
- लोग जीवन की वास्तविकताओं का सामना करते हैं। दूसरे, बच्चों को कौशल सीखने और अभ्यास करने में सक्षम बनाना।
- जीवन कौशल शिक्षा बाल-केंद्रित और गतिविधि उन्मुख पद्धति पर आधारित है। और अंत में, जीवन।
- कौशल शिक्षा इस दर्शन पर आधारित है कि युवाओं को और अधिक लेने के लिए सशक्त बनाया जाना चाहिए।
- उनके कार्यों के लिए जिम्मेदारी।
- पाठ्यक्रम के विकास के माध्यम से जीवन कौशल सीखने की सुविधा प्रदान की गई है।
- बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए सिखाए जा रहे जीवन कौशल

शिक्षा किताबी सोच से बाहर निकल कर निर्णय लेना, रचनात्मक सोच, संचार, आत्म जागरूकता, भावनाओं से निपटना, समस्या को सुलझाना, महत्वपूर्ण सोच, पारस्परिक कौशल, समानुभूति, तनाव को झेलना

- तनाव प्रबंधन
- भावनात्मक विनियमन
- सकारात्मक सोचस्वाभिमान
- सहानुभूति
- सुनने का कौशल
- पारस्परिक प्रभावशीलता
- विवादों से निपटना
- रिश्ते-नातों का प्रबंधन करना
- आत्मविश्वासपूर्ण संचार
- लक्ष्य निर्धारण

- निर्णय लेना
- समस्या समाधान
- आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच
- कार्यकारी कार्य कौशल
- लचीलापन (प्रतिकूल परिस्थितियों से पीछे हटना)।

7.5 सूचना और संचार प्रौद्योगिकी व भूमंडलीकरण का प्रभाव

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी: हमारे जीवन का हर पहलू प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित है। जैसे- जैसे प्रौद्योगिकी आगे बढ़ रही है, हम नए विकास पर अधिक से अधिक निर्भर होते जा रहे हैं। यह न केवल हमारे जीवन को सरल बनाता है बल्कि अधिक कुशल भी बनाता है। जब हम अपने जीवन में आईसीटी की भूमिका पर चर्चा कर रहे हैं, तो हम शिक्षा में आईसीटी की शुरुआत के साथ हो रहे परिवर्तनों की उपेक्षा कैसे कर सकते हैं? छात्र कितनी अच्छी तरह सीखते हैं, इस पर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह शैक्षिक अवसरों का व्यापक विस्तार करता है और साथ ही शिक्षा में मूल्य भी जोड़ता है। शिक्षा में आईसीटी के महत्व को समझने के लिए, आइए शिक्षा में आईसीटी के लाभों पर नजर डालें। आज की तेजी से विकसित हो रही दुनिया में, शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) को एकीकृत करना पारंपरिक शिक्षण दृष्टिकोण को बदलने के लिए एक महत्वपूर्ण शक्ति बन गया है। शिक्षा में आईसीटी, जिसे अक्सर ई-लर्निंग या डिजिटल लर्निंग कहा जाता है, ने छात्रों के सीखने और शिक्षकों के पढ़ाने के तरीके में क्रांति ला दी है। इस डिजिटल परिवर्तन ने पहुंच, अन्तरक्रियाशीलता और प्रभावशीलता को बढ़ाकर शैक्षिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

स्कूल सूचना को संप्रेषित करने, बनाने, प्रसारित करने, संग्रहीत करने और प्रबंधित करने के लिए आईसीटी उपकरणों के विविध सेट का उपयोग करते हैं। कुछ संदर्भों में, आईसीटी भी शिक्षण-सीखने की बातचीत का अभिन्न अंग बन गया है, जैसे कि इंटरैक्टिव डिजिटल व्हाइटबोर्ड के साथ चॉकबोर्ड की जगह लेना। कक्षा के समय के दौरान सीखने के लिए छात्रों के अपने स्मार्टफोन या अन्य उपकरणों का उपयोग करना और फ्लिप कक्षा मॉडल जहां छात्र कंप्यूटर पर घर पर व्याख्यान देखते हैं और अधिक इंटरैक्टिव अभ्यास के लिए कक्षा के समय का उपयोग करते हैं। जब शिक्षक डिजिटल रूप से साक्षर होते हैं और आईसीटी का उपयोग करने के

लिए प्रशिक्षित होते हैं, तो ये दृष्टिकोण उच्च स्तरीय सोच कौशल को जन्म दे सकते हैं, छात्रों को अपनी समझ व्यक्त करने के लिए रचनात्मक और वैयक्तिकृत विकल्प प्रदान कर सकते हैं, और छात्रों को समाज और कार्यस्थल में चल रहे तकनीकी परिवर्तन से निपटने के लिए बेहतर तैयार कर सकते हैं। आईसीटी मुद्दों पर योजनाकारों को विचार करना चाहिए कुल लागत-लाभ समीकरण पर विचार करना, आवश्यक बुनियादी ढांचे की आपूर्ति और रखरखाव करना, और यह सुनिश्चित करना कि निवेश शिक्षक समर्थन और प्रभावी आईसीटी उपयोग के उद्देश्य से अन्य नीतियों से मेल खाता है।

भूमंडलीकरण का प्रभाव- शिक्षा का वैश्वीकरण: डॉ. रेनू गुप्ता के मत में संकुचित विचारधारा में शैक्षिक वैश्वीकरण का अर्थ है कि शैक्षिक परिवर्तनों को नियमित करने के लिए शुद्ध बाजारी यंत्रीकरण का प्रयोग करना। विस्तृत शब्दों में इसका अर्थ है शैक्षिक उत्पादकों के लिए ज्ञान से संबंधित कार्यकर्ताओं के लिए, शैक्षिक परामर्शदाताओं के लिए, शैक्षिक एवं प्रशासनिक सेवा प्रदाताओं के लिए, शैक्षिक सॉफ्टवेयर एवं तकनीकी संबंधी लोगों के लिए, अध्यापकों, विद्यार्थियों, स्वास्थ्य संबंधी व्यक्तियों, खेल संबंधी प्रशिक्षकों और वे सभी जो विद्यार्थियों के सांस्कृतिक आदा-प्रदान मनोरंजन एवं टूरिज्म व्यवसाय में संलग्न हैं, के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजार प्रदान करना। शिक्षा में वैश्वीकरण से अभिप्राय शिक्षण, अधिगम तथा संस्थाओं के सेवायुक्त कार्यों में अंतर्राष्ट्रीय अंश का एकीकरण है।

सुमित्रा सिंह के मत में शिक्षा का व्यापक और वास्तविक अर्थ भूमंडलीकरण की आवश्यकता के सहारे स्पष्ट होता है। सम्पूर्ण पृथ्वी पर मानवजाति की समस्त उपलब्धियां शिक्षा का प्रसाद हैं जिनका समान प्रसार उत्तम भूमंडलीकरण का आधार है। शिक्षा, भूमंडलीकरण के लिए और भूमंडलीकरण शिक्षा के लिए अपरिहार्य है। दोनों का परस्पर विकास, समग्र वैश्विक विकास की आवश्यक शर्त है। शैक्षिक भूमंडलीकरण आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था से संबंधित है। शिक्षा और भूमंडलीकरण सहजीवी हैं और एक दूसरे से प्रभावित होते हैं तथा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। भूमंडलीकरण और शिक्षा दोनों की प्रकृति समदैशिक है।

शैक्षिक पाठ्यक्रम पर प्रभाव - वैश्वीकरण के द्वारा स्कूली व उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में बहुत बदलाव आया है। अब पाठ्यक्रम में वैश्विक जरूरतों के हिसाब से विषय-वस्तु को शामिल किया जाता है। अब ज्ञान का स्वरूप ग्लोबल है इसी संदर्भ में कोर्स व विषय-वस्तु बनाई जा रही है। दूसरे देशों की संस्कृति को भी पढ़ाया जाता है ताकि विद्यार्थी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में भी आसानी से काम कर सकें। सूचना संप्रेषण तकनीक के पाठ्यक्रमों की भरमार है। शिक्षा के

निजीकरण से पाठ्यक्रम को बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार बनाया जा रहा है। शिक्षा को भी वैश्वीकरण के द्वारा एक बाजार की वस्तु बना दिया गया है। आज पाठ्यक्रम भी स्थानीय संस्कृति व जरूरतों को भूल गया है।

अध्यापकों पर प्रभाव - वैश्वीकरण का अध्यापकों की कार्यशैली व व्यवसायगत अभिक्षमताओं पर बहुत प्रभाव पड़ा है। आज अध्यापकों को समाजसेवक के तौर पर नहीं बल्कि विशेषज्ञ के तौर पर देखा जाता है। अध्यापकों से उम्मीद की जाती है कि वे विषय विशेषज्ञ हो और आधुनिक शिक्षण विधियों व वैश्विक ज्ञान के संदर्भ में शिक्षण कार्य करें। वैश्वीकरण से शिक्षा में निजीकरण बढ़ने के कारण अध्यापकों के उपर कार्यभार बढ़ा है। निजी शैक्षिक संस्थानों में अध्यापकों से बहुत ज्यादा काम लिया जाता है और वेतन भी सरकारी मानको के हिसाब से नहीं दिया जाता है। कम वेतन में ज्यादा काम करने के लिए अध्यापक विवश हैं। वैश्वीकरण से आज अध्यापक अपने आपको हमेशा शिक्षा में अद्यतन बनाएँ रखना चाहता है ताकि बाजार के अनुसार उसकी हमेशा मांग बनी रहे।

विद्यार्थियों पर प्रभाव - वैश्वीकरण से आज विद्यार्थियों के उपर ग्लोबल नॉलिज और पाठ्यक्रम का प्रभाव व दबाव है। विषय व कोर्स वैश्वीकरण से बाजार की मांग के अनुसार हो गए हैं। आज विद्यार्थी बाजार की मांग व रोजगार के अनुसार शिक्षा व प्रशिक्षण चाहता है। वैश्वीकरण से विद्यार्थियों के पास कोर्स व पाठ्यक्रम के विकल्प बहुत ज्यादा हो गए हैं। निजीकरण से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा गरीब जनता से दूर होती जा रही है। वैश्वीकरण से बहुराष्ट्रीय कंपनियों में रोजगार के अवसर विद्यार्थियों के लिए बढ़े हैं। वैश्वीकरण से आई. सी.टी, इंजीनियरिंग व प्रबंध पाठ्यक्रमों की मांग ज्यादा बढ़ी है। डिजिटल शैक्षिक संसाधनों के द्वारा भी विद्यार्थियों की पहुंच ज्ञान व जानकारी तक बढ़ी है। वैश्वीकरण ने ज्ञान आधारित भूमंडलीय अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है। आज बहुआयामी प्रतिभाओं की आवश्यकता है इसलिए विद्यार्थी भी विशेषज्ञ के साथ ही बाजार के मांग के अनुसार अपने आपको तैयार कर रहा है।

7.6 भाषिक सामग्री साहित्यिक रूप एवं विधाएं, मात्रा एवं प्रस्तुतीकरण।

भाषिक सामग्री: हिंदी भाषा की किसी भी विद्यालयी पुस्तक के अन्तर्गत विविध भाषा योग्यताओं एवं कौशलों के विकास की दृष्टि से अपेक्षित भाषिक तत्वों के समावेश पर विचार किया जाता है। भाषिक-सामग्री में शब्दावली (शब्द, पद, मुहावरे, विविध प्रयोग आदि) संचार (पद, उपवाक्य, वाक्य स्तर पर) तथा अन्य व्याकरणिक रूपों का इस दृष्टि से चयन किया जाता है कि बालकों का भाषा ज्ञान उत्तरोत्तर सवर्द्धित हो और भाषा के व्यवहार में उन्हें दक्षता प्राप्त हो। विषय-वस्तु का मुख्य उद्देश्य आपके लक्षित दर्शकों को मूल्य प्रदान करना है। यह हमेशा एक

कारक होना चाहिए, चाहे आप किसी भी प्रकार की गुणवत्ता वाली सामग्री बनाएं। सामग्री उत्पादन को संभावित और मौजूदा ग्राहकों और उनकी जरूरतों को शिक्षित करने, सूचित करने और उनके अनुरूप बनाने का प्रयास करना चाहिए। शैक्षणिक उद्देश्य के अनुरूप, विषय-वस्तु के अनुरूप, बालकों के विभिन्न बौद्धिक स्तर के अनुकूल, प्रारम्भिक कक्षाओं में नियंत्रित भाषा-सामग्री पर उतरोत्तर ऊँची कक्षाओं में सम्पन्न एवं संवर्द्धित भाषा सामग्री, ऐसे स्थानिक भाषा-प्रयोगों का समावेश जो मानव साहित्यिक भाषा के संवर्द्धन में सहायक है।

साहित्यिक रूप एवं विधाएँ- साहित्य की विधाएँ क्या हैं? चार मुख्य साहित्यिक विधाएँ हैं। कविता, कथा, गैर-कथा और नाटक। प्रत्येक विधा के भीतर हम कुछ विशेषताओं को साझा करते हैं जो उन्हें एक ही श्रेणी में रखते हैं। इसके अलावा, साहित्य की श्रेणियों को उप-शैलियों में विभाजित किया जा सकता है। एक विशेषता जो साहित्य की सभी विधाओं में साझा होती है, वह है आलंकारिक भाषा का उपयोग, जिसमें उपमा, रूपक, मानवीकरण और विडंबना जैसे साहित्यिक उपकरण शामिल हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि साहित्य के किसी भी काम में आलंकारिक भाषा होनी चाहिए, लेकिन इसका मतलब यह है कि साहित्य का कोई भी काम इसका इस्तेमाल कर सकता है। प्रत्येक साहित्यिक शैली और उप-शैली की विशेषताओं, साथ ही शैली के उदाहरणों पर निम्नलिखित अनुभागों में चर्चा की गई है।

विषय-सामग्री की मात्रा- पाठ्य-पुस्तकों का उपयोग शिक्षकों द्वारा शिक्षण सामग्री के रूप में और छात्रों द्वारा स्व-शिक्षण के स्रोत के रूप में किया जाता है। इसलिए, गुणवत्तापूर्ण पाठ्य-पुस्तकों का विकास महत्वपूर्ण हो जाता है। पाठ्य-पुस्तकों के लिए सामग्री बनाते समय, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों से इनपुट मांगे जाने चाहिए। इसके अलावा, सामग्री, ग्राफिक्स और लेआउट तथा शैक्षणिक दृष्टिकोण के लिए अनिवार्य मानक विकसित किए जाने चाहिए। समिति ने बच्चों के लिए अधिक अनुकूल पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता पर ध्यान दिया। इसने चित्रों, ग्राफिक्स और ऑडियो-विजुअल सामग्री के उपयोग की सिफारिश की। विषय सामग्री की मात्रा इस बात पर निर्भर है कि पाठ्य-पुस्तक शिक्षण के लिए कितना समय निर्धारित है और पाठ्य-पुस्तक शिक्षण के लिए कितना समय प्रदान किया जाता है। उद्देश्यों की पूर्ति की दृष्टि से किसी प्रकार की कितनी विषय सामग्री अपेक्षित है, विषय-सामग्री के विविध रूप क्या है, जीवन के किन-

किन क्षेत्रों एवं कार्यों से संबंधित विषय-सामग्री का समावेश होना चाहिए और उनका परस्पर क्या अनुपात होना चाहिए। आदि बातें की भाषा की दृष्टि से विचारणी है।

शैक्षणिक उद्देश्य एवं तद्विहित उपेक्षित व्यवहार, शिक्षार्थियों की रूचि एवं मानसिक परिपक्वता, पठन एवं भाषिक कौशलों के शिक्षण की विधि पद्धतियों आदि लक्षण ही विषय-सामग्री के वर्गीकरण के आधार है।

विषय सामग्री का प्रस्तुतीकरण- भाषिक-सामग्री में शब्दावली, संरचना, व्याकरणिक, अवयवों एवं शैली पर विचार किया जाता है। इनके वर्गीकरण में भी ज्ञात से अज्ञात, सरल से जटिल, स्थूल से सूक्ष्म की ओर, शिक्षार्थियों की रूचि एवं मानसिक परिपक्वता आदि का आधार लिया जाता है। शैली के अन्तर्गत शैली की प्रकृति और भाषा दोनों का ध्यान रखा जाता है। इसके वर्गीकरण में भी उपयुक्त सूत्रों का आधार माना जाता है। विविध साहित्यिक विधाओं का वर्गीकरण भी जटिलता, नवीनता, शिक्षार्थियों की मानसिक परिपक्वता और रूचि के अनुसार किया जाता है।

7.7 सारांश

इस अध्याय में विषयवस्तु के चयन में सहायक शैक्षिक संदर्भों को विस्तार से समझाया गया है। शिक्षण सामग्री का चयन केवल शैक्षणिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और वैश्विक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। इसमें मानव अधिकार, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, जीवन-कौशल, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तथा भूमंडलीकरण के प्रभाव जैसे आधुनिक मुद्दों को भी शामिल किया गया है। पाठ्यवस्तु के चयन में विविध साहित्यिक विधाओं, भाषा की प्रस्तुति और उसकी मात्रा का सम्यक समावेश आवश्यक होता है ताकि शिक्षण समावेशी, सुसंगत और प्रभावी बन सके।

7.8 शब्दावली (Glossary)

शब्द	अर्थ
विषयवस्तु	शिक्षण हेतु चयनित पाठ, विषय या सामग्री
मानव अधिकार	प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त मूलभूत सामाजिक व कानूनी अधिकार

शब्द	अर्थ
जीवन कौशल	व्यावहारिक जीवन में उपयोगी क्षमताएँ जैसे निर्णय, संवाद, सहानुभूति आदि
विशेष आवश्यकता विद्यार्थी	वाले जिनके लिए समावेशी एवं सहायक शिक्षण विधियाँ आवश्यक हों
समावेशी शिक्षा	वह शिक्षा प्रणाली जो हर पृष्ठभूमि के बच्चों को समान अवसर देती है
सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT)	डिजिटल उपकरणों द्वारा सूचना के आदान-प्रदान की प्रणाली
भूमंडलीकरण	विश्वव्यापी सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संबंधों की प्रक्रिया
साहित्यिक रूप	भाषा की अभिव्यक्ति की विविध विधाएँ – कविता, कहानी, निबंध आदि
प्रस्तुतीकरण	जानकारी या सामग्री को प्रस्तुत करने की शैली
मूल्यपरक शिक्षा	नैतिक मूल्यों को केंद्र में रखकर दी जाने वाली शिक्षा

7.9 अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)

इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात विद्यार्थी:

1. विषयवस्तु चयन के शैक्षिक एवं सामाजिक संदर्भों को समझ सकेंगे।
2. मानव अधिकार, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों और जीवन कौशल के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।
3. ICT और भूमंडलीकरण के प्रभाव को भाषा शिक्षण से जोड़ सकेंगे।
4. सामग्री चयन में भाषा के साहित्यिक रूप, उसकी प्रस्तुति और मात्रा का संतुलन बना सकेंगे।

5. समावेशी एवं मूल्यपरक शिक्षण सामग्री के चयन हेतु विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम होंगे।

7.10 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. समावेशी शिक्षा का उद्देश्य क्या है?

- (अ) केवल होशियार छात्रों पर ध्यान देना (ब) सभी छात्रों को समान अवसर देना
(स) अंग्रेजी भाषा पर ज़ोर देना (द) ग्रामीण छात्रों को वंचित रखना

2. ICT का पूर्ण रूप क्या है?

- (अ) Indian Communication Techniques
(ब) International Computer Teaching
(स) Information and Communication Technology
(द) Internet Central Training

3. विषयवस्तु चयन में साहित्यिक रूपों का क्या महत्व है?

- (अ) छात्रों को भ्रमित करना (ब) व्याकरण सिखाना
(स) भाषा में विविधता और सौंदर्यबोध बढ़ाना (द) केवल शब्दकोष ज्ञान बढ़ाना

4. जीवन कौशल में निम्न में से कौन शामिल है?

- (अ) गणित कौशल (ब) भाषा व्याकरण
(स) संवाद, निर्णय क्षमता, सहानुभूति (द) परीक्षा की रणनीति

5. भूमंडलीकरण का प्रभाव भाषा शिक्षण पर कैसे पड़ता है?

- (अ) केवल एक भाषा पर ज़ोर (ब) भाषिक विविधता की अनदेखी

(स) बहुभाषिकता और अंतरसांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा (द) परंपरागत शिक्षण को बढ़ावा

उत्तर कुंजी (Answer Key)

1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (स) 5. (स)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं?
2. अध्यापकों पर वैश्वीकरण का प्रभाव पर नोट लिखिए।
3. मौलिक कर्तव्यों की शिक्षा पर प्रकाश डालिए।
4. मानव अधिकारों की शिक्षा का क्या महत्व है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हाईस्कूल स्तर पर हिंदी शिक्षण में मानव अधिकारों की शिक्षा किस तरह देंगे ?
2. हिंदी शिक्षण में मूल कर्तव्यों की क्या शिक्षण सामग्री होनी चाहिए ? उनमें से किन्हीं दो पर उदाहरण सहित अपने विचार व्यक्त कीजिए।
3. वैश्वीकरण का शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ा है। उदाहरण देकर समझाइए।
4. हिंदी शिक्षण में जीवन कौशल की शिक्षा की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

7.11 संदर्भ

- चतुर्वेदी, शिखा (2019) हिंदी शिक्षण, आर. लाल बुक डिपो, मेरठा।
- मंगल, उमा (2016) हिंदी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
- शर्मा, दीपा, सिंह, इंद्र, पाठ्यक्रम एवं विद्यालय प्रबंधन, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवानी।
- मधु, नरूला, हिंदी शिक्षण, ट्वन्टी फर्स्ट सैन्चुरी प्रकाशन, पटियाला।
- शर्मा, शिवमूर्ति, हिंदी भाषा शिक्षण, नीलकमल प्रकाशन, हैदराबाद।
- शर्मा, राजकुमारी, रामशकल, हिंदी शिक्षण, राधा प्रकाशन, आगरा।
- श्रीवास्तव, आर.एस. हिंदी शिक्षण, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर।
- सिंह, निरंजन कुमार, माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण, राजस्थान हिंदी ग्रंथ

अकादमी, जयपुर।

- कुमार, योगेश, आधुनिक हिंदी शिक्षण, ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, नई दिल्ली।
- सिंह, सावित्री, हिंदी शिक्षण, गया प्रसाद एण्ड संस, आगरा।
- स्वयं अधिगम सामग्री, हिंदी शिक्षण प्रविधि, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (1986). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, नई दिल्ली: भारत सरकार।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (1992). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986: कार्यान्वयी योजना 1992, नई दिल्ली: भारत सरकार।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली: भारत सरकार।
- Ministry of Education, GOI, <https://www.education.gov.in/en>
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली: भारत सरकार, पृष्ठ संख्या-11
- ह्यूमन राईट्स, एजुकेशन कि मसैजेस

<http://www2.ohchr.org/english/events/day2004/hre.htm>

- इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ ह्यूमन राईट्स, “एजुकेशन: ए टूल फॉर द एलिमिनेशन ऑफ ह्यूमन राईट्स वॉयलेशन्स <http://www.rightsedu.net/contactus.htm>.
- पांडा, प्रौती, “ह्यूमन राईट्स एजुकेशन इन इंडियन स्कूल्स: करीकुलम डेवलपमेंट”,

<http://www.hurights.or.jp/pub/hreas/4/11panda.htm>

- सिंह, सुमित्रा. (2003), “भूमंडलीकरण और शिक्षा पर”, परिप्रेक्ष्य, अप्रैल, नीपा, नई दिल्ली।
- आजाद, जे.एल. (2003), “भूमंडलीकरण का शिक्षा पर प्रभाव”, परिप्रेक्ष्य, अप्रैल, नीपा, नई दिल्ली।

इकाई 8 – सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण और विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 हिन्दी भाषा शिक्षण में सहायक शिक्षण सामग्री की आवश्यकता व महत्व

8.4 श्रव्य-दृश्य शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण

8.4.1 पत्रिकाएं, अखबार, कक्षा-पुस्तकालय।

8.5 आई. सी. टी., दृश्य श्रव्य सामग्री, रेडियो, टेलीविजन, फिल्में, भाषा प्रयोगशाला।

8.6 सहसंज्ञानात्मक गतिविधियाँ- चर्चा, वाद-विवाद, खेल, कार्यशालाएं, गोष्ठी।

8.7 सारांश

8.8 शब्दावली

8.9 अधिगम प्रतिफल

8.10 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

8.11 सन्दर्भ

8.1 प्रस्तावना

शिक्षा के प्रारंभ से ही शिक्षण के अनेक ढंग प्रचलित रहे हैं विद्यालय में शिक्षण कार्य अध्यापक के द्वारा किया जाता था जो कि सामान्यतौर पर मौखिक रूप से किया जाता था। अध्यापक शिक्षण का मुख्य केंद्र बिंदु था और विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता बना रहता था। एक तरह से अध्यापक को शिक्षण कार्य में किसी अन्य तरह की सहायता नहीं मिलती थी। लेकिन आज का दौर बदल गया है मनोविज्ञान और समाजशास्त्र ने शिक्षा को बाल केंद्रित बना दिया है। विश्व व राष्ट्रीय स्तर पर बनी शिक्षा की नीतियां पूरी तरह से आधुनिक शिक्षा को बाल केंद्रित बनाती है। आज की शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। शिक्षा बच्चों की रूचि उसके स्वभाव और उसके मानसिक विकास के आधार पर होनी चाहिए। अध्यापक कक्षागत शिक्षण प्रक्रिया को इस तरह सरल व सजीव बनाएं कि विद्यार्थियों को आसानी से समझ में आ जाए। इस तरह शिक्षण प्रक्रिया की सफलता के लिए बहुत से साधनों की आवश्यकता होती है। शिक्षण में पाठ

को रूचिकर, प्रभावशाली व बच्चों के स्वभाव के अनुकूल बनाने के लिए इस तरह के साधनों का प्रयोग होता है। ये साधन पाठ्य पुस्तकों कक्षा शिक्षण प्रणालियों, कक्षा गत शिक्षण क्रियाओं एवं सह सम्बन्ध क्रियाओं आदि से सम्बन्धित होते हैं। ऐसा करने के लिए शैक्षिक उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है जिनको सहायक शिक्षण सामग्री के नाम से पुकारा जाता है। इस तरह ऐसे सभी साधन, उपकरण तथा स्रोत जो एक शिक्षक को शिक्षण प्रक्रिया में सहायता प्रदान करते हैं उन्हें शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में सहायक शिक्षण सामग्री कहते हैं।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- सहायक शिक्षण सामग्री का अर्थ समझ सकेंगे।
- हिन्दी भाषा शिक्षण में सहायक शिक्षण सामग्री की आवश्यकता व महत्व को जान सकेंगे।
- श्रव्य-दृश्य साधनों का उपयुक्त चयन तथा प्रयोग कर सकते हैं।
- हिन्दी भाषा शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली सहायक शिक्षण सामग्री से विस्तारपूर्वक परिचित हो सकेंगे।
- हिन्दी शिक्षण में सहायक सामग्री का उचित प्रयोग कर सकेंगे।
- सहसंज्ञानात्मक गतिविधियों की रूपरेखा (चर्चा, वाद-विवाद, खेल, कार्यशालाएं, गोष्ठी) को समझ सकेंगे।
- हिन्दी भाषा शिक्षण में पुस्तकालय के महत्व को समझ सकेंगे।
- हिन्दी भाषा प्रयोगशाला का हिन्दी शिक्षण में प्रयोग कर सकेंगे।

8.3 हिन्दी भाषा शिक्षण में सहायक शिक्षण सामग्री की आवश्यकता व महत्व

सर्वोत्तम प्रेरक - शिक्षण सहायक सामग्री से शिक्षण के दौरान बच्चों का पढ़ने में ध्यान आकर्षित करते हैं साथ ही उनमें रूचि, उत्साह व प्रेरणा भी पैदा करते हैं। पाठ रोचक बन जाता है और बच्चे हर समय तत्पर रहकर विषय में ध्यान लगा पाते हैं। कठिन से कठिन विषय को आसान भाषा में नवीनीकरण के साथ रोचक बनाया जा सकता है। सूचना एवं संप्रेषण तकनीक के प्रयोग से आज हम पाठों को नये और उत्साहपूर्वक व रोचक अंदाज में प्रस्तुत कर सकते हैं। जैसे पर्यावरण प्रदूषण जैसे विषय पर विद्यार्थियों को निबंध लिखना कोई फिल्म और वीडियो को दिखा कर अच्छी तरह समझा सकते हैं। इस तरह ज्ञानेंद्रियों के प्रभावपूर्ण उपयोग में भी शिक्षण

सहायक सामग्री सहायक होती है।

विद्यार्थियों को अनुभव प्रदान करते हैं- शिक्षण सहायक सामग्री से विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव मिलता है। काम करके सीखना या अपने आप को अधिगम का हिस्सा मानते हैं। प्रत्यक्ष अनुभव से विषय सार्थक और सरल बन जाता है। विद्यार्थियों की भागीदारी शिक्षण प्रक्रिया में बढ़ती है। जैसे रिक्त स्थानों की पूर्ति का कोई गतिविधि चार्ट बनाकर हम विद्यार्थियों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करवा कर उनको अनुभव दे सकते हैं।

कक्षा शिक्षण में विविधता लाने में मदद मिलती है- शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से पंरपरागत तरीकों को छोड़कर नवीन तरीकों से पढ़ाते हैं जिससे शिक्षण में विविधता आती है हम एक ही विषय को कई तरह से पढ़ा सकते हैं जिससे हर मानसिक स्तर का विद्यार्थी कक्षा में विषय को समझ पाता है। कुछ विद्यार्थियों को कक्षा में श्रव्य-दृश्य सामग्री से अच्छी तरह समझ आता है। विविधता से रुचि बनती है।

कठिन विषयों को समझने में आसानी होती है- शिक्षण सहायक सामग्री से कठिन विषयों पर रोचक व गतिविधि आधारित पाठ योजना तैयार करके विद्यार्थियों को आसान तरीके से समझाया जा सकता है। कबीर के दोहों को पढ़ाते हुए हम कठिन शब्दों के अर्थ साथ साथ चार्ट के माध्यम से समझा सकते हैं या कोई रोचक कम्प्यूटर आधारित पॉवरपवाइंट प्रस्तुतीकरण कर सकते हैं। सूचना एवं संप्रेषण तकनीक के प्रयोग से हम कहानियों या किसी कवि की जीवनी पर वीडियो भी दिखा सकते हैं।

भाषा शिक्षण सूत्रों पर आधारित- हिन्दी भाषा शिक्षण में भी हम शिक्षण के विभिन्न सूत्रों जैसे कि सरल से कठिन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर से पाठ्य सामग्री शीघ्रता से समझ आती है। सूचना एवं संप्रेषण तकनीक के युग में शिक्षण सहायक सामग्री के प्रयोग से पाठ सरल, मूर्त, स्थूल ढंग से ही प्रारंभ होता है और विद्यार्थी अमूर्त एवं सूक्ष्म विषयों को भी सीखने के योग्य हो जाता है।

हिन्दी भाषा के उद्देश्यों के प्राप्त करने में सहायक- हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने में शिक्षण सहायक सामग्री बहुत ही सहायक होगी। जैसे कि हिन्दी भाषा के चारों कौशलों श्रवण कौशल, मौखिक, अभिव्यक्ति कौशल व लेखन कौशल का प्रयोग करने में पारंगत हुआ जाए। हम आज लैपटॉप व स्मार्ट फोन के युग में भाषा के कौशलों को आसानी से समझा सकते हैं। किसी कहानी को टेपरिकॉर्डर से सुना कर या वीडियो दिखा कर हम बच्चों से उनकी लिखित व मौखिक अभिव्यक्ति करवा सकते हैं।

विद्यार्थी सक्रिय रहता है- अधिकांश शिक्षण सहायक सामग्रियों में कुछ न कुछ करने का अवसर रहता है। श्रव्य-दृश्य सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थी सक्रिय हो जाते हैं और उससे संबंधित प्रश्न

पूछे जाते हैं। शिक्षण सहायक सामग्री विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति को विकसित करते हुए उनमें सोच पैदा करती है जिससे विद्यार्थी सुखद और स्वाभाविक वातावरण में पढ़कर अपने आप को सक्रिय रखता है।

8.4 श्रव्य-दृश्य शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण

श्रव्य-दृश्य सामग्री को निम्न तौर पर विभक्त किया जा सकता है।

श्रव्य साधन	दृश्य साधन	श्रव्य-दृश्य साधन
रेडियो टेप-रिकॉर्डर सी.डी. प्लेयर स्मार्ट फोन	श्यामपट्ट नमूने चित्र मॉडल मानचित्र ग्राफ चार्ट बुलेटिन बोर्ड रेखाचित्र तथा खाके फ्लानेल बोर्ड फ्लैश कार्ड मूक चित्र मेग्रेटिक बोर्ड वास्तविक वस्तुएँ पोस्टर स्लाइड	चलचित्र टेलीविज़न नाटक कंप्यूटर स्मार्ट फोन एल.सी.डी. डी.वी.डी. रिकॉर्ड ध्वनि से युक्त मुद्रित सामग्री क्षेत्रीय पर्यटन

8.4.1 पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, कक्षा-पुस्तकालय।

पत्रिकाएँ - हिन्दी शिक्षण में साहित्यिक पत्रिकाओं का बहुत ही महत्व है। हिन्दी भाषा प्रयोगशाला और विद्यालयी पुस्तकालय में देश विदेश की प्रसिद्ध हिन्दी पत्रिकाओं को उपलब्ध करवाना चाहिए। पत्रिकाएँ विद्यार्थियों के मानसिक स्तर व विभिन्न रुचियों के अनुसार होनी चाहिए जिससे हर तरह का विद्यार्थी उससे लाभ उठा सकें और भाषा को पढ़ने में उसकी रुचि बन सकें। विद्यालयों को अपनी भी पत्रिका प्रकाशित करनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों को अपनी कविता व निबंध लिखने का मौका मिलेगा। हिन्दी शिक्षण की दृष्टि से विद्यालय पत्रिकाएँ

बालकों में उचित दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हो सकती हैं। दीवार मैगजीनों के माध्यम से विषय वस्तु को रोचक एवं स्पष्ट बनाया जा सकता है। शिक्षक छात्रों से लेख लिखवाकर तथा समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों को कटवाकर दीवार पर क्रम से प्रस्तुत करवा सकता है। ऐसा करवाकर वह तत्कालीन घटनाओं तथा विवादास्पद मामलों के शिक्षण को रोचक एवं सरल बना सकता है।

समाचार पत्र- हिन्दी शिक्षण में ही नहीं हर विषय के शिक्षण में समाचार पत्रों की बड़ी भूमिका होती है। भाषा को सीखने में समाचार पत्र हमेशा से मान्य साधन है। यदि विद्यार्थी को प्रतिदिन समाचार पत्र पढ़ने की आदत डाल दी जाए तो विद्यार्थी भाषा के शब्द निर्माण व शब्दों का भण्डार, अभिव्यक्त करना और भाषा के अध्ययन में रूचि को बढ़ाएगा। शिक्षक हिन्दी से संबंधित साहित्यिक व अन्य समाचारों को पढ़ने का निर्देश विद्यार्थी को दे सकता है जिससे वह इस तरह के समाचारों को इकट्ठा करके कक्षा में चर्चा कर सकता है। समाचार पत्रों के अध्ययन से विद्यार्थी समसामयिक घटनाओं से भी अवगत रहता है। शिक्षक हिन्दी के समाचार पत्रों का विद्यालयी पुस्तकालय और हिन्दी कक्षा पुस्तकालय या हिन्दी शिक्षण प्रयोगशाला में उपलब्ध करवा सकता है। शिक्षक छात्रों से हिन्दी साहित्य से जुड़े समाचार पत्र में प्रकाशित लेखों को कटवाकर दीवार पर क्रम से प्रस्तुत करवा सकता है इस तरह के कार्यों से विद्यार्थी को करके सीखना भी आयेगा। प्रातःकालीन सभा में समाचार पत्र में से मुख्य समाचारों को पढ़ कर विद्यार्थियों को उसकी जानकारी दी जा सकती है। इससे दिन में अवकाश समय में वो समाचार ध्यान से समझने के लिए पुस्तकालय में जाएंगे।

हिन्दी भाषा शिक्षण में पुस्तकालय- पुस्तकालय किसी भी शिक्षण संस्थान में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जिससे विद्यार्थियों को पढ़ने और ज्ञान भण्डार करने में सहायता मिलती है। भाषा शिक्षण में पुस्तकालय की उपयोगिता अन्य विषय की अपेक्षा अधिक मानी जाती है। भाषायी कौशलों के विकास के लिए तो पुस्तकालय का उपयोग करना अति आवश्यक हो जाता है।

क्योंकि पठन, लेखन, वार्तालाप में सम्पुष्टता आवश्यक है।

- पुस्तकालय से भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।
- पुस्तकालय साहित्य की दृष्टि से स्वाध्याय में रूचि बनाता है।
- पुस्तकालय से जुड़ कर विद्यार्थी भाषायी योग्यताओं को विस्तार दे पाता है। अपने विषय की अन्य पुस्तकों को पढ़ कर ज्ञान में वृद्धि करता है।
- पुस्तकालय में उपन्यास, कहानी, नाटक व अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं के अध्ययन से साहित्य में रूचि बढ़ती है।

- पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों का अध्ययन करके विद्यार्थी अपनी क्षमता व योग्यता को बढ़ाता हैं।
- पाठ्यसहगामी क्रियाओं में सहायता शिक्षकों व विद्यार्थियों दोनों को मिलती है।
- जो विद्यार्थी आर्थिक दृष्टि से अच्छी स्थिति में नहीं हैं वे पुस्तकालय से लाभ उठाकर ज्ञान अर्जित कर सकते हैं।
- पुस्तकालय से शिक्षकों व विद्यार्थी दोनों अवकाश के समय का सदुपयोग कर सकते हैं। चिंतन करने व स्वयं का सुविचार बनाने के अवसर प्राप्त होते हैं।
- पुस्तकालय के साथ वाचनालय होना भी अतिआवश्यक है। वाचनालय से पुस्तकालय का उचित प्रयोग हो सकता है।

पुस्तकालय में जाने के लिए अध्यापक विद्यार्थियों को लगातार उन्हें प्रोत्साहित करता रहें। शिक्षक स्वयं पुस्तकालय जाकर विद्यार्थियों को पढ़ने व किताबों का सही तौर पर अपने पाठ्यक्रम के हिसाब से इस्तेमाल सिखाए। भाषा के शिक्षक पाठान्तर क्रियाओं का आयोजन करेंगे तो विद्यार्थी अवश्य ही पुस्तकालय जाने पर ही भाषण, वाद-विवाद, कविता पाठ इत्यादि की तैयारी कर सकते हैं। हर सप्ताह विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय में पीरियड होने चाहिए जिससे वे अनुशासन में रहकर पुस्तकालय का प्रयोग करेंगे व आदत और रूचि भी बनाएंगे। पुस्तकालय का व्यवस्थित होना विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। पुस्तकालय का सुप्रबन्ध से उपयोग, अर्थपूर्ण तथा विद्यार्थियों को एक सफल जीवन जीने के ढंग सीखा देता है।

8.5 आई. सी. टी., दृश्य श्रव्य सामग्री, रेडियो, टेलीविजन, फिल्मों भाषा प्रयोगशाला

आज के दौर में नए नए आधुनिक उपकरणों का प्रयोग हिन्दी शिक्षण में किए जा सकते हैं। स्मार्ट फोन, एल.सी.डी., डी.वी.डी., रिकॉर्ड ध्वनि से युक्त मुद्रित सामग्री व अन्य म्यूजिक सिस्टम का प्रयोग भी हिन्दी शिक्षण के लिए किया जा सकता है। आज स्मार्ट फोन व मोबाइल, लैपटॉप, टेबलेट जैसे आधुनिक उपकरणों में बहुत सी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इंटरनेट की सुविधा भी स्मार्ट फोन व मोबाइल में होने से इनका प्रयोग विभिन्न तरह से किया जा सकता है। इनमें श्रव्य व दृश्य दोनों तरह की सहायक सामग्री बनाई जा सकती है जैसे फोटोग्राफी, रिकार्डिंग करना, ऑकड़ों का संग्रह करना इत्यादि आसानी से करके कक्षा में शिक्षण के दौरान प्रयोग कर सकते हैं। हिन्दी शिक्षण के लिए कहानी सुनाना, उच्चारण करना, अशुद्धियों को दूर करना आदि

आसानी से कक्षा में प्रयोग किया जा सकता है। इस तरह हिन्दी शिक्षण के लिए भाषा से संबंधित रचनात्मक, सकारात्मक कार्य को प्रभावी बनाया जा सकता है।

श्रव्य-दृश्य साधन- श्रव्य-दृश्य साधन वे साधन हैं, जिन्हें देखा और सुना जा सकता है। दृश्य का अर्थ है जिन्हें देखा जा सके, श्रव्य का अर्थ है जिसे सुना जा सके, तीसरे प्रकार के वे साधन हैं जिनको सुना व देखा भी जा सकता है। इस तरह से श्रव्य-दृश्य सामग्री विषय की स्पष्ट धारणा बनाने में सहायता करती है। हम दुनिया में सभी चीजों का अनुभव नहीं ले सकते हैं इस कारण बहुत सारे अनुभव हम प्रतिरूपों की सहायता से लेते हैं। अतः श्रव्य-दृश्य सामग्री से हम कक्षा में या विभिन्न शिक्षण प्रक्रियाओं में लिखित या बोली गयी विषयों को समझाने में सहायता देती है। तकनीकी संचार व द्विमार्गी संप्रेषण विधियों शिक्षण सहायक सामग्री में क्रांति आई है। हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के संदर्भ में शिक्षण, पाठ्यचर्या, प्रायोगिक कार्य, अभ्यासात्मक कार्य, दत्त कार्य को ध्यान में रखकर सूचना एवं संप्रेषण तकनीक का प्रयोग किया जा सकता है जिससे विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण के तौर पर इसे रोचक बनाया जा सकता है।

कम्प्यूटर - कम्प्यूटर एक ऐसी इलैक्ट्रॉनिक युक्ति है, जो प्राप्त सूचनाओं को दिए गए निर्देशों के अनुरूप विश्लेषित कर, अत्यन्त सूक्ष्म समय में सत्य और विश्वसनीय परिणाम प्रस्तुत करती है। आज के दौर में कम्प्यूटर ने शिक्षण प्रक्रिया को पूरी तरह से प्रभावित कर दिया है। शिक्षण तथा अनुदेशन प्रक्रिया, शिक्षा में शोध, शैक्षिक निर्देशन तथा परामर्श हेतु व परीक्षा परिणाम के लिए भी कम्प्यूटर का बड़े पैमाने पर प्रयोग हो रहा है। हिन्दी शिक्षण में कम्प्यूटर का प्रयोग भाषा को सीखाने में वृहत स्तर पर प्रयोग हो सकता है। उच्चारण, लिखना व सुनना जो कि किसी भी भाषा के अहम आधार के पहलू है कम्प्यूटर के द्वारा आसानी से प्रयोग किए जा सकते हैं। किसी भी भाषा के शिक्षण में कम्प्यूटर आज बहुत ही नवाचार के तौर पर प्रयोग हो रहा है। प्राथमिक विद्यालयों में हम कहानी व कम्प्यूटर आधारित पाठ योजना के द्वारा बच्चों को पढ़ने के लिए अभिप्रेरित कर सकते हैं। संगीत, रिकॉर्ड कैसेट व फिल्म इत्यादि अब कम्प्यूटर पर आसानी से देख सकते हैं। इंटरनेट के युग में हम कम्प्यूटर को जीवन को अहम हिस्सा मान सकते हैं।

रेडियो - रेडियो शिक्षा और मनोरंजन का महत्वपूर्ण उपकरण है। हिन्दी भाषा शिक्षण की दृष्टि से यह साधन लाभकारी सिद्ध हुआ है। इससे हम हिन्दी भाषा का शुद्ध उच्चारण सीखा सकते हैं। रेडियों में बच्चों को सीधे प्रसारित होने वाले भाषण, कवि सम्मेलन, 26 जनवरी व 15 अगस्त के कार्यक्रमों को सुना कर हिन्दी भाषा के शिक्षण व ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं। आजकल रेडियों स्टेशनों में लगातार वृद्धि हो रही है, चैनलों की भरमार है। स्थानीय स्तर पर रेडियो सुनने में

लोग आज भी रूचि रखते हैं बच्चों को हिन्दी से संबंधित सही व उचित कार्यक्रमों को सुनने के लिए प्रेरित करके शिक्षक सही दिशा दे सकते हैं। आजकल मोबाइल और गाड़ियों में रेडियो की उपलब्धता है तो इसलिए विद्यार्थियों तक पहुँचना आसान है। यह मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने का एक प्रभावपूर्ण साधन है। इसमें विद्यार्थी तैयारी करके भाग लेने के लिए प्रेरित होंगे। रेडियो सुनने से कल्पनाशक्ति जागृत होती है। संवादों को सुनकर ज्ञान के साथ अभिव्यक्ति कौशल के ढग को भी सीखते हैं। कहानियाँ, उपन्यास, नाटक व कवि सम्मेलन इत्यादि सुनकर विद्यार्थी बोलने की कला तथा अपने विचारों को क्रमबद्ध करना सीख पाएंगे।

टेप रिकॉर्डर- टेप रिकॉर्डर की शिक्षण में बहुत उपादेयता है। टेप रिकॉर्डर के माध्यम से आवाज़ को भर भर कर बार बार सुना जा सकता है। हिन्दी शिक्षण में शिक्षक अपनी पाठ्य सामग्री को टेप में भर कर विद्यार्थियों को ज्ञान तथा उच्चारण से संबंधित बातों का सुना सकता है। विशिष्ट भावों तथा विचारों को टेप रिकॉर्डर में भर लिया जाए तो हम उसका उपयोग विभिन्न और मनचाहे अवसरों पर कर सकते हैं। हिन्दी साहित्यकारों की चर्चा, कवि सम्मेलन, उपन्यास व कहानियों की रिकॉर्डिंग को भी विद्यार्थियों को सुना सकते हैं। हिन्दी भाषा जो विशेषकर ऐसे बच्चे सीख रहे हैं जिनकी मातृभाषा नहीं है वे अपनी ध्वनि को सुन कर अशुद्धियों का निराकरण भी कर सकते हैं। विद्यार्थी अपनी बोलने की गति, स्वर, प्रवाह संबंधी त्रुटियों में सुधार आसानी एवं शीघ्रता से कर सकते हैं। टेप रिकॉर्डर की जगह आजकल सी. डी. प्लेयर भी प्रयोग किया जा रहा है। पेन ड्राइव का इस्तेमाल भी रिकॉर्डिंग के लिए किया जा सकता है। कम्प्यूटर का इस्तेमाल भी रिकॉर्डिंग के लिए किया जा सकता है।

8.6 सहसंज्ञानात्मक गतिविधियों की रूपरेखा (चर्चा, वाद-विवाद, खेल, कार्यशालाएं, गोष्ठी)

चर्चा- हिन्दी विषय से संबंधित समस्याओं को अध्यापक के द्वारा विचार विमर्श के द्वारा बहुत ही सहज और आसानी से पढ़ाया जा सकता है। आज का दौर विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा का है आज विद्यार्थी को निष्क्रिय श्रोता नहीं माना जाता है वरन् उसको सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय तौर पर शामिल किया जाता है। विचार विमर्श या वाद विवाद एक सक्रिय विधि है जिसमें सभी विद्यार्थी अपने आपको उसमें सहभागी पाते हैं। यह शिक्षण की वह प्रविधि या विधि है जिसमें बालक तथा शिक्षक मिल जुलकर किसी प्रकरण या समस्या पर सामूहिक वातावरण में विचारों का आदान प्रदान करते हैं। विचार विमर्श दो तरह से होता है औपचारिक विचार विमर्श व अनौपचारिक विचार विमर्श। हिन्दी विषय में निबंध के विषयों जैसे गरीबी के कारण, अशिक्षा के कारण, बढ़ती जनसंख्या व भ्रष्टाचार पर आसानी से विचार विमर्श किया जा सकता है। इससे

विद्यार्थियों में सहयोग, सहिष्णुता, विचारों को सुव्यवस्थित रूप में अभिव्यक्त करना, स्वतंत्र रूप से सीखना व विषय सामग्री का चयन एवं संगठन करना सीखते हैं। विचार विमर्श में समस्या शैक्षिक महत्व, अर्थपूर्ण व उपयोगी होनी चाहिए। सभी विद्यार्थियों को इसमें भाग लेने का अवसर मिलना चाहिए। तर्कों व निर्णयों पर बल देना चाहिए और विद्यार्थियों को निष्कर्षों एवं स्वतंत्र निर्णयों के निर्माण में सहायता प्रदान करनी चाहिए।

वाद-विवाद- वाद विवाद का अर्थ है कि शब्दों या तर्कों का विवाद। इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदार बनाया जाता है। वाद-विवाद के दो रूप होते हैं अनौपचारिक व औपचारिक। वाद विवाद करवाने से पहले शिक्षक को पूरी तरह तैयारी करनी होगी व विद्यार्थियों को सही तरह से निर्देशित करना होगा। इससे विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति, बोलने की कला, आत्मविश्वास व निर्णय शक्ति का विकास होता है। हिन्दी विषय में विभिन्न समस्याओं पर वाद विवाद कराया जा सकता है। प्रेमचंद के उपन्यासों की समसामयिक दौर में प्रासंगिकता, हिन्दी और वैश्वीकरण, आज के दौर में महिलाओं का सशक्तिकरण जैसे विषयों पर वाद-विवाद करवा कर पढ़ाया जा सकता है।

खेल- खेल में बालक की स्वाभाविक रुचि होती है। खेल द्वारा वह अपनी रुचियों, इच्छाओं, मनोवृत्ति और अभिवृत्तियों को व्यक्त करता है। खेल को आधार बनाकर जीवन की वास्तविकता को क्रिया कलाओं से स्पष्ट किया जा सकता है। हिन्दी विषय में हम नाटकीकरण में खेल के आधार पर विभिन्न विषयों को पढ़ा सकते हैं। हिन्दी विषय से संबंधित प्रकरणों पर विद्यार्थियों से अभिनय के द्वारा नाटक से भी किसी विषय को पढ़ाया जा सकता है। यह एक तरह से करके सीखने को महत्व देती है। इससे विद्यार्थियों में सहयोग तथा सामाजिक समझदारी विकसित होती है। इसमें विद्यार्थी सक्रिय रहते हैं और उनमें आत्मविश्वास भी आता है वे अपने आपको अभिव्यक्त करना और बोलने की कला में निपुण कर लेते हैं। इसमें विद्यार्थी नाटक की भाँति अभिनय करते हैं। अभिनय का विषय सरल और स्पष्ट होना चाहिए। पहले से सुनियोजित हो तो बहुत ही अच्छा रहेगा। शिक्षक का मार्गदर्शन इसमें बहुत जरूरी है। शिक्षक इस प्रविधि का प्रयोग हिन्दी विषय के विभिन्न कहानियों और उपन्यासों व कविताओं के विषयों पर नाटकीकरण के द्वारा सहज ढंग से पढ़ाया जा सकता है।

कार्यशाला- कार्यशाला से हिन्दी विषय से संबंधित समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है। यह शिक्षण के उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है। समूह में कार्य करना तथा सहयोग की भावना का भी विकास होता है। नई संकल्पनाओं से भी अवगत हो कर उन्हें स्पष्ट तौर पर

समझ सकते हैं। दूसरों के अनुभवों व कार्यात्मक शैली से वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति होती है। कार्यशाला में व्यवस्थापक, अध्यक्ष, विशेषज्ञ, प्रशिक्षणार्थी इत्यादि शामिल होते हैं। कार्यशाला के उद्देश्य स्पष्ट व पहले से प्रशासनिक तैयारी होनी चाहिए इस तरह प्रशासनिक पहलू पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

गोष्ठी- हिन्दी विषय के सेमीनार एक तरह से सीखने की प्रक्रिया में विचार चिंतन के लिए परिस्थिति उत्पन्न करता है। इस तरह की प्रक्रिया में विश्लेषण तथा आलोचनात्मक क्षमता, संश्लेषण, मूल्यांकन, निरीक्षण व अवलोकन व अनुभवों के प्रस्तुतीकरण की क्षमता, दूसरों के विचारों का सम्मान इत्यादि उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। सेमीनार में संयोजक, अध्यक्ष, वक्तागण व भागीदार होते हैं। सेमीनार मुख्य तौर पर लघु, मुख्य, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के होते हैं। इस तरह के सेमीनार में विद्यार्थी केंद्र में होना चाहिए। सेमीनार में स्वतंत्र अध्ययन, तर्क करने की क्षमता व विद्यार्थी की आलोचनात्मक क्षमता के विकास पर ध्यान देना चाहिए। हिन्दी विषय में जैसे आधुनिक भारत में हिन्दी की दिशा व दशा, वैश्वीकरण और हिन्दी पर सेमीनार कराए जा सकते हैं।

8.7 सारांश (Summary)

इस अध्याय में हिन्दी भाषा शिक्षण में प्रयुक्त सहायक शिक्षण सामग्री के निर्माण और विश्लेषण की आवश्यकता, प्रकार, स्वरूप और उपयोग पर चर्चा की गई है। पारंपरिक मौखिक पद्धति के स्थान पर अब दृश्य-श्रव्य, ICT आधारित, मुद्रित तथा सहसंज्ञानात्मक गतिविधियाँ शिक्षण को अधिक प्रभावी और रुचिकर बनाती हैं। शिक्षण सामग्री का उद्देश्य केवल विषयवस्तु की जानकारी देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की रुचि, भागीदारी और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना भी है। पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, पुस्तकालय, रेडियो, टेलीविजन, चलचित्र, कार्यशालाएँ, वाद-विवाद आदि जैसे स्रोतों को समावेश कर एक समग्र शिक्षण वातावरण तैयार किया जा सकता है।

8.8 शब्दावली (Glossary)

शब्द	अर्थ
सहायक शिक्षण सामग्री	पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त वे साधन जो शिक्षण को आसान व प्रभावी बनाते हैं।
दृश्य-श्रव्य सामग्री	वह सामग्री जो आँखों और कानों के माध्यम से ग्रहण की जाती है (जैसे- वीडियो, ऑडियो)।
मुद्रित सामग्री	छपी हुई सामग्री जैसे पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, पोस्टर आदि।
ICT (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी)	कंप्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट जैसे उपकरणों द्वारा शिक्षण-संचार।
पुस्तकालय	वह स्थान जहाँ अध्ययन-सामग्री संरक्षित व उपलब्ध होती है।
रेडियो/टीवी	जनसंचार माध्यम जो शिक्षण सामग्री का प्रसार करते हैं।
भाषा प्रयोगशाला	विशेष स्थान जहाँ विद्यार्थी भाषा प्रयोग और अभ्यास कर सकते हैं।
कार्यशाला	शिक्षण से संबंधित व्यावहारिक सत्र जिसमें छात्र भागीदारी करते हैं।
वाद-विवाद	एक शिक्षण गतिविधि जिसमें दो पक्ष किसी विषय पर तर्क प्रस्तुत करते हैं।
सहसंज्ञानात्मक क्रियाएँ	ऐसी क्रियाएँ जो छात्र के संज्ञानात्मक (सोचने) और भावनात्मक (महसूस करने) पक्षों को विकसित करती हैं।

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)

8.9 अधिगम प्रतिफल

इस अध्याय के अध्ययन के बाद छात्र:

1. सहायक शिक्षण सामग्री की परिभाषा, महत्व और आवश्यकता को समझ सकेंगे।
2. मुद्रित, दृश्य-श्रव्य और डिजिटल शिक्षण सामग्री के विभिन्न प्रकारों की पहचान कर

सकेंगे।

3. ICT, रेडियो, टीवी, और फिल्म जैसे संसाधनों के प्रयोग की उपयुक्तता का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. सहसंज्ञानात्मक गतिविधियों को भाषा शिक्षण से जोड़ने में सक्षम होंगे।
5. शिक्षण सामग्री का विश्लेषण कर उसकी प्रभावशीलता को परखने में दक्ष होंगे।

8.10. इकाई के अंत की गतिविधियाँ

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. सहायक शिक्षण सामग्री का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(अ) विषय को कठिन बनाना (ब) विषय की परीक्षा लेना
(स) शिक्षण को प्रभावी और रुचिकर बनाना (द) केवल पुस्तकों को बदलना
2. निम्न में से कौन-सी दृश्य-श्रव्य सामग्री नहीं है?
(अ) वीडियो (ब) समाचार पत्र (स) फिल्म (द) टीवी
3. ICT का प्रयोग मुख्यतः किसके लिए होता है?
(अ) मनोरंजन के लिए (ब) जानकारी के आदान-प्रदान हेतु
(स) खेल के लिए (द) कला के प्रदर्शन हेतु
4. सहसंज्ञानात्मक गतिविधियों में कौन-सी क्रिया आती है?
(अ) परीक्षा (ब) भाषण लेखन (स) वाद-विवाद (द) अनुशासन
5. शिक्षण सामग्री का विश्लेषण क्यों आवश्यक है?
(अ) उसे नकारने के लिए
(ब) उसकी कीमत तय करने के लिए
(स) उसकी उपयोगिता और प्रभाव को जानने के लिए
(द) छात्र की रैंकिंग करने के लिए

उत्तर कुंजी (Answer Key)

1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (स)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हाईस्कूल स्तर पर हिन्दी शिक्षण के लिए आप कौन-सी सहायक शिक्षण सामग्री का

प्रयोग करेंगे ?

2. हिन्दी शिक्षण में क्या शिक्षण सामग्री प्रयोग में आती है ? उनमें से किन्हीं दो पर उदाहरण सहित अपने विचार व्यक्त कीजिए।
3. हिन्दी शिक्षण के प्रयोग के लिए आवश्यक सहायक सामग्री की एक तालिका बनाइए। प्रत्येक सामग्री का महत्व उदाहरण देकर समझाइए।
4. हिन्दी शिक्षण में निम्नलिखित के महत्व की विवेचना कीजिए-
 - वाद-विवाद
 - फिल्म
 - कम्प्यूटर
5. श्रव्य-दृश्य सामग्री को परिभाषित कीजिए। हिन्दी शिक्षण में पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्रों व गोष्ठी की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
6. हिन्दी शिक्षण में सहायक सामग्री का उचित प्रयोग किस तरह हो सकता है ? विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हिन्दी शिक्षण में फिल्मों के प्रयोग के चार लाभ बताइए।
2. हिन्दी शिक्षण में भाषा प्रयोगशाला के प्रयोग पर नोट लिखिए।
3. हिन्दी शिक्षण में पत्रिकाओं की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
4. हिन्दी शिक्षण में पुस्तकालय का क्या महत्व है।

8.12 संदर्भ

- चतुर्वेदी, शिखा (2019) हिन्दी शिक्षण, आर. लाल बुक डिपो, मेरठा।
- मंगल, उमा (2016) हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
- शर्मा, दीपा, सिंह, इंद्र, पाठ्यक्रम एवं विद्यालय प्रबंधन, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवानी।
- मधु, नरूला, हिन्दी शिक्षण, ट्वन्टी फर्स्ट सैन्चुरी प्रकाशन, पटियाला।
- शर्मा, शिवमूर्ति, हिन्दी भाषा शिक्षण, नीलकमल प्रकाशन, हैदराबाद।
- शर्मा, राजकुमारी, रामशकल, हिन्दी शिक्षण, राधा प्रकाशन, आगरा।
- श्रीवास्तव, आर.एस. हिन्दी शिक्षण, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर।

- सिंह, निरंजन कुमार, माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
- कुमार, योगेश, आधुनिक हिन्दी शिक्षण, ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, नई दिल्ली।
- सिंह, सावित्री, हिन्दी शिक्षण, गया प्रसाद एण्ड संस, आगरा।
- स्वयं अधिगम सामग्री, हिन्दी शिक्षण प्रविधि, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (1986). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, नई दिल्ली: भारत सरकार।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (1992). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 कार्यान्वयी योजना 1992, नई दिल्ली: भारत सरकार।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली: भारत सरकार।
- Ministry of Education, GOI, <https://www.education.gov.in/en>
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली: भारत सरकार, पृष्ठ संख्या-11
- स्वयं अधिगम सामग्री, हिन्दी शिक्षण, मौलाना आजाद नेशनल यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

इकाई 9 – मूल्यांकन का परिचय

इकाई की रूपरेखा

- 9.1 प्रस्तावना
- 9.2 उद्देश्य
- 9.3 मूल्यांकन की भूमिका
- 9.4 मूल्यांकन की परिभाषाएं
- 9.5 शिक्षण में मूल्यांकन
- 9.6 पोर्टफोलियो
- 9.7 सारांश
- 9.8 अधिगम परिणाम
- 9.9 इकाई के अंत में प्रश्न
- 9.10 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

9.1 प्रस्तावना

शिक्षण-अधिगम क्रियाओं द्वारा संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों का विकास होता है | उपलब्धि परीक्षा के माध्यम से ज्ञानात्मक अथवा संज्ञानात्मक पक्ष के विकास का आंकलन किया जाता है परन्तु क्रियात्मक एवं भावात्मक पक्षों के विकास का आंकलन करना कठिन होता है | मूल्यांकन प्रक्रिया का उपयोग इसलिए अधिक जरूरी हो जाता है क्योंकि गुणात्मक चरों का आंकलन निष्पत्ति परीक्षा से करना संभव नहीं होता है | मूल्यांकन प्रक्रिया से गुणात्मक एवं परिमाणात्मक तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हो जाती है | इसलिए आज शिक्षा में मूल्यांकन को प्रमुखतः इस्तेमाल किया जाता है | शिक्षा के अनतर्गत केवल शिक्षार्थियों की उपलब्धि का आंकलन प्रयास नहीं होता है बल्कि शिक्षण की प्रक्रिया, शिक्षण की विधियों, शिक्षण सहायक सामग्री, किताबें, शिक्षण उद्देश्य एवं शिक्षण-अधिगम आदि तत्वों की उपयुक्तता का आंकलन करना आवश्यक होता है | शिक्षण प्रक्रिया के विकास एवं उसमें किसी सुधार के लिए मूल्यांकन विधि अधिक उपयोगी सिद्ध होती है | अतः इस इकाई में शिक्षा में मूल्यांकन की भूमिका, मूल्यांकन का अर्थ, मूल्यांकन की विभिन्न परिभाषाओं, शिक्षण में मूल्यांकन के साथ-साथ पोर्टफोलियो आदि सम्प्रत्यों की विवेचना की गई है |

9.2 उद्देश्य

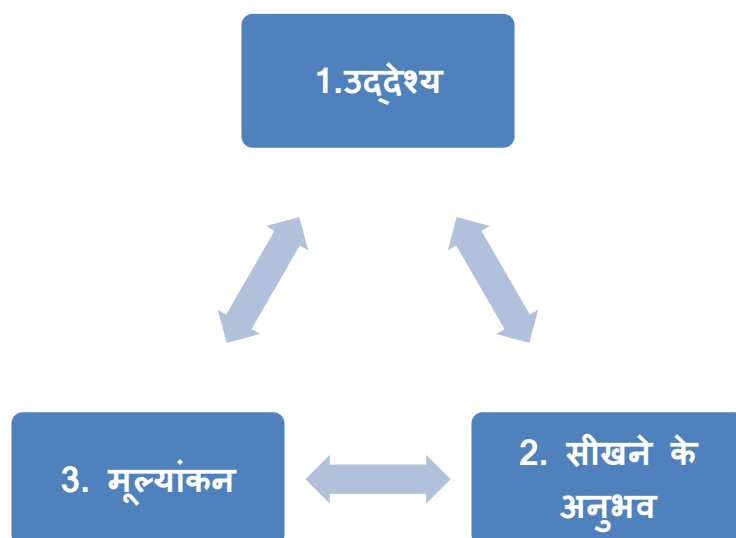
इस इकाई का अध्ययन करने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे:

- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।
- शिक्षण में मूल्यांकन की आवश्यकता और महत्व को समझा सकेंगे।
- मूल्यांकन की अवधारणा को परिभाषित एवं उसका अपने शब्दों में विस्तृत वर्णन कर सकेंगे।
- मूल्यांकन की विशेषताओं को सूचीबद्ध कर सकेंगे।
- शिक्षण में पोर्टफोलियो की विशेषताओं एवं अहमियत का विश्लेषण कर सकेंगे।

9.3 मूल्यांकन की भूमिका

कक्षा शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यवहार को वांछित दिशा में प्रभावित करना है। वांछित दिशा स्कूल और शिक्षक द्वारा तैयार किए गए शैक्षिक उद्देश्यों द्वारा निर्देशित होती है। शिक्षक को सबसे पहले शिक्षा के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को समझना चाहिए और विशेष रूप से, शिक्षक को अध्ययन के विषय में व्यवस्थित और पुनर्व्यवस्थित पाठ्यक्रम में विभिन्न पाठों और इकाइयों के लिए निर्देशात्मक उद्देश्य तैयार करने चाहिए। इसके आलावा, शिक्षक को विद्यार्थियों की शिक्षा और प्रभावी संचार चैनलों के आधार पर प्रभावी शिक्षण अनुभव तैयार करने की स्थिति में होना चाहिए। शिक्षक को यह निर्धारित करना होगा कि इन उद्देश्यों को किस हद तक प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए, यह माना जा सकता है कि शिक्षा प्रक्रिया में तीन प्रमुख तत्व हैं उद्देश्य, सीखने के अनुभव और शिक्षार्थी का मूल्यांकन। शैक्षिक प्रक्रिया का सरल प्रतिनिधित्व नीचे दर्शाया गया है।

उपरोक्त चित्र एक गतिशील और दिशात्मक तीरों द्वारा तीन प्रमुख तत्वों के बीच बातचीत को दर्शाता है। उद्देश्य किसी के वांछित व्यवहार के इरादे को संदर्भित करते हैं जिसे शिक्षार्थियों को हासिल करना चाहिए। सीखने के अनुभव शब्द का तात्पर्य उन अनुभवों से है जिन गतिविधियों एवं अनुभवों से शिक्षार्थी, वांछित व्यवहार प्राप्त करने के लिए गुजरते हैं। शिक्षक सीखने के अनुभव प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक विभिन्न प्रयोग करता है ताकि सीखने के अनुभवों में एक शिक्षक की मदद से छात्रों और सामग्री की बातचीत शामिल हो सके। शिक्षार्थी को सीखने के अनुभव प्रदान करने के लिए शिक्षण विधियाँ और तकनीकें, शिक्षार्थी के सीखने के अनुभव अथवा उसके व्यवहार में बदलाव लाते हैं।



इसलिए, सीखने में सीखने के अनुभवों के माध्यम से शिक्षार्थी के व्यवहार में संशोधन शामिल होता है | छात्रों की ओर से सराहनीय शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षण प्रभावी होना चाहिए | शिक्षक को उचित शिक्षण विधियों और तकनीकों का उपयोग करके सामग्री के साथ छात्रों की घनिष्ठ बातचीत के लिए परिस्थितियाँ प्रदान करनी चाहिए | इसलिए प्रभावी शिक्षण सफल शिक्षण अनुभवों की ओर ले जाता है |

9.4 मूल्यांकन की परिभाषाएं

मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है, जिसके द्वारा अधिगम परिस्थितियों तथा सीखने के अनुभवों के लिए प्रयुक्त की जाने वाली सभी विधियों एवं प्रविधियों के उपादेयता की जांच की जाती है | मूल्यांकन शब्द को शिक्षा एवं मनोविज्ञान में विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया गया है तथा मूल्यांकन को कई शिक्षाविदों ने इसके अर्थ एवं प्रकृति को और अधिक स्पष्ट करने के लिए परिभाषित किया है जोकि विचारणीय है :

क्वैलेन एवं हन्ना के अनुसार, विद्यालय में हुए छात्रों के व्यवहार परिवर्तन के सम्बन्ध में प्रदत्तों के संकलन तथा उसकी व्याख्या करने की प्रक्रिया को मूल्यांकन कहते हैं |

डॉ. आर. पी. देवदास के अनुसार, मूल्यांकन के अंतर्गत सीखने के साक्ष्यों का संकलन, उन साक्ष्यों का सावधानीपूर्वक परीक्षण तथा उसके आधार पर यह सुनिश्चित करना कि जो कुछ सीखाया गया है, उसका संख्यात्मक और गुणात्मक स्तर क्या है |

क्लार एवं स्टार के अनुसार, मूल्यांकन वह निर्णय एवं विश्लेषण है जो विद्यार्थी के कार्य से प्राप्त सूचनाओं से निकाला जाता है |

डॉ. हिल के अनुसार, परम्परागत प्रणाली समूचे पाठ्यक्रम तथा शिक्षण-विधि को निर्देशित किया

करती थी जबकि नई प्रणाली में परिक्षण एवं शिक्षण दोनों विशिष्ट शिक्षण उद्देश्यों द्वारा निर्धारित किए जाएँगे। अतः इन्हीं पर समूची शिक्षा एवं मूल्यांकन निर्धारित होने चाहिए। उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो छात्रों की उपलब्धियों, शिक्षण-विधियों, तथा शिक्षण के उद्देश्यों की जांच करती है। जिसमें परम्परागत प्रणाली में पाठ्य-पुस्तक तथा छात्रों की निष्पतियों को ही महत्त्व दिया जाता है। अतः यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगा कि मूल्यांकन प्रक्रिया अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति के आधार पर अपने शिक्षण-विधियों, प्रविधियों तथा सहायक सामग्री की उपादेयता का मूल्यांकन करती है।

9.4.1 मूल्यांकन की विशेषताएँ

मूल्यांकन को परिभाषित करने के बाद, आइए हम उन बुनियादी विशेषताओं पर ध्यान दें जो एक मूल्यांकन की विशेषता होनी चाहिए। आदर्श रूप से, मूल्यांकन वैध, विश्वसनीय, व्यावहारिक, निष्पक्ष और उपयोगी होना चाहिए। आइए अब इन पर एक-एक करके चर्चा करें।
व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण: मूल्यांकन कोई अव्यवस्थित प्रयास नहीं है; बल्कि, यह एक संरचित और व्यवस्थित दृष्टिकोण का अनुसरण करता है। इसमें निष्पक्षता, विश्वसनीयता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश, प्रक्रियाएं और मानदंड शामिल हैं। व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और व्यक्तिपरकता को दूर करके मूल्यांकन, मूल्यांकन किए जा रहे मामले की स्पष्ट और वस्तुनिष्ठ समझ प्रदान करता है।

उद्देश्य संचालित: प्रत्येक मूल्यांकन का उद्देश्य, एक विशिष्ट लक्ष्य होता है जिसे वह प्राप्त करना चाहता है। चाहे किसी कार्यक्रम की प्रभावशीलता निर्धारित करना हो, निर्णय लेने में सुधार करना हो, या प्रदर्शन को मापना हो, उद्देश्य संपूर्ण मूल्यांकन प्रक्रिया को संचालित करता है। स्पष्ट उद्देश्य के बिना, मूल्यांकन में दिशा की कमी हो सकती है और सार्थक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में असफल हो सकते हैं।

प्रासंगिक रूप से प्रासंगिक: मूल्यांकन को उस संदर्भ को ध्यान में रखना चाहिए जिसमें यह आयोजित किया जाता है। संदर्भ की विशेषताएँ, आवश्यकताएँ और उद्देश्य मूल्यांकन दृष्टिकोण और मानदंडों को प्रभावित करते हैं। शैक्षिक कार्यक्रमों के मूल्यांकन के लिए जो उपयुक्त हो सकता है वह स्वास्थ्य देखभाल या संगठनात्मक सेटिंग्स में प्रासंगिक से भिन्न हो सकता है। विशिष्ट संदर्भ में मूल्यांकन को अपनाना इसकी प्रभावशीलता और उपयोगिता सुनिश्चित करता है।

बहुआयामी: मूल्यांकन सभी के लिए एक ही आकार की अवधारणा नहीं है। इसमें प्रक्रियाओं, परिणामों, प्रभावों के मूल्यांकन से लेकर हितधारकों के दृष्टिकोण तक विभिन्न आयाम शामिल हैं | इन विविध पहलुओं को समझने से व्यापक मूल्यांकन की अनुमति मिलती है, जिससे विषय वस्तु का समग्र दृष्टिकोण मिलता है |

जानकारीपूर्ण और कार्रवाई योग्य: शायद मूल्यांकन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक इसकी सार्थक जानकारी उत्पन्न करने की क्षमता है जिसका उपयोग निर्णय लेने, नीति निर्माण या सुधार के लिए किया जा सकता है | मूल्यांकन से प्राप्त अंतर्दृष्टि कार्रवाई योग्य होनी चाहिए, जिससे हितधारकों को सूचित विकल्प चुनने या मूल्यांकन निष्कर्षों के आधार पर आवश्यक कदम उठाने में सक्षम बनाया जा सके |

वैधता : एक वैध मूल्यांकन वह है जो वास्तव में परीक्षण के लिए निर्धारित विषय-वस्तु का परीक्षण करता है जिससे वास्तव में जांच के तहत उद्देश्य द्वारा वर्णित व्यवहार को मापा जाता है | जाहिर है, कोई भी जानबूझकर अप्रासंगिक सामग्री का परीक्षण करने के लिए मूल्यांकन आइटम का निर्माण नहीं करेगा, लेकिन अक्सर गैर-वैध परीक्षण आइटम वास्तव में उपयोग किए जाते हैं, उदाहरण के लिए ऐसे प्रश्न जिनका उद्देश्य पूरी तथ्यात्मक सामग्री का परीक्षण करना है लेकिन जो वास्तव में उम्मीदवार की तर्क शक्ति का परीक्षण करते हैं, या ऐसे प्रश्न जो एक स्तर मानते हैं |

विश्वसनीयता : विश्वसनीयता उस स्थिरता का एक माप है जिसके साथ प्रश्न, परीक्षण या परीक्षा अलग-अलग लेकिन तुलनीय परिस्थितियों में एक ही परिणाम उत्पन्न करती है | एक विश्वसनीय मूल्यांकन आइटम छात्रों की समान आबादी के साथ पुनरुत्पादित अंक देता है | इसलिए, यह व्यक्तिगत मूल्यांकनकर्ताओं की विशेषताओं से स्वतंत्र है | व्यवहार में इसे हासिल करना अक्सर कठिन होता है | जब बड़ी संख्या में व्यक्तिगत मूल्यांकनकर्ता एक ही प्रश्न का मूल्यांकन करते हैं (उदाहरण के लिए केंद्रीय बोर्ड परीक्षा में) तो उचित विश्वसनीय मूल्यांकन प्रक्रिया का स्पष्ट रूप से होना महत्वपूर्ण है | एक छात्र का उत्तर जो एक मार्कर से 75 प्रतिशत और दूसरे से 35 प्रतिशत अंक प्राप्त करता है, एक स्पष्ट रूप से अविश्वसनीय मूल्यांकन का खुलासा करता है | इसके अलावा परीक्षक की विश्वसनीयता भी इस घटना में अपनी भूमिका निभाती है |

9.4.2 मूल्यांकन के दृष्टिकोण

अब जब हमें मूल्यांकन की विशेषताओं की समझ हो गई है, तो आइए उन विभिन्न दृष्टिकोणों पर गौर करें जिनके द्वारा मूल्यांकन किया जाता है। एकाधिक मूल्यांकन मॉडल और दृष्टिकोण मौजूद हैं, प्रत्येक विशिष्ट आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा करते हैं। यहां आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले कुछ दृष्टिकोण दिए गए हैं:

निर्माणात्मक मूल्यांकन: रचनात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम के विकास या कार्यान्वयन के दौरान प्रतिक्रिया और अंतर्दृष्टि प्रदान करने पर केंद्रित रहती है। इसका उद्देश्य ताकत, कमजोरियों और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करना है। फीडबैक लूप पर जोर देकर, रचनात्मक मूल्यांकन निरंतर सीखने और अनुकूलन को बढ़ावा देता है, अंततः कार्यक्रमों की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बढ़ाता है।

योगात्मक मूल्यांकन: रचनात्मक मूल्यांकन के विपरीत, योगात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम पूरा होने के बाद होता है और इसका उद्देश्य समग्र प्रभाव और प्रभावशीलता का आकलन करना है। इसका उद्देश्य ऐसे प्रश्नों का उत्तर देना है: जैसे क्या कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को पूरा करता है? क्या इससे वांछित परिणाम प्राप्त हुए? योगात्मक मूल्यांकन कार्यक्रम की सफलता के बारे में निर्णायक निर्णय लेने और भविष्य के निर्णयों को सूचित करने में मदद करता है।

प्रभाव मूल्यांकन: प्रभाव मूल्यांकन किसी कार्यक्रम या हस्तक्षेप के दीर्घकालिक प्रभावों और अन्य प्रभावों की जांच करता है। यह समझने का प्रयास करता है कि क्या इच्छित परिणाम प्राप्त हुए और कार्यक्रम द्वारा क्या व्यापक परिवर्तन लाए गए। कार्यक्रम के प्रभाव की व्यापक समझ प्रदान करने के लिए यह दृष्टिकोण अक्सर मात्रात्मक डेटा विश्लेषण, गुणात्मक अंतर्दृष्टि और मिश्रित-विधि दृष्टिकोण जैसी विभिन्न पद्धतियों को नियोजित करता है।

प्रक्रिया मूल्यांकन: प्रक्रिया मूल्यांकन किसी कार्यक्रम के कार्यान्वयन और वितरण का आकलन करने पर जोर देता है। यह समझने का प्रयास करता है कि कार्यक्रम को कैसे लागू किया गया था, क्या इसने इच्छित प्रक्रियाओं का पालन किया था और उन कारकों की पहचान करता है जिन्होंने सफलता या विफलता में योगदान दिया। कार्यक्रम की डिलीवरी का विश्लेषण करके, प्रक्रिया मूल्यांकन कार्यान्वयन रणनीतियों में सुधार की सुविधा प्रदान करता है और हितधारकों को वृद्धि के लिए क्षेत्रों की पहचान करने की अनुमति देता है।

9.4.3 मूल्यांकन की आवश्यकता

मूल्यांकन महज एक शैक्षणिक अभ्यास नहीं है बल्कि यह शिक्षा के क्षेत्र की कई महत्वपूर्ण जरूरतों को पूरा करता है। आइए कुछ कारणों का पता लगाएं कि मूल्यांकन क्यों आवश्यक है: **साक्ष्य-आधारित निर्णय लेना:** मूल्यांकन साक्ष्य और अंतर्दृष्टि उत्पन्न करता है जो निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को सूचित करता है। डेटा एकत्र करके, प्रभावों का आकलन करके और परिणामों का विश्लेषण करके, मूल्यांकन निर्णय लेने वालों को सूचित विकल्प बनाने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करता है, जिससे सफलता की संभावना बढ़ जाती है।

गुणवत्ता में सुधार: मूल्यांकन सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने और प्रभावी प्रथाओं पर प्रकाश डालने में मदद करता है, ताकि शक्तियों और कमजोरियों की जांच करके, मूल्यांकन कार्यक्रमों, पहलों और प्रक्रियाओं की गुणवत्ता और दक्षता बढ़ाने में सहायता करता है। यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षण विधि अथवा शिक्षण प्राविधि को प्रभावी ढंग से संचालित किया जाए, जिससे बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

जवाबदेही और पारदर्शिता: मूल्यांकन विभिन्न क्षेत्रों में जवाबदेही को बढ़ावा देता है। यह हितधारकों को पूर्वनिर्धारित मानदंडों के आधार पर व्यक्तियों, संगठनों, सेवाओं या हस्तक्षेपों के प्रदर्शन का आकलन करने में सक्षम बनाता है। वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन प्रदान करके, मूल्यांकन पारदर्शिता को प्रोत्साहित करता है और यह सुनिश्चित करता है कि संस्थाओं को उनके कार्यों या परिणामों के लिए जवाबदेह ठहराया जाता है।

सीखना और नवाचार: मूल्यांकन सीखने, अनुकूलन और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देता है। यह चिंतन, प्रतिक्रिया और निरंतर सुधार को प्रोत्साहित करता है। कार्यक्रमों की सफलता और विफलता का विश्लेषण करके, मूल्यांकन नवाचार के रास्ते खोलता है और विविध क्षेत्रों में प्रगति को आगे बढ़ाता है।

9.5 शिक्षण में मूल्यांकन

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यांकन की प्रक्रिया किसी न किसी रूप में चलती रहती है। यदि मानव जीवन से मूल्यांकन प्रक्रिया समाप्त हो जाए तो शायद जीवन का उद्देश्य ही समाप्त हो जाए। मूल्यांकन के माध्यम से ही व्यक्ति अच्छे और बुरे के बीच अंतर कर सकता है। सामाजिक विकास का पूरा चक्र मूल्यांकन प्रक्रिया के इर्द-गिर्द घूमता है। शिक्षा में कोई बच्चा

अपने लक्ष्य में कितना सफल हुआ है, इसका निर्धारण मूल्यांकन से ही किया जा सकता है। इस प्रकार मूल्यांकन और लक्ष्यों के बीच घनिष्ठ संबंध है।

शिक्षा को मानव संसाधनों, कौशल, प्रेरणा, ज्ञान और इसी तरह के विकास के संदर्भ में निवेश माना जाता है। मूल्यांकन एक शैक्षिक कार्यक्रम बनाने, उसकी उपलब्धियों का आकलन करने और उसकी प्रभावशीलता में सुधार करने में मदद करता है। यह समय-समय पर सीखने में प्रगति की समीक्षा करने के लिए कार्यक्रम के भीतर एक अंतर्निहित मॉनिटर के रूप में कार्य करता है। यह कार्यक्रम के डिज़ाइन और कार्यान्वयन पर बहुमूल्य प्रतिक्रिया भी प्रदान करता है। इस प्रकार, मूल्यांकन किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शिक्षकों और शिक्षार्थियों को शिक्षण और सीखने में सुधार करने में मदद करता है।

मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया एवं आवधिक अभ्यास है जोकि छात्र के निर्णय, शैक्षिक स्थिति या उपलब्धि के मूल्यों को बनाने में मदद करता है। शिक्षण-अधिगम में किसी न किसी रूप में मूल्यांकन अपरिहार्य है, क्योंकि शिक्षा की गतिविधि के सभी क्षेत्रों में निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही सीखने में, यह उद्देश्यों के निर्माण, सीखने के अनुभवों को डिजाइन करने और शिक्षार्थी के प्रदर्शन के मूल्यांकन में योगदान देता है। इसके अलावा, यह शिक्षण और पाठ्यक्रम में सुधार लाने के लिए भी बहुत उपयोगी है। यह समाज, माता-पिता और शिक्षा प्रणाली को जवाबदेही प्रदान करता है।

शिक्षा प्रक्रिया के उद्देश्यों से शुरू करते हुए, सीखने के अनुभवों की ओर इशारा करने वाला तीर इंगित करता है कि उद्देश्य सीखने के अनुभवों के चयन या निर्माण के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हिंदी पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों में सम्प्रेषण अथवा अपनी विचार को प्रकट करने की क्षमताओं को विकसित करना है, तो भाषा सीखने के अनुभवों के लिए भाषा ज्ञान के अलावा अन्य क्षमताओं की आवश्यकता होती है।

इसमें अखबार के संपादकीय, विज्ञापनों और व्यक्तिगत परियोजनाओं पर काम करने के लिए गृह असाइनमेंट भी शामिल हो सकता है। मुद्दा यह है कि आवश्यकता, संकल्पना और किसी के उद्देश्यों की प्रकृति सीखने के अनुभवों के महत्वपूर्ण निर्धारक होंगे। उद्देश्यों से शिक्षार्थी मूल्यांकन की ओर इंगित करने वाला तीर इंगित करता है कि मूल्यांकन का प्राथमिक ध्यान किस

सीमा पर साक्ष्य एकत्र करने पर है, जिससे कार्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया गया है। जिस प्रकार उद्देश्य सीखने के अनुभवों की स्थापना के लिए विशिष्टताएँ प्रदान करते हैं, उसी प्रकार वे शिक्षार्थी के मूल्यांकन के लिए भी विशिष्टताएँ प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, छात्रों के बीच निगमनात्मक सोच के विकास के लिए, सीखने के मूल्यांकन में, जीवन स्थितियों में विभिन्न प्रकार की सामग्री के विश्लेषण के लिए निगमनात्मक सिद्धांतों को लागू करने में छात्रों की दक्षता के बारे में साक्ष्य की आवश्यकता हो सकती है।

अब, सीखने के अनुभवों से शिक्षार्थी मूल्यांकन की ओर इंगित करने वाला तीर इस तथ्य का संकेत है कि सीखने के अनुभव, मूल्यांकन कार्यों के विकास के लिए उदाहरण प्रदान करते हैं। कार्यक्रम के सीखने के चरण के दौरान छात्र जिन उद्देश्यों में लगे हुए हैं, उन्हें मूल्यांकन स्थितियों के लिए विचार प्रस्तुत करना चाहिए। इस प्रकार, सीखने के अनुभवों से शिक्षार्थी मूल्यांकन की ओर इशारा करने वाला तीर इंगित करता है कि सीखने के अनुभव विचार और सुझाव प्रस्तुत करते हैं, शिक्षार्थी मूल्यांकन के लिए मूल्यांकन कार्य समान नहीं हो सकता है लेकिन इसमें सीखने वाले के लिए नवीनता का तत्व शामिल है।

शिक्षार्थी के मूल्यांकन से लेकर उद्देश्यों और सीखने के अनुभवों तक की ओर इशारा करने वाले दो तीर विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। पूर्व के मामले में, तीर दर्शाता है कि मूल्यांकन प्रक्रियाओं को इस बारे में जानकारी देनी चाहिए कि उद्देश्यों को किस हद तक प्राप्त किया जा रहा है। इसके अलावा, मूल्यांकन जानकारी बहुमूल्य जानकारी प्रदान कर सकती है जिसके परिणामस्वरूप कुछ उद्देश्यों में संशोधन हो सकता है और अन्य को समाप्त किया जा सकता है। अतः यह कहा जाता है कि शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया में मूल्यांकन बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। सीखने में, यह उद्देश्यों के निर्माण, सीखने के अनुभवों को डिजाइन करने और शिक्षार्थी के प्रदर्शन के मूल्यांकन में योगदान देता है। इसके अलावा, यह शिक्षण और पाठ्यक्रम में सुधार लाने के लिए भी बहुत उपयोगी है। मूल्यांकन समाज, माता-पिता और शिक्षा प्रणाली को एक तरह से जवाबदेही प्रदान करता है। आइए इसके उपयोगों पर संक्षेप में चर्चा करें।

- **शिक्षण:** मूल्यांकन का संबंध शिक्षण, शिक्षण रणनीतियों, विधियों और तकनीकों की प्रभावशीलता का आकलन करने से है। यह शिक्षकों को उनके शिक्षण के बारे में और शिक्षार्थियों को उनके सीखने के बारे में फीडबैक प्रदान करता है।

- **पाठ्यचर्या:** पाठ्यक्रम/पाठ्यचर्या, पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री में सुधार मूल्यांकन की मदद से लाया जाता है।
- **समाज:** मूल्यांकन रोजगार बाजार की मांगों और आवश्यकताओं के संदर्भ में समाज को जवाबदेही प्रदान करता है।
- **माता-पिता:** मूल्यांकन मुख्य रूप से माता-पिता को नियमित रूप से रिपोर्ट करने की कथित आवश्यकता में प्रकट होता है।

9.6 पोर्टफोलियो

एक शिक्षण पोर्टफोलियो (या डोजियर) सामग्री का एक सुसंगत सेट है जो छात्र सीखने से संबंधित आपके शिक्षण अभ्यास का प्रतिनिधित्व करता है। अपने व्यापक अर्थ में "शिक्षण अभ्यास" उन स्पष्ट गतिविधियों से परे है जो सभी को शामिल करने के लिए एक पाठ्यक्रम को पढ़ाने में शामिल होते हैं, जैसे छात्र सीखने का डेटा, सोच के प्रतिबिंब और व्यावसायिक विकास के अनुभव, जो किसी व्यक्ति की शिक्षण उपलब्धियों का प्रमाण प्रदान करते हैं। ये उपलब्धियाँ अद्वितीय हैं क्योंकि वे व्यक्ति के शिक्षण दर्शन, उनके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विशिष्ट पाठ्यक्रमों और संदर्भों से जुड़ी हैं। पोर्टफोलियो शब्द - जिसका उपयोग संज्ञा के बजाय क्रिया के रूप में किया जाता है - को उस शिक्षक को संग्रहीत करने की एक प्रक्रिया के रूप में सोचा जा सकता है जिसे आप बन रहे हैं। पोर्टफोलियो के अंतर्गत वे सभी गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं, जो विद्यार्थियों के सीखने को समृद्ध बनाती हैं।

शिक्षण पोर्टफोलियो उनके विशिष्ट उद्देश्य, दर्शकों, संस्थागत संदर्भ और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के आधार पर काफी भिन्न होते हैं। हालाँकि, एक पोर्टफोलियो का मुख्य भाग आम तौर पर लगभग 5-8 पेज लंबा होता है और उसके बाद परिशिष्ट होते हैं, जो आमतौर पर लगभग 8-15 पेज होते हैं। आपके पोर्टफोलियो में संभवतः आपके शिक्षण अनुभव और जिम्मेदारियों का सारांश, आपके शिक्षण दर्शन और लक्ष्यों का एक चिंतनशील विवरण, आपके शिक्षण तरीकों और रणनीतियों की एक संक्षिप्त चर्चा, साथ ही साथ की गई गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं। शिक्षण में सुधार और भविष्य के लिए लक्ष्यों और योजनाओं का विवरण तथा परिशिष्टों में पूरक सामग्रियाँ शामिल होंगी जो आपके पोर्टफोलियो के मुख्य भाग में आपके द्वारा प्रदान की गई जानकारी को और अधिक दस्तावेज़ीकृत या समर्थन करती हैं।

पाठ्यक्रम पोर्टफोलियो, जो एक ही पाठ्यक्रम पर केंद्रित है, में एक शिक्षण पोर्टफोलियो के साथ कई विशेषताएं और लाभ समान हैं | हालाँकि हम इस पुस्तिका में पाठ्यक्रम पोर्टफोलियो पर संक्षेप में चर्चा कर रहे हैं, ताकि यहाँ दी गई अधिकांश जानकारी को किसी एक तरह के पोर्टफोलियो को विकसित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है | पोर्टफोलियो की संक्षेप समझ विकसित करने के उपरांत अब यह सवाल आपके दिमाग में आ रहा होगा कि आखिर इस पोर्टफोलियो की शिक्षण में क्यों जरूरत है अथवा हम इसे क्यों तैयार करें तथा कैसे तैयार करें |

शिक्षण पोर्टफोलियो क्यों तैयार करें?

शिक्षण पोर्टफोलियो का उपयोग आम तौर पर दो उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जो कभी-कभी ओवरलैप होते हैं: (1) किसी के शिक्षण पर विचार करने और उसमें सुधार करने के लिए एक विकासात्मक प्रक्रिया के रूप में; और (2) कार्यकाल, पदोन्नति, या शिक्षण पुरस्कार जैसे कार्मिक निर्णयों के लिए एक मूल्यांकन उत्पाद के रूप में | वे चाहे जो भी कार्य करें, शिक्षण पोर्टफोलियो के कई प्रमुख फायदे हैं:

- वे शिक्षण प्रदर्शन के साक्ष्य के विभिन्न स्रोत प्रदान करते हैं | शिक्षक के रूप में, हम अक्सर अपने शिक्षण के बारे में प्रतिक्रिया के लिए मुख्य रूप से छात्रों के मूल्यांकन पर निर्भर रहते हैं | हालाँकि ऐसी छात्र समीक्षाएँ शिक्षण प्रदर्शन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं, वे अक्सर सेमेस्टर की अंतिम कक्षाओं में से कुछ ही क्षणों में व्यक्त की गई आकस्मिक भावनाओं को प्रतिबिंबित करती हैं | पोर्टफोलियो में फीडबैक के स्रोतों की विविधता इस बात का अधिक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है कि एक शिक्षक शिक्षण की विविध जिम्मेदारियों को कैसे संभाल रहा है | इस प्रकार वे शिक्षण के बौद्धिक सार और जटिलता को अधिक दर्शाते हैं |
- वे विभिन्न प्रकार की शिक्षण-संबंधी गतिविधियों के प्रदर्शन के माध्यम से शिक्षण को अधिक दृश्यमान बनाते हैं |
- वे शिक्षण पर विचार करने और उसका मूल्यांकन करने की पहल संकाय के हाथों में सौंपते हैं | यह शिक्षक ही है जो पोर्टफोलियो में जाने वाली चीज़ों का चयन करके अपने शिक्षण प्रदर्शन की व्याख्या और दस्तावेजीकरण करता है |
- वे व्यक्ति को अपने स्वयं के शिक्षण के बारे में सोचने का अवसर देते हैं - आवश्यकतानुसार प्राथमिकताओं या शिक्षण रणनीतियों को बदलने और भविष्य के शिक्षण लक्ष्यों के बारे में

प्रतिबिंबित करना ताकि एक शिक्षण पोर्टफोलियो को एक साथ रखना अक्सर किसी के शिक्षण प्रदर्शन को बढ़ाता है।

- वे संकाय को सहयोगात्मक रूप से काम करने के अवसर प्रदान करते हैं। शिक्षक अक्सर पोर्टफोलियो विकसित करने में अन्य सहयोगियों या सलाहकारों के साथ काम करते हैं, जिससे शिक्षण के प्रति उनके विचारों और दृष्टिकोणों को संकाय के बीच अधिक साझा करने का द्वार खुल जाता है।

- जैसे-जैसे शिक्षण अधिक दृश्यमान होता जाता है और इसके बारे में विचार साझा किए जाते हैं, शिक्षण पूरे संस्थान में बौद्धिक और विद्वतापूर्ण चर्चा का एक अधिक मूल्यवान विषय बन जाता है।

शिक्षण पोर्टफोलियो कैसे तैयार करें?

विषय-वस्तु जोकि एक शिक्षण पोर्टफोलियो में शामिल की जा सकती हैं, निम्नलिखित आइटम, कई श्रेणियों में व्यवस्थित, कक्षा के अंदर और बाहर शिक्षण गतिविधियों को दर्शाते हैं। हालाँकि यह जरूरी नहीं है कि किसी भी पोर्टफोलियो में ये सभी वस्तुएँ शामिल की जाएँ, कुछ सभी पोर्टफोलियो में अपेक्षाकृत सामान्य हैं, और अन्य को आपकी विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चुना जा सकता है।

शिक्षक की भूमिकाएँ, जिम्मेदारियाँ एवं लक्ष्य

- आपके शिक्षण को किस चीज़ ने आकार दिया है, उससे संबंधित संक्षिप्त जीवनी रेखाचित्र
- शिक्षण भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का विवरण
- शिक्षण दर्शन, लक्ष्य और विधियों का वर्णन करने वाला चिंतनशील निबंध
- पढाए गए पाठ्यक्रमों की सूची, नामांकन सहित और टिप्पणी करें कि क्या नया, वैकल्पिक और आवश्यक है।

प्रतिनिधि पाठ्यक्रम सामग्री

- पाठ्यक्रम
- छात्रों के सीखने के मूल्यांकन के लिए सामग्री, उद्देश्यों, विधियों और प्रक्रियाओं के विवरण के साथ पाठ्यक्रम विवरण
- ग्रंथों और बाहरी पाठों की सूची; पाठ्य/पठन के चयन के लिए तर्क

- असाइनमेंट
 - परीक्षा और प्रश्नोंत्तरी, श्रेणीबद्ध और अवर्गीकृत
 - हैंडआउट्स, समस्या सेट, व्याख्यान रूपरेखा
 - प्रयुक्त दृश्य सामग्री के विवरण और उदाहरण
 - शिक्षण में कंप्यूटर या अन्य प्रौद्योगिकी के उपयोग का विवरण
- विद्यार्थियों के सीखने का आकलन और विस्तार**
- छात्र निर्देश से पहले और बाद में मानकीकृत या अन्य परीक्षणों में स्कोर करते हैं
 - छात्र के काम के नमूने, जैसे कागजात, निबंध, प्रयोगशाला पुस्तकें, कार्य पुस्तिकाएं, प्रकाशन, प्रस्तुतियाँ, या अन्य रचनात्मक कार्य
 - सर्वोत्तम से लेकर सबसे कमजोर छात्रों तक श्रेणीबद्ध परीक्षाओं के उदाहरण के तौर पर परीक्षाओं को इतना वर्गीकृत क्यों किया गया इसका स्पष्टीकरण
 - छात्र कार्य पर आपकी लिखित प्रतिक्रिया (जैसे, छात्र लेखन क्रमिक ड्राफ्ट पर प्रतिक्रिया)।
 - आपने सहकर्मियों या अन्य लोगों (जैसे, छात्र, माता-पिता) से जानकारी प्राप्त करके उन्नत कार्य के लिए छात्रों की तैयारी को संबोधित करना
 - आपने सहकर्मियों या अन्य लोगों (जैसे, छात्र, माता-पिता) से जानकारी प्राप्त करके छात्रों के करियर विकल्पों और रोजगार पर प्रभाव को संबोधित करना
- शिक्षण का विवरण और मूल्यांकन**
- आपके शिक्षण का सारांशित छात्र मूल्यांकन, जिसमें प्रतिक्रिया दर, छात्रों की लिखित टिप्पणियाँ और समग्र रेटिंग शामिल हैं
 - पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद छात्रों के साथ साक्षात्कार के परिणाम
 - छात्रों और पूर्व छात्रों के पत्र
 - कक्षा को पढ़ाते हुए आपका वीडियोटेप
 - आपके बारे में सहकर्मियों के कथन
- पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या विकास**
- नए पाठ्यक्रमों को डिजाइन करना या पाठ्यक्रमों के अनुक्रम का विकास करना

- अंतःविषय या सहयोगी पाठ्यक्रम या शिक्षण परियोजनाएं डिजाइन करना
 - एक बहुखंडीय पाठ्यक्रम का प्रशासन करना
 - पाठ्यक्रम संशोधन या विकास पर कार्य करना
 - शिक्षण प्रयोगशालाओं या कार्यक्रमों के लिए धन या उपकरण प्राप्त करना
- आपके और दूसरों के निर्देश को बेहतर बनाने के लिए गतिविधियाँ**
- सहकर्मियों से आपकी कक्षाओं का निरीक्षण कराना
 - टीम शिक्षक या अतिथि शिक्षक के रूप में कार्य करना
 - शिक्षण पर सेमिनार या पेशेवर बैठकों में भाग लेना
 - कक्षा अनुसंधान परियोजनाओं का संचालन करना
 - शिक्षण के नए तरीकों का उपयोग करना, सीखने का आकलन करना, ग्रेडिंग करना
 - नवीन दृश्य-श्रव्य सामग्री, कंप्यूटर या अन्य तकनीक का उपयोग करना
 - सेमिनार आयोजित करके या कार्यशालाएँ आयोजित करके सहकर्मियों की सहायता करना
- प्रभावी अनुदेशात्मक तरीके**
- किसी पाठ्यक्रम के लिए पाठ्य-पुस्तक या सॉफ्टवेयर तैयार करना
 - अन्य शिक्षकों या शिक्षण सहायकों को सलाह देना
- संस्थान या पेशे में योगदान**
- स्थानीय, राज्य, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय गतिविधियों/संगठनों से संबंधित गतिविधियों में भाग लेना,
- शिक्षण और सीखना**
- शिक्षण पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित करना
 - छात्र सहायता या इंटरनशिप कार्यक्रम का विकास करना; व्यवस्था एवं पर्यवेक्षण करना
- इंटरनशिप**
- सीखने को जोड़ने और बेहतर बनाने के लिए स्कूल-कॉलेज साझेदारी में भाग लेना शैक्षिक क्षेत्रों में सम्मान या मान्यता
 - विभाग/स्कूल/विश्वविद्यालय से शिक्षण पुरस्कार

- पेशे से शिक्षण पुरस्कार
- आपकी शिक्षण प्रतिष्ठा के आधार पर, परामर्श देने, कार्यशालाएँ देने, लिखने के लिए निमंत्रण लेख, आदि
- समितियों या अन्य संगठित समूहों द्वारा शिक्षण पर सलाह के लिए अनुरोध

9.7 सारांश

मूल्यांकन, अपने व्यवस्थित दृष्टिकोण और बहुआयामी प्रकृति के साथ, मूल्य का आकलन करने, जवाबदेही सुनिश्चित करने और सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। याद रखें, मूल्यांकन एक अकेला कार्य नहीं है बल्कि एक सतत प्रक्रिया है जो समय और संदर्भ के साथ विकसित होती है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यह शिक्षा प्रणालियों में विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करता है जैसे शिक्षा में गुणवत्ता नियंत्रण, चयन और उच्च ग्रेड या तृतीयक स्तर पर प्रवेश का मूल्यांकन करना इसका एक अहम कार्य है। यह भविष्य की विशिष्ट गतिविधियों में सफलता के बारे में निर्णय लेने में भी मदद करता है और आगे की पढ़ाई और व्यवसाय के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। कुछ शिक्षाविद् मूल्यांकन को वस्तुतः उस चीज़ का पर्याय मानते हैं जिसे पहले शिक्षार्थी मूल्यांकन के रूप में परिभाषित किया गया था, लेकिन मूल्यांकन की एक विस्तारित भूमिका है। यह उद्देश्यों पर सवाल उठाने या उन्हें चुनौती देने में प्रभावी भूमिका निभाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि कोई कार्यक्रम के उद्देश्यों की खुलकर आलोचना कर सकता है। किसी को कार्यक्रम के उद्देश्यों और उस आवश्यकता के बीच संबंध का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने के बाद ही कार्यक्रम के उद्देश्यों पर सवाल उठाना या चुनौती देनी चाहिए जिसके लिए कार्यक्रम डिजाइन किया गया था। मूल्यांकन, शिक्षार्थी मूल्यांकन द्वारा प्राप्त फीडबैक के आधार पर सीखने के अनुभवों के डिजाइन और निर्माण में बहुत मदद करता है।

9.8 शब्दार्थ

मूल्यांकन छात्र की प्रगति और उपलब्धियों का आंकलन करने की प्रक्रिया।

स्व-मूल्यांकन छात्र द्वारा स्वयं की सीख और व्यवहार का मूल्यांकन।

आपसी मूल्यांकन सहपाठियों द्वारा एक-दूसरे की कार्यप्रणाली का मूल्यांकन।

नैदानिक मूल्यांकन छात्र की कठिनाइयों की पहचान के लिए किया गया मूल्यांकन।

पोर्टफोलियो छात्र द्वारा संकलित स्वयं के कार्यों का संग्रह।

समग्र मूल्यांकन छात्र के सभी पक्षों – बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक – का मूल्यांकन।

सतत मूल्यांकन नियमित अंतराल पर निरंतर किया जाने वाला मूल्यांकन।

लक्ष्य आधारित पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार किया गया मूल्यांकन।

दृश्य प्रमाण सीखने की पुष्टि करने वाले प्रमाण, जैसे प्रोजेक्ट, रिपोर्ट आदि।

पुनर्मूल्यांकन मूल्यांकन प्रक्रिया की दोबारा समीक्षा।

9.9 अधिगम परिणाम

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद छात्र निम्न में दक्षताओं में सक्षम होंगे:

- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन की भूमिका का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- शिक्षण में मूल्यांकन की आवश्यकता और महत्व को समझा सकने में सक्षम होंगे।
- मूल्यांकन की अवधारणा को परिभाषित एवं उसका अपने शब्दों में विस्तृत वर्णन करने में सक्षम होंगे।
- मूल्यांकन की विशेषताओं को सूचीबद्ध करने में सक्षम होंगे।
- शिक्षण में पोर्टफोलियो की विशेषताओं एवं अहमियत का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

9.10 इकाई के अंत की गतिविधियां

9.10.1 अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. शिक्षार्थी मूल्यांकन द्वारा प्राप्त किसके आधार पर सीखने के अनुभवों के डिजाइन और निर्माण में बहुत मदद करता है ?

ए) फीडबैक बी) रुब्रिक सी) असाइनमेंट डी) उपरोक्त सभी

2. छात्र निर्देश से पहले और बाद में किस परीक्षण में स्कोर करते हैं?

ए) प्रतिशत बी) अंक सी) मानकीकरण डी) उपरोक्त सभी

3. शिक्षक को सबसे पहले शिक्षा के किन सम्प्रत्यों को समझना चाहिए?

ए) लक्ष्यों एवं उद्देश्यों बी) सिद्धांतों सी) परिभाषाओं डी) मूल्यांकन

4. शिक्षा प्रक्रिया में प्रमुख तत्व कौन से हैं?

ए) उद्देश्य बी) सीखने के अनुभव सी) शिक्षार्थी का मूल्यांकन डी) उपरोक्त सभी

5. मूल्यांकन क्या है ?

ए) एक सतत प्रक्रिया एवं आवधिक अभ्यास है बी) एक अभ्यास है
सी) एक अधूरी प्रक्रिया है डी) मूल्यांकन कुछ नहीं है

6. शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया का उपयोग क्यों अधिक जरूरी हो जाता है?

ए) मात्रात्मक चरों का आकलन करना संभव होता है।
बी) गुणात्मक चरों का आकलन निष्पत्ति परीक्षा से करना संभव नहीं होता है।
सी) गुणात्मक चरों का आकलन निष्पत्ति परीक्षा से करना संभव होता है।
डी) उपरोक्त में से कोई नहीं

7. सीखने के अनुभव प्रदान करने में कौन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?

ए) शिक्षार्थी बी) शिक्षक सी) प्रधानाचार्य डी) पाठ्यचर्या

8. मूल्यांकन वह निर्णय एवं विश्लेषण है जो विद्यार्थी के कार्य से प्राप्त सूचनाओं से निकाला जाता है। किसकी परिभाषा है ?

ए) डॉ. आर. पी. देवदास बी) क्वालिन एवं हन्न सी) क्लार एवं स्टार डी) डॉ. हिल

9. रचनात्मक मूल्यांकन निरंतर सीखने और को बढ़ावा देता है।

अ) सूचना ब) क्रिया स) प्रतिकूलन द) अनुकूलन

10. कक्षा शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों को किस दिशा में प्रभावित करना है?

अ) व्यवहारात्मक ब) क्रियात्मक स) साकारात्मक द) नाकारात्मक

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मूल्यांकन का अर्थ बताइए।
2. निर्माणात्मक मूल्यांकन किसे कहते हैं?
3. मूल्यांकन की विशेषताओं को सूचीबद्ध कीजिए।
4. शिक्षण में पोर्टफोलियो की विशेषताओं एवं अहमियत समझाइए।
5. डॉ. आर. पी. देवदास के द्वारा दी गयी मूल्यांकन की परिभाषा लिखिए।
6. प्रभाव मूल्यांकन से आपका क्या अभिप्राय है?
7. प्रतिनिधि पाठ्यक्रम सामग्री क्या होती है?
8. मूल्यांकन में शिक्षक की क्या भूमिका है?
9. पाठ्यक्रम पोर्टफोलियो से आप क्या समझते हैं।
10. मूल्यांकन में सीखना और नवाचार के क्या मायने हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।
2. शिक्षण में मूल्यांकन की आवश्यकता और महत्व को समझाइए।
3. मूल्यांकन की अवधारणा को परिभाषित एवं उसका अपने शब्दों में विस्तृत वर्णन कीजिए।
4. मूल्यांकन की विशेषताओं को सूचीबद्ध कीजिए तथा अपने शब्दों में उनका विस्तृत वर्णन कीजिए।
5. शिक्षण में पोर्टफोलियो की विशेषताओं एवं अहमियत का विश्लेषण लिखिए।

9.11 संदर्भ ग्रन्थसूची

- नीलम, (2016), हिंदी शिक्षण, अर्थ विजन पब्लिकेशन, गुडगाँव हरियाणा
- सक्सैना, मालती (2016), हिंदी का शिक्षण शस्त्रीय स्वरूप, राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, आगरा
- सिंह, निरंजनकुमार (2019) माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- ओझा, पी.के.,(2008) हिंदी शिक्षण, अनमोल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
- डबास, जयदेव (2013) हिंदी भाषा शिक्षण, दोआबा हाउस, नई दिल्ली
- चतुर्वेदी, शिक्षा (2008) हिंदी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- नरूला, मधु (2015) हिंदी शिक्षण, ट्वेंटीफर्स्ट सेंचुरी पब्लिकेशन, पटियाला
- पंडागले, प्रविनी (2015) हिंदी शिक्षण, क्वालिटी पब्लिकेशन लिमिटेड, भोपाल

इकाई 10 – मौलिकता और भाषा प्रयोग में सृजनात्मकता

इकाई की रूपरेखा

- 10.1 प्रस्तावना
- 10.2 उद्देश्य
- 10.3 सृजनात्मक हिन्दी साहित्य के विकास के लिए
- 10.4 सामाजिक व्यवहार के लिए
- 10.5 व्यावसायिक तथा वाणिज्य व्यवहार के लिए
- 10.6 ज्ञानविज्ञान के विकास के लिए
- 10.7 सारांश
- 10.8 शब्दावली
- 10.9 अधिगम परिणाम
- 10.10 इकाई के अंत में प्रश्न
- 10.11 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

10.1 प्रस्तावना

सृजनात्मकता अंग्रेजी भाषा के क्रिएटिविटी शब्द का हिंदी रूपांतरण है | जिसको मौलिकता भी कहा जाता है | सृजनात्मक चिंतन में साहचर्य तत्वों का मिश्रण होता है | किसी कार्य को सृजनात्मक कार्य कहते हैं जिसका करने का परिणाम नया हो अतः उस प्रक्रिया को सृजनात्मक कार्य कह सकते हैं, ऐसी प्रक्रिया जो हमें नए तरीकों से सोचने और विचार करने के लिए प्रेरित करें | इसके साथ ही यह निश्चित रूप से उद्देश्य पूर्ण या मकसद निर्देशित होती है जोकि निराधार स्वप्न चित्र नहीं होती बल्कि यह एक वैज्ञानिक कलात्मक या साहित्यिक रचना के रूप में हो सकती है | सृजनात्मकता अथवा रचनात्मकता किसी वस्तु, विचार, कला, साहित्य से संबद्ध किसी समस्या का समाधान निकालने आदि के क्षेत्र में कुछ नया रचने, आविष्कृत करने या पुनर्सृजित करने की प्रक्रिया है | यह एक मानसिक संक्रिया है जो भौतिक परिवर्तनों को जन्म देती है | सृजनात्मकता के संदर्भ में वैयक्तिक क्षमता और प्रशिक्षण का आनुपातिक संबन्ध है |

इस इकाई में हम मौलिकता एवं भाषा प्रयोग विशेष तौर पर हिंदी भाषा प्रयोग में सृजनात्मकता को समझेंगे और इसके साथ ही सृजनात्मकता हिंदी साहित्य के विकास के लिए कितनी और कैसे अहम् है और इसका सामाजिक व्यवहार के लिए तथा व्यवसायिक एवं वाणिज्य व्यवहार के लिए ज्ञान-विज्ञान के विकास के लिए किस तरह का किरदार रहता है के सन्दर्भ में अपनी समझ विकसित करेंगे। यह इकाई स्पष्ट तौर पर हिंदी भाषा साहित्य विकास में सृजनात्मकता के विभिन्न आयामों का एक विस्तृत चित्रण प्रस्तुत करती है।

10.2 उद्देश्य

- हिंदी साहित्य के विकास के लिए सृजनात्मकता की भूमिका को समझ सकेंगे।
- सामाजिक व्यवहार के लिए सृजनात्मकता के महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे।
- व्यवसायिक एवं वाणिज्य व्यवहार के लिए सृजनात्मकता की जरूरत का आकलन कर सकेंगे।
- ज्ञान-विज्ञान के विकास के लिए सृजनात्मकता की अहमियत का विस्तृत चित्रण प्रस्तुत कर सकेंगे।

10.3 सृजनात्मक हिन्दी साहित्य के विकास के लिए

साहित्य में आलोचनात्मक सोच और रचनात्मक लेखन एक दूसरे के बिल्कुल समानांतर नहीं चल सकते हैं। दोनों के बीच असमानता तब और अधिक स्पष्ट होती है यदि प्रश्नाधीन साहित्य किसी विकासशील देश का हो, जहां आधुनिक समय में इतिहास की प्रगति को तेज करने का प्रयास किया जा सकता है। शायद अन्य भारतीय साहित्य की तरह ही हिंदी साहित्य भी आज तक विकास के लिए प्रयासरत है। इन दिनों हम आधुनिकता की अवधारणा पर चर्चा कर रहे हैं, फिर भी सीमित संख्या में रचनात्मक कार्य ही आधुनिक संवेदनशीलता को प्रकट करते प्रतीत होते हैं। विचार और अनुभव के बीच का यह अंतर समकालीन हिंदी साहित्य में तीव्रता से परिलक्षित होता है। भारत जैसे विकासशील देश में आधुनिकता की समस्या निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण है, जो अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद पश्चिम को अपने से कम से कम सौ वर्ष आगे पाता है। आधुनिकता की प्रक्रिया के लिए उच्च स्तर की आत्म-चेतना की आवश्यकता होती है और यह प्रकृति में अनिवार्य रूप से कम लुभावनी है। हम अस्थायी रूप से आधुनिकता को इतिहास को तीव्र गति से आगे बढ़ाने की एक अत्यंत आत्म-जागरूक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।

मौलिकता और भाषा प्रयोग में सृजनात्मकता जैसे-जैसे मूल्यांकन का आधार होता है वैसे- वैसे शिक्षण पद्धति में मौलिकता आती जाती है। मिसाल के तौर पर एक शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया का मूल्यांकन कर उसकी कमियों में बदलाव लाता है तथा अनावश्यक एवं गैर-जरूरी तथ्यों को हटा देता है। इस तरह से विषय में मौलिकता का समावेश होता है। सीखने और सीखाने की प्रक्रिया जीवन पर्यंत चलती रहती है। छात्रों के सीखने में एक नयापन तथा उत्सुकता लाने के लिए मौलिकता का होना आवश्यक हो जाता है। छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए भी शैक्षिक के साथ-साथ सह-शैक्षिक क्षेत्र को भी मूल्यांकन के दायरे में लाना आवश्यक हो जाता है। ऐसा माना जाता है कि जितना अधिगम में नई-नई विधियों का समावेश सीखने की प्रक्रिया के अंतर्गत होगा उतना ही यह प्रक्रिया मौलिक बनती जाएगी। जिस तरह से एक मूर्तिकार या वास्तुकार अपने स्थूल साधनों के इस्तेमाल से विभिन्न आकृतियों का निर्माण करता है उसी प्रकार से लेखक शब्द, वाक्य, लोकोक्तियों, मुहावरों का इस्तेमाल करके व्याकरण सम्मत नियमों से लेखन के सहारे अपने आंतरिक मनोभावों को साकार करता है। वैसे देखा जाए तो वास्तुकार, चित्रकार एवं लेखक तीनों का उद्देश्य एक नई रचना करना ही होता है, जिसमें उसके व्यक्तित्व की छाप अंकित होती है।

शिक्षा का उद्देश्य छात्र की अन्तर्निहित भावनाओं और शक्तियों को अनेक अवसर देकर उसका पूर्ण विकास करना होता है जिसके लिए भाषा को इन शक्तियों का आधार बनाया जाता है। इस सन्दर्भ में यदि बोलचाल और लेखन अभिव्यक्ति का समुचित आयोजन किया जाए तो मौलिक अभिव्यक्ति के लिए एक रास्ता बनता है। वर्तमान समय में छात्र सामान्यतः कुंजी आदि का इस्तेमाल करके निबंध, पत्र आदि लिखते हैं। ऐसा करने से शिक्षकों और छात्रों का परिश्रम तो बचता है लेकिन उनके सोचने समझने की ताकत कुंठित हो जाती है। उनका लेखन के प्रति आत्मविश्वास बन ही नहीं पाता है। इस तरह से उनके लेखन में नवीनता और मौलिकता का समावेश नहीं होता है। इसी वजह से छात्र की लेखन महत्व को न समझ पाने वाली सोच बन जाती है।

भाषा में मौलिकता लाने के लिए भाषा प्रयोग में सृजनात्मकता लाना बहुत जरूरी हो जाता है। इसके लिए छात्र के सामने ऐसी परिस्थिति बनायीं जाए ताकि वह हिंदी भाषा में मौलिक सृजन करने के लिए कोशिश करता रहे। इस सन्दर्भ में कुछ बिन्दुओं पर विचार किया जा सकता है, जोकि सृजनात्मक हिंदी साहित्य के विकास के लिए आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण हैं। ऐसा दिखलाई पड़ता है कि मानव आज-कल काफी कठोर होता जा रहा है। वह अपनी संवेदनशीलता को खोता जा रहा है, ऐसी परिस्थिति में ऐसे भावुक लेखकों की जरूरत है जो अपने मौलिक लेखों से मनुष्य को यह सोचने पर मजबूर कर सकें कि वे अपनी भूल पर प्रायश्चित्त कर सकें।

10.4 सामाजिक व्यवहार के लिए

भाषा सामाजिक जीवन में व्याप्त है। यह सांस्कृतिक ज्ञान के प्रसारण का प्रमुख माध्यम है और प्राथमिक साधन है जिसके द्वारा हम दूसरों के दिमाग की सामग्री तक पहुंच प्राप्त करते हैं। भाषा उन अधिकांश घटनाओं में शामिल है जो सामाजिक मनोविज्ञान के मूल में हैं: दृष्टिकोण परिवर्तन, सामाजिक धारणा, व्यक्तिगत पहचान, सामाजिक संपर्क, अंतरसमूह पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता, आरोपण, इत्यादि। इसके अलावा सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के लिए, भाषा आम तौर पर वह माध्यम है जिसके द्वारा विषयों की प्रतिक्रियाएं प्राप्त की जाती हैं, और जिसमें वे प्रतिक्रिया देते हैं: सामाजिक मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में, अक्सर भाषा उत्तेजना और प्रतिक्रिया दोनों में भूमिका निभाती है।

जिस प्रकार भाषा का प्रयोग सामाजिक जीवन में व्याप्त है, उसी प्रकार सामाजिक जीवन के तत्व भी भाषा के प्रयोग के आंतरिक भाग का निर्माण करते हैं। भाषाविद् भाषा को एक अमूर्त संरचना के रूप में मानते हैं जो उपयोग के विशिष्ट उदाहरणों से स्वतंत्र रूप से मौजूद होती है (जैसे कि कैलकुलस एक तार्किक-गणितीय संरचना है जो ठोस समस्याओं के लिए इसके अनुप्रयोग से स्वतंत्र है) लेकिन कोई भी संचारी आदान-प्रदान एक सामाजिक संदर्भ में स्थित होता है जो इसमें बाधा उत्पन्न करता है। प्रतिभागियों द्वारा भाषाई रूपों का उपयोग किया जाता है। ये प्रतिभागी सामाजिक स्थिति को कैसे परिभाषित करते हैं, दूसरे क्या जानते हैं, सोचते हैं और विश्वास करते हैं, इसके बारे में उनकी धारणाएं और वे अपनी और दूसरों की पहचान के बारे में जो दावे करते हैं, वे उनके बोलने के तरीके और सामग्री को प्रभावित करेंगे। सामाजिक व्यवहार के संदर्भ में अगर देखा जाए तो आज परिवार एकाकी हो गए हैं और एकाकी परिवार दूर-दूर के स्थानों पर रहने लगे हैं। इन एकाकी परिवारों को जोड़े रखने के लिए पत्र व्यवहार की आवश्यकता पड़ती है। पत्र लेखन से सभी सदस्यों में मौलिक तथा नवीन विचारों की अभिव्यक्ति का समावेश होता है।

10.5 व्यावसायिक तथा वाणिज्य व्यवहार के लिए

व्यावसायिक हिंदी अथवा व्यावसायिक व्यवहार के लिए हिंदी का तात्पर्य किसी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में प्रयोग में ली जाने वाली हिंदी से है, जिसके अंतर्गत वाणिज्यिक, पर्यटन, संस्कृति, जनसंचार आदि क्षेत्र सम्मिलित हैं। इसका कार्य व्यापारिक संगठन का ऐसे

किसी भी व्यापारिक संगठन, सरकारी प्रतिष्ठान या व्यापारिक उद्देश्य से संबंधित संस्थान अथवा व्यक्ति के बीच संपर्क के लिए किये जाने वाले पत्र-व्यवहार से है जिसके द्वारा वे अपने उद्देश्य की प्रतिपूर्ति कर सके। कार्यालयी हिंदी की अपेक्षाकृत 'व्यावसायिक हिंदी' का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसका अभिप्राय रोजगार तथा जीवन के अभिप्रेत लक्ष्यों से सम्बद्ध क्षेत्रों तथा राजनीति, कृषि, व्यापार, उद्योग, विधि, ज्योतिष, दर्शन, चिकित्सा, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों के लिए चिंतन, मनन एवं अभिव्यक्ति की हिंदी है।

वर्तमान समय वैश्वीकरण का युग है। इस युग में बाजार केंद्रित नीतियों के कारण सम्पूर्ण विश्व में मुक्त व्यापार की अवधारणा का चलन बढ़ गया है। प्रत्येक व्यावसायिक प्रतिष्ठान अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपने उद्योगों को विस्तार दे रहे हैं। इन व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को अपने संगठनों से सम्बद्ध अन्य औद्योगिक संस्थानों के साथ संपर्क के लिए पत्र-व्यवहार की आवश्यकता पड़ती ही है। भारत की अधिकांश जनता की संपर्क भाषा हिंदी होने के कारण राजभाषा से मुक्त यह समाज के साथ संपर्क और बाजार के लिए उपयोगी भाषा होने के कारण इसका प्रयोग व्यापारिक संगठनों द्वारा भी क्या जा रहा है। अपने व्यापार को सुचारु रूप से चलाने के लिए हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग इन संगठनों की आवश्यकता है।

इसलिए विदेशों को छोड़कर यदि व्यावसायिक संगठनों का भारत के विभिन्न व्यापारिक संगठनों से पत्र-व्यवहार हिंदी में होना सहज ही नहीं बल्कि आवश्यक भी है। इन व्यापारिक संगठनों द्वारा अन्य व्यापारिक संगठनों के अतिरिक्त बैंकों से किया जाने वाला संपर्क भी व्यावसायिक हिंदी के द्वारा ही किया जाता है।

व्यावसायिक हिंदी की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी सहजता होने के कारण इसमें किया जाने वाला पत्र व्यवहार आसानी से संप्रेषित हो पाता है। इतना ही नहीं वर्तमान समय में पत्रकारिता जैसे क्षेत्र में व्यापार की माँग अधिक होने के कारण इस क्षेत्र में भी व्यावसायिक हिंदी का आगमन हो चुका है। लेकिन उन व्यापारिक संगठनों के बीच इस शब्दावली का ज्ञान और इसके सम्प्रेषण प्रक्रिया की सरलता के चलते व्यावसायिक हिंदी सहजता से उपयोग में लाई जा रही है।

वर्तमान दौर में तकनीकी के आगमन के बाद जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में हिंदी का वर्चस्व तेज़ी से बढ़ने लगा है। जनसंचार के इन माध्यमों की हिंदी सामान्य बोलचाल के निकट होती है। लेकिन मानकता की दृष्टि से वह भी निर्धारित मापदण्ड पर सही नहीं ठहरती। इसका कारण है कि जनसंचार का मुख्य उद्देश्य समाज के विशाल वर्ग तक सामाजिक जीवन के विभिन्न

क्षेत्रों की सूचना को सम्प्रेषण करना है और भारत जैसे विशाल राष्ट्र में सरल और सुबोध भाषा के द्वारा ही विशाल जनसमुदाय तक अभिव्यक्ति सम्भव हो सकती है | इसीलिए जनसंचार के माध्यमों में हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के शब्दों का व्यावहारिक प्रयोग उसे मानकता से परे करता है |

इन रूपों के अतिरिक्त व्यापार, वाणिज्य, विधि, खेल आदि अनेक क्षेत्रों में हिंदी के रूप पारिभाषिक के साथ- साथ स्वतंत्र भी हैं | इन क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट भाषा के कारण इसका प्रयोग सीमित रूप में ही किया जा सकता था | क्षेत्रों से सम्बन्धित लोगों में ही इस भाषा के अर्थ को समझने की क्षमता होती है | लेकिन इन क्षेत्रों में हिंदी का मानकीकृत रूप ही स्वीकार्य होता है | हिंदी के इन विभिन्न रूपों और अनेक अन्य रूपों में भाषा का जो स्वरूप होता है वह कार्यालयी हिंदी में प्रयुक्त नहीं होता | कार्यालयी हिंदी इससे भिन्न पूर्णतः मानक एवं पारिभाषिक शब्दों को ग्रहण करके चलती है | इसलिए यहाँ व्यावसायिक उद्देश्य को केंद्र में रखते हुए व्यावसायिक हिंदी का प्रयोग इन कार्यालयों के दैनिक कामकाज में व्यवहार में लिया जाता है |

मूल रूप से 'व्यावसायिक हिंदी' का उपयोग एक व्यवसायी द्वारा उसके व्यवसाय के हितों के आधार पर दूसरे व्यवसाय अथवा उसके व्यवसाय से संबंधित किसी व्यक्ति को पत्र लिखना आदि के अंतर्गत आता है | इसमें अपने माल के संबंध में पूछताछ करना, समय पर आदेश देना, खराब माल की शिकायत करना, माल प्राप्ति की सूचना भेजना, माल के भुगतान अथवा बकाये के संबंध में लिखना, अपने माल का प्रचार करना आदि से सम्बन्धित जो पत्र एक व्यवसायी द्वारा किसी अन्य को हिंदी भाषा में लिखा जाता है वह व्यावसायिक हिंदी के अन्तर्गत आता है | जिनका उद्देश्य व्यावसायिक संगठन द्वारा अपने व्यवसाय में वृद्धि करना, ग्राहकों में वृद्धि करना, अपनी साख को बढ़ाना, पुराने ग्राहकों में अपनी पैठ बनाये रखना, ग्राहकों की शिकायतों पर तुरन्त ध्यान देना, ग्राहकों का नया बाजार ढूँढना, ऋण की वसूली करना, पारस्परिक मतभेदों को दूर करना और अपने संगठन तथा ग्राहकों के बीच समन्वय स्थापित करना है |

वर्तमान समय में मौलिक एवं सृजनात्मक लेखन की अति आवश्यकता है | आज प्रत्येक युवक एवं युवती को स्वरोजगारन्मुखी बनने का प्रोत्साहन दिया जा रहा है | जिसका मुख्य उद्देश्य उन्हें इक्कसवीं शताब्दी में समरस होकर जीने को तैयार करना है | परिणामतः आज हमें व्यावसायिक एवं वाणिज्य सम्बन्धी पत्र व्यवहार, सार लेखन आदि का महत्त्व समझना होगा

और इन्हें लिखने पर बल देना होगा | हिंदी भाषा को व्यवसायिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियों में उपयोग करने की आज बहुत जरूरत है |

10.6 ज्ञान विज्ञान के विकास के लिए

मनुष्य द्वारा हजारों वर्षों में अर्जित और संचित अनुभूतियों और ज्ञान-विज्ञान के सम्बन्ध को दो श्रेणियों, संवेदना प्रधान एवं ज्ञानप्रधान में विभक्त किया जा सकता है | संवेदना प्रधान के अंतर्गत सृजनात्मक साहित्य आता है और ज्ञानप्रधान के अंतर्गत साहित्य से भिन्न समस्त ज्ञान का साहित्य सम्मिलित होता है | सृजनात्मक साहित्य के आधार तत्व के रूप में अनुभूति, भाव और कल्पना आदि को देखा जाता है | वहीं दूसरी ओर ज्ञान के साहित्य के आधार तत्व, तथ्य और विचार हैं | इन दोनों श्रेणियों को क्रमशः ललित साहित्य एवं ज्ञानप्रधान साहित्य कहा जा सकता है | ज्ञानप्रधान साहित्य के अंतर्गत समस्त विचार, विश्लेषण, सूचना संश्लेषण और व्यवहार मूलक ज्ञान-विज्ञान शामिल हैं | ऐसा विदित है कि ज्ञान का साहित्य हमें बौद्धिक रूप से संपन्न बनाता है और सृजनात्मक साहित्य हमारी अनुभूतियों, हमारे भावों से साक्षात्कार कर हमारा मानसिक संस्कार करता है |

आज विज्ञान की विभिन्न विधाओं का विकास हो रहा है | हमारे वैज्ञानिक उर्जा के विभिन्न साधनों की खोज में लगे हैं | पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं के समाधान खोज रहे हैं | इन मौलिक उद्घावनाओं को तभी स्थायी रूप दिया जा सकता है जब हम अपने विद्यालयों में छात्रों को मौलिक लेखन सृजन करने के उचित अवसर प्रदान करें | इसके लिए निबंध लेखन में प्रयुक्त जटिल शब्दावली को सरल और सहज भाषा में प्रकट करना सीखने की जरूरत होती है | इसका अभिप्राय यह है कि व्यक्ति से लेकर समष्टि तक के लिए मौलिक रचना के सृजन की आवश्यकता है |

10.7 सारांश

मौलिकता और भाषा प्रयोग में सृजनात्मकता जैसे-जैसे मूल्यांकन का आधार होता है वैसे-वैसे शिक्षण पद्धति में मौलिकता आती जाती है | मिसाल के तौर पर एक शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया का मूल्यांकन कर उसकी कमियों में बदलाव लाता है तथा अनावश्यक एवं गैर-जरूरी तथ्यों को हटा देता है | इस तरह से विषय में मौलिकता का समावेश होता है | सीखने और सीखाने की प्रक्रिया जीवन पर्यंत चलती रहती है | छात्रों के सीखने में एक नयापन तथा उत्सुकता लाने के लिए मौलिकता का होना आवश्यक हो जाता है | छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए भी शैक्षिक के साथ-साथ सह-शैक्षिक क्षेत्र को भी मूल्यांकन के दायरे में लाना आवश्यक

हो जाता है। ऐसा माना जाता है कि जितना अधिगम में नई-नई विधियों का समावेश सीखने की प्रक्रिया के अंतर्गत होगा उतना ही यह प्रक्रिया मौलिक बनती जाएगी।

10.8 शब्दावली

शब्द	अर्थ
मौलिकता	विचारों, अभिव्यक्ति या कार्य में नवीनता और स्वतन्त्रता।
सृजनात्मकता	कल्पनाशीलता से नया निर्माण करने की क्षमता।
भाषिक कौशल	भाषा के प्रयोग से जुड़ी क्षमताएँ – सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना।
प्रेरणा	कार्य करने के लिए आंतरिक या बाहरी उत्प्रेरक।
रचनात्मक लेखन	स्वयं के विचारों को स्वतंत्र और प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करना।
प्रयोगात्मक दृष्टिकोण	भाषाई प्रयोग करते हुए सीखने की प्रक्रिया।
नवाचार	किसी भी क्षेत्र में किया गया नवीन प्रयास या सुधार।
स्वाभाविक अभिव्यक्ति	बिना दबाव के अपनी बात सहज रूप से कहना।
तर्कशीलता	किसी विचार या कथन की विवेकपूर्ण व्याख्या करने की योग्यता।
कथात्मक विधा	कहानी आधारित रचनात्मक लेखन शैली।

10.9 अधिगम परिणाम

- हिंदी साहित्य के विकास के लिए सृजनात्मकता की भूमिका को समझने में सक्षम होंगे।
- सामाजिक व्यवहार के लिए सृजनात्मकता के महत्व का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- व्यवसायिक एवं वाणिज्य व्यवहार के लिए सृजनात्मकता की जरूरत का आकलन करने में सक्षम होंगे।
- ज्ञान-विज्ञान के विकास के लिए सृजनात्मकता की अहमियत का विस्तृत चित्रण प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे।

10.10 इकाई के अंत में प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 सृजनात्मकता अंग्रेजी भाषा के किस शब्द का हिंदी रूपांतरण है?

(अ) क्रिएटिविटी (ब) क्रिएशन (स) कॉग्रिशन (द) कॉम्बिनेशन

प्रश्न 2 ऐसी प्रक्रिया जो हमें नए तरीकों से सोचने और विचार करने के लिए प्रेरित करें, उसे क्या कहते हैं?

(अ) नई सोच (ब) सृजनात्मकता (स) असृजनात्मक सोच (द) संज्ञानात्मकता

प्रश्न 3 सृजनात्मकता के संदर्भ में किन दो चीजों में आनुपातिक संबन्ध है?

(अ) व्यक्तिगत आकलन और क्षमता (ब) वैयक्तिक क्षमता और प्रशिक्षण

(स) वैयक्तिक दृष्टिकोण और आकलन (द) वैयक्तिक व्यवहार और मूल्यांकन

प्रश्न 4 साहित्य में कौन से दो आयाम एक दूसरे के बिल्कुल समानांतर नहीं चल सकते हैं?

(अ) आलोचनात्मक सोच और चिंतनशील सोच

(ब) सामान्य सोच और असामान्य लेखन

(स) आलोचनात्मक सोच और रचनात्मक लेखन

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 5 भारत में तकनीकी के आगमन के बाद जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में किस भाषा का वर्चस्व तेज़ी से बढ़ने लगा है?

(अ) उर्दू (ब) हिंदी (स) संस्कृत (द) तेलुगु

प्रश्न 6 शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया की कमियों को किसके आधार पर बदलाता है?

(अ) आकलन (ब) मूल्यांकन (स) सृजनात्मक सोच (द) साथियों के सुझाव

प्रश्न 7 भारत की राष्ट्रभाषा किस भाषा को माना जाता है?

(अ) हिंदी (ब) हिंगलिश (स) इंग्लिश (द) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 8 व्यावसायिक 'हिंदी' का क्षेत्र कैसा है?

(अ) अत्यंत व्यापक (ब) अत्यंत संकुचित

(स) संकुचित भी और व्यापक भी (द) उपरोक्त सभी

प्रश्न 9 संवेदना प्रधान साहित्य के अंतर्गत कौन सा साहित्य आता है?

(अ) सृजनात्मक साहित्य (ब) काल्पनिक साहित्य

(स) असंवेदनशील साहित्य

(द) उपन्यास

प्रश्न 10 भारत में किस भाषा को व्यवसायिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियों में उपयोग करने की आज बहुत जरूरत है?

(अ) उर्दू भाषा (ब) हिंदी भाषा (स) पंजाबी भाषा (द) अंग्रेजी भाषा

1-(अ) 2-(ब) 3-(द) 4-(स) 5-(ब) 6-(ब) 7-(अ) 8-(अ) 9-(अ) 10-(ब)

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 भारत में व्यवसाय को बढ़ाने के लिए हिंदी भाषा का इस्तेमाल क्यों जरूरी है ?

प्रश्न 2 मौलिकता और भाषा प्रयोग में सृजनात्मकता को मूल्यांकन का आधार क्यों कहा जाता है?

प्रश्न 3 आज विज्ञान की विभिन्न विधाओं का विकास में हिंदी की भूमिका समझाइए ।

प्रश्न 4 हिंदी भाषा सामाजिक व्यवहार में कैसे सहायता करती है?

प्रश्न 5 भारत में भाषा को मूल्यांकन का आधार क्यों समझा जाता है?

प्रश्न 6 सृजनात्मकता से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 7 आलोचनात्मक सोच और रचनात्मक लेखन क्यों एक दूसरे के समान्तर नहीं चल सकते?

प्रश्न 8 शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया की कमियों को कैसे दूर कर सकता है?

प्रश्न 9 सृजनात्मकता के संदर्भ में किन दो चीजों में आनुपातिक संबन्ध है और ये आनुपातिक सम्बन्ध क्यों है?

प्रश्न 10 बताइए कि आज के समय में छात्रों में सृजनात्मक सोच पैदा करने की क्या जरूरत है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 हिंदी साहित्य के विकास के लिए सृजनात्मकता की भूमिका को विस्तार से समझाइए ।

प्रश्न 2 सामाजिक व्यवहार के लिए सृजनात्मकता के महत्व का विस्तृत विश्लेषण लिखिए ।

प्रश्न 3 व्यवसायिक एवं वाणिज्य व्यवहार के लिए सृजनात्मकता की जरूरत का विस्तृत आकलन लिखिए ।

प्रश्न 4 ज्ञान-विज्ञान के विकास के लिए सृजनात्मकता की अहमियत का विस्तृत चित्रण प्रस्तुत कीजिए ।

प्रश्न 5 समकालीन परिस्थिति में हिंदी भाषा को किस तरह से मूल्यांकन का आधार समझा जा सकता है? अपने उत्तर की उदहारण सहित पुष्टि कीजिए ।

10.11 सन्दर्भ

- नीलम, (2016), हिंदी शिक्षण, अर्थ विजन पब्लिकेशन, गुडगाँव हरियाणा
- सक्सैना, मालती (2016), हिंदी का शिक्षण शस्त्रीय स्वरूप, राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, आगरा
- सिंह, निरंजनकुमार (2019) माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- ओझा, पी.के.,(2008) हिंदी शिक्षण, अनमोल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
- डबास, जयदेव (2013) हिंदी भाषा शिक्षण, दोआबा हाउस, नई दिल्ली
- चतुर्वेदी, शिक्षा (2008) हिंदी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- नरूला, मधु (2015) हिंदी शिक्षण, ट्वेंटीफर्स्ट सेंचुरी पब्लिकेशन, पटियाला
- पंडागले, प्रविनी (2015) हिंदी शिक्षण, क्वालिटी पब्लिकेशन लिमिटेड, भोपाल

इकाई 11 – भाषा विकास की प्रगति का आंकलन

इकाई की रूपरेखा

- 11.1 प्रस्तावना
- 11.2 उद्देश्य
- 11.3 हिंदी भाषा का विकास
- 11.4 श्रवण कौशल
- 11.5 कथन कौशल, भाषण अभिव्यक्ति कौशल
- 11.6 पठन कौशल
- 11.7 लेखन कौशल
- 11.8 सारांश
- 11.9 शब्दावली
- 11.10 अधिगमप्रतिफल
- 11.11 इकाई के अंत में प्रश्न
- 11.12 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

11.1 प्रस्तावना

भाषा के विकास और उसके स्वरूप के विषय में प्रमाणिक आधारों पर कहना आसान नहीं है लेकिन ऐसा कहा जाता है कि हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। ऐतिहासिक तौर पर विद्वानों का मानना है कि हिंदी का प्रारंभ ईसा की दसवीं शताब्दी में हुआ है। हिंदी, संस्कृत से प्राकृत एवं अपभ्रंश का रूप पार करती हुई वर्तमान की हिंदी के रूप में पहुंची है। इस तरह से हिंदी में प्राकृत, संस्कृत एवं अपभ्रंश की रचनाओं के उसके पूर्व रूप के दर्शन स्वाभाविक हैं। हिंदी का प्रारंभ वीरगाथा काल में दिखाई देता है, चंद्रबरदाई के पृथ्वीराज रासो को हिंदी का पहला महाकाव्य माना जाता है। हिंदी भाषा विकास की प्रगति का आंकलन की चर्चा विस्तार पूर्वक इस इकाई में की गयी है। इसके साथ ही श्रवण कौशल, कथन कौशल, भाषण अभिव्यक्ति कौशल, पठन कौशल एवं लेखन कौशल के सन्दर्भ में विस्तार से चर्चा प्रस्तुत है।

11.2 उद्देश्य

- हिंदी भाषा के विकास को समझ सकेंगे।
- हिंदी भाषा के कौशलों को अपने जीवन में उतार सकेंगे।
- हिंदी भाषा के कौशलों के विभेदीकरण को जान सकेंगे।
- हिंदी भाषा के विभिन्न कौशलों का अपने जीवन में इस्तेमाल कर सकेंगे।
- हिंदी भाषा के विभिन्न कौशलों का सम्प्रेषण में प्रयोग कर सकेंगे।
- हिंदी भाषा के लेखन कौशल को अपनी लेखनी में उतार सकेंगे।

11.3 हिंदी भाषा का विकास

11.3.1 भाषा की शुरुआत एवं हिंदी विस्तार

हिंदी भाषा के विकास की जब भी बात आती है तो आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले महान साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की दो पंक्तियां काफी प्रासंगिक लगती हैं।

'निज भाषा उन्नति रहे, सब उन्नति के मूल।

बिनु निज भाषा ज्ञान के, रहत मूढ-के-मूढ।'

उपरोक्त दोहे से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि आधुनिक हिंदी के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को अपनी भाषा हिंदी से कितना लगाव था। यदि हम हिंदी भाषा के विकास की बात करें तो यह कहना गलत नहीं होगा कि पिछले सौ सालों में हिंदी का बहुत विकास हुआ है और दिन-प्रतिदिन इसमें और तेजी आ रही है। हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है।

संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है, जिसे आर्य भाषा या देवभाषा भी कहा जाता है। हिंदी इसी आर्य भाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है, साथ ही ऐसा भी कहा जाता है कि हिंदी का जन्म संस्कृत की ही कोख से हुआ है।

भारत में संस्कृत 1500 ई. पू. से 1000 ई. पूर्व तक रही, ये भाषा दो भागों में विभाजित हुई- वैदिक और लौकिक। मूल रूप से वेदों की रचना जिस भाषा में हुई उसे वैदिक संस्कृत कहा जाता है, जिसमें वेद और उपनिषद का जिक्र आता है, जबकि लौकिक संस्कृत में दर्शन ग्रंथों का जिक्र आता है। संस्कृत के बाद पालि और पालि के बाद प्राकृत भाषा का उद्भव हुआ। प्राकृत भाषा पहली ईस्वी से लेकर 500 ई. तक रही। इस भाषा में जैन साहित्य काफी मात्रा में लिखे गए थे। पहली ई. तक आते-आते यह बोलचाल की भाषा और परिवर्तित हुई तथा इसको प्राकृत

की संज्ञा दी गई |

दरअसल, उस समय इस भाषा में क्षेत्रीय बोलियों की संख्या बहुत सारी थी | प्राकृत भाषा के अंतिम चरण से अपभ्रंश का विकास हुआ ऐसा माना जाता है | यह भाषा 500 ई. से 1000 ई. तक रही | अपभ्रंश के ही जो सरल और देशी भाषा शब्द थे उसे अवहट्ट कहा गया और इसी अवहट्ट से ही हिंदी का उद्भव हुआ | ऐसा कहा जाता है कि हिंदी का जो विकास हुआ है वह अपभ्रंश से हुआ है और इस भाषा से कई आधुनिक भारतीय भाषाओं और उपभाषाओं का जन्म हुआ है, जिसमें शौरसेनी (पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती), पैशाची (लंहदा, पंजाबी), ब्राह्मि (सिन्धी), खस (पहाड़ी), महाराष्ट्री (मराठी), मागधी (बिहारी, बांग्ला, उड़िया और असमिया), और अर्ध मागधी (पूर्वी हिन्दी) शामिल है।

ऐसा भी कहा जाता है कि हिंदी के कई अधिकांश विद्वान हिंदी का विकास अपभ्रंश से ही मानते हैं और वहीं कई विद्वानों का मानना है कि हिंदी का उद्भव अवहट्ट से हुआ | बता दें कि अवहट्ट नाम का जिक्र मैथिल महान कवि कोकिल विद्यापति की 'कीर्तिलता' में आता है | पूरे देश के भक्त कवियों ने अपनी वाणी को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हिंदी का सहारा लिया |

11.3.2 हिंदी की वर्तमान स्थिति

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में हिंदी और हिंदी पत्रकारिता की बहुत अहम भूमिका रही | महात्मा गांधी सहित अनेक राष्ट्रीय नेता हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने लगे थे | भारत के स्वतन्त्र होने के बाद 14 सितंबर 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित कर दिया गया | हिंदी भाषा के विकास में यदि और जानने की कोशिश करेंगे तो हिंदी भारतीय गणराज की राजकीय और मध्य भारतीय-आर्य भाषा है | सन् 1998 के पूर्व, मातृभाषियों की संख्या की दृष्टिकोण से विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं के जो आंकड़े मिलते थे, उनमें हिंदी को तीसरा स्थान दिया जाता था | हिंदी विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में से एक है | इतना ही नहीं हिंदी आज दुनिया की सबसे बड़ी आबादी द्वारा बोली और समझे जानी वाली भाषा है | भाषाई सर्वेक्षणों के आधार पर दुनिया की आबादी का 18 प्रतिशत इसे समझता है, जबकि अन्य भाषा की बात करें तो चीनी भाषा मेंडरीन समझने वालों की संख्या 15.27 और वहीं अंग्रेजी समझने वालों की संख्या 13.85 प्रतिशत कही गई है |

11.3.3 हिंदी की आधुनिक प्रकृति

हिंदी को हम भाषा की जननी, साहित्य की गरिमा, जन-जन की भाषा और राष्ट्रभाषा भी कहते हैं | ऐसे में यह कहना कतई गलत नहीं होगा कि हिंदी भविष्य की भाषा है | हां, एक बात जरूर है कि हम इस भाषा का प्रयोग वास्तविक जीवन में जरूर करते हैं लेकिन यह रोजगार और महत्वाकांक्षी की भाषा बनने में थोड़ी कारगर नहीं बन पाई | इससे यह जाहिर नहीं होता कि हिंदी का विकास नहीं हुआ | उपरोक्त में कई ऐसे तथ्य हैं जो पूर्ण रूप से साबित करते हैं कि हिन्दी का विकास कितनी तेजी से हुआ है | हमारे देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री अपना बधाई संदेश हिंदी में प्रसारित करते हैं क्योंकि हिंदी भाषा अपनत्व का बोध कराती है | भविष्य में हिंदी का वर्चस्व कम से कम दक्षिण एशिया के क्षेत्रों में तो अवश्य ही रहेगा और इसका कारण है बहुत बड़े वर्ग का हिंदी भाषा जानना | हिंदी भाषा की महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि विश्व की शीर्षतम सॉफ्टवेयर कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने अपने उत्पादों को हिंदी में बनाना भी शुरू किया है | एक कंपनी जो सारे विश्व में अंग्रेजी भाषा में अपने उत्पाद बेचती है, पर भारत में वह अपने सॉफ्टवेयर हिंदी में ला रही है | इतना ही नहीं, जितनी भी मोबाइल कंपनियां हैं सभी ने सारे हैंडसेट्स में भारतीय भाषाओं को भी शामिल करना शुरू कर दिया है | यह इस बात का इशारा है कि भारतीय जनमानस में हिंदी भाषा का कितना वर्चस्व है | यहां तक की सारे डिजिटल माध्यमों में हिंदी की पहुंच बढ़ी है | चाहे वह बैंक एटीएम हो या किसी सरकारी या गैरसरकारी फॉर्म या अन्य | सारे माध्यमों में हिंदी का विकास तेजी से हो रहा है।

एक बात ध्यान देने योग्य है कि अपने शैशव काल से लेकर आज तक इंटरनेट ने जो सीढ़ियां चढ़ीं हैं वो अपने आप में प्रतिमान है, लेकिन जितनी प्रसिद्धि हिंदी भाषा की वेबसाइटों को मिलती है, उतनी किसी और को नहीं मिलती | इसके साथ ही यदि भारत में आप हिन्दी और अंग्रेजी समाचार चैनल की बात करेंगे तो आपको बखूबी पता चल जाएगा कि किस भाषा के चैनल की डिमांड और टीआरपी ज्यादा है | भारत में कोई भी वस्तु तब तक नहीं प्रचलित होती है, जब तक कि उसमें भारतीयता का पुट न सम्मिलित हो, इसलिए हिंदी भाषा वो पुट है, जिसके बिना ख्याति संभव नहीं |

आज के परिपेक्ष्य में हिंदी भी इंटरनेट की एक अहम लोकप्रिय भाषा बनकर उभरी है और ऐसा माना जाता है कि है जब लोग अपने विचार और लेखन हिंदी भाषा में इंटरनेट पर और ज्यादा करेंगे तो वह दिन दूर नहीं की सारी सामग्री हिंदी में भी इंटरनेट पर मिलने लगेगी |

भाषा नदी की धारा के समान चंचल होती है | यह रुकना नहीं जानती, यदि कोई भाषा को बलपूर्वक रोकना भी चाहे तो यह उसके बंधन को तोड़ आगे निकाल जाती है | यही भाषा की स्वाभाविक प्रकृति और प्रवृत्ति है, चाहे कोई भी भाषा क्यों ना हो |

11.3.4 हिंदी भाषा कौशल से अभिप्राय

भाषा के ठीक तरह से काम करने की योग्यता या सामर्थ्य हासिल करने को भाषा कौशल कहा जाता है | इस तरह से कहा जा सकता है कि अध्येता भाषा के चारों कौशलों सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना में पूर्ण रूप से दक्षता हासिल कर सके | लेकिन यदि अध्येता के भाषा सीखने पर भाषा के उपरोक्त चारों कौशलों पर पूर्णता अधिकार ना हो तब भाषा कौशल अधूरा रह जाता है | शिक्षक को चाहिए कि वह अध्येता को भाषा शिक्षण के दौरान भाषा के चारों कौशलों का सामान रूप से विकसित करें |

इन्सान की संप्रेषण की सक्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर ही निर्भर करती है | भाषा की प्रभावशीलता का मानदंड बोधगम्यता होती है | जिन भावो एवं विचारों की अभिव्यक्ति करना चाहते हैं उन्हें कितनी सक्षमता से बोधगम्य कराते हैं यह भाषा कौशलों के उपयोग पर निर्भर होता है | हमारा देश बहुभाषी देश है जिसमे अनेक क्षेत्रीय बोलियां और भाषाएं बोली जाती हैं | भाषा न केवल शिक्षा प्राप्ति का साधन है बल्कि विचार, विनिमय, प्रशासन, व्यापार, संचार, पर्यटन, रोजगार आदि के लिए भी भाषा शिक्षण किया जाता है | भाषा शिक्षण प्रधान कौशल एवं गौण कौशल के रूप में दो भागों में बांटा गया है |

प्रधान कौशल: भाषा का सर्वप्रथम कार्य संप्रेषण करना ही है | यह संप्रेषण भाषा के बिना अधूरा है | संप्रेषण के लिए हमें भाषा के उच्चरित रूप की ही आवश्यकता होती है | भाषा का उच्चरित भाषा का वह रूप है जिसे एक निरक्षर व्यक्ति भी प्रयोग करता है | इसलिए इससे संबंधित कौशल ही प्रधान कौशल कहे जाते हैं | इसमें सुनना एवं बोलना दोनों कौशलों का आकलन होता है |

गौण कौशल : बालक अपनी प्रारंभिक भाषा परिवार और समाज से सीखता है | परिवार और समाज ही भाषा सीखने का उसका प्रथम स्थान होते हैं | उसके बाद वह विद्यालय जाकर लिखना-पढ़ना सीखता है | इस प्रकार के भाषा शिक्षण को गौण कौशल के अंतर्गत परिभाषित किया गया है | इसके दो रूप पढ़ना एवं लिखना कौशल का आकलन किया जाता है |

11.4 श्रवण कौशल

11.4.1 श्रवण कौशल का अर्थ

श्रवण कौशल से आशय सही ढंग से सुनने की क्षमता है। 'श्रवण' शब्द 'श्रु' धातु से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है सुनने की क्रिया, ध्यानपूर्वक सुनना, अध्ययन करना, अधिगम/सीखना करना आदि। कौशल का अर्थ है ठीक तरह के काम करने की योग्यता, दक्षता या समर्थता। 'श्रवण' अंग्रेजी के शब्द 'Listening' शब्द का पर्याय भी है। 'श्रवण' केवल ध्वनियों को सुनना भर नहीं है बल्कि उन ध्वनियों को सुनकर उसका मतलब समझने, सुनी हुई बातों पर चिंतन-मनन करने और मतलब की प्रतिक्रिया देने से है। श्रवण कौशल के लिए दिमाग की एकाग्रता एवं इंद्रियों का संयम होना अत्यंत आवश्यक है। बच्चे के जन्म के उपरांत उसकी प्रारंभिक शिक्षा उसकी श्रवण शक्ति पर निर्भर करती है। बालक सुनकर ही अनुकरण द्वारा भाषा ज्ञान अर्जित करता है। लेकिन यदि बच्चे की श्रवण इन्द्रियों में दोष है, तो वह न भाषा सीख सकता है और न अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कर सकता है। अतः उसका भाषा ज्ञान शून्य ही रह जाएगा। डॉक्टर किशोरी लाल शर्मा श्रवण कौशल के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि “श्रवण कौशल में केवल ध्वनि श्रवण का ही समावेश नहीं होता है, अपितु जो कुछ भी हम सुनते हैं, उसे पहचानते हैं, समझते हैं, और अर्थ ग्रहण करके उसे स्मरण रखते हैं इसी प्रकार किसी भाषण को ग्रहण करने की प्रक्रिया को निष्क्रिय नहीं कहा जा सकता, यह एक कड़ी है तथा उद्देश्य है।”

11.4.2 श्रवण कौशल का महत्व

श्रवण कौशल के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है:

- बच्चे के व्यक्तित्व विकास में श्रवण कौशल का अधिक महत्व होता है। बच्चा जन्मोपरांत ही सुनने लगता है। बच्चा जिन ध्वनियों को सुनता है वे उसके मष्तिष्क पर अंकित हो जाती हैं। ये अंकित ध्वनियाँ ही बच्चे के ज्ञान का आधार बनती हैं। ठीक से सुनने के कारण ही बच्चा ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर को समझता है।
- श्रवण कौशल अन्य भाषायी कौशलों को विकसित करने की प्रमुख बुनियाद है।
- बच्चा श्रवण के प्रति जागरूक बनता है तथा श्रवण कौशल द्वारा बालक की श्रवणेन्द्रियों का इस्तेमाल होता है।
- भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती हैं। नए-नए शब्दों को सुनकर बच्चा अपने शब्द भण्डार में अभिवृद्धि करता है। बच्चा परिवार के सदस्यों और शिक्षकों की बात सुनकर स्वयं अपने उच्चारण, हाव-भाव, उतार-चढ़ाव एवं उचित स्वरगति के अनुसार बोलने

की कोशिश करता हैं | इस प्रकार उसकी मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता हैं |

- शांत रहकर, दूसरों की बात सुनकर व समझकर ही बच्चा विचारों के प्रतिपादन हेतु ठोस तर्क प्रस्तुत करना शुरू करता है |
- साहित्य की विभिन्न विधाओं का अध्ययन तथा उनकी व्याख्या को सुनकर ही उसकी विषय वस्तु को ग्रहण किया जा सकता हैं | बच्चा कविता का रसास्वादन और कहानी का आनंद सुनकर ही कर सकता हैं |

11.4.3 श्रवण कौशल के उद्देश्य

श्रवण कौशल के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- बच्चों में श्रवण के प्रति रूचि उत्पन्न करना जिससे वे दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुन सकें |
- बच्चों में सुनकर किसी शब्द व वाक्य का अर्थ ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना |
- दूसरों के द्वारा उच्चारित शब्दों को सुनकर सही उच्चारण करने की योग्यता उत्पन्न करना |
- श्रुत सामग्री के मत्वपूर्ण अंशों को पहचानने की योग्यता का निर्माण करना
- श्रुत सामग्री के अहम्, आकर्षक, हृदयस्पर्शी विचारों ठाठ भावों का चयन करने की योग्यता विकसित करना |
- वक्ता के विचारों को समझने योग्य बनना |
- श्रुत सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना |
- भाषा एवं साहित्य की समझ विकसित करने की रूचि विकसित करना |

11.4.4 श्रवण कौशल के विकास में बाधाएं

सामान्यतः देखा जाता है कि अनेक छात्र शिक्षक द्वारा बताई जा रही विषय वस्तु को ध्यान पूर्वक नहीं सुनते हैं जिससे शिक्षक उन छात्रों पर अनुशासनहीनता के कारण दंड दिया करते हैं जिस वजह से छात्र की विद्यालय व्यवस्था में अरुचि होने लगती है | श्रवण कौशल के विकास में निम्नलिखित क्षेत्रों में छात्रों को बाधाओं का सामना करना पड़ता है |

- **शैक्षिक वातावरण का आभाव:** प्रायः ऐसा देखने को मिलता है कि शिक्षक द्वारा कक्षा में शैक्षिक वातावरण तैयार किए बिना ही शिक्षण शुरू कर देते हैं | ऐसी स्थिति में छात्र पूर्णतः शिक्षण-अधिगम गतिविधियों को श्रवण नहीं कर पाते हैं क्योंकि वे मानसिक रूप से श्रवण करने के लिए तैयार नहीं होते हैं |

- **कठिन भाषा का प्रयोग:** कक्षा में अध्यापन के दौरान जब शिक्षक अपने कथन में मुश्किल भाषा का प्रयोग करते हैं, तो ऐसी परिस्थिति में छात्र विषय-वस्तु के मतलब को समझ नहीं पाते हैं और ध्यानपूर्वक श्रवण नहीं कर पाते हैं, क्योंकि उस श्रवण के प्रति उनमें कोई रुचि नहीं होती है।
- **अशुद्ध उच्चारण:** ऐसा भी देखने को मिलता है कि कई शिक्षक ही शब्दों का उच्चारण ठीक से नहीं कर पाते हैं जिसके कारण छात्र उनके प्रस्तुत विचारों को ध्यान पूर्वक नहीं सुनते हैं। जिस वजह से छात्रों को विषय-वस्तु को समझने में बाधा होती है।
- **शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग का आभाव:** श्रवण कौशल के विकास पर उस समय बाधा उत्पन्न होती है जब शिक्षक द्वारा विषय-वस्तु के प्रस्तुतीकरण में शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाता है। शिक्षण अधिगम सामग्री के आभाव में छात्र केवल एक मूक श्रोता बनकर रह जाता है तथा छात्रों की उस प्रक्रिया में कोई रुचि नहीं रहती, जिसके परिणाम स्वरूप छात्रों में श्रवण कौशल का विकास नहीं होता है।

11.4.5 श्रवण कौशल हेतु उपाय एवं बाधाओं के समाधान

भाषा शिक्षक का यह प्रमुख दायित्व होता है कि वह भाषा संबंधी कौशलों के विकास में अपना पूर्ण योगदान प्राप्त करें। श्रवण कौशल भाषा का प्रथम एवं महत्वपूर्ण कौशल है इसलिए कक्षा एवं विद्यालय स्तर पर श्रवण कौशल के विकास हेतु तथा इसके विकास मार्ग में आने वाली विभिन्न बाधाओं के समाधान के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए:

- छात्रों की योग्यता के अनुसार शिक्षण प्रदान करना चाहिए अर्थात् प्रस्तुत सामग्री का स्वरूप छात्रों की योग्यता के अनुरूप होना चाहिए जिससे छात्र उसको पूर्ण रूप से सुन सकें।
- छात्रों के समक्ष सामग्री के प्रस्तुतीकरण से पूर्व वातावरण इस प्रकार का होना चाहिए जिससे छात्र, शिक्षक के प्रस्तुतीकरण को ध्यान पूर्वक सुन सकें।
- श्रवण कौशल के विकास हेतु छात्र की मनोदशा का ज्ञान होना भी एक शिक्षक के लिए आवश्यक है, क्योंकि छात्र मानसिक रूप से जब तक श्रवण के लिए तैयार नहीं होगा तब तक श्रवण कौशल का विकास संभव नहीं होगा।
- शिक्षक को सामग्री के प्रतिकरण से पूर्व की सभी समस्याओं का समाधान कर देना चाहिए इससे छात्रों को दो प्रकार से लाभ होता है। प्रथम अवस्था में छात्र शिक्षक के

प्रति विश्वास रखने लगता है तथा दूसरी अवस्था में वह उसके तथ्यों को ध्यानपूर्वक सुन लगता है।

11.5 कथन कौशल, भाषण अभिव्यक्ति कौशल

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषा के मौखिक एवं लिखित रूप का प्रयोग करता है। जब व्यक्ति ध्वनियों के माध्यम से उच्चारित भाषाओं का प्रयोग करते हुए अपने विचारों को प्रकट करता है, उसी मौखिक अभिव्यक्ति को कथन कौशल, भाषण अभिव्यक्ति कौशल कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे स्पीकिंग अथवा स्पीच कहते हैं। जब छात्र अपने विचारों एवं भावों को स्पष्ट रूप से प्रकट करने का प्रयास करता है, तो उसे भाषण कौशल का सहारा लेना पड़ता है। भाषण कौशल के आधार पर ही उनकी अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया जाता है। जब एक छात्र सस्वर एवं धाराप्रवाह से बोलते हुए अपने विचारों को प्रस्तुत करता है, तो यह माना जाता है कि उसमें वाचन कौशल की योग्यता है। फ्रांसिसी लेखक कार्लाइल ने कहा है कि भाषण के दौरान कुछ पल का विराम और मौन भाषण शक्ति को प्रखर बनाते हैं।

11.5.1 भाषण कौशल से अभिप्राय

भाषण कौशल-इसे मौखिक अभिव्यक्ति भी कहते हैं। इस कौशल के विकास के लिए भाषा में प्रयुक्त ध्वनि, ध्वनि-व्यवस्था और वाक्य संरचना पर ध्यान देना होता है। इसके अंतर्गत मौखिक वाचन, सुनो और कहो, गीत द्वारा वाचन, बलाधात, स्वर का आरोह-अवरोह, संवाद, साक्षात्कार आदि आते हैं।

11.5.2 कथन कौशल अथवा भाषण कौशल के उद्देश्य

भाषण कौशल के प्रमुख उद्देश्यों को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है:

- छात्रों में अपने भाव एवं विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुतीकरण की योग्यता का विकास करना जिससे कि वे सभी तथ्यों का सारगर्भित प्रस्तुतीकरण कर सकें।
- भाषण कौशल के उद्देश्य छात्रों में क्रमिक रूप से तथा धाराप्रवाह रूप में बोलने की क्षमता विकसित करना है जिससे विभिन्न प्रकरणों पर अपनी दक्षता का प्रदर्शन कर सकें।
- छात्रों में संकोच एवं झिझक को दूर करके आत्मविश्वास की भावना जागृत करना तथा जिससे भाषा के अनेक प्रकरणों पर धारा प्रवाह रूप में आत्मविश्वास के साथ बोल सकें।

- छात्रों में प्रसंगानुसार मुहावरे एवं लोकोक्तियों के प्रयोग की क्षमता विकसित करना जिससे वे अपने प्रस्तुतीकरण को प्रभावोत्पादक बना सकें।

11.5.3 कथन कौशल, भाषण कौशल का महत्व

कथन कौशल को भाषा शिक्षण में महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि भाषा की शिक्षा का आधार कथन एवं भाषण कौशल होता है इसके महत्व को निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है:

- दैनिक जीवन में सभी कार्य भाषण कौशल के आधार पर ही संभव है जो छात्र जितना अधिक वाकपटु होता है उतना ही जीवन में सफल माना जाता है।
- भाषण कौशल के माध्यम से छात्र द्वारा कठिन विचारों को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है तथा दूसरे के मनोभावों को भी सरलतम रूप में समझा जा सकता है।
- भाषण कौशल के माध्यम से छात्रों का व्यक्तित्व विकसित होता है क्योंकि वे प्रत्येक तथ्य का प्रस्तुतीकरण सारगर्भित एवं प्रभावी रूप से करने में सक्षम होते हैं।
- भाषण कौशल के माध्यम से बालकों के शब्द भंडार में वृद्धि होती है, क्योंकि वाचन में अनेक प्रकार के नवीन शब्दों को बोलने का प्रयास करता है।

11.5.4 कथन कौशल, भाषण कौशल का विकास

यहाँ हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर मौखिक अभिव्यक्ति या कथन, भाषण कौशल को कैसे विकसित किया जाता है।

- औपचारिक बातचीत
- कहानी कथन
- घटना चित्र वर्णन
- भाषण
- आशु भाषण
- वाद विवाद

11.5.5 कथन कौशल एवं भाषण कौशल की शिक्षण विधियाँ

प्रत्यक्ष विधि: प्रत्यक्ष विधि के लिए सारा शिक्षण, लक्षित भाषा में किया जाता है। कक्षा में अनुवाद की अनुमति नहीं है और व्याकरण के बजाय बोलने पर अधिक ध्यान दिया जाता है। परिणामस्वरूप, प्रत्यक्ष विधि एक बहुत ही छात्र-केंद्रित विधि है जिसने हाल के वर्षों में लोकप्रियता हासिल की है। इस विधि में छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे हिंदी भाषा को स्वाभाविक और सहज रूप से सीखें, यही कारण है कि प्रत्यक्ष विधि को "प्राकृतिक दृष्टिकोण"

भी कहा जाता है। कक्षा में गलतियाँ होते ही उन्हें सुधारा जाता है और शिक्षक प्रशंसा के साथ भाषा के सही उपयोग को सुदृढ़ करते हैं। ऑनलाइन हिंदी पढ़ाते समय इस पद्धति का अक्सर उपयोग किया जाता है।

संचारी भाषा शिक्षण (सीएलटी): आज शिक्षण के तरीकों में संचारी भाषा शिक्षण शायद सबसे लोकप्रिय विधि है। सीएलटी छात्र की वास्तविक जीवन के संदर्भों में संवाद करने की क्षमता पर जोर देता है। परिणामस्वरूप, छात्र अनुरोध करना, प्रस्ताव स्वीकार करना, चीजों को समझाना और अपनी भावनाओं और प्राथमिकताओं को व्यक्त करना सीखते हैं। इसके अतिरिक्त, चूंकि सीएलटी वास्तविक दुनिया के असाइनमेंट और समस्या-समाधान के माध्यम से भाषा सिखाने पर ध्यान केंद्रित करता है, यह व्याकरण सटीकता से कम चिंतित है और इसके बजाय प्रवाह पर ध्यान केंद्रित करता है।

कार्य-/प्रोजेक्ट-/पूछताछ-आधारित शिक्षण विधि

छात्रों के लिए इस शिक्षण विधि को कभी-कभी संचारित भाषा शिक्षण का हिस्सा माना जा सकता है, लेकिन यह विधि छात्रों की स्वतंत्रता और व्यक्तित्व पर अत्यधिक जोर देती है। पूछताछ-आधारित शिक्षा एक आधुनिक विधि है जो दुनिया भर के स्कूलों में व्यापक रूप से लोकप्रिय हो रहा है। प्रश्न पूछने और समस्याओं को हल करने से, शिक्षक को केवल सीखने के सुविधाकर्ता के रूप में देखते हुए, छात्रों की प्रेरणा और कार्यों और परियोजनाओं में भागीदारी में वृद्धि होती है।

11.6 पठन कौशल

11.6.1 पठन कौशल का अर्थ

पठन का अर्थ लिखी हुई सामग्री को पढ़ते हुए उसका अर्थ ग्रहण करने, उसके पश्चात् उस पर अपना मंतव्य (सोच, विचार) स्थिर करने और फिर उसके अनुसार व्यवहार करने से है। अर्थात् अर्थ एवं भाव को ध्यान में रखकर किसी लिखित भाषा को पढ़ना ही पठन कौशल कहलाता है।

11.6.2 पठन कौशल के प्रकार: पठन कौशल के निम्नलिखित प्रकार होते हैं:

- ध्वनि के प्रतीक को देखकर पहचानना।
- वर्णों के प्रयोग से शब्दों का निर्माण करना।
- शब्दों को सार्थक इकाइयों में बाँटकर पढ़ना।

- पठित सामग्री के विचारों को समझाना।
- पठित सामग्री पर अपना मंतव्य स्थिर करना।
- पठन कौशल के उद्देश्य।
- वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचान कर पढ़ना।
- विद्यार्थियों को तीव्र गति से पठन का अभ्यास कराना।
- स्वाध्याय की आदत का विकास करना।
- आत्मविश्वास जागृत करना।
- छात्रों में एकाग्रता, तत्परता, रूचि जागृत करना।
- उचित हाव-भाव के साथ पढ़ने के योग्य बनना।
- दृश्य इन्द्रियों को क्रियाशील करना।
- लेखक के मनोभावों को स्पष्ट ढंग से समझने की योग्यता विकसित करना।

11.6.3 पठन कौशल की विधियाँ: पठन कौशल को उसकी निम्नलिखित विधियों के माध्यम से समझा एवं आकलित किया जाता है।

- वर्ण उच्चारण विधि
- अक्षर बोध विधि
- ध्वनि साम्य विधि
- देखो और कहो विधि
- अनुकरण विधि

3.6.4 पठन कौशल का मूल्यांकन: प्रस्तुत कौशल का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षक को छात्र का हिंदी भाषा से सम्बंधित निम्नलिखित आयामों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।

- क्या छात्र वर्णमाला के सभी वर्णों को पहचानकर पढ़ सकता है?
- क्या छात्र वर्णों के मेल से शब्द निर्माण कर सकता है?
- क्या छात्र वाक्यों को समुचित रूप से पढ़ पाता है?
- क्या छात्र उचित लय के साथ कविता-पाठ कर सकता है?
- क्या छात्र सभी विधाओं को उपयुक्त तरीके से पढ़ पाता है?
- क्या छात्र पठन-सामग्री का अर्थ-ग्रहण कर सकता है?
- क्या छात्र मुहावरों, लोकोक्तियों व सूक्तियों के सन्दर्भ के अनुसार अर्थ को समझता है?

- क्या छात्र स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ सकता है?
- क्या छात्र हाव-भाव, आरोह-अवरोह व बलाघात के साथ पढ़ता है।
- क्या छात्र एकाग्रता के साथ पढ़ सकता है?
- क्या छात्र यति, गति, विराम चिह्नों आदि को ध्यान में रखकर पढ़ सकता है?
- क्या छात्र पठित अंश के केन्द्रीय भाव को समझता है?
- क्या छात्र श्रोताओं की संख्या एवं अवसर के अनुकूल वाणी को नियंत्रित कर सकता है?
- क्या छात्र पठित सामग्री से तथ्यों, भावों एवं विचारों का चयन कर सकता है?
- क्या छात्र पठित सामग्री के सारांश को बता सकता है?
- क्या छात्र पठित सामग्री से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे सकता है?
- क्या छात्र पठित सामग्री से निष्कर्ष निकाल सकता है?

11.7 लेखन कौशल

11.7.1 लेखन कौशल से अभिप्राय

लिखना अर्थात् लेखन कौशल चारो भाषा कौशलों में सबसे अंतिम चरण है | बच्चों में लेखन कौशल का विकास मौलिक विचारों को लिखित रूप देने तथा विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखने की क्षमता को संदर्भित करता है | लिखित दक्षता के साथ सहज अभिव्यक्ति के विकास को सुनिश्चित करन तथा वास्तविक अनुभव के साथ भाषाई कौशलों को सुगमता से ग्रहण करना एवं समझना लेखन कौशल के अहम् बिंदु हैं | अतः यह कहा जा सकता है कि भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति जब लिखित रूप में होती है तो इसे लेखन कौशल कहते हैं |

11.7.2 लेखन कौशल का महत्व

लेखन कौशल का छात्रों एवं शिक्षकों दोनों के जीवन में खासा महत्व है, निम्नलिखित बिंदु लेखन कौशल के महत्व को समझने में अहम् हैं -

- यह हमारे विचारों को स्पष्ट करने में मदद करता है |
- तार्किक सोच को प्रोत्साहित करता है |
- शब्दावली और रचनात्मकता को बढ़ाता है |
- लोगों के साथ जुड़ने और ज्ञान का प्रसार करने में मदद करता है |
- हमारी विचार प्रक्रिया को व्यवस्थित करता है और हमें गुणवत्तापूर्ण पाठ लिखने में मदद

करता है, चाहे वह कहानी हो, पत्र हो, या कोई व्यावसायिक प्रस्तुति हो।

- लेखन कौशल रिकॉर्ड रखने में मदद करता है। आप विभिन्न विचारों पर विचार कर सकते हैं और बाद में पाठ को दोबारा देख सकते हैं या संशोधित कर सकते हैं।
- मजबूत लेखन कौशल में भौतिक उपस्थिति की आवश्यकता के बिना लोगों को हमारे विचारों और दृष्टिकोण से सहमत करने की क्षमता होती है।

11.7.3 लेखन कौशल के शिक्षण साधन एवं विधियाँ

लेखन कौशल की प्रमुख विधियाँ :

लेखन विधि: सार्थक रेखाओं को खींचने के अभ्यास के बाद वर्णों का खंडशः लेखन कराया जाना चाहिए। इस विधि में पूरे वर्ण को एक बार लिखना न सिखाकर उसे खंडों में लिखना सिखाया जाता है। इस विधि से बच्चे के लिए लिखना सीखना सुगम हो जाता है।

रूप अनुसरण या रेखा अनुसरण विधि: यह एक अत्यन्त पुरानी व परम्परागत विधि है। यह लेखन अभ्यास के लिए अत्यंत उपयोगी विधि है। इस विधि में अध्यापक तख्ती पर पेंसिल से वर्ण लिखता है, बच्चे उस लिखे हुए वर्ण पर कलम चलाते हैं और स्याही फेरते हैं। छात्र उन बिन्दुओं को जोड़कर वर्ण की आकृति बनाना सीख जाते हैं। धीरे-धीरे छात्र उस अवस्था तक पहुंच जाते हैं जिसमें शिक्षक ऊपर की पंक्ति में शब्द लिखता है। इस विधि में अध्यापक को छात्रों का हाथ पकड़कर वर्ण की आकृति बनाने में उनकी सहायता करनी चाहिए।

मांटेसरी विधि: इस विधि में सबसे पहले बच्चे को लकड़ी, गते आदि से बने वर्ण दिए जाते हैं। छात्रों को उन पर उंगली फेरने के लिए कहा जाता है। उंगली फेरने के अभ्यास के बाद छात्रों को उन वर्णों के बीच पेंसिल चलाने को कहा जाता है। जब बच्चों की उंगलियाँ सध जाती हैं तब उन्हें स्वतंत्र रूप से लिखने के लिए कहा जाता है। इस अभ्यास के बाद बालक स्वतंत्र रूप से गत्ते व लकड़ी के वर्णों के बिना लिखना प्रारम्भ कर देते हैं।

पेस्टालॉजी की रचनात्मक विधि: इस विधि में लकड़ी व प्लास्टिक आदि से बने वर्णों के टुकड़ों को संकलित किया जाता है। ये टुकड़े रेखा, वृत्त, अर्धवृत्त आदि होते हैं। छात्र किसी वर्ण को देखकर टुकड़ों को ढूंढकर और उन्हें जोड़कर वैसा ही वर्ण बनाने का प्रयास करते हैं। इसमें विभिन्न टुकड़ों को मिलाकर धीरे-धीरे सभी वर्णों को बनाना सिखाया जाता है। इसमें सरल वर्णों को पहले तथा कठिन वर्णों को बाद में सिखाते हैं।

समान आकृति समूह विधि: इस विधि में वर्णों को कुछ समूहों में विभाजित कर लिया जाता है तथा एक समूह के वर्णों को एक साथ लिखना सिखाया जाता है। इस विधि में थोड़े से प्रयास से ही छात्रों को यह अनुभव होने लगता है कि उन्होंने बहुत कुछ सीख लिया है।

जेकासर विधि: इस विधि में बच्चों के सामने पूरा वाक्य प्रस्तुत किया जाता है। बालक अनुकरण करते हुए वाक्य के एक-एक शब्द को लिखते हैं। पूरे वाक्य को लिखकर उसे वाक्य के मूल रूप से मिलाया जाता है तथा उसकी शुद्धता को सुनिश्चित किया जाता है।

11.7.4 लेखन कौशल मूल्यांकन

शिक्षक को छात्रों के लेखन कार्य का मूल्यांकन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

- क्या शिक्षार्थी दिए गए व्यंजन, मात्रा, संयुक्ताक्षर व शब्दों को देखकर लिख सकता है?
- क्या शिक्षार्थी स्वर, व्यंजन, मात्रा संयुक्ताक्षर, शब्द, वाक्य आदि का श्रुतलेख लिख सकता है?
- क्या शिक्षार्थी सुपाठ्य लेख लिख सकता है?
- क्या शिक्षार्थी उचित गति के साथ लिख सकता है?
- क्या शिक्षार्थी उचित वाक्य विन्यास करते हुए लिखता है?
- क्या शिक्षार्थी शुद्ध वर्तनी के साथ लिख सकता है?
- क्या शिक्षार्थी शुद्ध विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग करते हुए लिख सकता है?
- क्या शिक्षार्थी यथोचित अनुच्छेदों का निर्माण करते हुए लिखता है?
- क्या शिक्षार्थी प्रसंगानुकूल शब्दों, मुहावरों तथा लोकोक्तिया का प्रयोग कर सकता है?
- क्या शिक्षार्थी विचारों को क्रमबद्ध रूप से लिखकर व्यक्त करता है?
- क्या शिक्षार्थी अपनी रचना में विचारों की सुसंबद्धता को बनाए रखता है?
- क्या शिक्षार्थी विषय तथा अभिव्यक्ति के अनुकूल शैली को प्रयोग करते हुए लिखता है?
- क्या शिक्षार्थी सृजनात्मक और रचनात्मक लेखन कर सका है?

11.8 सारांश

भाषा के विकास और उसके स्वरूप के विषय में प्रमाणिक आधारों पर कहना आसान नहीं है लेकिन ऐसा कहा जाता है कि हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। ऐतिहासिक तौर पर विद्वानों का मानना है कि हिंदी का प्रारंभ इसा की दसवीं शताब्दी में हुआ है। हिंदी संस्कृत से प्राकृत एवं अपभ्रंश का रूप पर करती हुई वर्तमान की हिंदी के रूप में पहुंची है। इस

तरह से हिंदी में प्राकृत, संस्कृत एवं अपभ्रंश की रचनाओं के उसके पूर्व रूप के दर्शन स्वाभाविक हैं। हिंदी का प्रारंभ वीरगाथा काल में दिखाई देता है, चंदबरदाई के पृथ्वीराज रासो को हिंदी का पहला महाकाव्य माना जाता है। हिंदी भाषा विकास की प्रगति का आंकलन की चर्चा विस्तार पूर्वक इस इकाई में की गयी है। इसके साथ ही श्रवण कौशल, कथन कौशल, भाषण अभिव्यक्ति कौशल, पठन कौशल एवं लेखन कौशल के सन्दर्भ में विस्तार से चर्चा प्रस्तुत की गयी है।

11.9 शब्दावली

शब्द	अर्थ
भाषा विकास	बच्चे के भाषा से संबंधित क्षमताओं की क्रमिक वृद्धि।
प्रगति आकलन	भाषा सीखने में हुए सुधार या वृद्धि की माप।
संरचनात्मक पद्धति	भाषा सीखने की एक क्रमबद्ध, नियोजित पद्धति।
आवृत्ति मूल्यांकन	भाषा कौशल की पुनरावृत्ति और माप का तरीका।
सहज अधिगम	बिना औपचारिक प्रशिक्षण के हुआ भाषा सीखना।
प्रश्नोत्तरी विधि	प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थी के ज्ञान का परीक्षण।
सुनने-बोलने की क्षमता	मौखिक संप्रेषण की दक्षता।
शुद्ध उच्चारण	सही ध्वनि के साथ शब्दों का उच्चारण।
तत्काल प्रतिक्रिया	शिक्षण के समय तुरंत मिलने वाला उत्तर या प्रतिक्रिया।
सामाजिक भाषा प्रयोग	सामाजिक संदर्भों में भाषा का प्रयोग करना।

11.10 अधिगम प्रतिफल

- हिंदी भाषा के विकास को समझने में सक्षम होंगे।
- हिंदी भाषा के कौशलों को अपने जीवन में उतारने में सक्षम होंगे।
- हिंदी भाषा के कौशलों के विभेदीकरण की चर्चा अपने शब्दों में करने में सक्षम होंगे।
- हिंदी भाषा के विभिन्न कौशलों का अपने जीवन में इस्तेमाल करने में सक्षम होंगे।
- हिंदी भाषा के विभिन्न कौशलों का संप्रेषण में प्रयोग करने में सक्षम होंगे।

- हिंदी भाषा के लेखन कौशल को अपनी लेखनी में उतारने में सक्षम होंगे।

11.11 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 भाषा शिक्षण को किन दो भागों में बांटा गया है?

- (अ) प्रधान कौशल एवं गौण कौशल
- (ब) लेखन कौशल एवं पठन कौशल
- (स) पठन कौशल एवं लेखन कौशल
- (द) लेखन कौशल एवं श्रवण कौशल

प्रश्न 2 हिन्दी को कब भारत की राजभाषा घोषित किया गया?

- (अ) 14 सितम्बर 1949
- (ब) 26 जनवरी 1950
- (स) 15 अगस्त 1947
- (द) 1 सितम्बर 1949

प्रश्न 3 भाषा शिक्षण के प्रधान कौशल में कौन से दो कौशल आते हैं?

- (अ) श्रवण कौशल एवं कथन कौशल
- (ब) श्रवण कौशल एवं पठन कौशल
- (स) पठन कौशल एवं लेखन कौशल
- (द) कथन कौशल एवं लेखन कौशल

प्रश्न 4 भाषा शिक्षण के गौण कौशल में कौन से दो कौशल आते हैं?

- (अ) श्रवण कौशल एवं कथन कौशल
- (ब) श्रवण कौशल एवं पठन कौशल
- (स) पठन कौशल एवं लेखन कौशल
- (द) कथन कौशल एवं लेखन कौशल

प्रश्न 5 हिंदी भाषा के शिक्षक हिंदी भाषा का मूल्यांकन किन कौशलों के आधार पर करते हैं?

- (अ) प्रधान कौशल (ब) गौण कौशल (स) प्रधान एवं गौण कौशल (द) कोई नहीं

प्रश्न 6 सम्प्रेषण किसके बिना अधूरा है?

- (अ) भाषा के बिना (ब) बोली के बिना (स) कौशल के बिना (द) मूल्यांकन के बिना

प्रश्न 7 हिंदी भाषा की उत्पत्ति किस भाषा से हुई है?

(अ) संस्कृत (ब) अपभ्रंश (स) उर्दू (द) प्राकृत

प्रश्न 8 मोंटेसरी विधि शिक्षण कौशल की किस विधि में उपयोग की जाती है?

(अ) लेखन कौशल (ब) पठन कौशल (स) कथन कौशल (द) श्रवण कौशल

प्रश्न 9 देखो और कहो विधि किस कौशल की विधि है?

(अ) लेखन कौशल (ब) पठन कौशल (स) कथन कौशल (द) श्रवण कौशल

प्रश्न 10 मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषा के किस रूप का प्रयोग करता है?

(अ) मौखिक रूप (ब) लिखित रूप (स) मौखिक एवं लिखित रूप (द) उपरोक्त सभी

1-(अ) 2-(अ) 3-(अ) 4-(स) 5-(स) 6-(अ) 7-(अ) 8-(अ) 9-(स) 10-(स)

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 हिंदी भाषा के मूल्यांकन किसके आधार पर किया जाता है और क्यों?

प्रश्न 2 सम्प्रेषण के लिए भाषा की क्यों आवश्यकता होती है?

प्रश्न 3 शिक्षकों को छात्रों के लेखन कौशल का मूल्यांकन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

प्रश्न 4 शिक्षकों को छात्रों के पठन कौशल का मूल्यांकन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

प्रश्न 5 शिक्षकों को छात्रों के कथन कौशल कार्य का मूल्यांकन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

प्रश्न 6 शिक्षकों को छात्रों के श्रवण कौशल का मूल्यांकन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

प्रश्न 7 हिंदी भाषा के विभिन्न कौशलों को समझाइए।

प्रश्न 8 किसी अन्य विषय का मूल्यांकन करते वक्त हिंदी भाषा के महत्व को समझाइए।

प्रश्न 9 एक भाषा का शिक्षक होने के नाते मूल्यांकन में हिंदी के कौशलों का क्या उपयोग हो सकता है?

प्रश्न 10 कथन कौशल और लेखन कौशल में अंतर स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 हिंदी भाषा के विकास को क्रमबद्ध तरीके से विस्तार से समझाइए।

प्रश्न 2 हिंदी भाषा के विभिन्न कौशलों का आपके जीवन में क्या महत्व है? विस्तार से समझाइए |
प्रश्न 3 पठन कौशल एवं लेखन कौशल में अंतर स्पष्ट कीजिए |

प्रश्न 4 हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा है या राजभाषा? विस्तार से समझाइए कि राष्ट्र भाषा और राजभाषा में क्या अंतर है?

प्रश्न 5 एक भाषा के शिक्षक को मूल्यांकन में भाषा के विभिन्न कौशलों का क्यों ध्यान रखना पड़ता है?

11.12 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- नीलम, (2016), हिंदी शिक्षण, अर्थ विजन पब्लिकेशन, गुडगाँव हरियाणा
- सक्सैना, मालती (2016), हिंदी का शिक्षण शस्त्रीय स्वरूप, राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, आगरा
- सिंह, निरंजनकुमार (2019) माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- ओझा, पी.के.,(2008) हिंदी शिक्षण, अनमोल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
- डबास, जयदेव (2013) हिंदी भाषा शिक्षण, दोआबा हाउस, नई दिल्ली
- चतुर्वेदी, शिक्षा (2008) हिंदी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- नरूला, मधु (2015) हिंदी शिक्षण, ट्वेंटीफर्स्ट सेंचुरी पब्लिकेशन, पटियाला

इकाई 12 – भाषा विकास की प्रगति का आकलन

इकाई की रूपरेखा

- 12.1 प्रस्तावना
- 12.2 उद्देश्य
- 12.3 सतत और समग्र मूल्यांकन
- 12.4 स्व-मूल्यांकन
- 12.5 आपसी मूल्यांकन
- 12.6 समूह मूल्यांकन
- 12.7 सारांश
- 12.8 शब्दावली
- 12.9 अधिगम प्रतिफल
- 12.10 इकाई के अंत में प्रश्न
- 12.11 सन्दर्भ

12.1 प्रस्तावना

हम सभी भाषा को शब्दों, वाक्यों और ध्वनियों के व्यवस्थित रूप में पहचानने के इतने आदि हो गए हैं कि अपने आस-पास बिखरी भाषाओं के विविध रूपों को पहचानने और सराहने की ओर जरा-सा भी ध्यान नहीं दे पाते | क्या स्कूल की घंटी या चाट वाले का तवा हमें पुकारता नहीं हैं? किसी अजनबी की आहट से हमारी गली का कुत्ता भौंक कर हमें आगाह नहीं करता? फिर किसी परिचित को देखकर हमारे चेहरे की मुस्कान बहुत कुछ कह कर नहीं जाती? अँधेरे में सोते हुए पांच साल के बच्चे का अपने पास लेटे संबंधी को छूकर महसूस करना क्या सुनने की कोशिश नहीं?

इन सब उदाहरणों के जरिए हम केवल भाषा के विविध रूपों की ओर इशारा करना चाहते हैं | भाषा अपनी बात कहने और दूसरों की बात समझने के माध्यमों (के समूह) का नाम है और यह जरूरी नहीं की भाषा शाब्दिक ही हो या उसमें ध्वनियाँ ही हों | सभी प्राणियों में अपनी आवश्यकतानुसार एक दूसरे से संप्रेषण करने की जन्मजात योग्यता होती है | मानव उन

सबसे इसलिए अलग है, क्योंकि वह भाषा का इस्तेमाल केवल संप्रेषण के लिए ही नहीं बल्कि तर्क, कल्पना, विचार और सृजन के लिए भी करता है। मानव का भाषायी विकास उसके जन्म से ही प्रारंभ हो जाता है और जिन्दगी भर जारी रहता है। इस विकास में उसके विकास में आस-पास के लोग, स्थितियां, परिवेश आदि तो महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, उसका स्वयं का योगदान भी कुछ कम नहीं होता यह इसलिए कि प्रत्येक मस्तिष्क अपने आस-पास की भाषा को ज्यों का त्यों ग्रहण नहीं कर लेता बल्कि उसे परिवर्तित करके उसमें अपने व्यक्तित्व के रंग भर लेता है। इस प्रकार किसी भी भाषा में सामूहिकता के साथ-साथ एक प्रकार के वैयक्तिक विशिष्टता सदैव मौजूद रहती है। विद्यालय के कार्य इन दोनों विशेषताओं के भरपूर विकास के लिए रोचक और सृजनात्मक वातावरण उपलब्ध करवाना है ताकि स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे किसी फैक्ट्री से निकलने वाले रोबोट न बन जाएँ बल्कि उनमें अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं बरकरार रहें।

स्कूल में दाखिल होने से पहले के पांच सालों में बच्चा अपने परिवेश और घर की भाषाएँ बखूबी आत्मसात कर चुका होता है। वह अपनी जरूरतों (मुझे भूख लगी है) इच्छाओं (मेरा मन आइसक्रीम खाने का है), कल्पनाओं (कल मैंने शेर देखा था, सच्ची), और राय (ये अच्छा गाना नहीं है) जाहिर करने के लिए हैरान कर देने वाली हद तक भाषा का परिपक्व प्रयोग करता है। चुनौती देने (तुम मेरे जितना दौड़कर दिखाओ), तर्क करने (आप भैया को ज्यादा प्यार करते हो), उदहारण देने (बर्फ कांटे की तरह चुभ रही है), निष्कर्ष निकालने (अंधेरा हो गया, रात हो गई) आदि के लिए भी भाषा का ठीक उसी तरह उपयोग करते हैं जिस तरह बड़े करते हैं, बस दोनों के शब्द नये होते हैं, ठीक उसी तरह बड़ों के लिए भी बच्चों के संसार के कई शब्द नए होते हैं। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बच्चों के पास स्कूल आने से पहले ही अच्छा-खासा भाषायी खजाना मौजूद होता है जिसे बच्चा अपनी समझ और अनुभवों के आधार पर सृजित करता है। अब चुनौती इस बात की है कि स्कूल में कैसे इस खजाने को पहचाना, निखारा और संवारा जाए। सतत और समग्र आकलन इन सभी काम में आपकी सहायता करेगा।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे:

- सतत और समग्र मूल्यांकन को समझकर उसका उपयोग अपनी कक्षा के छात्रों का मूल्यांकन में कर सकेंगे।

- स्व-मूल्यांकन की अपने शब्दों में व्याख्या कर सकेंगे |
- आपसी मूल्यांकन एवं समूह मूल्यांकन में विभेदीकरण कर सकेंगे |
- समूह मूल्यांकन का विश्लेषण कर छात्रों का समूह मूल्यांकन कर सकेंगे |
- सतत और समग्र मूल्यांकन का स्व-मूल्यांकन से अंतर स्पष्ट कर सकेंगे |

12.3 सतत और समग्र मूल्यांकन

सतत और समग्र मूल्यांकन, मूल्यांकन की वह व्यवस्था है जो सीखने की प्रक्रिया में निरंतरता बनाए रखने पर जोर देती है | इस मूल्यांकन के आधार पर शिक्षक छात्रों को निरंतर सीखने की अभिरुचियों के प्रति सचेत रहने के लिए उत्साहित करते हैं | इसमें छात्र के चहुमुखी विकास के सभी पक्ष शामिल होते हैं | इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि इसके अंतर्गत सीखने की प्रक्रिया पूर्णतः भय मुक्त होती है चूँकि जब मूल्यांकन को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अविभाज्य अंग बना लिया जाए तो भय और चिंता आदि नहीं होंगे | ऐसे में सीखने की प्रक्रिया का निदान, उपचार व अभिवृद्धि की जा सकेगी | पिछले कुछ वर्षों में आए बदलाव से पहले छात्र की क्षमता को मापने की कसौटी वार्षिक परीक्षा ही थी | अतः यह कहना कहीं भी अतिशयोक्ति नहीं होगा कि मूल्यांकन एक सतत एवं व्यापक प्रक्रिया है जिससे छात्रों की क्षमताओं और कमियों को बार-बार उजागर करके उनमें परिवर्तन लाने का प्रयास किया जा सके |

सतत एवं समग्र मूल्यांकन का प्रमुख प्रयोजन सीखने की प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ाना है | यह सतत चलने वाली लम्बी प्रक्रिया है | इसमें सबसे पहले पर्यवेक्षण, बातचीत, चर्चा आदि विभिन्न माध्यमों से सूचनाएं एकत्रित की जाती हैं जिसके लिए शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होता है कि प्राप्त जानकारी सही है | इसका प्रमुख केंद्र छात्र का हित-साधन ही होता है | दूसरे सोपान में इन प्राप्त सूचनाओं को लिखित रूप में रिकॉर्ड किया जाता है | यह रिकॉर्ड का शिक्षण-अधिगम को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है | इसके अंतर्गत छात्रों के किए गए कार्यों एवं विभिन्न क्षेत्रों में उनकी प्रगति को दिखाया जाता है | इसी तरह से तीसरे व अंतिम सोपान के अंतर्गत शिक्षक, छात्र एवं माता-पिता एकत्रित रिकॉर्ड से प्राप्त जानकारी के अनुसार उन्नति का प्रयास करते हैं | इससे छात्र तो लाभान्वित होते ही हैं साथ ही शिक्षक एवं माता-पिता का सहयोग भी छात्र को मिलता हो | इसके अंतर्गत शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया निरंतर पूरे वर्ष चलती है ताकि छात्र सहज रूप से सीखता रहे | इसमें मूल्यांकन की नियमितता अधिगम अंतरालों का निदान, सुधारात्मक उपाय और स्वयं मूल्यांकन के लिए फीडबैक जरूरी होता है |

12.3.1 भाषा-अधिगम की दृष्टि से सतत एवं समग्र मूल्यांकन की उपयोगिता

मूल्यांकन एक सतत एवं समग्र प्रक्रिया है, जोकि प्रतिदिन, प्रतिपल चलती रहती है। यह प्रक्रिया शिक्षण के दौरान और शिक्षण के उपरांत भी चलती है। सतत एवं समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से विद्यालय के बाहर और भीतर हो सकती है। भाषा शिक्षण और उसका मूल्यांकन अन्य विषयों के शिक्षण से भिन्न होता है। अन्य विषयों में उनकी विषय वस्तु का ज्ञान भाषा के माध्यम से दिया जाता है। अन्य विषयों में भाषा एक साधन होती है जबकि भाषा के पाठों में उस पाठ की विषय-वस्तु साधन होती है और भाषा तत्वों का ज्ञान उसका साध्य होता है।

हिंदी भाषा शिक्षण में छात्रों को केवल विषय-वस्तु का ज्ञान ही नहीं दिया जाता बल्कि भाषा का शुद्ध प्रयोग, अभिव्यक्ति कौशल आदि भी सिखाए जाते हैं। मूल्यांकन की प्रचलित परीक्षा प्रणाली आदि विधियों से कोई विधि भाषा के व्यापक क्षेत्र को समाहित नहीं कर पाती है। इसलिए मूल्यांकन की सतत एवं समग्र विधि का प्रयोग हिंदी भाषा में उपयोगी साबित हो सकता है। मूल्यांकन की विधियों में समग्र मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होता है इसलिए इस मूल्यांकन को उत्तम माना जाता है। मूल्यांकन में समग्रता के गुण अनुसार मूल्यांकन में प्रायः पाठ्यक्रम की समस्त इकाइयों में निर्धारित सम्पूर्ण विषय-वस्तु का विस्तृत एवं गहन अध्ययन करने के लिए छात्रों को उत्साहित करता है।

12.4 स्व-मूल्यांकन

भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक छात्र के भाषा सम्बन्धी कमियों को पता लगाया जाए। कुछ छात्र अशुद्ध वाचन व कुछ अशुद्ध उच्चारण करते हैं। कुछ वर्णों को ठीक से नहीं पहचान पाते और कुछ वर्ण-विन्यास में अशुद्धि करते हैं। कई छात्र शब्दों का सही सन्दर्भ में प्रयोग नहीं कर पाते। इस तरह से छात्रों में अनेक कमियाँ दिखलाई पड़ती हैं। कई छात्र अपनी कमियों से अंजन होते हैं और कई छात्रों को अपनी कमियों का पता होता है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक का यह कर्तव्य होता है कि वह छात्रों को स्व-मूल्यांकन के लिए स्वतंत्र छोड़ दे और विद्यार्थियों के द्वारा ही उन कमियों में सुधार करवाया जा सकता है। स्व-मूल्यांकन के अंतर्गत छात्र को स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है ताकि वह अपनी कमियों एवं परेशानियों को खुद पहचान करके उसका निराकरण कर सके। भाषा शिक्षक के अवलोकन में यह कार्य किया जाता है जहाँ शिक्षक अपने छात्रों को अपनी कमियों को पहचानने के मौके देता है, जैसे सस्वर वाचन के समय अशुद्ध उच्चारण आदि कि पहचान करवाना। वाचन की तीव्रता या ऊँची आवाज में वाचन करने के कारण छात्र स्वयं की समस्या खोज निकालता है।

मिसाल के तौर पर यदि कोई छात्र अपने वाचन को रिकॉर्ड करके और फिर उसे शांतिपूर्वक सुनता है तो अपने द्वारा किया गया आदर्श वाचन सुनने पर छात्र को अपनी खुद की

गलतियाँ पता चलती हैं | अपनी स्वयं की गलतियों को ठीक करने के लिए प्रयुक्त उपायों को क्रियान्वित करने के बाद छात्र पुनः उसी प्रकार जांचता है जैसा कि उसने यह प्रयोग करने से पहले किया था | इस प्रकार छात्र को प्राप्त परिणामों के आधार पर यह निर्धारित करने में आसानी होती है कि उसके द्वारा किए गए प्रयोग कारगर हुए कि नहीं और उसकी समस्या का निदान किस सीमा तक हुआ है |

12.4.1 हिंदी भाषा अधिगम की दृष्टि से स्व-मूल्यांकन का महत्व

हिंदी भाषा को सीखने के दौरान, स्व-मूल्यांकन कई मापदंडों के अनुसार छात्रों की स्थिति को समझने का एक शानदार तरीका है | स्व-मूल्यांकन किसी छात्र की ताकत और कमजोरियों को जानने में मदद करता है | स्व-मूल्यांकन छात्रों को उनके प्रदर्शन में सुधार के लिए आवश्यक पाठ्यक्रम सुधार और डेटा प्रदान करके उनका आत्मविश्वास भी बढ़ाता है | छात्र स्व-निर्देशित शिक्षार्थी बन सकते हैं क्योंकि वे स्व-मूल्यांकन परीक्षण से गुजरते हैं और अपने भाषायिक कौशल, भाषा समस्या-समाधान क्षमता, भाषा में रुचियों आदि के बारे में जागरूक हो जाते हैं | स्व-मूल्यांकन छात्र को जानकारी के अनुसार उसकी प्रगति पर नज़र रखने में भी मदद कर सकता है |

12.4.2 स्व-मूल्यांकन के लाभ

- छात्र भाषा से सम्बंधित अपनी ताकत और कमजोरी, लक्ष्य, रुचि, मूल्यों आदि जान सकते हैं और उन्हें सुधारने की दिशा में काम कर सकते हैं |
- स्व-मूल्यांकन आवश्यक कौशल पर नज़र रखने में मदद करता है और इस प्रकार छात्र को समस्या को शीघ्रता से हल करने में सक्षम बनाता है |
- स्व-मूल्यांकन छात्र के कार्यकलाप में किसी भी गलती की पहचान करने में मदद करता है ताकि आगे गलती से बचा जा सके |
- स्व-मूल्यांकन छात्र को यह जानने में मदद करता है कि लक्षित लक्ष्य प्राप्त हुआ है या नहीं और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कौन सी मूल्यवान जानकारी जोड़ी जानी चाहिए |

12.4.3 स्व-मूल्यांकन की चुनौतियाँ

- उपलब्धि को कम आंकना: स्व-मूल्यांकन में सबसे आम समस्या यह है कि छात्रों ने जो किया है उसे कम महत्व देते हैं | बेहतर शब्दावली के अभाव में, छात्र अपने काम को अच्छा घोषित कर सकते हैं, जबकि वे इसे बहुत अच्छा कर सकते हैं |

- **उपलब्धि को अधिक आंकना:** स्व-मूल्यांकन में कभी-कभी छात्र अपने किसी काम अथवा अपनी सीखी हुई भाषा को उसकी वास्तविक ज़रूरत से ज़्यादा महत्व देते हैं।
- **उपलब्धि को भूल जाना:** ऐसा प्रतीत होता है जब छात्रों से किसी पोर्टफोलियो या उस प्रकृति की किसी चीज़ के लिए काम के उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए कहा जाए। यह अजीब लग सकता है कि कोई अपने सर्वोत्तम कार्य का उल्लेख करना भूल जाए, लेकिन ऐसा होता है।
- **उपलब्धि को याद रखना लेकिन उसके महत्व को कम आंकना:** उदाहरण के लिए, एक छात्र को याद हो सकता है कि उसने एक कंप्यूटर प्रोग्राम लिखा है जो काम करता है, लेकिन वह इस तथ्य के महत्व को समझने में पूरी तरह से असफल हो जाता है कि उसने उन अवधारणाओं को शामिल किया है जिन्हें अभी तक पाठों में शामिल नहीं किया गया है।
- **कार्य की गलत व्याख्या करना:** कुछ मामलों में, छात्र कुछ ऐसा काम कर सकते हैं जो अपने आप में शानदार है, लेकिन जो पूरी तरह से अप्रासंगिक भी है, क्योंकि उन्हें कुछ और करने के लिए कहा गया था।

12.5 आपसी मूल्यांकन

आपसी मूल्यांकन या सहपाठी मूल्यांकन में दो छात्रों को आपस में एक दूसरे का मूल्यांकन करने का समय दिया जाता है। एक छात्र द्वारा अपने साथी छात्र को आदर्श वाचन, श्रुतलेख, सार लेख, कविता का सस्वर वाचन दिया जाता है। इस तरह से दोनों छात्र उन कक्षागत क्रियाकलापों को मूल्यांकन का आधार बनाते हैं जो कक्षा में पहले से आयोजित होते रहते हैं जिन्हें शिक्षक ने पहले भी आयोजित किया होता है। इस तरह से एक छात्र द्वारा प्रयुक्त उपायों के आधार पर छात्र के उच्चारण, पठन एवं लेखन में आए हुए परिवर्तन अथवा बदलाव की तुलना दूसरे छात्र के प्राप्त परिणाम के आधार पर की जाती है।

आपसी मूल्यांकन या सहपाठी समीक्षा छात्रों को उनके काम पर एक-दूसरे की आलोचना करने और प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए एक संरचित सीखने की प्रक्रिया प्रदान करती है। यह छात्रों को दूसरों का आकलन करने और उन्हें फीडबैक प्रदान करने में आजीवन कौशल विकसित करने में मदद करता है, और उन्हें आत्म-मूल्यांकन करने और अपने स्वयं के काम में सुधार करने के कौशल में भी तैयार करता है।

12.5.1 हिंदी भाषा अधिगम की दृष्टि से आपसी मूल्यांकन की उपयोगिता

- छात्रों को सहपाठी समीक्षा करने का औचित्य की समझ होने से सहपाठी समीक्षा प्रक्रिया में शामिल होने की अपेक्षाओं और लाभों की व्याख्या करें।
- अधिक वस्तुनिष्ठ प्रतिक्रिया के लिए छात्रों से गुमनाम असाइनमेंट का मूल्यांकन कराना आपसी मूल्यांकन के लिए उपयोगी होता है।
- विद्यार्थियों के फीडबैक पर एक-दूसरे को फीडबैक देने के लिए तैयार होना , अलग-अलग गुणवत्ता के फीडबैक के कुछ उदाहरण प्रदर्शित करने और चर्चा करने से फीडबैक उपयोगी होगा।
- कक्षा में सहपाठी समीक्षा सत्रों के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश और समय सीमा देने और कक्षा से बाहर सहपाठी समीक्षा असाइनमेंट के लिए परिभाषित समय सीमा निर्धारित होगी।
- छात्रों की परिचितता और मानदंडों का स्वामित्व सहपाठी मूल्यांकन वैधता को बढ़ाता है, इसलिए उपयोग किए गए मानदंडों की चर्चा में छात्रों को शामिल करें और मूल्यांकन रूब्रिक विकसित करने में छात्रों को शामिल करने पर विचार करें।

12.5.2 हिंदी भाषा अधिगम की दृष्टि से आपसी मूल्यांकन के लाभ

- आपसी मूल्यांकन छात्र और शिक्षक दोनों के लिए फायदेमंद होता है।
- आपसी मूल्यांकन आत्म-चिंतन, आलोचनात्मक सोच और रचनात्मक प्रतिक्रिया को प्रेरित करके काम की गुणवत्ता और सीखने के परिणामों को बढ़ाता है।
- इसके अतिरिक्त, यह छात्रों में विविध दृष्टिकोणों और अनुभवों की सराहना करके सहयोग, विश्वास और पारस्परिक सम्मान की संस्कृति को बढ़ावा देता है।
- आपसी मूल्यांकन छात्रों की भाषा में उपलब्धियों और सुधार के क्षेत्रों को पहचानकर उन्हें प्रेरित और सशक्त बनाने का भी काम करता है।
- इसके अलावा, यह एक-दूसरे से सीखने, सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने और ज्ञान या कौशल में अंतराल की पहचान करने के अवसर प्रदान करके भाषा के व्यावसायिक विकास और वृद्धि का समर्थन करता है।

12.5.3 हिंदी भाषा अधिगम की दृष्टि से आपसी मूल्यांकन की चुनौतियाँ

आपसी मूल्यांकन कुछ चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ प्रस्तुत कर सकता है जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है, जैसे कि छात्रों के बीच चिंता या तनाव पैदा करना यदि उन्हें लगता है कि उन्हें आंका जा रहा है या आलोचना की जा रही है, यदि मूल्यांकन मानदंड अस्पष्ट हैं तो

संघर्ष पैदा हो सकता है, यदि छात्र मूल्यांकनकर्ता नहीं हैं तो परिणामों की विश्वसनीयता कम हो सकती है। यदि प्रक्रिया बहुत जटिल है तो आपसी मूल्यांकन करने वाले छात्र पर अतिरिक्त कार्यभार या समय का दबाव डालना भी आपसी मूल्यांकन की एक चुनौती हो सकती है।

12.6 समूह मूल्यांकन

आपसी मूल्यांकन से समूह मूल्यांकन अथवा सामानांतर समूह मूल्यांकन थोड़ा सा अलग है। इस मूल्यांकन में आधार पर दो समानांतर समूहों की कार्य पद्धति में एक निश्चित अवधि के पश्चात परिवर्तन कर दिया जाता है। एक समूह को जो काम एक समय में करने के लिए दिया जाता है दूसरे समूह को भी वह काम उसी समय करने के लिए दिया जाता है और अनुमान लगाया जाता है कि दोनों समूहों में से किसने कितनी उपलब्धि प्राप्त की है।

हिंदी भाषा सीखने में समूह मूल्यांकन एक समूह या टीम-आधारित सीखने के माहौल में छात्रों के प्रदर्शन, प्रगति और योगदान का आकलन करने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। इसमें समूह के सदस्यों के व्यक्तिगत योगदान और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में समूह की समग्र प्रभावशीलता दोनों का मूल्यांकन करना शामिल है। उदाहरण स्वरूप यदि एक समूह के छात्रों को किसी नाटक के संवाद दिए जाएँ और देखा जाए कि सभी छात्रों ने संवाद, अभिनय, तथा प्रस्तुतीकरण में दूसरे समूह की तुलना में कितनी बेहतर तरीके से की है। ऐसी परिस्थिति में दोनों समूहों के छात्रों की अर्जित उपलब्धि में हुई कमियों को शिक्षक अतिरिक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग करके सुधार करवा सकता है।

12.6.1 हिंदी भाषा अधिगम की दृष्टि से समूह मूल्यांकन की उपयोगिता

- **व्यक्तिगत योगदान का आकलन:** समूह मूल्यांकन शिक्षकों को एक सहयोगी वातावरण के भीतर प्रत्येक छात्र के व्यक्तिगत प्रयासों, कौशल और योगदान का आकलन करने की अनुमति देता है।
- **जवाबदेही को बढ़ावा देना:** यह छात्रों को उनके सौंपे गए कार्यों की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करता है और समूह की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।
- **सहयोग और टीम वर्क को बढ़ाना:** समूह की गतिशीलता और बातचीत का मूल्यांकन करके, छात्र भविष्य के प्रयासों के लिए आवश्यक सहयोग और टीम वर्क कौशल विकसित करते हैं।
- **फीडबैक प्रदान करना:** यह छात्रों को उनके कौशल और सुधार के क्षेत्रों पर फीडबैक

प्रदान करता है, जिससे उन्हें अपने प्रदर्शन और सीखने की बेहतर समझ विकसित करने में मदद मिलती है।

12.6.2 हिंदी भाषा अधिगम की दृष्टि से समूह मूल्यांकन के लाभ

हिंदी भाषा अधिगम की दृष्टि से समूह मूल्यांकन के छात्रों एवं शिक्षक को निम्नलिखित लाभ होते हैं।

- छात्रों की भाषा अधिगम विशेषताओं को विकसित करना और शिक्षकों को उनके सामान्य कौशल का आकलन करने की अनुमति देना, जैसे:
 - समूह मूल्यांकन से समूह की गतिशीलता बढ़ने के साथ ही साथ, छात्रों में नेतृत्व के भीतर काम करने की योग्यता का विकास होता है।
 - विश्लेषणात्मक और संज्ञानात्मक कौशलपूर्ण कार्य की आवश्यकताओं का विश्लेषण करना, पूछताछ करना, सामग्री की आलोचनात्मक व्याख्या करना, दूसरों के काम का मूल्यांकन करना आदि सीखा जाता है।
 - सहयोगात्मक कौशल के अंतर्गत संघर्ष प्रबंधन और समाधान, बौद्धिक आलोचना स्वीकार करना, लचीलापन, बातचीत और समझौता आदि को छात्र समझते हैं।
- मूल्यांकन को अधिक प्रामाणिक बनाना: जहां हिंदी भाषा अधिगम में समूह और टीम कार्य आम अभ्यास है, वहीं कुछ पाठ्यक्रमों में समूह-कार्य कार्यों को शामिल करना छात्रों की काम के लिए तत्परता का आकलन करने का एक आवश्यक हिस्सा है।
- मूल्यांकन को अधिक समावेशी बनाना: किसी भाषा विषय की खोज करते समय जानबूझकर छात्रों के छोटे समूह कार्य कार्यों को उनकी विविध पृष्ठभूमि और दृष्टिकोण से तैयार करके, आप उन्हें अपने साथियों के साथ अधिक गहराई और विस्तार में जानने का मौका देते हैं।
- बहु-भाषायी शिक्षा का समर्थन करना: छात्र सीखने वाले समुदायों के रूप में बहु-भाषी टीमों में काम कर सकते हैं, कई विषयों के परिप्रेक्ष्य से विशिष्ट विषयों या मुद्दों की खोज कर सकते हैं।
- मूल्यांकन को अधिक जवाबदेह बनाना: व्यक्तिगत मूल्यांकन की तुलना में समूह मूल्यांकन अपने इरादों, निष्पादन और निर्णयों के लिए अधिक सार्वजनिक और

जवाबदेह होता है | केवल छात्र और शिक्षक द्वारा सीखने के प्रयासों और उपलब्धियों को देखने के बजाय, समूह-कार्य कार्य सीखने और मूल्यांकन को अधिक सार्वजनिक डोमेन में डाल देते हैं |

12.6.3 हिंदी भाषा अधिगम की दृष्टि से समूह मूल्यांकन की चुनौतियाँ

- छात्रों को इस मूल्यांकन के प्रति आश्वस्त करने के लिए समूह मूल्यांकन में समूह कार्य का उपयोग करने के लिए एक स्पष्ट शैक्षिक तर्क प्रस्तुत करना बहुत जरूरी होता है |
- शिक्षकों और छात्रों को समूह कार्य स्थापित करने और छात्रों को इसके लिए तैयार करने में काफी समय लगाना चाहिए | कई इकाइयों में समूह कार्य का अत्यधिक उपयोग छात्रों के दुर्लभ समय का एक बड़ा हिस्सा बर्बाद कर सकता है |
- सामाजिक और व्यक्तित्व संबंधी मतभेद या संगठनात्मक कठिनाइयाँ समूहों और टीमों को तोड़ सकती हैं, जिससे उन्हें मूल्यांकन में नुकसान हो सकता है |
- इस मूल्यांकन में समूह का संरक्षण हाथ में लिए गए कार्य से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है या उत्पन्न होने वाले विचार बहस और आलोचनात्मक सोच को दबा देते हैं, तो वांछित सीखने को रोका जा सकता है | छात्र, विशेष रूप से नए छात्र, बहुसंख्यक दृष्टिकोण से असहमति जताने या उसे चुनौती देने में अनिच्छुक महसूस कर सकते हैं, जिससे रचनात्मकता और भिन्न सोच बाधित होती है |
- व्यक्तिगत इनपुट को ग्रेड करना कठिन हो सकता है | व्यक्तिगत बनाम समूह चिहनों के बारे में स्पष्टता का अभाव सहयोग को बाधित कर सकता है | छात्रों को डर हो सकता है कि वे समूह चिह्न में हिस्सेदारी के लिए एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में हैं |

12.7 सारांश

परीक्षाओं से वर्ष में एक या दो बार विद्यार्थियों की उपलब्धियों के बारे में जानकारी मिलती है और आमतौर पर वे उनके पठन और लेखन कौशलों पर केंद्रित होती हैं | हालांकि, प्रत्येक पाठ में छात्रों की प्रगति का आकलन करने और फीडबैक देने के अवसर उपलब्ध होते हैं | इस सन्दर्भ में सतत एवं समग्र मूल्यांकन, स्व-मूल्यांकन, आपसी मूल्यांकन एवं समूह मूल्यांकन आदि से किसी विशिष्ट शिक्षण उद्देश्य के सन्दर्भ में छात्रों की कमियों को जानकर अथवा समझकर उनमें अपेक्षित सुधार करने के लिए छात्रों को अवगत करवाना होता है | इस तरह से

उपरोक्त मूल्यांकन की विधियों से छात्रों को उनके प्रदर्शन की जानकारी देना और इस बारे में उनका मार्गदर्शन करना कि वे किस तरह इसमें सुधार कर सकते हैं या आगे बढ़ सकते हैं।

मूल्यांकन की ये विधियाँ छात्रों के सीखने, बोलने, पढ़ने और लिखने के विकास के कई पहलुओं से संबंधित हो सकती हैं। अपने छात्रों के बारे में सतत जानकारी एकत्र करके और किन छात्रों को कठिनाई हो रही है या कौन-से छात्र आगे की चुनौतियों के लिए तैयार हैं, इसकी पहचान करके आप कक्षा में हर किसी की ज़रूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए अपने अध्यापन में बदलाव कर सकते हैं। इस इकाई में आपको बताया गया है कि किस तरह से मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों से छात्रों में भाषा विकास का आकलन किया जा सकता है।

12.8 शब्दावली

शब्द	अर्थ
भाषा विकास	बच्चे के भाषा संबंधी कौशलों जैसे सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना में क्रमिक प्रगति।
प्रगति आकलन	विद्यार्थी द्वारा सीखी गई भाषा संबंधी क्षमताओं की पहचान और मूल्यांकन की प्रक्रिया।
सतत मूल्यांकन	नियमित रूप से किए जाने वाला आकलन जो भाषा विकास की निरंतर निगरानी करता है।
मूल्यांकन उपकरण	वे साधन जिनके माध्यम से भाषा कौशल का परीक्षण किया जाता है (जैसे: प्रश्नपत्र, गतिविधियाँ)।
स्व-मूल्यांकन	छात्र द्वारा स्वयं की भाषा प्रगति का विश्लेषण करना।
आलोचनात्मक चिंतन	भाषा विषयक विचारों का गहराई से परीक्षण और विवेचन करने की क्षमता।
सहपाठी मूल्यांकन	सहपाठी द्वारा अन्य छात्र की भाषा संबंधित प्रदर्शन की समीक्षा।
प्रतिक्रिया (Feedback)	शिक्षक द्वारा विद्यार्थी के प्रदर्शन पर दिया गया रचनात्मक सुझाव या प्रतिक्रिया।

शब्द	अर्थ
भाषिक दक्षता	भाषा का शुद्ध, सटीक एवं प्रभावी प्रयोग करने की क्षमता।
समग्र मूल्यांकन	भाषा के सभी पहलुओं (श्रवण, भाषण, पठन, लेखन) का व्यापक और संतुलित मूल्यांकन।

12.9 अधिगम प्रतिफल

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत सभी छात्र-शिक्षक निम्नलिखित कार्यों को करने में सक्षम हो चुके होंगे:

- सतत और समग्र मूल्यांकन को समझकर उसका उपयोग कर अपनी कक्षा के छात्रों का मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।
- स्व-मूल्यांकन की अपने शब्दों में व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- आपसी मूल्यांकन एवं समूह मूल्यांकन में विभेदीकरण करने में सक्षम होंगे।
- समूह मूल्यांकन का विश्लेषण कर अपनी कक्षाओं में छात्रों का समूह मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।
- सतत और समग्र मूल्यांकन का स्व-मूल्यांकन से अंतर स्पष्ट करने में सक्षम होंगे।

12.10 इकाई के अंत में गतिविधियाँ

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. क्या सभी प्राणियों में अपनी आवश्यकतानुसार एक दूसरे से संप्रेषण करने की जन्मजात योग्यता होती है।

(अ) नहीं (ब) हाँ (स) शायद होती है (द) शायद नहीं होती

2. भाषा का इस्तेमाल संप्रेषण के आलावा किस लिए होता है?

(अ) तर्क के लिए (ब) कल्पना करने के लिए (स) विचार और सृजन करने के लिए (द) उपरोक्त सभी के लिए

3. सतत और समग्र मूल्यांकन में कितने सोपानों को बताया गया है?

(अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) चार

4. बच्चे स्कूल आने से पहले भाषा कैसे सीखते हैं?

(अ) समझ के आधार पर (ब) अनुभव के आधार पर

(स) समझ और अनुभव दोनों के आधार पर (द) इनमें से कोई नहीं

5. स्व-मूल्यांकन किसी छात्र की किन स्थितियों को जानने में मदद करता है?

(अ) ताकत को जानने में (ब) कमजोरियों को जानने में (स) ताकत और कमजोरियों को जानने में (द) उपरोक्त सभी को जानने में

6. आपसी मूल्यांकन किसके लिए फायदेमंद है?

(अ) छात्रों के लिए (ब) शिक्षक के लिए (स) शिक्षक और छात्र दोनों के लिए (द) नीति निर्माता के लिए

7. किस मूल्यांकन से मूल्यांकन को अधिक प्रमाणिक बनाया जाता है?

(अ) समूह मूल्यांकन (ब) आपसी मूल्यांकन (स) स्व-मूल्यांकन (द) सतत व समग्र मूल्यांकन

8. किस मूल्यांकन के अंतर्गत छात्र को स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है?

(अ) समूह मूल्यांकन (ब) आपसी मूल्यांकन (स) स्व-मूल्यांकन (द) सतत व समग्र मूल्यांकन

9. आपसी मूल्यांकन में किनको मूल्यांकन का समय दिया जाता है?

(अ) छात्रों को (ब) शिक्षको को (स) शिक्षक और छात्र दोनों को (द) किसी को नहीं

10. मूल्यांकन की ये विधियाँ छात्रों के किन पहलुओं से संबंधित हो सकती हैं?

(अ) छात्रों के सीखने (ब) छात्रों के बोलने (स) छात्रों के पढ़ने और लिखने (द) उपरोक्त सभी से उत्तर कुंजी

1 (ब) 2 (द) 3 (स) 4 (स) 5 (स) 6 (स) 7 (अ) 8 (स) 9 (अ) 10 (द)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सतत और समग्र मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?

2. स्व-मूल्यांकन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

3. स्व-मूल्यांकन की हिंदी भाषा की दृष्टि से उपयोगिता का उल्लेख कीजिए।

4. आपसी मूल्यांकन और स्व-मूल्यांकन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

5. मूल्यांकन की कौन-कौन सी विधियाँ हैं?

6. स्व-मूल्यांकन व सतत एवं समग्र मूल्यांकन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

7. आपसी मूल्यांकन में शिक्षक को किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ती है?

8. आपसी मूल्यांकन के लाभों का उल्लेख कीजिये?

9. स्व-मूल्यांकन के दौरान आने वाली चुनौतियों को लिखिए।

10. स्व-मूल्यांकन एवं समूह मूल्यांकन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. स्व-मूल्यांकन का प्रयोग अपनी कक्षा में मूल्यांकन विधि के रूप में करने पर आपको किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा? उनका उल्लेख कीजिए?
2. हिंदी भाषा अधिगम के मूल्यांकन की दृष्टि से कौन सी मूल्यांकन विधि सर्वोत्तम हो सकती है ?
3. किन्हीं दो मूल्यांकन विधियों का अपने शब्दों में विस्तृत उल्लेख कीजिए ।
4. आप किस मूल्यांकन विधि का अपनी हिंदी कक्षा में मूल्यांकन के लिए उपयोग करेंगे और क्यों ?
5. आज के समय में हिंदी भाषा अधिगम के मूल्यांकन की विभिन्न विधियों का अपने शब्दों में विस्तृत विवरण कीजिए ।

12.11 सन्दर्भ

- नीलम, (2016), हिंदी शिक्षण, अर्थ विजन पब्लिकेशन, गुडगाँव हरियाणा
- सक्सैना, मालती (2016), हिंदी का शिक्षण शस्त्रीय स्वरूप, राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, आगरा
- सिंह, निरंजनकुमार (2019) माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- ओझा, पी.के.,(2008) हिंदी शिक्षण, अनमोल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
- डबास, जयदेव (2013) हिंदी भाषा शिक्षण, दोआबा हाउस, नई दिल्ली
- चतुर्वेदी, शिक्षा (2008) हिंदी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- नरूला, मधु (2015) हिंदी शिक्षण, ट्वेंटीफर्स्ट सेंचुरी पब्लिकेशन, पटियाला
- पंडागले, प्रविनी (2015) हिंदी शिक्षण, क्वालिटी पब्लिकेशन लिमिटेड, भोपाल

इकाई 13 – प्रश्न पत्र का परिचय व उद्देश्य

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 प्रश्न पत्र का परिचय व उद्देश्य

13.4 सारांश

13.5 शब्दावली

13.6 अधिगम प्रतिफल

13.7 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

13.8 संदर्भ

13.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में आप प्रश्न पत्र का परिचय व उसके उद्देश्यों से लाभान्वित हो पाएंगे। इस इकाई में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों एवं उनकी विशेषताओं तथा प्रश्न पत्रों के विभिन्न नमूनों का अध्ययन आप इस इकाई में कर पाएंगे। आगे इन्हें विस्तृत रूप में समझा जा सकता है।

13.2 उद्देश्य

- विद्यार्थी प्रश्न पत्र एवं उसके उद्देश्यों से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थी प्रश्न पत्र के विभिन्न विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी प्रश्न पत्र के स्वरूप का आवलोकन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी प्रश्न पत्र एवं उसकी अंकन सूची का निर्माण कर सकेंगे।

13.3 प्रश्न पत्र का परिचय व उद्देश्य

प्रश्न पत्र (Question Paper) उस दस्तावेज़ या लिखित सामग्री को कहते हैं जिसमें किसी परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्न होते हैं। इसका उद्देश्य छात्रों के ज्ञान, समझ, विश्लेषण क्षमता और पाठ्यक्रम की विषयवस्तु में दक्षता की जाँच करना होता है। प्रश्न पत्र का मुख्य

उद्देश्य विद्यार्थियों के ज्ञान, समझ, विश्लेषण क्षमता, अभिव्यक्ति कौशल और समस्या समाधान योग्यता का मूल्यांकन करना होता है। इसके माध्यम से यह जाना जाता है कि छात्र ने पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को कितनी गहराई से समझा है तथा वह उसे व्यावहारिक रूप में कैसे लागू कर सकता है। प्रश्न पत्र विद्यार्थियों की रचनात्मकता, तार्किकता और मौलिक सोच को परखने का भी माध्यम होता है। साथ ही यह शिक्षकों को यह समझने में मदद करता है कि शिक्षा की प्रक्रिया कहाँ प्रभावी रही और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इस प्रकार प्रश्न पत्र केवल परीक्षा का साधन न होकर, संपूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण मूल्यांकन उपकरण होता है। इस इकाई में हम आगे इन पहलुओं को और विस्तार से समझेंगे।

13.3.1 प्रश्न पत्र का परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने स्कूली शिक्षा के हर पहलू में व्यापक सुधार की सिफारिश की है, जिसमें मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक समग्र, समझ-आधारित (competency-based) और वास्तविक जीवन से जुड़ी बनाने पर विशेष बल दिया गया है। वर्तमान में प्रश्न-पत्रों में मुख्यतः स्मरण (recall) आधारित प्रश्न अधिक होते हैं, जिससे विद्यार्थियों की रटकर सीखने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। इससे उनकी सोचने, समझने, प्रयोग करने और रचनात्मकता जैसी क्षमताओं का विकास बाधित होता है। इस संदर्भ में, मूल्यांकन को इस तरह से डिज़ाइन करने की आवश्यकता है कि वह केवल जानकारी की जांच न करे, बल्कि सीखने के उद्देश्यों और क्षमताओं को सही ढंग से मापे। इसके लिए प्रश्न-पत्रों में विविध प्रकार के प्रश्नों को शामिल करना चाहिए, जो उच्च स्तर की संज्ञानात्मक क्षमताओं (Higher-order cognitive skills) की भी जांच करें। यह इकाई प्रश्न-पत्र मानकीकरण (question paper standardization) में मदद करने हेतु तैयार की गई है, ताकि मूल्यांकन की गुणवत्ता में एकरूपता लाई जा सके और छात्रों की वास्तविक क्षमता को बेहतर ढंग से आंका जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए मूल्यांकन प्रणाली में व्यापक बदलाव की आवश्यकता को स्वीकार किया है। इस नीति में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि मूल्यांकन प्रणाली विद्यार्थियों में 21वीं सदी के आवश्यक कौशलों जैसे:

- गहराई से समझना (deep understanding)
- समस्या समाधान की क्षमता (problem-solving)
- नवाचार (innovation)

- आलोचनात्मक चिंतन (critical thinking)
- संचार और सहयोग कौशल (communication and collaboration skills)

को विकसित करने में मदद करे। दरअसल, अब तक की मूल्यांकन प्रणालियाँ मुख्य रूप से रटकर याद करने (rote learning) को बढ़ावा देती रही हैं, क्योंकि प्रश्न-पत्रों में ज्यादातर सवाल तथ्यों को याद रखने वाले (recall-based) होते हैं। इससे ये समस्याएँ सामने आती हैं-

- छात्र केवल परीक्षा में अंक लाने के लिए पढ़ते हैं, वास्तविक समझ विकसित नहीं करते।
- प्रश्नों में विश्लेषणात्मक या रचनात्मक सोच की मांग नहीं होती।
- मूल्यांकन प्रणाली सीखने की गहराई और आवश्यक जीवन कौशलों को नहीं माप पाती।

इस संदर्भ में नवीन दृष्टिकोण की आवश्यकता है क्योंकि यह आवश्यक हो गया है कि प्रश्न-पत्रों को इस तरह से डिज़ाइन किया जाए कि वे विद्यार्थियों के सीखने के उद्देश्यों (Learning Outcomes) की पूर्ति को मापें, ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण और सृजन जैसी संज्ञानात्मक क्षमताओं (cognitive abilities) को परखें तथा वास्तविक जीवन की स्थितियों से जुड़े प्रश्नों (real-life context-based questions) को प्राथमिकता दें। इसलिए आवश्यक है कि एकरूपता और गुणवत्ता की दिशा में कदम बढ़ाए जाएँ। देश में अनेक शिक्षा बोर्ड होने के कारण मूल्यांकन की गुणवत्ता और तरीका भिन्न-भिन्न होता है। इस असमानता को दूर करने और पूरे देश में मूल्यांकन मानकों को एक समान करने का प्रयास होना चाहिए। इसलिए समग्र रूप से मूल्यांकन की समग्र गुणवत्ता को शिक्षा नीति के उद्देश्यों के अनुरूप प्रश्न-पत्र तैयार करना, और सीखने की प्रक्रिया को केंद्र में रखकर परीक्षा प्रणाली का विकास करना।

13.3.2 प्रश्न पत्र के उद्देश्य

प्रश्न पत्र के कई उद्देश्य होते हैं, जिनमें छात्रों के ज्ञान और कौशल का मूल्यांकन करना, शिक्षण अनुभवों को मापना, और शिक्षण विधियों को बेहतर बनाना शामिल है। प्रश्न पत्र, मूल्यांकन, निदान, और शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यहां प्रश्न पत्र के कुछ विशिष्ट उद्देश्य दिए गए हैं:

- छात्रों के ज्ञान और कौशल का मूल्यांकन करना: प्रश्न पत्र छात्रों के पाठ्यक्रम में सीखी गई सामग्री की समझ का आकलन करने का एक तरीका है।
- शिक्षण अनुभवों को मापना: प्रश्न पत्र यह निर्धारित करने में मदद करते हैं कि शिक्षण

विधियां प्रभावी थीं या नहीं और छात्रों को समझने में मदद करने के लिए आवश्यक समायोजन किए जाने चाहिए या नहीं।

- शिक्षण विधियों को बेहतर बनाना: प्रश्न पत्र शिक्षकों को छात्रों की कमजोरियों और ताकत का पता लगाने में मदद करते हैं, जिससे वे अपने शिक्षण को तदनुसार समायोजित कर सकते हैं।
- समावेशी होना: एक अच्छा प्रश्न पत्र सभी छात्रों के लिए सुलभ होना चाहिए, चाहे उनकी सीखने की शैली या क्षमता कुछ भी हो।
- निदानात्मक उद्देश्यों के लिए उपयोग करना: प्रश्न पत्र शिक्षकों को छात्रों की विशिष्ट सीखने की कठिनाइयों की पहचान करने में मदद करते हैं, जिससे वे लक्षित हस्तक्षेप प्रदान कर सकते हैं।
- शिक्षण को प्रेरित करना: प्रश्न पत्र छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, खासकर यदि वे आकर्षक और चुनौतीपूर्ण हों।
- छात्रों के सीखने की प्रगति को ट्रैक करना: समय के साथ प्रश्न पत्रों का उपयोग छात्रों की प्रगति को ट्रैक करने और उनके सीखने में सुधार के लिए आवश्यक समायोजन करने के लिए किया जा सकता है।
- शिक्षण को दिशा देना: प्रश्न पत्र शिक्षकों को यह तय करने में मदद करते हैं कि कौन सी अवधारणाओं पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है और कौन सी अवधारणाएं अच्छी तरह से समझ में आ रही हैं।
- पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन करना: प्रश्न पत्र पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन करने और आवश्यक समायोजन करने के लिए एक उपकरण के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

13.3.3 प्रश्न पत्र की विशेषताएँ

- **उद्देश्य आधारित** : उपरोक्त प्रश्न पत्र उद्देश्य आधारित है क्योंकि अच्छे प्रश्न को सदा पूर्व निर्धारित उद्देश्य पर आधारित होना चाहिए और प्रभावी रूप में संबंधित योग्यता का परीक्षण करने वाला होना चाहिए। कभी-कभी कोई प्रश्न एक से अधिक उद्देश्यों का परीक्षण कर सकता है; कभी-कभी वह एक उद्देश्य के एक या एक से अधिक स्पष्टीकरण का परीक्षण कर सकता है जिसके आधार पर प्रश्न बनता हो। यदि कभी कोई प्रश्न एक से अधिक उद्देश्यों का परीक्षण करता है तो उसे ऐसा प्रश्न कहा जाता है जो उद्देश्यों के अधिक्रम में उच्चतम उद्देश्य का परीक्षण करता है।

- विषय-वस्तु-विशिष्ट : जिस विषय-वस्तु पर प्रश्न आधारित होता है, वह उस उद्देश्य के साथ निकट से संबंधित होता है जिसका परीक्षण किया जा रहा है। इसलिए प्रश्न-निर्माता को विषय या उसके उप-विषय का ध्यान रखना चाहिए जिस पर वह प्रश्न बना है। अतः प्रश्न विषय-वस्तु के उसी क्षेत्र से संबंधित हो जिसका परीक्षण उसके द्वारा किया जाना है।
- प्रश्नों के प्रकार: प्रश्नों के मूलतः चार प्रकार हैं:- निबन्धात्मक, लघुत्तर, अतिलघुत्तर और वस्तुनिष्ठ प्रश्न। प्रश्न का प्रकार, वांछित विषय-वस्तु की प्रकृति और क्षमता के प्रकार जिसका कि परीक्षण किया जाना है, पर निर्भर होता है। किन्हीं क्षमताओं के परीक्षण के लिए प्रश्नों के बुरोड प्रकार अधिक उपयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए निबन्धात्मक प्रश्न, विषय-वस्तु के विचारों के संयोजन की योग्यता, विश्लेषण, व्याख्या आदि के लिए अधिक उपयुक्त होते हैं। अतः प्रयास किया जाना चाहिए कि प्रश्न पत्रों में प्रश्नों के प्रकारों का सम्मिश्रण व्याय संगत हो। प्रश्न-पत्र की रूपरेखा तैयार करते समय हमें इस विषय में निर्णय कर लेना चाहिए।
- प्रश्नों की शब्दावली: मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठता बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि प्रश्नों की भाषा स्पष्ट, सुनिश्चित और निर्भात हो। अपरिचित और कठिन शब्दों का प्रयोग करने से बचना चाहिए जिससे प्रश्नों का बोध छात्रों के लिए समस्या न बने और उनकी कठिनाई का स्तर भी न बढ़े। प्रश्नों की शब्दावली ऐसी होनी चाहिए जिसे सभी छात्र और परीक्षक उससे एक ही अर्थ समझें, विशेषकर अपेक्षित उत्तर की व्याप्ति और विस्तार की दृष्टि से। सामान्यतः प्रचलित शब्दावली जैसे वर्णन कीजिए, विस्तार कीजिए, चर्चा कीजिए, संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए या प्रतिवेदन लिखिए, आप क्या जानते हैं, आदि, से बचना चाहिए। छात्रों के द्वारा जो लिखा जाना है, उसे निर्धान्त शब्दों में प्रश्न बनाते समय लिखना चाहिए।
- स्थिति की संरचना : उपयुक्त प्रश्न बनाने के लिए उपयुक्त स्थिति का चयन, प्रश्न निर्माण का एक महत्वपूर्ण सोपान है। ज्ञान के परीक्षण के लिए पाठ्य-पुस्तक की स्थितियाँ सही हो सकती हैं। इसी प्रकार ज्ञान या बोध के लिए कक्षा में चर्चित अन्य स्थितियाँ भी उपयुक्त हो सकती हैं। परन्तु ज्ञान के अनुप्रयोग के लिए कुछ अपरिचित स्थितियों को रेखांकित करना होगा, या उन्हें प्रकल्पित करना होगा। यद्यपि इस प्रकार की स्थितियाँ पाठ्यपुस्तक की सीमा से बाहर की हो सकती हैं। परन्तु उन्हें छात्रों की योग्यता के स्तर और अधीत विषय-वस्तु के अनुरूप ही होना चाहिए। अतः प्रस्तावित है कि शिक्षक इस

प्रकार की स्थितियों को संकलित करता रहे जिससे आवश्यकता के अनुसार वह उनका उपयोग कर सके।

- अनुमानित काठिन्य स्तर : प्रश्न-पत्र निर्माण के समय परीक्षक को छात्रों के उत्तर देने की क्षमताओं के संदर्भ में अनुमानित काठिन्य स्तर का ध्यान रखना चाहिए। प्रश्नों के काठिन्य का स्तर सामान्यतः उत्तर देने में छात्रों की मानसिक प्रक्रिया, परीक्षा के लिए वाँछित विषय-वस्तु का क्षेत्र और उत्तर देने में लगने वाले समय पर निर्भर होता है। अनुभवी शिक्षक किसी प्रश्न के काठिन्य के स्तर का सहज ही अनुमान पहले से ही लगा सकते हैं। परंतु वास्तविक काठिन्य की सूची, प्रश्नों के प्रयोग के बाद ही उनके उत्तरों के विश्लेषण के आधार पर ही तैयार की जा सकती है। बहुविकल्पी प्रश्न इस प्रकार के विश्लेषण के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। परंतु अनुभवी शिक्षक काठिन्य स्तर का अनुमान लगा लेते हैं। इसके आधार पर ही विविध प्रकार के काठिन्य स्तर के प्रश्नों का निर्माण, प्रश्न-पत्र तैयार करते समय किया जा सकता है।
- विभेदीकरण मूल्य : जब तक किसी प्रश्न का प्रायोगिक स्थिति में परीक्षण नहीं कर लिया जाता, तब तक उसका केवल तक करा- मूल्य का अन्दाज/अनुमान लगाना से थक नहीं होता। फिर भी जब कोई उसके नवीन स्थिति हो और सामान्य प्रकार के प्रश्नों से बचा जाना हो तो ऐसा प्रश्न उत्तम छात्रों को कमजोर छात्रों से विभेदीकरण करने में सामान्यतः सफल होता है। इस प्रकार काठिन्य स्तर के ध्रुव बिन्दु पर बने प्रश्न इस प्रकार के विभेदीकरण में अधिक प्रभावी नहीं होते, जबकि मध्यम बिन्दु वाले प्रश्न अपेक्षाकृत प्रभावी पाए जाते हैं।
- उत्तर के क्षेत्र का परिसीमन : प्रश्न बनाते समय, प्रश्न निर्माता या परीक्षक को प्रश्न के अपेक्षित उत्तर पर ध्यान देना चाहिए। इसी प्रकार अंक योजना बनाते समय, उसे अपेक्षित उत्तर की रूपरेखा तैयारकर लेनी चाहिए और प्रश्न के प्रत्येक अंश के लिए अंक निर्धारित कर लेने चाहिए। यह कार्य प्रश्न बनाते समय ही कर लेना चाहिए। इससे प्रश्न की भाषा की कमियाँ, यदि कोई हों तो स्पष्ट हो जाती हैं। अतः प्रश्न की भाषा स्पष्ट और सुनिश्चित होनी चाहिए जिससे अपेक्षित उत्तर परिभाषित और परिसीमित रहें।
- अंक-योजना/कुंजी : वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को बनाते समय अंक योजना बनानी चाहिए, जबकि दीर्घ-उत्तरों, लघु-उत्तरों और अतिलघु उत्तरों की रूपरेखा और अंक योजना तैयार कर लेनी चाहिए। अंकों के रूप में अपेक्षित उत्तरों के प्रत्येक बिन्दु का अधिभार निश्चित कर लेना चाहिए। प्रश्नों के निर्माताओं या प्रश्न-पत्र निर्माताओं को प्रत्येक प्रश्न को बनाते

समय, प्रश्नों के पूर्व चर्चित आयामों तथा प्रश्न निर्माण के अन्य नियमों आदि के विषय में सचेत रहना चाहिए।

13.3.4 एक अच्छे प्रश्न-पत्र के गुण

एक अच्छा प्रश्न-पत्र शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। अच्छा प्रश्न-पत्र एक गुणात्मक निर्णय लेने का साधन होता है। एक अच्छे प्रश्न-पत्र में निम्न गुण होने चाहिए-

- विश्वसनीयता - एक अच्छे प्रश्न-पत्र में विश्वसनीयता होनी चाहिए। इसके लिए प्रश्न पत्र में प्रश्नों की संख्या पर्याप्त होनी चाहिए।
- वस्तुनिष्ठता - जिस परीक्षण पर परीक्षक का व्यक्तिगत प्रभाव नहीं पड़ता हो वह परीक्षण वस्तुनिष्ठ परीक्षण कहलाता है।
- व्यापकता - प्रश्न-पत्र की यह प्रमुख विशेषता होती है अर्थात् प्रश्न-पत्र विभिन्न पक्षों का मापन करने में समर्थ होना चाहिए। अतः प्रश्न-पत्र सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को स्पर्श करता हुआ होना चाहिए।
- विभेदीकरण - एक अच्छे प्रश्न-पत्र में विभेदीकरण का गुण होना चाहिए अर्थात् उसमें सभी प्रकार के छात्रों के लिए सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश होना चाहिए।
- उपयोगिता - एक अच्छे प्रश्न-पत्र में उपयोगिता का गुण भी होना चाहिए। यह गुण उसमें तभी आएगा जब उसमें सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश हो, जिन्हें छात्र आसानी से समझ सके और आसानी से उत्तर दे सके अर्थात् जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए परीक्षा ली जा रही है उसकी पूर्ति हो जाए और उसके आधार पर उन्हें उचित निर्देशन दिया जा सके।

13.4 सारांश

शैक्षिक सुधार के किसी भी समग्र कार्यक्रम के लिए परीक्षा-पद्धति और प्रश्न-पत्रों की गुणवत्ता में सुधार आवश्यक होगा। प्रत्येक प्रश्न-पत्र का प्रत्येक प्रश्न इस प्रकार से बनाया जाना चाहिए कि जब उसे संयुक्त रूप से प्रश्न-पत्र में सम्मिलित किया जाए तो वह मापन या आकलन का सर्वांगीण सफल साधन बन जाए। चाहे हम निबंधात्मक प्रश्नों का प्रयोग करें या लघूत्तर प्रश्नों या अतिलघूत्तर प्रश्नों या वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का निर्माण करें। प्रश्न पत्र उद्देश्य आधारित है क्योंकि अच्छे प्रश्न को सदा पूर्व निर्धारित उद्देश्य पर आधारित होना चाहिए और प्रभावी रूप में संबंधित योग्यता का परीक्षण करने वाला होना चाहिए। कभी-कभी कोई प्रश्न एक से अधिक उद्देश्यों का परीक्षण कर सकता है; कभी-कभी वह एक उद्देश्य के एक या एक से अधिक

स्पष्टीकरण का परीक्षण कर सकता है जिसके आधार पर प्रश्न बनता हो। यदि कभी कोई प्रश्न एक से अधिक उद्देश्यों का परीक्षण करता है तो उसे ऐसा प्रश्न कहा जाता है जो उद्देश्यों के अधिक्रम में उच्चतम उद्देश्य का परीक्षण करता है। दीर्घ-उत्तरों, लघु-उत्तरों और अतिलघु उत्तरों की रूपरेखा और अंक योजना तैयार कर लेनी चाहिए। अंकों के रूप में अपेक्षित उत्तरों के प्रत्येक बिन्दु का अधिभार निश्चित कर लेना चाहिए। प्रश्नों के निर्माताओं या प्रश्न-पत्र निर्माताओं को प्रत्येक प्रश्न को बनाते समय, प्रश्नों के पूर्व चर्चित आयामों तथा प्रश्न निर्माण के अन्य नियमों आदि के विषय में सचेत रहना चाहिए।

13.5 शब्दावली (Glossary)

शब्द	अर्थ (हिंदी में)
प्रश्न पत्र (Question Paper)	परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों का लिखित दस्तावेज़। इसका उद्देश्य छात्रों के ज्ञान, समझ, विश्लेषण व कौशल का मूल्यांकन करना होता है।
मूल्यांकन (Evaluation)	सीखने की प्रगति, ज्ञान और योग्यता की जांच व समीक्षा करने की प्रक्रिया।
संज्ञानात्मक क्षमताएँ (Cognitive Abilities)	सोचने, समझने, विश्लेषण करने, सृजनात्मकता और समस्या-समाधान करने की मानसिक क्षमताएँ।
रटंत अधिगम (Rote Learning)	बिना समझे केवल याद करने की प्रक्रिया। यह गहराई से सीखने में बाधक होती है।
उद्देश्य आधारित (Objective-based)	किसी निश्चित शैक्षिक उद्देश्य या लक्ष्य को ध्यान में रखकर तैयार किया गया प्रश्न या मूल्यांकन।
विभेदीकरण (Differentiation)	ऐसे प्रश्न जो अच्छे और कमजोर छात्रों के बीच स्पष्ट अंतर कर सकें।
अनुमानित कठिनाई स्तर (Estimated Difficulty Level)	यह अनुमान कि कोई प्रश्न छात्र के लिए कितना कठिन या सरल होगा।

शब्द	अर्थ (हिंदी में)
अंक योजना (Marking Scheme)	उत्तरों के मूल्यांकन के लिए निर्धारित बिंदुओं की योजना, जिसमें प्रत्येक उत्तर का अंक भार तय किया जाता है।
वस्तुनिष्ठता (Objectivity)	मूल्यांकन में परीक्षक के व्यक्तिगत मत या पूर्वाग्रह का असर न होना। निष्पक्षता।
विषयवस्तु विशिष्ट (Content Specific)	प्रश्न का पाठ्यवस्तु से प्रत्यक्ष और उपयुक्त संबंध होना।
प्रश्नों के प्रकार (Types of Questions)	निबंधात्मक, लघु उत्तरीय, अतिलघु उत्तरीय, वस्तुनिष्ठ आदि प्रश्न-प्रकार।
प्रश्न की शब्दावली (Question Wording)	प्रश्न को स्पष्ट, सरल और निष्पक्ष भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना कि उसका एक ही अर्थ निकले।
प्रश्न-पत्र मानकीकरण (Question Paper Standardization)	मूल्यांकन की गुणवत्ता और समानता सुनिश्चित करने के लिए प्रश्न-पत्र निर्माण की एक निर्धारित प्रक्रिया।
शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods)	छात्रों को पढ़ाने के विभिन्न तरीके, जैसे व्याख्यान, चर्चा, परियोजना आदि।
समावेशिता (Inclusiveness)	ऐसा मूल्यांकन जो सभी प्रकार के छात्रों के लिए उपयुक्त व सुलभ हो।

13.6 अधिगम प्रतिफल

- प्रश्न पत्र की संकल्पना को समझना
- प्रश्न पत्र के उद्देश्यों की पहचान कर सकना
- प्रश्न पत्र की विशेषताओं का विश्लेषण करना
- प्रश्न पत्र की संरचना एवं प्रकारों में भेद करना
- प्रश्नों की भाषा और शब्दावली के महत्व को समझना
- प्रश्न पत्र निर्माण की प्रक्रिया को समझना
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में मूल्यांकन की नवीन अवधारणा को व्याख्यायित करना
- एक अच्छे प्रश्न-पत्र के गुणों की विवेचना करना

- प्रश्न-पत्र मानकीकरण के महत्व को पहचान करना
- वास्तविक जीवन आधारित प्रश्नों के प्रयोग की आवश्यकता को स्पष्ट करना ।

13.7 इकाई के अंत गतिविधियाँ

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. प्रश्न पत्र का प्रमुख उद्देश्य क्या होता है?

- A) छात्रों को डराना
B) पाठ्यक्रम को छोटा करना
C) छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताओं का मूल्यांकन करना
D) विद्यालय की रैंकिंग तय करना

उत्तर: C) छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताओं का मूल्यांकन करना

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार प्रश्न पत्र कैसा होना चाहिए?

- A) केवल स्मरण आधारित
B) रटंत पद्धति को बढ़ावा देने वाला
C) समझ और नवाचार आधारित
D) केवल कठिन प्रश्नों वाला

उत्तर: C) समझ और नवाचार आधारित

3. निम्न में से प्रश्न पत्र की कौन-सी विशेषता नहीं है?

- A) उद्देश्य आधारित
B) विषय-वस्तु-विशिष्ट
C) समय की बर्बादी
D) अनुमानित कठिनाई स्तर

उत्तर: C) समय की बर्बादी

4. प्रश्नों की भाषा कैसी होनी चाहिए?

- A) कठिन और तकनीकी
B) अस्पष्ट और जटिल
C) स्पष्ट और सामान्य
D) अंग्रेज़ी में ही

उत्तर: C) स्पष्ट और सामान्य

5. प्रश्न पत्रों के माध्यम से निम्न में से कौन-सी बात नहीं मापी जाती?

- A) छात्रों की उपस्थिति
B) विश्लेषणात्मक क्षमता
C) समस्या समाधान कौशल
D) अभिव्यक्ति क्षमता

उत्तर: A) छात्रों की उपस्थिति

6. प्रश्न पत्र के प्रकारों में कौन शामिल नहीं है?

A) निबंधात्मक

B) वस्तुनिष्ठ

C) मौखिक

D) अतिलघुत्तर

उत्तर: C) मौखिक

7. 'विभेदीकरण मूल्य' का तात्पर्य है –

A) उत्तर पुस्तिका की कीमत

B) प्रश्नों की कठिनता

C) अच्छे और कमजोर छात्रों में अंतर करने की क्षमता

D) प्रश्नों की संख्या

उत्तर: C) अच्छे और कमजोर छात्रों में अंतर करने की क्षमता

8. एक अच्छे प्रश्न पत्र की कौन-सी विशेषता है?

A) केवल सरल प्रश्न हों

B) केवल एक विषय पर केंद्रित हो

C) व्यापकता और वस्तुनिष्ठता

D) छात्रों को भ्रमित करने वाले प्रश्न

उत्तर: C) व्यापकता और वस्तुनिष्ठता

9. एक अच्छा प्रश्न पत्र कैसा होना चाहिए?

A) केवल रटंत आधारित

B) केवल अंक प्राप्त करने योग्य

C) सभी स्तर के छात्रों के लिए उपयुक्त

D) केवल कठिन प्रश्नों से युक्त

उत्तर: C) सभी स्तर के छात्रों के लिए उपयुक्त

10. प्रश्नों के उत्तर की व्याप्ति सुनिश्चित करने के लिए क्या आवश्यक है?

A) कठिन शब्दावली

B) अस्पष्ट निर्देश

C) उत्तर क्षेत्र का परिसीमन

D) प्रश्नों की संख्या बढ़ाना

उत्तर: C) उत्तर क्षेत्र का परिसीमन

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रश्न पत्र क्या है?

2. प्रश्न पत्र के प्रमुख उद्देश्य क्या हैं?

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार मूल्यांकन प्रणाली में क्या परिवर्तन सुझाए गए हैं?

4. एक अच्छा प्रश्न पत्र किन गुणों से युक्त होता है?

5. प्रश्नों की शब्दावली के चयन में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

6. प्रश्नों के प्रकार कौन-कौन से होते हैं?

7. विभेदीकरण मूल्य का क्या महत्व है?

8. प्रश्न पत्र बनाते समय 'अनुमानित कठिनाई स्तर' का क्या अर्थ है?
9. प्रश्न पत्र की उपयोगिता किन बातों पर निर्भर करती है?
10. अंक योजना (Marking Scheme) क्या होती है और क्यों आवश्यक है?

13.8 संदर्भ

- एनसीईआरटी. (2006). *मूल्यांकन की समझ*. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
- एनसीईआरटी. (2020). *शिक्षा का मूल्यांकन और मूल्यांकन की विधियाँ*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
- कुमार, कृष्ण. (2012). *शिक्षा का समाजशास्त्र*. दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यासा।
- मिश्रा, बी.एन. (2015). *शिक्षण विधियाँ और मूल्यांकन*. आगरा: विनय प्रकाशन।
- वर्मा, ओ.पी. (2016). *शिक्षा में मूल्यांकन*. मेरठ: विनोद पुस्तक मन्दिर।
- चौधरी, एस.एन. (2018). *शिक्षा में प्रश्न निर्माण की प्रक्रिया*. लखनऊ: भारतीय शिक्षण संस्थान।
- तिवारी, रेखा. (2019). *शिक्षाशास्त्र एवं मूल्यांकन*. जयपुर: किताब महल।
- शर्मा, रामनाथ. (2014). *आधुनिक शिक्षण विधियाँ*. दिल्ली: प्रकाशन केंद्र।
- पाठक, एस.पी. (2015). *प्रश्नपत्र निर्माण एवं मूल्यांकन तकनीक*. कानपुर: चेतना पब्लिकेशन।
- त्रिपाठी, वी.के. (2020). *मूल्यांकन की आधुनिक प्रवृत्तियाँ*. बनारस: शिक्षा भारती पब्लिशिंग।
- मिश्रा, शैलेन्द्र. (2021). *शिक्षा में परीक्षा प्रणाली और प्रश्नों के प्रकार*. भोपाल: विद्यार्थी पब्लिशिंग।
- एनसीईआरटी. (2008). *पुस्तकों से परे: हमारा पर्यावरण*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
- भारतीय शिक्षा अनुसंधान परिषद. (2009). *शिक्षण-अधिगम मूल्यांकन: सिद्धांत और व्यवहार*. नई दिल्ली: बी.ई.आर.सी.
- पाण्डेय, मधु. (2017). *बाल केंद्रित शिक्षा में मूल्यांकन*. इलाहाबाद: सुधा पब्लिकेशन।
- जोशी, नम्रता. (2016). *शिक्षण प्रक्रिया और प्रश्न निर्माण की कला*. दिल्ली: आर्य बुक्स।
- सिंह, वीरेन्द्र. (2018). *प्रश्न पत्र विश्लेषण और सुधार के उपाय*. पटना: ज्ञानदीप प्रकाशन।

इकाई 14 – प्रश्न पत्र रचना एवं परिणामों का विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

- 14.1 प्रस्तावना
- 14.2 उद्देश्य
- 14.3 भाषा अधिगम का दार्शनिक आधार
- 14.4 सारांश
- 14.5 शब्दावली
- 14.6 अधिगम प्रतिफल
- 14.7 इकाई के अंत की गतिविधियाँ
- 14.8 संदर्भ

14.1 प्रस्तावना

यह इकाई मूलतः प्रश्नों और प्रश्नों के स्वरूप पर आधारित है। इस इकाई में आप विभिन्न प्रकार के प्रश्नों और उनकी अवशक्तताओं के बारे में पढ़ेंगे। आप इस इकाई से यह भी समझ बना पाएंगे कि किस प्रकार के प्रश्न की आवश्यकता कब होती है और किस प्रकार के प्रश्नों के लिए कितने अंक निर्धारित किए जाएँ। आप इस इकाई से यह भी जान सकेंगे कि कौन से प्रश्नों को हल करने के लिए कितने समय और अंक आदि जरूरत है।

14.2 उद्देश्य

- विद्यार्थी प्रश्नों और उनकी अवशक्तताओं को जान सकेंगे।
- विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के प्रश्नों और उनकी आवश्यकता को समझ सकेंगे
- विद्यार्थी प्रश्नों के अंक निर्धारण को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी प्रश्नों के लिए समय निर्धारण को समझ सकेंगे।

14.3 प्रश्न पत्र रचना

मूल्यांकन की अनेक पद्धतियों में से सर्वाधिक प्रचलित और महत्वपूर्ण पद्धति लिखित परीक्षा की पद्धति है। इस परीक्षा में किसी सीमित समय के भीतर लिखित प्रश्नों के आधार पर प्राप्त छात्र/छात्राओं के उत्तरों द्वारा उनका मूल्यांकन किया जाता है। यही वह कसौटी

है जिस पर छात्र/छात्राओं और शिक्षक की सफलता का आंकलन किया जाता है। अतः यह आवश्यक है कि यह कसौटी प्रामाणिक, विश्वसनीय और सटीक हो। यह कार्य प्रश्नों के समुचित निर्माण द्वारा हो सकेगा। इसलिए मूल्यांकन की प्रक्रिया में प्रश्न पत्र निर्माण का महत्वपूर्ण स्थान बन जाता है। अतः एक अध्यापक को प्रश्न पत्र का निर्माण करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए:

- छात्र/छात्राओं की योग्यताओं के बारे में निश्चय कर लेने के उपरांत इस बात निर्णय लेना चाहिए कि किस योग्यता को कितना महत्व देना है। किसी भी विधा के शिक्षण के जितने भी उद्देश्य पूर्वनिर्धारित किये गए हैं। उनमें से किसी भी उद्देश्य की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। जैसे हिन्दी शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य यदि ज्ञान, अर्थबोध, अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध है तो अध्यापक को यह सोचना चाहिए कि इन सभी उद्देश्यों के लिए प्रश्न पत्र में कितने-कितने अंक देने हैं।
- उद्देश्यों का मान निर्धारित करने के पश्चात् अध्यापक को विषयवस्तु पर ध्यान देना चाहिए। भाषा शिक्षण या फिर हिन्दी भाषा की शिक्षा के लिए विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु का चयन किया जाता है जैसे गद्य, पद्य, रचना, व्याकरण आदि। प्रश्न पत्र बनाने से पूर्व अध्यापक या अध्यापिका को यह तय करना चाहिए कि किस विधा को या विधा के किस भाग को कितने अंक देने हैं।
- प्रश्न पत्र बनाने के लिए अब अध्यापक या अध्यापिका को पूरा पाठ्यक्रम देखकर अधिक से अधिक भाग पर प्रश्न बनाने चाहिए। इसके लिए पहले परीक्षा की समयावधि कर लेनी चाहिए और फिर सोचना चाहिए कि उस समयावधि में यथा स्तर के छात्र/छात्राएं कितना कुछ लिख सकते हैं। यह विचार करने के उपरांत प्रश्नों का चयन करना चाहिए।
- प्रश्नों के प्रकार का निर्धारण करने के लिए यह देखना चाहिए कि हिन्दी शिक्षण के किस उद्देश्य की प्राप्ति की जाँच किस प्रकार के प्रश्नों द्वारा की जा सकती है। इसका निर्णय लेने के उपरांत ही प्रश्नों के प्रकार एवं संख्या का निश्चय करना चाहिए।
- प्रश्नों के प्रकार का निर्धारण करने के उपरांत यह देखना चाहिए कि किस प्रकार के प्रश्न कितने अंकों के हों।
- अब अध्यापक को यह निर्णय लेना चाहिए कि पाठ्यवस्तु के किस भाग में से निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएँ, किस अंश में से लघु उत्तर और किस भाग में से वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछो जायें।

- अब अध्यापक को पाठ्यवस्तु सामने रखकर प्रश्नों का निर्माण करना चाहिए, प्रश्न सरल, स्पष्ट तथा सुबोध भाषा में बनाने चाहिए।
- प्रश्न इस प्रकार के हों कि प्रतिभाशाली, सामान्य एवं निम्नतम बुद्धि के सभी बच्चों का उचित मूल्यांकन हो सके।
- यदि प्रश्न पत्र में छात्र/छात्राओं को कुछ प्रश्नों की छूट देनी हो तो वह इस प्रकार से दी जाये कि छात्र/छात्राओं को पूरा प्रश्न पत्र तैयार करना पड़े।

14.2.1 प्रश्नपत्र निर्माण के सोपान

किसी भी परीक्षण की रचना करते समय हमारा मुख्य ध्येय विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त उद्देश्यों की जाँच करना है। मूल्यांकन करने में एक अच्छा प्रश्न पत्र छात्रों के बारे में अधिक से अधिक परिवर्तनों का पता लगा सकता है। प्रश्न पत्र का निर्माण करना आसान कार्य नहीं है। किसी भी विषय के संपूर्ण ज्ञान एवं प्रश्न पत्र तैयार करने में अनुभव के बिना कोई अध्यापक अच्छा प्रश्न पत्र तैयार नहीं कर सकता। प्रश्नपत्र तैयार करते समय एक निर्धारित प्रक्रिया का अनुसरण करना होता है जिसके निम्नलिखित सोपान होते हैं –

संतुलित प्रश्न-पत्र विकसित करने के चरण

एक ऐसा प्रश्न-पत्र जो सीखने के उद्देश्यों, संज्ञानात्मक स्तरों, और समग्र मूल्यांकन को ध्यान में रखे, उसे संतुलित प्रश्न-पत्र कहा जाता है। इस तरह के प्रश्न-पत्र को विकसित करने के लिए निम्नलिखित चरण अपनाने चाहिए:

चरण	प्रगति
चरण 1 : पाठ्यक्रम और अधिगम प्रतिफलों (Learning Outcomes) की समीक्षा करें	सबसे पहले उस विषय के पाठ्यक्रम और राष्ट्रीय अधिगम प्रतिफलों (Learning Outcomes) को गहराई से समझना आवश्यक है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि प्रश्न-पत्र उन क्षमताओं की जांच करे जो पाठ्यक्रम के अंतर्गत अपेक्षित हैं।
चरण 2: प्रश्न-पत्र ब्लूप्रिंट तैयार करें (Designing Blueprint)	ब्लूप्रिंट एक पूर्व-निर्धारित योजना होती है जिसमें बताया जाता है कि: <ul style="list-style-type: none"> • किस अध्याय/विषय से कितने अंक के प्रश्न होंगे।

	<ul style="list-style-type: none"> • किस संज्ञानात्मक स्तर (जैसे: याद रखना, समझना, विश्लेषण करना) पर कितने प्रश्न होंगे। • प्रश्नों के प्रकार (जैसे: वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय) • कठिनाई स्तर – सरल, मध्यम, कठिन प्रश्नों का अनुपात। <p>ब्लूप्रिंट यह सुनिश्चित करता है कि प्रश्न-पत्र संतुलित और उद्देश्यपरक हो।</p>
चरण 3: प्रश्नों की विविधता पर ध्यान दें	<p>प्रश्न केवल रटने (recall) वाले न होकर, विभिन्न प्रकार की संज्ञानात्मक क्षमताओं को परखने वाले होने चाहिए, जैसे:</p> <ul style="list-style-type: none"> • Knowledge based (ज्ञान आधारित) • Comprehension (समझ) • Application (अनुप्रयोग) • Analysis (विश्लेषण) • Synthesis and Evaluation (सृजन और मूल्यांकन) <p>इससे छात्रों की समग्र क्षमता का परीक्षण हो पाता है।</p>
चरण 4: कठिनाई स्तर का संतुलन बनाए रखें	<p>प्रश्नों का कठिनाई स्तर संतुलित होना चाहिए:</p> <ul style="list-style-type: none"> • 30% सरल प्रश्न – जो अधिकांश छात्रों से हल हो सकें • 50% मध्यम स्तर – जिनके लिए विषय की अच्छी समझ आवश्यक हो • 20% कठिन प्रश्न – जो उच्च स्तरीय सोच की माँग करते हों <p>इससे सभी स्तर के छात्रों को उपयुक्त अवसर मिलता है।</p>
चरण 5: प्रश्नों को स्पष्ट, सुसंगत और पूर्वाग्रह-	<p>प्रश्नों की भाषा स्पष्ट, संवेदनशीलता से युक्त, और पूर्वाग्रह-रहित होनी चाहिए।</p>

<p>रहित बनाएं</p>	<p>इसमें भाषाई, लैंगिक, सांस्कृतिक या सामाजिक पक्षपात से बचना जरूरी है।</p> <p>उदाहरण: "पिता बैंक में काम करते हैं" जैसे वाक्यों के बजाय, "अभिभावक..." जैसे समावेशी शब्दों का प्रयोग करें।</p>
<p>चरण 6: अंकन योजना (Marking Scheme) तैयार करें</p>	<p>प्रत्येक प्रश्न के लिए एक स्पष्ट अंकन योजना बनाई जानी चाहिए:</p> <ul style="list-style-type: none"> • किस उत्तर के लिए कितने अंक मिलेंगे • किस बिंदु पर अंक कटेंगे • वैकल्पिक उत्तरों के लिए दिशा-निर्देश <p>यह मूल्यांकन में एकरूपता और निष्पक्षता लाता है।</p>
<p>चरण 7: प्रश्न-पत्र का परीक्षण और समीक्षा करें</p>	<p>तैयार प्रश्न-पत्र को विषय विशेषज्ञों द्वारा परीक्षण और समीक्षा के लिए भेजा जाना चाहिए:</p> <ul style="list-style-type: none"> • क्या प्रश्न पाठ्यक्रम के अनुरूप हैं? • क्या कोई त्रुटि, अस्पष्टता, या पक्षपात है? • क्या संतुलन बना हुआ है? <p>यह गुणवत्ता सुनिश्चित करने की अंतिम और महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इन चरणों को अपनाकर तैयार किया गया प्रश्न-पत्र:</p> <ul style="list-style-type: none"> • संतुलित, • सीखने के उद्देश्यों पर केंद्रित, • और छात्रों की विविध क्षमताओं की सटीक जांच करने वाला होता है। <p>यह केवल परीक्षा लेने का साधन नहीं, बल्कि सीखने को बढ़ावा देने का प्रभावी उपकरण बन जाता है।</p>

इस इकाई के प्रश्न पत्र को बेहतर तरीके से समझने के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) द्वारा वर्ष-2024 की हिंदी की वार्षिक परीक्षा के लिए निर्मित एक प्रश्न पत्र लिंक दे रहे हैं।

https://cbseacademic.nic.in/web_material/SQP/ClassX_2024_25/HindiCourseA-SQP.pdf

इस दिये गए लिंक पर क्लिक करें और प्रश्न पत्र का ध्यान पूर्वक आवलोकन करें और उपर्युक्त सारणी के चरणों से मिलान करें।

14.2.2 स्कोरिंग कुंजी/मार्किंग योजना तैयार करना

अंकन योजनाएँ शैक्षिक मूल्यांकन में आवश्यक उपकरण हैं, जो शिक्षकों के लिए संरचित मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करती हैं ताकि वे व्यवस्थित, निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से निर्मित प्रतिक्रिया प्रश्नों का मूल्यांकन कर सकें। वे ग्रेडिंग की स्थिरता और निष्पक्षता को बढ़ाते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि मूल्यांकन छात्रों की वास्तविक समझ, कौशल और प्रयास को दर्शाता है। मजबूत और व्यापक अंकन योजनाएँ विकसित करने के लिए, निम्नलिखित सिद्धांतों का पालन किया जाना चाहिए। इस इकाई के प्रश्न पत्र को बेहतर तरीके से समझने के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) द्वारा वर्ष-2024 की हिंदी की वार्षिक परीक्षा के उपरोक्त निर्मित एक प्रश्न पत्र की अंक योजना का लिंक दे रहे हैं।

https://cbseacademic.nic.in/web_material/SQP/ClassX_2024_25/HindiCourseA-MS.pdf

इस दिये गए लिंक पर क्लिक करें और प्रश्न पत्र की अंक योजना का ध्यान पूर्वक आवलोकन करें और उपर्युक्त सारणी के चरणों से मिलान करें।

14.2.2.1 विशिष्ट संज्ञानात्मक डोमेन और सामग्री के साथ संरेखण

अंकन योजनाएँ सीधे आइटम द्वारा लक्षित कौशल और सामग्री के अनुरूप होनी चाहिए। प्रत्येक आइटम विशिष्ट शिक्षण उद्देश्यों का आकलन करता है, चाहे वह वैचारिक समझ, विश्लेषणात्मक क्षमता, समस्या-समाधान या रचनात्मकता हो। अंकों को इस तरह से वितरित किया जाना चाहिए कि इन इच्छित परिणामों पर जोर दिया जाए, यह सुनिश्चित करते हुए कि मूल्यांकन प्रश्न के फोकस को दर्शाता है।

14.2.2.2 वैध मान बिंदु के लिए अंकों का आनुपातिक आवंटन

- अंकों का वितरण आनुपातिक होना चाहिए: अपेक्षित सामग्री का दायरा: विस्तृत

स्पष्टीकरण, कई चरणों या व्यापक तर्क की आवश्यकता वाले आइटम को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए।

- आवश्यक समय निवेश: अंकों को छात्रों द्वारा प्रतिक्रिया देने के लिए आवश्यक अनुमानित समय के साथ संरेखित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, बहु-चरणीय समस्या-समाधान या जटिल विश्लेषण से जुड़े आइटम को उच्च अंक आवंटित किए जाने चाहिए।

यह दृष्टिकोण निष्पक्षता सुनिश्चित करता है, क्योंकि छात्रों को उनके उत्तरों में प्रयास और गहराई के लिए उचित रूप से पुरस्कृत किया जाता है।

14.2.2.3 वैध और विस्तारित उत्तरों की मान्यता

जबकि अंकन योजना में सही और वैध उत्तरों की रूपरेखा होनी चाहिए, इसमें उन उत्तरों को पुरस्कृत करने की लचीलापन भी होनी चाहिए जो:

- स्कूल बोर्डों के मूल्यांकन प्रथाओं में समानता को बढ़ावा देने के लिए संतुलित प्रश्न पत्र तैयार करने के लिए दिशानिर्देश पाठ्यक्रम के दायरे से परे जाएं। रचनात्मक सोच, आलोचनात्मक विश्लेषण या अद्वितीय दृष्टिकोण प्रदर्शित करें।
- रूब्रिक्स में वैकल्पिक वैध प्रतिक्रियाओं के प्रावधान शामिल होने चाहिए जिनका स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है लेकिन सटीक तर्क या उन्नत समझ को दर्शाते हैं। यह लचीलापन नवाचार को प्रोत्साहित करता है और उन छात्रों को पुरस्कृत करता है जो आलोचनात्मक रूप से सोचते हैं या ज्ञान को नए तरीकों से लागू करते हैं।

14.2.2.4 व्यक्तिपरकता को कम करने के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश

मूल्यांकन में व्यक्तिपरकता निष्पक्षता से समझौता कर सकती है। इसे खत्म करने के लिए, अंकन योजनाओं में निम्नलिखित शामिल होने चाहिए:

- विस्तृत निर्देश: सही या पूर्ण उत्तर क्या है, इसका स्पष्ट विवरण।
- स्पष्ट मानदंड: उत्तर के विभिन्न घटकों (जैसे, संरचना, सटीकता, मौलिकता) के लिए अंकों का विभाजन।
- समग्र स्कोरिंग के बजाय विश्लेषणात्मक: जहाँ तक संभव हो, रूब्रिक्स को बाइनरी निर्धारणों की एक श्रृंखला का उपयोग करना चाहिए (जैसे कि वैध थीसिस कथन मौजूद है या नहीं?) विषय वाक्यों के आसपास व्यवस्थित पैराग्राफ के रूप में प्रस्तुत किया गया

है या नहीं?) बजाय इसके कि एक प्रतिक्रिया की समग्र गुणवत्ता के बारे में व्यापक कथन (उदाहरण के लिए "प्रतिक्रिया एक अत्यधिक प्रेरक निबंध है।")

- उदाहरणात्मक प्रतिक्रियाएँ: मॉडल उत्तर, या नमूना प्रतिक्रियाएँ मूल्यांकनकर्ताओं को अपेक्षित मानक को समझने और अस्पष्टता को कम करने में मदद कर सकती हैं।

ग्रेडिंग में स्थिरता तब प्राप्त होती है जब मूल्यांकनकर्ताओं के पास एक सटीक संदर्भ बिंदु होता है, जो व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों या व्याख्याओं के प्रभाव को कम करता है।

14.2.2.5 विस्तृत मूल्य बिंदु

प्रत्येक अंकन योजना में प्रत्येक प्रश्न के लिए मुख्य मूल्य बिंदु निर्दिष्ट होने चाहिए। ये मूल्य बिंदु:

- उत्तर के महत्वपूर्ण तत्वों को हाइलाइट करें जिन्हें अंक अर्जित करने के लिए शामिल किया जाना चाहिए।
- मूल्यांकनकर्ताओं को व्यवस्थित रूप से उत्तरों का मूल्यांकन करने के लिए एक स्पष्ट रूपरेखा प्रदान करें। उदाहरण के लिए, विज्ञान में एक लंबे उत्तर वाले प्रश्न में शब्दों को परिभाषित करने, सिद्धांतों की व्याख्या करने और प्रासंगिक उदाहरण या आरेख प्रदान करने के लिए मूल्य बिंदु शामिल हो सकते हैं।
- प्रतिक्रियाओं को मापने योग्य घटकों में विभाजित करके, मूल्य बिंदु यह सुनिश्चित करते हैं कि अंकन प्रक्रिया व्यवस्थित और संपूर्ण दोनों हो।

14.2.2.6 रूब्रिक्स में नकारात्मक अंकन से बचना

अंकन योजनाओं को त्रुटियों को दंडित करने के बजाय सही या आंशिक रूप से सही प्रतिक्रियाओं को पुरस्कृत करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। रूब्रिक के भीतर नकारात्मक अंक परिभाषित करने से भ्रम पैदा हो सकता है और छात्रों को प्रश्नों का प्रयास करने से हतोत्साहित किया जा सकता है। इसके बजाय:

- त्रुटियों को समग्र अंकों को प्रभावित किए बिना फीडबैक में नोट किया जाना चाहिए।
 - रूब्रिक्स को सकारात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करने पर जोर देना चाहिए जो प्रयास और वैध प्रयासों को स्वीकार करते हुए सधार के क्षेत्रों को उजागर करता है।
- रूब्रिक्स को गंभीर वैचारिक या प्रक्रियात्मक त्रुटियों के बीच अंतर करना चाहिए और यथासंभव निर्दिष्ट करना चाहिए जो किसी प्रतिक्रिया को पूर्ण क्रेडिट प्राप्त करने से रोकते हैं और छोटी त्रुटियां जो प्रतिक्रिया की समग्र गुणवत्ता को कम नहीं करती हैं।
- रूब्रिक की भाषा को इस तरह से तैयार करना अच्छा अभ्यास है कि यह छात्र की क्षमताओं या कमियों के बजाय प्रतिक्रिया की विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करे।

14.2.2.7 विषय-विशेष विचार

विभिन्न विषयों के लिए अलग-अलग प्रतिक्रिया प्रारूप की आवश्यकता होती है, जो उनकी विषय-वस्तु और उद्देश्यों की अनूठी प्रकृति को दर्शाता है:

- गणित और विज्ञान: प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन सटीकता, तार्किक तर्क और चरणबद्ध समस्या-समाधान के लिए किया जाना चाहिए। जहाँ लागू हो, आरेख और इकाइयों पर विचार किया जाना चाहिए।
- भाषाएँ: विषय-वस्तु, संरचना, व्याकरण और रचनात्मकता पर ध्यान दें। व्यक्तिपरक उत्तरों (जैसे, निबंध) के लिए सुसंगतता और मौलिकता जैसे विभिन्न पहलुओं के लिए भार के साथ अच्छी तरह से परिभाषित रूब्रिक की आवश्यकता होती है।
- मानविकी: मूल्यांकन में तर्क, आलोचनात्मक विश्लेषण और साक्ष्य के उपयोग पर विचार किया जाना चाहिए। अंकन योजनाओं में स्पष्टता और तर्क की गहराई पर जोर दिया जाना चाहिए।

प्रत्येक विषय के लिए कस्टम टेम्पलेट तैयार किए जाने चाहिए, जिसमें ऐसे उदाहरण और प्रतिक्रिया संरचनाएँ शामिल हों जो विषय-विशिष्ट माँगों को दर्शाती हों।

14.2.2.8 निष्पक्ष और समावेशी मूल्यांकन को प्रोत्साहित करना

अंकन योजनाएँ समावेशी होनी चाहिए और छात्रों की विविध क्षमताओं और शक्तियों का निष्पक्ष मूल्यांकन करने के लिए डिज़ाइन की जानी चाहिए। इसे सुनिश्चित करने के लिए कुछ रणनीतियाँ शामिल हैं:

- रूब्रिक्स में ऐसी भाषा का उपयोग करना जो स्पष्ट और सुलभ हो।
- समस्या-समाधान या तर्क के लिए वैकल्पिक वैध दृष्टिकोणों को समायोजित करना।
- स्कूल बोर्ड के मूल्यांकन प्रथाओं में समानता को बढ़ावा देने के लिए संतुलित प्रश्न पत्र सेट करने के लिए दिशानिर्देश।
- मूल्यांकनकर्ताओं के लिए अद्वितीय या अप्रत्याशित प्रतिक्रियाओं को संभालने के तरीके पर अतिरिक्त मार्गदर्शन प्रदान करना।

एक अच्छी तरह से निर्मित अंकन योजना एक प्रभावी मूल्यांकन के रूप में कार्य करती है, यह सुनिश्चित करती है कि ग्रेडिंग सुसंगत, उद्देश्यपूर्ण और छात्रों के प्रयासों और क्षमताओं को दर्शाती है। इन सिद्धांतों का पालन करके - सीखने के उद्देश्यों, आनुपातिकता, लचीलेपन और विषय-विशिष्ट बारीकियों के साथ संरेखण पर जोर देते हुए - शिक्षक अधिक पारदर्शी और न्यायसंगत मूल्यांकन को बढ़ावा दे सकते हैं

14.3 प्रश्नोत्तरो की जाँच

प्रश्नोत्तरो की जाँच में अधिकतम व्यक्ति निरपेक्षता लाने के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है। यह कार्य निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है-

लेखरूपी प्रश्नों के लिए

- प्रत्येक प्रश्न और उसके खंडों के पूर्णांक पूर्वनिश्चित करने होंगे।
- समस्त उत्तर पुस्तिकाओं के एक प्रश्न को एक समय में जाँचना होगा।

व्यक्ति-निरपेक्ष प्रश्नों के लिए

- सही उत्तर तालिका पहले ही बना लेनी होगी।
- यदि किसी गलत उत्तर का पता चलता है, तो उसे सहीकरके समस्त उत्तर पुस्तिकाओं के उस विशिष्ट प्रश्न को पुनः जाँचना होगा।

14.4 प्रश्न विश्लेषण

छात्र/छात्राओं द्वारा अर्जित प्राप्तांकों का प्रश्नानुसार विश्लेषण उनके प्रश्नों की उपयुक्तता पर प्रकाश डालता है। हमें ज्ञात है कि ऐसे सरल प्रश्न जिनका उत्तर सभी सही उत्तर दे सकें या ऐसे कठिन प्रश्न जिनका उत्तर कोई न दे सके- प्रश्न पत्र में उचित नहीं है। उत्तम प्रश्न वह है जो उच्च और निम्न छात्र/छात्राओं का भेद बता सके। कोई ऐसा है या नहीं, इसका पता प्राप्तांकों द्वारा किया जा सकता है। साधारणतः पूरे प्रश्न पत्र के आधार पर प्रथम 26 प्रतिशत सबसे अधिक अंक पाने वाले और सबसे कम अंक पाने वाले अंतिम 26 प्रतिशत छात्र/छात्राओं को छाँट लेना चाहिए। इसके बाद दोनों वर्गों द्वारा किसी प्रश्न के संबंध में दिये गए सही उत्तरों की संख्या लिख लेनी चाहिए। इन दोनों के योग द्वारा प्रश्नों का कठिनाई मूल्य (डिपिफकल्टी वैल्यू) और अंतर द्वारा भेद मूल्य (डिस्किमिनेंटिंग वैल्यू) ज्ञात हो जाता है। इनमें जिन प्रश्नों का कठिनाई मूल्य औसत के आस-पास और भेदक मूल्य यथेष्ट है, वे ही उपयुक्त है और शेष व्यर्थ। प्रश्न विश्लेषण एक महत्वपूर्ण कौशल है जिसमें किसी प्रश्न का उत्तर देने से पहले उसके घटकों और आवश्यकताओं को समझना शामिल होता है। यह प्रक्रिया प्रश्न की सटीक व्याख्या करने और प्रभावी उत्तर तैयार करने में मदद करती है। इसमें निर्दिष्ट कार्य को समझने के लिए कीवर्ड, प्रतिबंधित शब्दों और निर्देशात्मक शब्दों की पहचान करना शामिल है।

14.4.1 प्रश्न विश्लेषण में मुख्य चरण:

- प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़ें: पूर्ण समझ सुनिश्चित करने के लिए प्रश्न को कई बार ध्यानपूर्वक पढ़ें।

- कीवर्ड पहचानें: प्रश्न का मुख्य विषय या विषयवस्तु स्पष्ट करें।
- प्रतिबंधात्मक शब्दों को पहचानें: ऐसे किसी भी शब्द या वाक्यांश पर ध्यान दें जो प्रश्न के फोकस या दायरे को सीमित करता हो।
- निर्देश शब्दों को समझें: निर्धारित करें कि प्रश्न आपसे क्या करने को कह रहा है (जैसे, वर्णन करना, व्याख्या करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, मूल्यांकन करना)।
- अपने शब्दों में पुनः लिखें: प्रश्न को पुनः लिखें ताकि आप इसका मूल अर्थ और आशय समझ सकें।

14.4.2 प्रश्न विश्लेषण का महत्व:

- सटीक व्याख्या: इससे प्रश्न की गलत व्याख्या करने और अप्रासंगिक उत्तर देने का जोखिम कम हो जाता है।
- प्रभावी प्रतिक्रिया: एक अच्छी तरह से संरचित और केंद्रित प्रतिक्रिया के विकास का मार्गदर्शन करता है।
- बेहतर स्पष्टता: प्रश्न की विशिष्ट आवश्यकताओं को स्पष्ट करने में सहायता करता है।
- बढ़ा हुआ प्रदर्शन: प्रासंगिक और लक्षित उत्तर सुनिश्चित करके मूल्यांकन और कार्यों पर बेहतर प्रदर्शन को बढ़ावा मिलता है।

14.4.3 निर्देश शब्दों के उदाहरण:

- वर्णन करना: किसी चीज़ का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करें।
- व्याख्या करना: स्पष्ट करें कि कोई बात कैसे या क्यों घटित होती है।
- विश्लेषण करें: किसी विषय को उसके घटक भागों में विभाजित करें और उनके संबंधों की जांच करें।
- तुलना करना: दो या अधिक चीज़ों के बीच समानताएं और अंतर पहचानें।
- मूल्यांकन करना: किसी चीज़ की ताकत और कमज़ोरियों का आकलन करें।
- चर्चा करना: विभिन्न दृष्टिकोणों और तर्कों पर विचार करें।

14.5 सारांश

यह इकाई प्रश्न पत्र निर्माण और उसके विश्लेषण की प्रक्रिया को विस्तार से स्पष्ट करती है। इसमें बताया गया है कि प्रश्नों के प्रकार, उनकी आवश्यकता, अंक निर्धारण और समय नियोजन जैसे पहलुओं को ध्यान में रखते हुए प्रश्न पत्र तैयार किया जाना चाहिए। प्रश्न पत्र शिक्षण उद्देश्यों

के अनुसार संतुलित होना चाहिए, जिसमें ज्ञान, समझ, विश्लेषण, सृजनात्मकता आदि की जांच करने वाले प्रश्न शामिल हों। प्रश्न पत्र निर्माण के लिए ब्लूप्रिंट तैयार करना, कठिनाई स्तर का संतुलन बनाए रखना, स्पष्ट और समावेशी भाषा का प्रयोग, तथा प्रश्नों की विविधता आवश्यक है। साथ ही, मार्किंग स्कीम यानी अंकन योजना का विकास भी जरूरी है, जिससे मूल्यांकन निष्पक्ष, पारदर्शी और सुसंगत हो। अच्छी अंक योजना में विषय विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप उत्तरों के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश, उदाहरणात्मक उत्तर और वैकल्पिक प्रतिक्रियाओं की स्वीकृति शामिल होती है। प्रश्नोत्तर की जांच प्रक्रिया में अधिकतम निरपेक्षता बनाए रखने के लिए प्रत्येक उत्तर पुस्तिका को व्यवस्थित तरीके से जांचना आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त, प्रश्न विश्लेषण द्वारा यह आकलन किया जाता है कि कौन-से प्रश्न सरल, कठिन या छात्रों के बीच अंतर बताने में सक्षम हैं। इस प्रक्रिया में कठिनाई मूल्य और भेद मूल्य जैसे संकेतकों का प्रयोग होता है। अंततः, निर्देशात्मक शब्दों की पहचान, प्रश्न की स्पष्ट व्याख्या और लक्षित उत्तर देने की रणनीति छात्रों की उत्तर देने की दक्षता को बेहतर बनाती है। यह इकाई समावेशी, उद्देश्यपरक और प्रभावी मूल्यांकन प्रणाली विकसित करने के लिए शिक्षकों को एक सशक्त आधार प्रदान करती है।

14.6 अधिगम प्रतिफल

- विद्यार्थी प्रश्न पत्र निर्माण की प्रक्रिया को समझ
- विद्यार्थी ब्लूप्रिंट की सहायता से संतुलित प्रश्न पत्र तैयार करना सीख सकेंगे जो विभिन्न संज्ञानात्मक स्तरों को समाहित करता हो।
- विद्यार्थी मूल्यांकन की निष्पक्षता हेतु उपयुक्त अंकन योजना (मार्किंग स्कीम) तैयार करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रश्नों का विश्लेषण कर सकेंगे, जिसमें कठिनाई मूल्य और भेद मूल्य के माध्यम से प्रश्नों की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाता है।
- विद्यार्थी निर्देशात्मक शब्दों की पहचान कर प्रश्नों की सटीक व्याख्या और प्रभावी उत्तर लेखन की रणनीति विकसित कर सकेंगे।

14.7 शब्दावली

शब्द

अर्थ (हिंदी में)

प्रश्न पत्र

परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों का लिखित दस्तावेज़। इसका

शब्द**अर्थ (हिंदी में)**

(Question Paper)	उद्देश्य छात्रों के ज्ञान, समझ, विश्लेषण व कौशल का मूल्यांकन करना होता है।
ब्लूप्रिंट (Blueprint)	प्रश्न-पत्र निर्माण की पूर्व योजना, जिसमें विषयवस्तु, कठिनाई स्तर, प्रश्नों के प्रकार और अंक वितरण का संतुलित निर्धारण शामिल होता है।
संज्ञानात्मक क्षमताएँ (Cognitive Abilities)	सोचने, समझने, विश्लेषण करने, सृजनात्मकता और समस्या-समाधान करने की मानसिक क्षमताएँ।
मूल्यांकन (Evaluation)	सीखने की प्रगति, ज्ञान और योग्यता की जांच व समीक्षा करने की प्रक्रिया।
अंक योजना (Marking Scheme)	उत्तरों के मूल्यांकन के लिए निर्धारित बिंदुओं की योजना, जिसमें प्रत्येक उत्तर का अंक भार तय किया जाता है।
कठिनाई मूल्य (Difficulty Value)	यह मापदंड दर्शाता है कि प्रश्न विद्यार्थियों के लिए कितना कठिन या सरल है।
भेद मूल्य (Discriminating Value)	ऐसा मापदंड जो यह बताता है कि प्रश्न अच्छे और कमजोर छात्रों के बीच कितना अंतर कर सकता है।
वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Question)	निश्चित उत्तर वाले प्रश्न, जैसे – बहुविकल्पीय प्रश्न, जिनमें परीक्षक की व्यक्तिगत राय का प्रभाव नहीं पड़ता। उत्तरों के मूल्यांकन के लिए उपयोग होने वाला विस्तृत
रूब्रिक (Rubric)	मानदंड, जो उत्तर के प्रत्येक भाग के लिए स्पष्ट अंक विभाजन को दर्शाता है।
समावेशिता (Inclusiveness)	ऐसा मूल्यांकन जो विविध क्षमताओं, पृष्ठभूमियों और आवश्यकताओं वाले सभी छात्रों के लिए उपयुक्त, सुलभ और निष्पक्ष हो।

14.8 इकाई अंत अभ्यास

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. प्रश्न पत्र निर्माण का प्रथम चरण क्या होता है?

A. प्रश्नों का विश्लेषण

B. प्रश्नों की संख्या तय करना

C. पाठ्यक्रम और अधिगम प्रतिफलों की समीक्षा

D. उत्तर पुस्तिका तैयार करना

उत्तर: C

2. ब्लूप्रिंट का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

A. परीक्षा केंद्र निर्धारण

B. विद्यार्थियों का मूल्यांकन

C. संतुलित प्रश्न पत्र तैयार करना

D. उत्तर पुस्तिका जाँचना

उत्तर: C

3. निम्न में से कौन-सा प्रश्न वस्तुनिष्ठ होता है?

A. निबंध लेखन

B. लघु उत्तर प्रश्न

C. बहुविकल्पीय प्रश्न

D. वर्णनात्मक प्रश्न

उत्तर: C

4. मूल्यांकन में भेद मूल्य दर्शाता है—

A. प्रश्न का कठिनाई स्तर

B. प्रश्न का अंक भार

C. उच्च व निम्न छात्रों के बीच अंतर की पहचान

D. परीक्षा की अवधि

उत्तर: C

5. कठिनाई मूल्य का तात्पर्य है—

A. प्रश्न पत्र की लंबाई

B. छात्रों के लिए प्रश्न कितना सरल या कठिन है

C. अंक निर्धारण की प्रक्रिया

D. मूल्यांकन की निष्पक्षता

उत्तर: B

6. प्रश्नों की भाषा कैसी होनी चाहिए?

A. कठिन और शास्त्रीय

B. जटिल और लंबी

C. सरल, स्पष्ट और पक्षपात रहित

D. बोलचाल की भाषा में

उत्तर: C

7. "वर्णन करें", "विश्लेषण करें", "तुलना करें" जैसे शब्द कहलाते हैं—

A. निर्देशात्मक शब्द

B. विषयवस्तु शब्द

C. क्रिया शब्द

D. विश्लेषणात्मक शब्द

उत्तर: A

8. एक अच्छा प्रश्न पत्र किस प्रकार होना चाहिए?

A. केवल आसान प्रश्नों वाला

B. केवल कठिन प्रश्नों वाला

C. संतुलित और उद्देश्य आधारित

D. केवल रटंत आधारित

उत्तर: C

9. अंकन योजना का उद्देश्य क्या है?

A. प्रश्न पत्र की छपाई

B. छात्रों की उपस्थिति लेना

C. उत्तरों का निष्पक्ष मूल्यांकन

D. परीक्षा का समय तय करना

उत्तर: C

10 निम्न में से कौन-सा प्रश्न प्रकार रचनात्मक उत्तर को प्रोत्साहित करता है?

A. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

B. लघु उत्तरीय प्रश्न

C. निबंधात्मक प्रश्न

D. बहुविकल्पीय प्रश्न

उत्तर: C

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रश्न-पत्र निर्माण प्रक्रिया में 'संज्ञानात्मक स्तरों' के संतुलन का क्या महत्व है? इसे उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. ब्लूप्रिंट तैयार करते समय किन-किन तत्वों को ध्यान में रखा जाता है और यह कैसे सुनिश्चित करता है कि प्रश्न पत्र उद्देश्यपरक हो?
3. कठिनाई मूल्य और भेद मूल्य के आधार पर किसी प्रश्न की उपयुक्तता का विश्लेषण किस प्रकार किया जाता है?
4. रूब्रिक आधारित मूल्यांकन वस्तुनिष्ठता सुनिश्चित करने में कैसे सहायक होता है? इसके लाभों की व्याख्या कीजिए।
5. प्रश्नों की भाषा को स्पष्ट, सरल एवं पूर्वाग्रह रहित रखने की आवश्यकता क्यों है? इसके क्या संभावित सामाजिक और शैक्षिक प्रभाव हो सकते हैं?
6. निर्देशात्मक शब्दों की पहचान और व्याख्या विद्यार्थियों को प्रभावी उत्तर लेखन में कैसे सहायता करती है?
7. एक समावेशी प्रश्न पत्र तैयार करने में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए ताकि सभी स्तर के छात्र निष्पक्ष रूप से मूल्यांकित हो सकें?
8. विषय-विशिष्ट उत्तर मूल्यांकन में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, विशेष रूप से भाषा और मानविकी विषयों में?

9. मूल्यांकन की प्रक्रिया में लचीलापन और विविध वैध उत्तरों की स्वीकृति छात्रों की नवाचार और आलोचनात्मक सोच को कैसे बढ़ावा देती है?
10. प्रश्न-पत्र की समीक्षा प्रक्रिया (Review and Moderation) क्यों आवश्यक होती है और इसके बिना कौन-सी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं?

14. 9 संदर्भ

1. एनसीईआरटी. (2006). मूल्यांकन की समझ. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
2. एनसीईआरटी. (2020). शिक्षा का मूल्यांकन और मूल्यांकन की विधियाँ. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
3. कुमार, कृष्ण. (2012). शिक्षा का समाजशास्त्र. दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।
4. मिश्रा, बी.एन. (2015). शिक्षण विधियाँ और मूल्यांकन. आगरा: विनय प्रकाशन।
5. वर्मा, ओ.पी. (2016). शिक्षा में मूल्यांकन. मेरठ: विनोद पुस्तक मन्दिर।
6. चौधरी, एस.एन. (2018). शिक्षा में प्रश्न निर्माण की प्रक्रिया. लखनऊ: भारतीय शिक्षण संस्थान।
7. तिवारी, रेखा. (2019). शिक्षाशास्त्र एवं मूल्यांकन. जयपुर: किताब महल।
8. शर्मा, रामनाथ. (2014). आधुनिक शिक्षण विधियाँ. दिल्ली: प्रकाशन केंद्र।
9. पाठक, एस.पी. (2015). प्रश्नपत्र निर्माण एवं मूल्यांकन तकनीक. कानपुर: चेतना पब्लिकेशन।
10. त्रिपाठी, वी.के. (2020). मूल्यांकन की आधुनिक प्रवृत्तियाँ. बनारस: शिक्षा भारती पब्लिशिंग।
11. मिश्रा, शैलेन्द्र. (2021). शिक्षा में परीक्षा प्रणाली और प्रश्नों के प्रकार. भोपाल: विद्यार्थी पब्लिशिंग।
12. एनसीईआरटी. (2008). पुस्तकों से परे: हमारा पर्यावरण. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
13. भारतीय शिक्षा अनुसंधान परिषद. (2009). शिक्षण-अधिगम मूल्यांकन: सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: बी.ई.आर.सी.

इकाई 15 – प्रश्नों का स्वरूप और आधार बिन्दु

इकाई की रूपरेखा

- 15.1 प्रस्तावना
- 15.2 उद्देश्य
- 15.3 भाषा अधिगम का दार्शनिक आधार
- 15.4 सारांश
- 15.5 शब्दावली
- 15.6 अधिगम प्रतिफल
- 15.7 इकाई के अंत की गतिविधियाँ
- 15.8 संदर्भ

15.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप प्रश्नों और उनके स्वरूप तथा प्रश्न निर्माण के विभिन्न आधारों के बारे में जान सकेंगे। जैसा हमने पहले भी पढ़ा है कि प्रत्येक प्रश्न-पत्र का प्रत्येक प्रश्न इस प्रकार से बनाया जाना चाहिए कि जब उसे संयुक्त रूप से प्रश्न-पत्र में सम्मिलित किया जाए तो वह मापन या आकलन का सर्वांगीण सफल साधन बन जाए। इसी प्रकार आगे प्रश्नों से संबन्धित विस्तृत चर्चा की गई है।

15.2 उद्देश्य

- विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के प्रश्नों और उनकी आवश्यकता को समझ सकेंगे
- विद्यार्थी प्रश्नों और उनकी आधारों को जान सकेंगे।
- विद्यार्थी प्रश्नों का निर्माण करना सीख सकेंगे।

15.3 प्रश्नों का स्वरूप

प्रश्न निर्माण के कई तरीके हैं। इनमें हम इकाई का विभाजन कई आधारों पर कर सकते हैं। इस इकाई में आप निम्नलिखित आधारों पर प्रश्नों के बारे में पढ़ेंगे।

- उद्देश्यनिष्ठ आधार पर प्रश्न
- उत्तर सीमा के आधार पर प्रश्न
- समस्या समाधान संबंधी प्रश्न

- सजनात्मक चिंतन वाले प्रश्न और कल्पनाशीलता को जीवित करने वाले प्रश्न
- समालोचनात्मक चिंतन वाले प्रश्न

15.3.1 उद्देश्यनिष्ठ प्रश्नों के प्रकार (Forms of Objective-Based Questions)

शिक्षण और परीक्षण के विभिन्न उद्देश्यों के परीक्षण के लिए निर्मित प्रश्नों को ही उद्देश्यनिष्ठ प्रश्न कहते हैं। ये विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं जिनमें से उद्देश्य निष्ठ प्रश्न भी एक प्रकार होता है। इनके तीन प्रकार हैं: निबन्धात्मक प्रश्न (दीर्घ उत्तर प्रकार), लघु उत्तर प्रकार, और अति लघु उत्तर प्रकार। ये सभी प्रश्न किसी न किसी उद्देश्य/योग्यता/क्षमता/कुशलता का परीक्षण करते हैं। इस दृष्टि से सभी उद्देश्य-आधारित प्रश्न, उद्देश्य-निष्ठ होते हैं। यद्यपि सभी उद्देश्य-आधारित प्रश्न उद्देश्य-निष्ठ प्रकार के नहीं होते।

इस प्रकार प्रश्नों को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। आगे प्रश्नों के विभिन्न प्रकारों, की विशेषताओं, उनकी शक्तियों और दुर्बलताओं के बिन्दुओं और उनके निर्माण के नियमों की चर्चा की जाएगी। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, विषय-वस्तु (विषय) और उद्देश्यों (योग्यताओं) के आधार पर ही प्रश्नों के प्रकारों-निबन्धात्मक, लघुत्तर, अतिलघुत्तर या वस्तुनिष्ठ को चुना जा सकता है।

प्रश्न प्रकार (Question Form)

- निश्चित अनुक्रिया के प्रश्न (Fixed response questions)
- वस्तुनिष्ठ (Objective Type)
- सत्य-असत्य
- मिलान
- सही-गलत प्रकार (True False Matching Type)
- मुक्त अनुक्रिया के प्रश्न (Free response questions)
- अति लघु-उत्तर (Very Short Answer Type)
- लघु-उत्तर प्रकार (Short Answer Type)
- निबन्धात्मक प्रकार/दीर्घ उत्तर प्रकार (Essay Type/Long Answer Type)
- रिक्त स्थान(Fill-in-the blank Type)
- बहुविकल्पी(Multiple Choice Type)
- केवल सही केवल गलत
- सही उत्तर प्रकार (Only Correct Answer Type)

- केवल गलत उत्तर प्रकार (Only Wrong Answer Type)
- सर्वोत्तम उत्तर प्रकार (Best Answer Type)
- मिश्रित प्रकार (Mixed Type)

लिखित परीक्षण के मूल्यांकन के बहुप्रयुक्त उपकरणों में दो प्रकार के प्रश्न आते हैं- एक मुक्त अनुक्रिया वाले और दूसरे निश्चित अनुक्रिया वाले। दीर्घ उत्तर या निबंधात्मक प्रश्नों का जो मूलतः मुक्त अनुक्रिया वाले प्रश्न होते हैं, प्रयोग काफी समय से हो रहा है। पारंपरिक प्रश्नपत्रों में तो इसी प्रकार के प्रश्न होते रहे हैं। परंतु अब, इनकी कमजोरियों के अनुभव के पश्चात् (जैसाकि देश और विदेशों में हुए अनुसंधानों से सिद्ध हो चुका है।) और उनकी परिशुद्धता या सटीकता, परीक्षा परिणामों की वस्तुनिष्ठता और निर्भरता पर पड़ने वाले बुरे प्रभाव के कारण, लघूत्तर प्रश्न, जो इसी प्रकार के होते हैं, अब अधिक प्रचलित हो गए हैं। निश्चित अनुक्रिया वाले प्रश्न (अति लघूत्तर और वस्तुनिष्ठ) इस प्रकार के होते हैं, जिनके उत्तर निश्चित होते हैं और उनके अपेक्षित उत्तरों से भिन्न सभी उत्तर अशुद्ध माने जाते हैं। इसके विपरीत मुक्त अनुक्रिया वाले प्रश्नों के उत्तर में परीक्षार्थी अपने उत्तर की भाषा के प्रयोग में स्वतंत्र रहता है। नदीचं उत्तर या मुक्त अनुक्रिया वाले प्रश्नों का प्रयोग अब भी सीमित रूप में होता है। परन्तु उन्हीं योग्यताओं के परीक्षण का तो तर होता है, जिनका परीक्षण अन्य प्रकार के प्रश्नों द्वारा प्रभावी रूप से नहीं कर सकते। विविध प्रकार के प्रश्नों के निर्माण की प्रक्रिया के विषय में कुछ महत्वपूर्ण बातें नीचे दी जा रही हैं:

- वस्तुनिष्ठ प्रकार (बहविकल्पी प्रश्न, चार विकल्पों के साथ)
- अति लघु उत्तर वाले प्रश्न के लिए सामान्यतः एक या दो अंक निर्धारित होते हैं और उनका उत्तर एक शब्द या एक पदबंध या एक वाक्य में और गणित में दो सोपानों की गणना तक में दिया जा सकता है। इनके उत्तर लिखने में लगभग एक मिनट का समय लगता है।
- लघु उत्तर वाले प्रश्नों के लिए सामान्यतः दो से चार अंक निर्धारित होते हैं जिनके उत्तर को 25 से 50 शब्दों में दिया जा सकता है और गणित में चार से छह सोपानों को लिया जा सकता है। इस प्रकार के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में 3 से 5 मिनट का समय लगता है।
- दीर्घ उत्तर या निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तरों की सीमा 100 से 400 शब्दों और गणितीय गणना में 10 तथा 10 से अधिक सोपानों तक माना जाता है। इनके लिए 5 से 15 तक अंक दिए जा सकते हैं।

भाषाओं में 'रचना' के प्रश्नों के उत्तर में छात्रों को किसी विषय की चर्चा करनी होती है जिनमें वे अपनी शब्दावली, वाक्य संरचना आदि का प्रयोग करते हैं और जिसमें वे अपनी मौलिकता और शैली का प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों के लिए भी कोई समय सीमा निर्धारित करनी पड़ती है जो उत्तर की अपेक्षित लम्बाई के आधार पर निश्चित की जा सकती है। इस प्रकार के प्रश्नपत्र के प्रश्न की भाषा में इसका निर्देश किया जा सकता है। उत्तर की दीर्घता और उत्तर लिखने में अपेक्षित समय के निर्धारण के लिए आनुपातिक रूप से कोई नियम फॉर्मूला तैयार किया जा सकता है, जैसे कि उत्तर के रूप में 100 शब्दों के अनुच्छेद के लिए 5 अंक निर्धारित कर सकते हैं।

दीर्घ उत्तरीयानिबन्धात्मक प्रश्नों का निर्माण

(Preparing Long Answer or Essay Type Questions)

पारंपरिक दृष्टि से इस प्रकार के प्रश्नों को बनाना और प्रयोग करना सामान्यतः सरल कार्य माना जाता रहा है। इन प्रश्नों को करने में परीक्षार्थियों को भी पर्याप्त स्वतंत्रता मिलती है। वे अपनी भाषा का प्रयोग और लेखन की शैली का प्रयोग कर सकते हैं। इन प्रश्नों के हल में परीक्षार्थी, जैसे चाहें अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं, कुछ तथ्यों को चुनते हैं और प्रश्न की अनुक्रिया में विचारों का संयोजन करते हैं। इन प्रश्नों के उत्तरों में परीक्षार्थियों को विश्लेषण, संश्लेषण, पुनर्संयोजन और स्थितियों के मूल्यांकन का अवसर मिलता है, साथ ही वे विशेष परिणाम निकालने की दृष्टि से उसकी विवेचना और व्याख्या कर सकते हैं और अपनी दृष्टि के पक्ष या विपक्ष में तर्क दे सकते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों में परीक्षार्थियों को अपनी मौलिकता और सृजनशीलता प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। ये प्रश्न प्रभावी रूप से छात्रों की उन मानसिक प्रक्रियाओं का परीक्षण कर सकते हैं जिन्हें किसी अन्य साधन/प्रश्नों से नहीं जाँचा जा सकता।

कमियाँ (Shortcomings): उक्त सकारात्मक बिन्दुओं के बावजूद, दीर्घ उत्तरीय या निबन्धात्मक प्रश्नों में कुछ गम्भीर कमियाँ दिखाई देती हैं। ये जैसे परीक्षार्थी को स्वतंत्रता देते हैं वैसे ही परीक्षक को भी स्वतंत्रता देते हैं जिसके कारण अंकों में आत्मनिष्ठता का तत्त्व आ जाता है। इसीलिए इस प्रकार के प्रश्नों की आलोचना होती है जो उचित ही है। क्योंकि उनमें इसके कारण अंकों में अविश्वास की मात्रा बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त एक दूसरी कमी यह है कि इनके लिए लम्बे उत्तर लिखने पड़ते हैं, जिसके लिए अधिक समय की आवश्यकता होती है और क्योंकि उत्तर देने के लिए अधिक समय की आवश्यकता होती है, अतः इस तरह के कुछ ही प्रश्न पूछे जा सकते हैं। क्योंकि ऐसे प्रश्न कुछ ही हो सकते हैं, अतः निर्धारित पाठ्यक्रम के अत्यंत

अल्पांश का ही इनके द्वारा परीक्षण किया जा सकता है। अनेक बार इस प्रकार के प्रश्नों के कारण, केवल चुने हुए अंशों का शिक्षण और सीमित अध्ययन करने की प्रवृत्ति बढ़ती है जिसके कारण परीक्षा के परिणामों की विश्वसनीयता, निर्भरता और वैधता (परिशुद्धता), विषय-वस्तु के सीमित चयन के कारण, बाधित होती है। इसी पार्श्व भूमि के कारण, यद्यपि प्रश्नपत्रों में दीर्घ उत्तरी प्रश्नों को सम्मिलित किया जाता है। परंतु ऐसे प्रश्नों की संख्या और उनके लिए निर्धारित अंक कम से कम रखे जाते हैं। उपर्युक्त कमियों के बाद भी दीर्घ उत्तरी प्रश्नों का प्रयोग परीक्षाओं में होता आ रहा है। क्योंकि जैसा कि पहले बताया जा चुका है हम इस प्रकार के प्रश्नों के माध्यम से परीक्षार्थियों की उन योग्यताओं का परीक्षण करते हैं जिन्हें मूल्यांकन के किसी अन्य उपकरण से प्रभावी रूप में नहीं जाँचा जा सकता। अर्थात् छात्रों के विचारों को तोलने की क्षमता, किसी बात के पक्ष या विपक्ष में तर्क करने की योग्यता, विभिन्न वस्तुओं (तथ्यों) के बीच संबंध स्थापित करने की योग्यता, आलोचनात्मक दृष्टि से स्थितियों के विश्लेषण या उनसे निकलने वाले निहितार्थों तक पहुँचने की योग्यता का परीक्षण अन्यथा नहीं किया जा सकता। इस प्रकार के प्रश्नों से छात्रों में स्वाध्याय की दृष्टि भी विकसित होती है।

दीर्घ-उत्तरी प्रश्नों के निर्माण के कुछ मार्ग दर्शक सिद्धान्त (Some Guiding Principles for Preparing Long Answer Questions) : दीर्घ उत्तरी प्रश्नों या निबंधात्मक प्रश्नों के निर्माण का काम सरल नहीं होता। इसीलिए इस प्रकार के प्रश्नों को बनाने के लिए नीचे कुछ संकेत सूत्र दिए जा रहे हैं:

- अपनी सीमाओं के कारण दीर्घ उत्तरी या निबंधात्मक प्रश्नों को उन्हीं शैक्षणिक उद्देश्यों के आकलन के लिए लिया जाना चाहिए जिन्हें अन्य किसी प्रकार से नहीं किया जा सकता।
- विशेष उद्देश्यों की दृष्टि से छात्रों की मानसिक प्रक्रियाओं या अधिगम के परिणामों के परीक्षण के लिए दीर्घ उत्तरी/ निबंधात्मक प्रश्न पछे जाने चाहिए।
- इन प्रश्नों के निर्माण की भाषा ऐसी होनी चाहिए जिससे परीक्षार्थी को अपेक्षित उत्तर की लगभग लम्बाई और व्याप्ति स्पष्टतः समझ में आए।
- दीर्घ उत्तरी निबंधात्मक प्रश्नों के निर्माण के समय-परीक्षार्थियों की मानसिक परिपक्वता के स्तर को सदा ध्यान में रखना चाहिए। उत्तर की प्रकृति और लम्बाई विभिन्न कक्षाओं के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की हो सकती है। उदाहरण के लिए ऐसे प्रश्न जिनके उत्तर में चर्चा, व्याख्या, संक्षिप्तीकरण, है। मूल्यांकन अपेक्षित हों, उन्हें उच्चतर कक्षाओं में पूछा जा सकता है, जबकि सूचीकरण, विवरण, चयन आदि से संबंधित प्रश्न निम्नतर कक्षाओं के लिए उपयुक्त हो सकते हैं।

- इस प्रकार के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की रूपरेखा और अपेक्षित उत्तर के विभिन्न भागों के मूल्य-बिन्दुओं को, अंक योजना में स्पष्टता से लिखा जाना चाहिए। यह कार्य प्रश्न बनाते समय ही करना चाहिए। प्रश्नों का प्रारूप बनाकर उनकी भाषा का पुनरीक्षण करना चाहिए और जाँच करके देखना चाहिए कि वह अपेक्षित उत्तर को परीक्षार्थी में उद्दीप्त कर सकता है या नहीं। यदि आवश्यक हो तो प्रश्न की भाषा को सुधारा जा सकता है जिससे अपेक्षित उत्तर ही प्राप्त हो।
- नीचे लिखे निर्देशक वाक्यों के प्रयोग से बचना चाहिए-
- विशदीकरण या विस्तार कीजिए
- उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए
- समीक्षा कीजिए
- चर्चा कीजिए
- सिद्ध कीजिए, या
- संबंध बताइए
- मूल्यांकन कीजिए
- तोलिए
- परीक्षा कीजिए
-पर निबंध लिखिए
-संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए
-के बारे में आप क्या सोचते हैं।
-के बारे में आप क्या जानते हैं।

उपर्युक्त शब्दों/पदबंधों का आशय अनेक बार परीक्षार्थी और परीक्षक स्पष्टतः नहीं समझ पाते। इसलिए इस प्रकार के अबोधगम्य निर्देश वाक्यों के बदले में ऐसे वाक्यों का प्रयोग किया जाना चाहिए जिनसे परीक्षार्थी अपेक्षित उत्तर ही लिखें।

- इससे छात्रों की इस प्रवृत्ति पर अंकुश लग सकेगा कि वे जो कुछ उस विषय के बारे में जानते हैं, सब कुछ लिख दें, न कि प्रश्न के उत्तर की आवश्यकता के अनुरूप अनुक्रिया करें।
- प्रश्नों की भाषा इस प्रकार की होनी चाहिए कि प्रत्येक प्रश्न एक सुनिश्चित समस्या को प्रस्तुत करे। यद्यपि छात्र अपनी रुचि के अनुसार भाषा शैली का चयन करने में स्वतंत्र

हों, परन्तु उन्हें प्रश्न की शब्दावली के अनुसार सुनिश्चित आयामों और मानदण्डों से बँधकर ही उत्तर देना चाहिए।

- प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए निर्धारित पूर्णांक (10) नहीं लिखने चाहिए अपितु अपेक्षित उत्तर के विभिन्न बिन्दुओं के लिए अंक अलग-अलग लिखने चाहिए जैसे: (2+4+4),
- प्रश्न-पत्र के लिए निर्धारित प्रश्न ऐसे नहीं होने चाहिए जिनका उत्तर पाठ्य- पुस्तक के किसी अंश पर सीधे-सीधे आधारित हो, अपितु प्रश्न किसी स्थिति या समस्या से संबंधित हो जिसके उत्तर के लिए परीक्षार्थी को स्मृति के आधार पर कुछ भी लिखने के बदले कुछ सोचना पड़े।

दीर्घ उत्तरी प्रश्नों की जाँच व उनका अंकन (Scoring of Long Answer Questions)

: पारंपरिक व्यवस्था में दीर्घ उत्तरी/ निबंधात्मक प्रश्नों को बनाने में अधिक समय नहीं लगता था। परन्तु उनका उत्तर लिखने में अधिक समय लगता है। इसी तरह यद्यपि प्रश्न बनाने में सरल होते हैं। परन्तु उत्तर देने में अंक देने में और मूल्यांकन में कठिन होते हैं। विस्तृत अंक योजना को, जिसमें उत्तर की रूपरेखा हो और अपेक्षित उत्तर के विविध तथ्यों या पक्षों (जिन पर मूल्यांकन करते समय ध्यान किया जाना है) के रूप में मूल्य-बिन्दु हों, जिन पर अंक दिए जाने हैं, प्रश्न-पत्र बनाने के साथ-साथ तैयार कर लेना चाहिए और तदनुसार ही उत्तर का मूल्यांकन करना चाहिए। मूल्यांकित किए जाने वाले उत्तर के इन पक्षों के बारे में परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र के द्वारा ही बता दिया जाना चाहिए, उदाहरणार्थ, ऐसी स्थितियाँ हो सकती हैं, जहाँ वर्तनी की अशुद्धियों के कारण अंकों को काटा जाना है या नहीं। समन्वय समिति की बैठक में सभी परीक्षकों द्वारा नमूने के प्रश्न-पत्रों की जाँच और प्रश्न-पत्र निर्माता द्वारा प्रस्तावित अंक योजना में सुधार, यदि आवश्यक हों तो, के बाद अंक-योजना को ध्यानपूर्वक अंतिम रूप देना चाहिए। इससे प्रश्न की भाषा में, यदि किसी प्रकार की अस्पष्टता हो तो उसे सही किया जा सकता है और मूल्यांकन को अधिकवस्तुनिष्ठ बनाया जा सकता है। जहाँ तक संभव हो दीर्घ उत्तरी निबंधात्मक प्रश्नों का अंकन अपेक्षित उत्तर के विश्लेषण के आधार पर करना चाहिए। जब अपरिहार्य हो, तभी केवल प्रभाव के आधार पर मूल्यांकन करना चाहिए। प्रश्न-पत्र के निर्देशों के द्वारा छात्रों को स्पष्टतः बताना चाहिए कि किन-किन बिन्दुओं पर अंक देते समय बल होगा। इस प्रकार की सूचना, सामान्य निर्देशों द्वारा या प्रश्न की भाषा द्वारा दिए जा सकते हैं। इसी तरह, यदि उत्तर में किसी प्रकार के आरेख या उदाहरण आदि परीक्षार्थी द्वारा दिया जाना है तो उसे स्पष्टतः बताना

चाहिए। इसे प्रश्न-पत्र निर्माता द्वारा छात्र पर या परीक्षक की सूझ-बूझ पर नहीं छोड़ना चाहिए। उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के लिए अंक योजना को अंतिम रूप देते समय अपेक्षित उत्तर की प्रक्रिया के सोपानों या पक्षों या उपपक्षों का उल्लेख स्पष्टतः करना चाहिए और प्रत्येक सोपान/पक्ष के लिए सुनिश्चित अंक/अधिभार बताया जाना चाहिए, अर्थात् किसी विशेष स्थिति में और जहाँ संभव हो, अपेक्षित उत्तर का विश्लेषण, व्याख्या और अनुमान आदि के लिए अलग से अंक निर्धारित करने चाहिए। इसी प्रकार यदि वर्तनी, भाषा, शैली, संबद्धता और प्रस्तुति आदि को स्वतंत्र रूप से महत्त्व दिया जाना है, तो यह बात परीक्षार्थी को बता दी जानी चाहिए। संक्षेप में परीक्षार्थी को यह पता होना चाहिए कि उससे क्या अपेक्षित है और वह किन बिन्दुओं से अधिक अंक पा सकता है या खो सकता है। परीक्षा की अंक योजना में परिगणना के सोपान और उनके लिए निर्धारित अंक/अधिभार की सूचना परीक्षार्थियों को दी जानी चाहिए।

लघूत्तरी प्रकार के प्रश्नों का निर्माण

बहसपूत्तरी प्रश्न, दीर्घउत्तरी और वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के बीच समझौते के रूप में होते हैं जिनमें दोनों प्रकारों के प्रश्नों के अच्छे बिन्दु रहते हैं। पिदीर्घ-उत्तरी प्रश्नों में, वस्तुनिष्ठता और विश्वसनीयता अपेक्षाकृत कम होती है, जबकि लघूत्तरी प्रश्न इस दृष्टि से अच्छे माने जाते हैं।

अधिकांशतः वस्तुनिष्ठ प्रश्न विचारों की अभिव्यक्ति, संगठन और संश्लेषण जैसी योग्यताओं के परीक्षण करने में असमर्थ होते हैं। परन्तु लघूत्तरी प्रश्न कुछ सीमा तक इन दोषों से मुक्त रहते हैं अर्थात् सीमित रूप में इन योग्यताओं का परीक्षण कर पाते हैं। क्योंकि इस प्रकार के प्रश्नों में निबंधात्मक और वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के गुण होते हैं और दोष नहीं होते, अतः इस प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग परीक्षाओं में अधिकाधिक हो रहा है। अनेक परीक्षाओं में लघूत्तरी प्रश्नों के लिए 50% अंक निर्धारित किए जाते हैं और शेष 50% अंकों को दीर्घ उत्तरी और वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिए सुरक्षित रखा जाता है। लघूत्तरी प्रश्नों की रचना बड़े ध्यान से की जानी चाहिए जिससे स्पष्ट और सुनिश्चित उत्तर मिल सके। उनकी भाषा स्पष्ट होनी चाहिए और ऐसी नहीं, जिससे अस्पष्ट और गोल-मोल उत्तर देने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिले। इसी आधार पर लघूत्तरी प्रश्नों को पारंपरिक संक्षिप्त टिप्पणी जैसे प्रश्नों से अलग किया जाता है। पारंपरिक टिप्पणी वाले प्रश्नों में विषय का उल्लेख तो होता है, परन्तु इस बात का उल्लेख नहीं होता कि विषय का विस्तार किस प्रकार या किस दिशा में करना है। उदाहरणार्थ 'जनतंत्र पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए' जैसे प्रश्न के उत्तर में परीक्षार्थी को पता नहीं होता कि उसे कितना लंबा या छोटा उत्तर लिखना है, जबकि जनतंत्र

जैसे विषय पर पूरी पुस्तक लिखी जा सकती है। आशय यह कि लघूत्तरी प्रश्नों को पारंपरिक टिप्पणी वाले प्रश्नों के समान नहीं समझना चाहिए। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की तुलना में लघूत्तरी प्रश्नों के निर्माण में अपेक्षाकृत कम कुशलता की आवश्यकता होती है। लघूत्तरी प्रश्नों की लंबाई/आयामों की सीमा कुछ अनिश्चित रहती है क्योंकि उन्हें परिभाषित करना कठिन होता है, फिर भी कुछ व्यावहारिक संकेत यहाँ दिए जा रहे हैं:

- लघूत्तरी प्रश्नों के उत्तर 30-50 शब्दों में दिए जा सकते हैं।
- गणित में परिगणना के छह सोपानों तक सीमित रहा जा सकता है।

सामान्यतः इनके लिए 2 से 4 क्रेडिट या अंक निर्धारित किए जाते हैं तथा उनके उत्तर लिखने में 5 मिनट का समय लगता है। इस प्रकार एक प्रश्न-पत्र में अनेक लघूत्तरी प्रश्न हो सकते हैं जिनसे दीर्घ उत्तरी प्रश्नों की अपेक्षा पाठ्यक्रम के एक बड़े अंश की वस्तुनिष्ठ रूप से मूल्यांकन किया जा सकता है। इस प्रकार से परीक्षण के विस्तार के आधार पर छात्रों की क्षमताओं और सामर्थ्य का विकार की आकलन किया जा सकता है। उदाहरण लघूत्तरी प्रश्नों की भाषा इस प्रकार हो सकती है।

इतिहास-ऐसे दो प्रमाण/साक्ष्य लिखिए जिनसे सिद्ध हो कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक क्लाइव था। हिन्दी-50-60 शब्दों में 'वृक्ष' पर एक अनुच्छेद लिखिए जिसमें आप निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं।

उपयोगिता, सुंदरता, जंगल, आनंद, शाखाएँ, छाया रहनी, फल, पक्षी, लट्टे कभी-कभी दीर्घ उत्तरी प्रश्न को लघूत्तरी प्रश्नों में बदला जा सकता है जिससे लाभ हो सकता है। नीचे दिए गए उदाहरण को देखिए-

दीर्घ उत्तरी प्रश्न का सामान्य रूप (Usual Form of Long Answer Question) : प्रश्न-जैवीविकास के विविध सिद्धान्तों की चर्चा कीजिए। (निबंधात्मक प्रश्न)

परिवर्तित रूप (लघूत्तरी प्रश्न) (Modified Form (Short-Answer Questions))

- जैवी विकास के विविध सिद्धान्तों का नामोल्लेख कीजिए।
- आप की दृष्टि में कौन-सा सिद्धान्त जैवी विकास की प्रक्रिया को अच्छी तरह स्पष्ट करता है। दो तर्क/कारण लिखिए।
- उन दो नियमों को लिखिए जिन पर लमार्क (Lamarck) का सिद्धान्त आधारित है।

- वैसमान (Weisman) का सिद्धान्त द ब्रीज (D Voies) के सिद्धान्त से किस प्रकार अलग है।

इस प्रकार के प्रश्नों का उपयोग आंतरिक और बाह्य परीक्षाओं में सफलतापूर्वक किया जा सकता है। इस प्रकार के प्रश्न अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय होते हैं क्योंकि ये अधिक सुनिश्चित और सुपरिभाषित होते हैं और इनका मूल्यांकन अधिक वस्तुनिष्ठ दृष्टि से किया जा सकता है। इनसे पाठ्यक्रम के अधिक अंश को लिया जा सकता है। अतः एक निबंधात्मक प्रश्न के बदले ऐसे अनेक प्रश्न पूछे जा सकते हैं। निबंधात्मक प्रश्नों की अपेक्षा इन प्रश्नों से छात्रों की सम्प्राप्ति के व्यापक क्षेत्र का मूल्यांकन किया जा सकता है। इससे विषयवस्तु के उपयुक्त परिदृश्य के व्यापक नमूने लिए जा सकते हैं जिससे प्रश्न-पत्र की वैधता और विश्वसनीयता में सुधार हो सकता है।

अतिलघु-उत्तरी प्रकार के प्रश्नों का निर्माण (Preparing Very Short Answer Type Questions)

अतिलघु-उत्तरी प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ प्रश्न के स्थान पर प्रयोग के लिए खोजा गया है। इस प्रकार के प्रश्नों का आकलन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के समान ही किया जाता है। परन्तु इनके निर्माण में उन सभी नियमों का पालन करना आवश्यक नहीं होता जिनकी आवश्यकता वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के निर्माण के लिए होती है। अतिलघु उत्तर के प्रश्नों का उत्तर एक शब्द, एक पद या अधिक से अधिक एक वाक्य में दिया जा सकता है। इनमें एक या दो ही परीक्षण बिन्दु होते हैं। अतः इनका अंकन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के समान ही वस्तुनिष्ठ रूप से किया जा सकता है। ऐसे प्रश्नों के लिए होते हैं और उत्तर देने में एक सामान्यतः क्योंकि इन प्रश्नों के उत्तर लिखने में बहुत कम समय लगता है और कम ही लगता वैधारित होते हैं। अतः एक प्रश्न-पत्र में ऐसे अनेक प्रश्न हो सकते हैं जिनके लिए भेड़ से ही अंकों की जरूरत होती है। ये निर्धारित पाठ्यक्रम के बड़े अंश को ले सकते हैं जिससे प्रश्न-पत्र की विश्वसनीयता बढ़ जाती है। जब कभी-कभी जब प्रश्नों का वर्गीकरण 'उत्तर चुनने वाले' और 'उत्तर देने वाले' प्रश्नों के रूप में किया जाता है तो लघु-उत्तर वाले प्रश्नों को 'देने वाले' प्रश्नों के साथ वर्गीकृत किया जाता है। क्योंकि वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के विपरीत इन प्रश्नों का उत्तर छात्र द्वारा दिया जाता है, न कि दिए गए विकल्पों से चुना जाता है। अतिलघु-उत्तरी प्रश्नों के कई रूप हो सकते हैं। कुछ नमूने यहाँ दिए जा रहे हैं:

प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों का नमूना
रिक्त स्थान भरने संबंधी	मैं आपके उत्तर से..... नहीं हूँ

वाक्य पूर्ण करने संबंधी	मैं बहुत चिंतित था
सादृशी प्रकार	सोयाबीन: प्रोटीन :: चावल :
स्थान प्रकार	विश्व के मानचित्र पर सिडनी को दर्शाएँ
रूपान्तरण संबंधी	अप्रत्यक्ष कथ्य, वाच्य, संश्लेषण, वाक्यों का रूपान्तरण पर आधारित प्रश्न
प्रयोग संबंधी	निम्नलिखित शब्दों/वाक्यांशों का अपने वाक्यों में प्रयोग करें। <ul style="list-style-type: none"> • प्रसाद /प्रशाद • खाना/खाना
प्रश्न प्रकार संबंधी	द्रव्यमान क्या है ?

विषयवस्तु के आधार पर प्रश्नों का वर्गीकरण:

प्रश्न किसी न किसी विषयवस्तु पर आधारित होते हैं। विषयवस्तु को हम मुख्य रूप से निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं-

- तथ्य एवं घटनाएँ
- सिद्धान्त एवं अवधारणाएँ
- सृजनात्मकता एवं अभिव्यक्ति

योग्यता मापन के आधार पर: प्रश्नों के द्वारा छात्र/छात्र/छात्राओं ओं /छात्र/छात्राओं ओं की स्मरण शक्ति, समझ, प्रयोग करने की शक्ति, विश्लेषण, संश्लेषण और तुलना, समीक्षा आदि की योग्यताओं की भी जाँच की जा सकती है। मोटे तौर पर इन योग्यताओं के आधार पर हम प्रश्नों को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं ये वर्ग इस प्रकार हैं:

- **ज्ञान :** प्रत्यास्मरण अर्थात् कंठस्थ या पूर्वज्ञान सामग्री प्रस्तुत करना एवं प्रत्याभिज्ञान अर्थात् सही उत्तर को पहचानना।
- **बोध :** विभिन्न सिद्धांतों, अवधारणाओं, तथ्यों और घटनाओंकी प्रकृति, क्रम, सामाजिक वातावरण आदि की समझ।
- **प्रयोग:** प्राप्त ज्ञान का नवीन परिस्थितियों में प्रयोग, सृजनात्मकता, मौलिक लेखन, दिए गए कथनों का विश्लेषण, संश्लेषण, शीर्षक देना, तुलनात्मक अध्ययन आदि।

15.3.2 उत्तर सीमा के आधार पर प्रश्न

उत्तर सीमा के आधार पर: प्रश्नों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है।

- ○ **निबंधात्मक प्रश्न:** यह प्रश्न 60 से अधिक की शब्दों की सीमा के होते हैं। ऐसे प्रश्नों में स्वतंत्रा अभिव्यक्ति के लिए कुछ छूट अवश्य रहती है, पर प्रश्नों के उद्देश्य स्पष्ट रहते हैं और उत्तर की सीमा भी बहुत अंशों तक निर्धारित रहती है जिससे मूल्यांकन करने में भी कुछ वस्तुनिष्ठता आ जाती है। उदाहरण के लिए:- प्रश्न; उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि साहित्य सामाजिक कृतियों, निरंकुश शासन सत्ता और विकृत धार्मिक प्रथाओं के विरुद्ध विद्रोह का भाव जगाने का बहुत बड़ा साधन रहा है।
- ○ **लघुत्तरात्मक:** यह प्रश्न 1-60 से की शब्दों तक की सीमा के होते हैं। अथवा संक्षिप्त उत्तर वाले प्रश्न:- जिन प्रश्नों का उत्तर बहुत छोटा अर्थात् एक, दो, तीन, चार पंक्तियों में देना होता है उन्हें लघुत्तरात्मक वाले प्रश्न कहते हैं। लघुत्तरात्मक प्रश्नों की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि सम्पूर्ण पाठ्यविषय पर आधारित प्रश्न दिये जा सकते हैं उनके उत्तर लिखने में बहुत कम समय लगता है। उदाहरण के लिए:-
- प्रश्न: लेखक ने साहित्य की क्या परिभाषा दी है?
- प्रश्न: साहित्य को किन बातों का निर्णयक कहा गया है?
- प्रश्न: किस प्रकार की जाति को असभ्य एवं अपूर्ण कहा गया है?
- ○ **वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न:** यह प्रश्न एक शब्द से एक वाक्य तक की सीमा के होते हैं। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर में स्वतंत्रा भाव या विचार प्रकाशन की छूट नहीं रहती। प्रश्नोंत्तरों के विकल्प दिये रहते हैं, उनमें से सही उत्तरों को चिन्हित करना होता है। अतः उत्तर देने में अत्यंत कम समय लगता है। इन प्रश्नों की जांच में भी कम समय लगता है। प्रश्नों की कुंजी बनी रहती है, उसके अनुसार जाँचना पड़ता है। उदाहरण के लिए:-
- प्रश्न: रामचरित मानस किस भाषा में लिखा गया है।
क. ब्रज
ख. अवधि
ग. खड़ी बोली
घ. राजस्थानी

15.3.3 समस्या समाधान संबंधी प्रश्न

समस्यात्मक प्रश्न छात्र/छात्राओं के सामने प्रश्न के माध्यम से समस्या उत्पन्न करते हैं जिसे हल करने के लिए उन्हें अपने मस्तिष्क को सक्रिय करना पड़ता है। इनका प्रयोग प्रायः गणित, विज्ञान, इतिहास आदि के शिक्षण में अधिक किया जाता है। इसके द्वारा छात्र/छात्राओं पूर्व ज्ञान को आधार बनाकर नवीन ज्ञान अर्जित करते हैं। इन्हें यदि पाठ के प्रारंभ में रखा जाये तो ये छात्र/छात्राओं की सक्रियता को बढ़ाते हैं तथा अन्त में पूछने का उद्देश्य अर्जित ज्ञान के अनुप्रयोग की योग्यता को आंकना है।

15.3.4 सृजनात्मक चिंतन वाले एवं कल्पनाशीलता को जीवित करने वाले प्रश्न

इन प्रश्नों के द्वारा छात्र/छात्र/छात्राओं ओं /छात्र/छात्राओं ओं अपनी तर्क, चिन्तन, कल्पना सृजनात्मकता आदि मानसिक शक्तियों को विकसित करते हैं तथा मस्तिष्क को अधिक सक्रिय एवं जाग्रत बनाते हैं। इसमें छात्र/छात्र/छात्राओं ओं /छात्र/छात्राओं ओं को उत्तर देने के लिए तर्क, निर्णय, चिंतन आदि का प्रयोग करना पड़ता है। अतः अध्यापक को चाहिए कि ऐसे प्रश्न छात्र/छात्राओं की आयु, अनुभव, योग्यता आदि को ध्यान में रखकर पूछे जाने चाहिए। ये प्रश्न क्यों, कैसे आदि से संबंधित होते हैं इससे छात्र/छात्राओं का ध्यान पाठ की ओर बना रहता है।

15.3.5 समालोचनात्मक चिंतन वाले प्रश्न

छात्र/छात्राओं के सहयोग से नवीन ज्ञान को तार्किक रूप से विकसित करते हैं। इनमें से छात्र/छात्राओं की मानसिक क्रियाएँ जैसे विचार, तर्क, चिन्तन आदि सक्रिय रहती है। सार रूप समालोचनात्मक प्रश्न छात्र/छात्राओं की चिंतन, मनन द्वारा ज्ञान प्राप्त करने में सहायता प्रदान करते हैं। ये प्रश्न शिक्षण बिन्दु से संबंधित छात्र/छात्राओं के सामान्य ज्ञान का आकलन कर नवीन ज्ञान की ओर प्रेरित करते हैं। अर्थात् पाठ को विकसित करने में सहायता करते हैं।

15.4 सारांश

शिक्षण और परीक्षण के विभिन्न उद्देश्यों के परीक्षण के लिए निर्मित प्रश्नों को ही उद्देश्यनिष्ठ प्रश्न कहते हैं। ये विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं जिनमें से उद्देश्य निष्ठ प्रश्न भी एक प्रकार होता है। इनके तीन प्रकार हैं: निबन्धात्मक प्रश्न (दीर्घ उत्तर प्रकार), लघु उत्तर प्रकार,

और अति लघु उत्तर प्रकार। ये सभी प्रश्न किसी न किसी उद्देश्य/योग्यता/क्षमता/कुशलता का परीक्षण करते हैं। इस दृष्टि से सभी उद्देश्य-आधारित प्रश्न, उद्देश्य-निष्ठ होते हैं। यद्यपि सभी उद्देश्य-आधारित प्रश्न उद्देश्य-निष्ठ प्रकार के नहीं होते। पारंपरिक दृष्टि से इस प्रकार के प्रश्नों को बनाना और प्रयोग करना सामान्यतः सरल कार्य माना जाता रहा है। इन प्रश्नों को करने में परीक्षार्थियों को भी पर्याप्त स्वतंत्रता मिलती है। वे अपनी भाषा का प्रयोग और लेखन की शैली का प्रयोग कर सकते हैं। इन प्रश्नों के हल में परीक्षार्थी, जैसे चाहें अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं, कुछ तथ्यों को चुनते हैं और प्रश्न की अनुक्रिया में विचारों का संयोजन करते हैं। बहसपूत्तरी प्रश्न, दीर्घउत्तरी और वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के बीच समझौते के रूप में होते हैं जिनमें दोनों प्रकारों के प्रश्नों के अच्छे बिन्दु रहते हैं। पिदीर्घ-उत्तरी प्रश्नों में, वस्तुनिष्ठता और विश्वसनीयता अपेक्षाकृत कम होती है, जबकि लघुत्तरी प्रश्न इस दृष्टि से अच्छे माने जाते हैं। अतिलघु-उत्तरी प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ प्रश्न के स्थान पर प्रयोग के लिए खोजा गया है। इस प्रकार के प्रश्नों का आकलन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के समान ही किया जाता है। परन्तु इनके निर्माण में उन सभी नियमों का पालन करना आवश्यक नहीं होता जिनकी आवश्यकता वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के निर्माण के लिए होती है। अतिलघु उत्तर के प्रश्नों का उत्तर एक शब्द, एक पद या अधिक से अधिक एक वाक्य में दिया जा सकता है। इनमें एक या दो ही परीक्षण बिन्दु होते हैं। इन प्रश्नों के द्वारा छात्र/छात्र/छात्राओं ओं /छात्र/छात्राओं ओं अपनी तर्क, चिन्तन, कल्पना सृजनात्मकता आदि मानसिक शक्तियों को विकसित करते हैं तथा मस्तिष्क को अधिक सक्रिय एवं जाग्रत बनाते हैं। छात्र/छात्राओं के सहयोग से नवीन ज्ञान को तार्किक रूप से विकसित करते हैं। इनमें से छात्र/छात्राओं की मानसिक क्रियाएँ जैसे विचार, तर्क, चिन्तन आदि सक्रिय रहती है।

15.5 अधिगम प्रतिफल

1. प्रश्नों के विभिन्न प्रकारों और उनके स्वरूप को समझना ।
2. प्रश्न निर्माण के प्रमुख आधारों की पहचान करना
3. पाठ्यवस्तु और शैक्षिक उद्देश्यों के अनुरूप उपयुक्त प्रश्नों का निर्माण करना ।
4. विद्यार्थी निश्चित अनुक्रिया और मुक्त अनुक्रिया वाले प्रश्नों के बीच अंतर स्पष्ट करना ।
5. विद्यार्थी मूल्यांकन के उद्देश्य से विभिन्न प्रश्न प्रकारों की प्रभावशीलता का विश्लेषण करता है।

15.6 शब्दावली

शब्द	अर्थ (हिंदी में)
प्रश्न-पत्र (Question Paper)	परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों का संगठित दस्तावेज, जो छात्रों के ज्ञान व कौशल का मूल्यांकन करता है।
निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Question)	ऐसे प्रश्न जिनके उत्तर 100–400 शब्दों में विस्तृत रूप में दिए जाते हैं।
लघु उत्तर प्रश्न (Short Answer Question)	ऐसे प्रश्न जिनके उत्तर 25–50 शब्दों में संक्षिप्त रूप से दिए जाते हैं।
अतिलघु उत्तर प्रश्न (Very Short Answer Question)	ऐसे प्रश्न जिनके उत्तर एक शब्द या वाक्य में दिए जाते हैं।
वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Question)	पूर्व निर्धारित उत्तर वाले प्रश्न, जैसे: बहुविकल्पी, सही-गलत, रिक्त स्थान भरना आदि।
समस्या समाधान प्रश्न (Problem Solving Question)	छात्र की विश्लेषण व समाधान क्षमता को जाँचने वाला प्रश्न।
सृजनात्मक प्रश्न (Creative Thinking Question)	तर्क, कल्पना और मौलिकता को प्रेरित करने वाले प्रश्न।
समालोचनात्मक प्रश्न (Critical Thinking Question)	विश्लेषण, मूल्यांकन व निर्णय पर आधारित गहन विचार के लिए प्रेरित करने वाले प्रश्न।
निश्चित अनुक्रिया (Fixed Response)	ऐसा उत्तर जिसे पूर्वनिर्धारित विकल्पों में से चुना जाता है।
मूल्यांकन (Evaluation)	छात्र के उत्तरों के आधार पर उसकी योग्यता, ज्ञान या कौशल का मूल्य तय करना।

15.7 इकाई के अंत की गतिविधियाँ

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रश्न निश्चित अनुक्रिया वाला प्रश्न नहीं है?

a) अति लघुत्तर प्रश्न

b) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

c) निबंधात्मक प्रश्न d) सही-गलत प्रश्न

उत्तर: c) निबंधात्मक प्रश्न

2. लघु उत्तर प्रश्नों के उत्तर सामान्यतः कितने शब्दों में होने चाहिए?

- a) 10-20 शब्द b) 25-50 शब्द
c) 100-150 शब्द d) केवल एक शब्द

उत्तर: b) 25-50 शब्द

3. "समस्या समाधान संबंधी प्रश्न" का मुख्य उद्देश्य क्या है?

- a) स्मरण शक्ति का परीक्षण b) विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास
c) मौलिक लेखन d) पाठ्यपुस्तक से सीधा उत्तर देना

उत्तर: b) विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास

4. निम्नलिखित में से कौन-से प्रश्न उद्देश्यनिष्ठ प्रश्नों के अंतर्गत आते हैं?

- a) निबंधात्मक प्रश्न b) लघुत्तर प्रश्न
c) अति लघुत्तर प्रश्न d) उपर्युक्त सभी

उत्तर: d) उपर्युक्त सभी

5. निम्नलिखित में से किस प्रश्न में परीक्षार्थी को उत्तर देने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होती है?

- a) बहुविकल्पी प्रश्न b) रिक्त स्थान भरने वाले प्रश्न
c) निबंधात्मक प्रश्न d) सही-गलत प्रश्न

उत्तर: c) निबंधात्मक प्रश्न

6. प्रश्नों की उत्तर सीमा के आधार पर वर्गीकरण नहीं है:

- a) निबंधात्मक प्रश्न b) लघुत्तर प्रश्न
c) अतिलघुत्तर प्रश्न d) रचनात्मक प्रश्न

उत्तर: d) रचनात्मक प्रश्न

7. निम्नलिखित में से किस प्रश्न प्रकार में चिंतन, कल्पना और तर्क की सर्वाधिक आवश्यकता होती है?

- a) वस्तुनिष्ठ प्रश्न b) रिक्त स्थान वाले प्रश्न
c) सृजनात्मक चिंतन प्रश्न d) सही-गलत प्रश्न

उत्तर: c) सृजनात्मक चिंतन प्रश्न

8. प्रश्नों का निर्माण करते समय सर्वोत्तम अभ्यास क्या है?

- a) अस्पष्ट निर्देश वाक्य देना b) परीक्षार्थी को खुली छूट देना
c) मूल्यांकन बिंदुओं को स्पष्ट करना d) पाठ्यपुस्तक से सीधे प्रश्न पूछना

उत्तर: c) मूल्यांकन बिंदुओं को स्पष्ट करना

9. निम्न में से कौन-सा प्रश्न मूल्यांकन की उच्चतम मानसिक प्रक्रिया से जुड़ा है?

- a) प्रत्यास्मरण b) समझ
c) विश्लेषण d) प्रत्याभिज्ञान

उत्तर: c) विश्लेषण

10. अतिलघु-उत्तर प्रश्नों की प्रमुख विशेषता क्या है?

- a) उत्तर एक अनुच्छेद में हो b) उत्तर केवल विकल्प से चुना जाता है
c) उत्तर केवल एक शब्द या वाक्य में होता है d) उत्तर रचनात्मक शैली में लिखा जाता है

उत्तर: c) उत्तर केवल एक शब्द या वाक्य में होता है

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. उद्देश्यनिष्ठ प्रश्नों और उद्देश्य-आधारित प्रश्नों में क्या अंतर होता है? संक्षेप में स्पष्ट करें।
2. निबंधात्मक प्रश्नों की दो प्रमुख कमियाँ लिखिए।
3. लघु उत्तर प्रश्नों की भाषा निर्माण करते समय किन दो बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए?
4. समस्या समाधान संबंधी प्रश्नों का शिक्षण प्रक्रिया में क्या महत्त्व है?
5. सृजनात्मक चिंतन वाले प्रश्नों का उद्देश्य क्या होता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
6. समालोचनात्मक चिंतन प्रश्नों में छात्रों की किन मानसिक प्रक्रियाओं का परीक्षण होता है?
7. मुक्त अनुक्रिया और निश्चित अनुक्रिया वाले प्रश्नों के बीच कोई दो अंतर लिखिए।
8. दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के निर्माण हेतु दो मार्गदर्शक सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए।
9. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की जांच प्रक्रिया को संक्षेप में समझाइए।
10. उत्तर सीमा के आधार पर प्रश्नों को कैसे वर्गीकृत किया जाता है? केवल नाम लिखिए।

15.8 संदर्भ के लिए पुस्तके

1. एनसीईआरटी. (2006). *मूल्यांकन की समझ*. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

2. एनसीईआरटी. (2020). *शिक्षा का मूल्यांकन और मूल्यांकन की विधियाँ*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
3. कुमार, कृष्ण. (2012). *शिक्षा का समाजशास्त्र*. दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।
4. मिश्रा, बी.एन. (2015). *शिक्षण विधियाँ और मूल्यांकन*. आगरा: विनय प्रकाशन।
5. वर्मा, ओ.पी. (2016). *शिक्षा में मूल्यांकन*. मेरठ: विनोद पुस्तक मन्दिर।
6. चौधरी, एस.एन. (2018). *शिक्षा में प्रश्न निर्माण की प्रक्रिया*. लखनऊ: भारतीय शिक्षण संस्थान।
7. तिवारी, रेखा. (2019). *शिक्षाशास्त्र एवं मूल्यांकन*. जयपुर: किताब महल।
8. शर्मा, रामनाथ. (2014). *आधुनिक शिक्षण विधियाँ*. दिल्ली: प्रकाशन केंद्र।
9. पाठक, एस.पी. (2015). *प्रश्नपत्र निर्माण एवं मूल्यांकन तकनीक*. कानपुर: चेतना पब्लिकेशन।
10. त्रिपाठी, वी.के. (2020). *मूल्यांकन की आधुनिक प्रवृत्तियाँ*. बनारस: शिक्षा भारती पब्लिशिंग।
11. मिश्रा, शैलेन्द्र. (2021). *शिक्षा में परीक्षा प्रणाली और प्रश्नों के प्रकार*. भोपाल: विद्यार्थी पब्लिशिंग।
12. एनसीईआरटी. (2008). *पुस्तकों से परे: हमारा पर्यावरण*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
13. भारतीय शिक्षा अनुसंधान परिषद. (2009). *शिक्षण-अधिगम मूल्यांकन: सिद्धांत और व्यवहार*. नई दिल्ली: बी.ई.आर.सी.
14. पाण्डेय, मधु. (2017). *बाल केंद्रित शिक्षा में मूल्यांकन*. इलाहाबाद: सुधा पब्लिकेशन।
15. जोशी, नम्रता. (2016). *शिक्षण प्रक्रिया और प्रश्न निर्माण की कला*. दिल्ली: आर्य बुक्स।
16. सिंह, वीरेन्द्र. (2018). *प्रश्न पत्र विश्लेषण और सुधार के उपाय*. पटना: ज्ञानदीप प्रकाशन।
17. चतुर्वेदी, एम.के. (2013). *मूल्यांकन: सिद्धांत, विधियाँ एवं तकनीक*. नई दिल्ली: आर. लाल बुक डिपो।
18. ठाकुर, रेखा. (2015). *शिक्षा में उत्तरदायी प्रश्न निर्माण*. गाजियाबाद: यश पब्लिशिंग।
19. श्रीवास्तव, अर्चना. (2020). *शिक्षा में निष्पक्ष मूल्यांकन की रणनीतियाँ*. लखनऊ: एजुकेशन वर्ल्ड पब्लिकेशन।

इकाई 16 – परिवेशीय सजगता वाले प्रश्न

इकाई की रूपरेखा

- 16.1 प्रस्तावना
- 16.2 उद्देश्य
- 16.3 परिवेशीय सजगता वाले प्रश्न
- 16.4 गतिविधि और टास्क
- 16.5 खुले प्रश्न एवं बहुविकल्पी प्रश्न
- 16.6 रिपोर्ट
- 16.7 विद्यार्थियों से प्रश्नों व उत्तरों पर विस्तृत चर्चा
- 16.8 सारांश
- 16.9 शब्दावली
- 16.10 अधिगम प्रतिफल
- 16.11 इकाई के अंत की गतिविधियाँ
- 16.12 संदर्भ

16.1 प्रस्तावना

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल सूचनाओं का संप्रेषण नहीं, बल्कि छात्रों में सोचने, समझने, विश्लेषण करने तथा अपने परिवेश के प्रति सजगता विकसित करना भी है। परंपरागत शिक्षण प्रणाली, जहाँ ज्ञान का प्रवाह एकतरफा होता है और विद्यार्थी केवल 'मग एवं जग' की तरह निष्क्रिय श्रोता होते हैं, वहाँ बच्चों की रचनात्मकता, जिज्ञासा और वास्तविक जीवन से जुड़ाव बाधित होता है। इसी संदर्भ में "परिवेशीय सजगता वाले प्रश्न" अधिगम को अधिक अर्थपूर्ण, संवेदनशील और व्यावहारिक बनाने का प्रयास करते हैं। यह इकाई विद्यार्थियों को ऐसे प्रश्नों के निर्माण और विश्लेषण के लिए तैयार करती है जो उनके भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से संबंधित होते हैं। ऐसे प्रश्न बच्चों को उनके अनुभवों से जोड़ते हैं, उन्हें अपने परिवेश को समझने, समस्याओं की पहचान करने और रचनात्मक समाधान सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। गतिविधि आधारित, रिपोर्ट लेखन, समूह चर्चा, तथा बहुविकल्पीय प्रश्नों के विविध रूपों के माध्यम से यह इकाई शिक्षण को अधिक सजीव, सहभागी और उत्तरदायित्वपूर्ण

बनाती है। इस इकाई का उद्देश्य यह है कि भावी शिक्षक केवल पाठ्यपुस्तक आधारित मूल्यांकन तक सीमित न रहें, बल्कि विद्यार्थियों के परिवेश, अनुभव और सोच को ध्यान में रखते हुए ऐसे प्रश्नों का निर्माण करें जो उन्हें सक्रिय अधिगम की ओर ले जाएँ। इस प्रकार, यह इकाई न केवल प्रश्न निर्माण की तकनीकी समझ प्रदान करती है, बल्कि शिक्षा को अधिक मानवीय और अर्थपूर्ण बनाने की दिशा में भी मार्गदर्शन करती है।

16.2 उद्देश्य

- विद्यार्थी परिवेश से संबन्धित प्रश्नोंको जान सकेंगे।
- विद्यार्थी गतिविधि आधारित प्रश्नों समझेंगे और उनका निर्माण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी रिपोर्ट आधारित प्रश्नों के लिए विषयों का निर्धारण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी विभिन्न प्रश्नों के बीच तुलना कर सकेंगे।

16.3 परिवेशीय सजगता वाले प्रश्न

परंपरागत शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया में ज्ञान शिक्षक से छात्र-छात्रा तक पहुँचता है, जो कि 'एक-दिशा-मार्ग' यानी एकतरफा प्रणाली है। इसके अंतर्गत शिक्षा प्राप्त करके बच्चे जब शिक्षा के उच्च स्तरों पर पहुँचते हैं, तो वे अपने शिक्षकों से 'मग एवं जग' (mug and jug) प्रणाली के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं अर्थात् इस प्रणाली में विद्यार्थियों को खाली घड़ा समझते हुए उन्हें शिक्षकों के ज्ञान से भरे हुए 'विशाल पात्र' द्वारा भरने की आशा की जाती है। यह शिक्षा प्रणाली बच्चे के प्रक्रियात्मक एवं रचनात्मक सामर्थ्यों के विकास में बाधा डालती है तथा जो बच्चे इस प्रकार की प्रणाली के द्वारा शिक्षा प्राप्त करते हैं, वे भविष्य की शिक्षित नागरिकता की अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम नहीं होते। सामान्यतः एकतरफा पद्धति प्रथा बन गई है कि क्योंकि शिक्षक पाठ्यपुस्तक को पाठ्यक्रम, कक्षा की शैक्षणिक विधियों एवं मूल्यांकन पद्धति का एक मूर्तरूप समझता है। इस प्रकार बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे पाठ्यपुस्तक में दी गई सूचना को रट लें तथा अधिक से अधिक अंकों की प्राप्ति के लिए परीक्षा में उसे पुनः प्रस्तुत कर दें। निस्संदेह शिक्षकों के लिए कक्षा में किसी एक पाठ्यपुस्तक के प्रयोग से शिक्षण-आयोजन व उसका कार्यान्वयन सरल हो जाता है। इससे पाठ्यचर्या को छोटे-बड़े सूचनात्मक टुकड़ों में बाँट दिया जाता है, जिससे छात्रों द्वारा अंक प्राप्ति तथा शिक्षकों द्वारा उनका परीक्षण एवं मूल्यांकन भी बहुत सरल हो जाता है। परंतु 'शिक्षा की बाल-केन्द्रित प्रणाली' द्वारा पुस्तकीय ज्ञान की बपौती को निरुत्साहित करने के लिए गंभीर प्रयासों का होना आवश्यक

समझती है। ऐसा समझा जाता है कि ज्ञान प्राप्त करने में यही सबसे बड़ी रुकावट है। यह एक माना हुआ तथ्य है कि बच्चे अपनी सामाजिक दुनिया में विभिन्न परिवेशों में पलते-बढ़ते हैं, जिससे वे नाना प्रकार के संबोधों एवं अनुभवों को - ग्रहण करते हैं। विद्यालय में वे पहले से प्राप्त ज्ञान के भंडार को लेकर आते हैं। नए ज्ञान के सृजन तथा विकास के लिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि उनके पुराने प्रामाणिक अनुभवों को ध्यान में रखकर प्रक्रियात्मक एवं सहभागी अधिगम पर जोर दिया जाए और उनको तथा उनके शिक्षकों को साथ-साथ ज्ञान प्राप्त करने तथा निर्मित करने के अवसर मिल जाएँ। प्राथमिक स्तर पर बच्चे खेल के द्वारा अच्छी तरह से सीखते हैं। वे भिन्न-भिन्न वस्तुओं के द्वारा प्रयोग करते हुए, उपलब्ध सामग्री से नयी चीजों की खोज करते हुए अपने पिछले अनुभवों एवं अधिगम के आधार पर इन नयी चीजों को अर्थ देते और निष्कर्ष निकालते हैं। अपने परिवेश के मुद्दों एवं सरोकारों को संबोधित करने तथा समझने के लिए बच्चों को अधिगम के ऐसे चुनिंदा अवसर प्रदान करने चाहिए, जिनसे वे अपने भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण से रूबरू होते हुए रचनात्मक क्रिया-प्रतिक्रिया कर सकें। इससे वे पर्यावरण के तथ्यों का खेल-आधारित अनुभवों के द्वारा न केवल क्रियात्मक ज्ञान-अर्जन कर सकेंगे, बल्कि उनको अपनी उत्सुकता व जिज्ञासा बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। इसके लिए वे सूक्ष्म अवलोकन करना, अपने प्रश्न सृजित करना, ज्ञान के बहुमुखी संबोधनों, प्रतिवेदनों या व्याख्याओं को स्वीकारना तथा समूह में कार्य करने को संपोषित करना इत्यादि बातों को सीख सकेंगे। इस तरह वे सक्रिय रूप से विभिन्न प्रकार की अधिगम प्रक्रियाओं, जैसे-अवलोकन करना, पहचान करना, जाँच करना, स्मरण करना, वर्णन करना तथा अपने निकटतम पर्यावरण के साथ संबंध स्थापित कर संवेदनशील होना और इस संबंध को नए अर्थों एवं संबंधों की खोज में बढ़ावा देने में भाग ले सकते हैं। इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली उन्हें वास्तविक, सांसारिक तथा रोजमर्रा की समस्याओं को सुलझाने में प्रोत्साहित कर सकती है। दूसरे शब्दों में, बच्चों के लिए समर्थ परिवेश वह है, जो प्रोत्साहन एवं अनुभवों से परिपक्व हो, जिसके द्वारा बच्चे अपने आपको स्वतंत्र रूप से बोलने तथा प्रयोगों द्वारा तथ्यों का पता लगाने में समर्थ हो सके। यह समझ लें कि अधिगम एक कुंडलित प्रक्रिया है। बच्चों के लिए यह परम आवश्यक हो जाता है कि धीरे-धीरे वे स्वयं को जानकर अपने निकट के परिवेश को समझने के पश्चात् ही अधिक विस्तृत पर्यावरण को जानें। अतः प्राथमिक स्तर पर, अधिगम को प्रभावकारी बनाने के लिए बच्चे के निकटतम परिवेश के सामाजिक, प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक पहलुओं को एक साथ जोड़कर ज्ञानपूर्ण संदर्भों का सृजन

किया जाना चाहिए। चूँकि परिवेश का अधिगम मुख्यतः कक्षा की चारदीवारी के बाहर ही होता है, इसलिए हमारा परिवेश स्कूली तथा स्कूल से बाहरी दुनिया के बीच एक कड़ी का काम करता है। बच्चों को इस संबंध में ज्ञान प्राप्त करने के लिए पाठ्यपुस्तक एवं अध्यापक के अलावा अन्य स्रोतों, जैसे-घर, पड़ोस, समाचारपत्र, सूचना के साधनों तथा दूसरी पुस्तकों से प्राप्त जानकारी रखने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बच्चों की पहुँच बहुगामी स्रोतों, जैसे-साथियों, बड़ों तथा समुदाय के साथ बातचीत करने पर भी होनी चाहिए, क्योंकि वयस्कों का प्रोत्साहन बच्चों के अधिगम को बहुत प्रभावकारी बनाता है। ये सब अधिगम के सामाजिक रचनात्मक परिप्रेक्ष्य हैं, जिसमें एक उचित प्रश्न अथवा सुझाव बच्चों के अधिगम को उनकी व्यक्तिगत क्षमताओं से भी अधिक बढ़ा सकता है।

इसे समझने और बुझने के लिए परिवेशीय सजगता संबंधि प्रश्न सीखने को सरल बनाते हैं। नीचे ऐसे ही कुछ प्रश्नों के उदाहरण दिये गए हैं।

- आपने पेड़ों का महत्व पाठ पढ़ा है तो बताओं कि हरे पेड़ काटने से जीवों पर क्या प्रभाव पड़ता है? हरे पेड़ों को काटने से रोकने हेतु अपने सुझाव लिखिए।
- आप अपने विद्यालय को स्वच्छ और आकर्षक बनाने के लिए क्या-क्या कर सकते हैं? लिखिए।
- आपके पड़ोस में बाल-विवाह हो रहा है। आप उसे रोकने के लिए उन्हें किस प्रकार समझायेंगे ?
- आपके पड़ोस में बिजली की चोरी हो रही है। आप उसे रोकने के लिए उन्हें किस प्रकार समझायेंगे?

16.4 गतिविधि और टास्क

गतिविधियाँ या नियत कार्य करने के लिए दिये जाने वाले प्रश्न ऐसे होते हैं जिनके माध्यम से विस्तृत जानकारी का संग्रह किया जा सके। जैसा कि आप जानते हैं कि गतिविधि और टास्क ऐसे कार्य हैं जिनके लिय विस्तृत समय और क्षेत्रकार्य करना होता है इसलिय हमें अपने छात्र छात्राओं को ऐसे प्रश्न देने चाहिए जिनसे निर्धारित गतिविधि या टास्क का उद्देश्य पूरा किया जा सके। इस प्रकार के प्रश्नों के उदाहरण हैं –

प्रश्न : आप अपने गृह से स्कूल तक आने वाले रास्ते पर दिखाई देने वाले विज्ञापनों की एक सूची बनाएँ और उनमें प्रयुक्त भाषा का विश्लेषण करें।

प्रश्न: किसी एक पड़ोसी से या व्यक्ति से 'हिन्दी राष्ट्रभाषा' पर एक साक्षात्कार करें और उसे लिखकर लाएँ।

इसके अलावा नीचे एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पुस्तकों से परे हमारा पर्यावरण' नामक पुस्तक से एक गतिविधि/टास्क आधारित प्रश्न का नमूना दिया गया है। इसका आवलोकन करें और समझें।

3.28 बीमारियाँ पानी से



- सर्वे द्वारा अपने क्षेत्र में पानी से होने वाली बीमारियों के बारे में पता करना।
- इससे संबंधित परिवारों में अलग-अलग सदस्यों से बातचीत द्वारा इस विषय पर जानकारी इकट्ठा करना।
- ली गई जानकारी को सर्वेक्षण-शीट में रिकार्ड करना।
- जानकारी की जाँच-पड़ताल करना तथा परिणामों पर समूह में बातचीत करना।
- पानी से जुड़ी विभिन्न बीमारियों पर जानकारी इकट्ठा कर रिपोर्ट बनाना।
- डॉक्टर तथा पीड़ित व्यक्तियों से इन बीमारियों पर बातचीत करना।

क्या करें

क्या चाहिए- क्रियाकलाप चार्ट (Activity Sheet) जो सर्वेक्षण में काम आ सके।

कक्षा को चार-पाँच समूहों में बाँट दें। हर समूह को दस घरों का सर्वे करने को कहें और नीचे दी गई प्रश्नावली भरने के लिए दें।

प्रश्नावली-

1. परिवार के मुखिया का नाम
2. परिवार के सदस्यों की संख्या - बच्चे
- बड़े
- बुजुर्ग
3. व्यवसाय
4. इन बीमारियों में से क्या कोई बीमारी किसी को हुई है?

टाइफ़ायड— कितने सदस्य बीमार हुए?

दस साल से कम आयु वाले

कब? (मौसम/महीना)

कैसे पता चला?

क्या परेशानी हुई थी?

कॉलेरा (हैजा)— कितने सदस्य बीमार हुए?

दस साल से कम आयु वाले

कब? (मौसम/महीना)

कैसे पता चला?

क्या परेशानी हुई थी?

पेचिश— कितने सदस्य बीमार हुए?

दस साल से कम आयु वाले

कब? (मौसम/महीना)

कैसे पता चला?

क्या परेशानी हुई थी?

मलेरिया— कितने सदस्य बीमार हुए?

दस साल से कम आयु वाले

कब? (मौसम/महीना)

कैसे पता चला?

क्या परेशानी हुई थी?

पीलिया— कितने सदस्य बीमार हुए?

दस साल से कम आयु वाले

कब? (मौसम/महीना)

कैसे पता चला?

क्या परेशानी हुई थी?

जल के स्रोत-

घर	सदस्य	बीमारी का नाम(पिछले 6 महीनों में)	लक्षण	कितने दिन दवा खाई	क्या सावधानियाँ बरतीं	क्या खाया-पिया	पीने के पानी का स्रोत	क्या पानी को साफ़ किया जाता है? कैसे?
1.								
2.								
3.								

अब इकट्ठी की गई सूचनाओं में से नीचे दी गई तालिका को भरें।

क्रम	बीमारियाँ	कितने लोग बीमार हुए
1.	टाइफ़ायड	

अब सभी समूहों से चर्चा करें कि

- 1. सबसे अधिक लोग किस बीमारी से प्रभावित हुए?
- 2. अधिकतर प्रभावित लोगों की उम्र क्या है?
- 3. बच्चे, बड़े या बुजुर्गों में से कौन अधिक बीमार पड़ रहे हैं?
- 4. ये बीमारियाँ अधिकतर किन मौसम/महीनों हो रही हैं?

प्रोजेक्ट

अब चार समूहों को एक-एक बीमारी जैसे-टाइफ़ाइड, कॉलेरा, पेचिश और मलेरिया के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए कहें। जैसे-यह बीमारी हमें क्या नुकसान पहुँचाती है, किस कारण होती है, इस बीमारी का पता कैसे चलता है, उससे कैसे बचा जा सकता है, बीमारी होने पर आहार क्या होता है आदि। इस बीमारी से संबंधित कोई अखबार/टी.वी. की रिपोर्ट मिले तो एकत्र कर साथ में चिपकाएँ। अब अपनी तैयार की गयी रिपोर्ट को कक्षा में पढ़ें।

- ❖ क्या किसी विशेष व्यवसाय के लोग इन बीमारियों से अधिक प्रभावित हो रहे हैं?
- ❖ इन प्रभावित लोगों के घरों में खाना पकाने और पीने का पानी किन स्रोतों से आता है?
- ❖ तुम्हें क्या लगता है कि क्या पीने के पानी के स्रोत और उसकी साफ़-सफ़ाई का इन बीमारियों से कोई संबंध है?



नोट प्रोजेक्ट के लिए किसी डॉक्टर/नर्स से बात की जा सकती है। किसी ऐसे व्यक्ति का संस्मरण भी लिखा जा सकता है जिसे यह बीमारी हुई हो।

16.5 खुले प्रश्न एवं बहुविकल्पी प्रश्न

उद्देश्य आधारित और वस्तुनिष्ठ परीक्षण के बीच का अंतर कई बार करना कठिन होता है और इसीलिए एक को दूसरा समझ लिया जाता है। अतः इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि जब कोई प्रश्न किसी विशेष उद्देश्य या योग्यता को दृष्टि में रखकर बनाया जाता है जिसका विशेष रूप से आकलन करना होता है तो उसे उद्देश्य आधारित प्रश्न कहते हैं। परंतु जब कोई प्रश्न वस्तुनिष्ठ दृष्टि से, न कि व्यक्तिनिष्ठ दृष्टि से किसी छात्र की संप्राप्ति का आकलन करने के लिए तैयार किया जाता है तो उसे वस्तुनिष्ठ प्रकार का प्रश्न कहते हैं। वस्तुनिष्ठ प्रकार के परीक्षण के कई रूप हैं। दो विकल्प वाले प्रश्न, जिन्हें सत्य/असत्य या हाँ/ना प्रकार के प्रश्न कहा जाता है, काफी समय से प्रचलित वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। इसी प्रकार रिक्त स्थान की पूर्ति वाले प्रश्न भी बहु-प्रयुक्त प्रश्न हैं। 'मिलान करने वाले' प्रश्नों में दो या दो से अधिक खाने या कॉलम होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी दो खाने के मिलान वाले प्रश्न के एक खाने में किसी नियम का उल्लेख/निर्देश होता है और दूसरे खाने में उस नियम का उदाहरण। छात्र से अपेक्षा की जाती है कि वह उदाहरण/विवरण के सामने नियम की संख्या लिखे। इसी प्रकार 'मास्टर लिस्ट' प्रकार के प्रश्नों में दो भाग होते हैं। एक सूची में लगभग समान शब्दों, संकल्पनाओं आदि के विकल्पों की सूची होती है, उसे ही मास्टर सूची/लिस्ट कहते हैं। दूसरी सूची, जो सामान्यतः पहली सूची से

लंबी होती है, जिसमें मास्टर सूची से संबंधित कई कथन दिए जाते हैं, जिनमें से सही कथन को छात्र को चुनना होता है। बहुविकल्पी प्रश्नों में एक कथन या प्रश्न के आगे उत्तर के चार विकल्प दिए जाते हैं। छात्र को उनमें से सही विकल्प को चुनना होता है। सामान्यतः परीक्षाओं में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उक्त प्रकारों में से बहुविकल्पी प्रश्नों का प्रयोग अधिक किया जाता है। इसमें, किसी प्रश्न या अपूर्ण कथन को आधार के रूप में दिया जाता है और उसके आगे कई शब्द, पदबंध या कथन विकल्प के रूप में दिए जाते हैं जिनसे उत्तर बनता हो या अपूर्ण कथन पूरा होता हो। छात्र को सही शब्द/पदबंध/कथन को चुनकर उत्तर देना होता है। वांछित उद्देश्य के परीक्षण में इस प्रकार के प्रश्नों की प्रभावशीलता उनके गठन पर निर्भर होती है। निम्नलिखित संकेतों को बहुविकल्पी प्रश्नों के निर्माण के समय ध्यान में रखना चाहिए।

बहुविकल्पी परीक्षण बिन्दुओं (प्रश्नों) के लेखन के लिए कुछ सुझाव (Suggestions for Writing Multiple Choice Test Items/Questions): जैसाकि पहले बताया गया है, बहुविकल्पी प्रश्नों में एक आधार (Stem) होता है जो किसी कथन या प्रश्न के रूप में हो सकता है और जिसके बाद चार (अथवा पाँच) विकल्प या डिस्ट्रेक्टर होते हैं। उत्तर के रूप में बनने वाले वाक्य सही और पूरा भाव देने वाला हों। इस प्रकार के प्रश्नों के निर्माण के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा रहे हैं:

- विकल्पों में केवल एक ही विकल्प सही या सर्वोत्तम विकल्प होना चाहिए। जिन विकल्पों में अत्यधिक समानता हो, उनसे बचना चाहिए। इनके बारे में पूरी समीक्षा के बाद ही निर्णय करना चाहिए।
- आधार/स्टेम लगभग समग्र हो जिसमें केन्द्रीय भाव रहे और विकल्पों में ऐसा कुछ न रहे जिसे आधार में होना चाहिए।
- छात्रों को कुछ लिखने या नकल करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन्हें विकल्पों को ठीक करने या उनकी संख्या लिखने की ही आवश्यकता होनी चाहिए।
- के लिए उनसे मिलते-जुलते वाक्य विकल्प या डिस्ट्रेक्टर के रूप में दिए जा सकते हैं।
- आधार या स्टेम और उसके विकल्प संभव और साफ सुथरे होने चाहिए। 5. अच्छे प्रश्न प्राप्त करने के लिए, कभी किसी प्रश्न को उत्तर या उत्तर को प्रश्न के रूप में लिखने का प्रयास किया जा सकता है।

- सभी विकल्प काफी सीमा तक संभावित होने चाहिए जिन्हें काफी सारे छात्र भूल से चुन सकें। सभी विकल्प-सही और गलत, लगभग समान हों, उनकी भाषा, लम्बाई और अन्य भौतिक विशेषताएँ मिलती-जुलती हों। सभी डिस्ट्रेक्टर सामान्य रूप से छात्रों द्वारा की जाने वाली गलतियों जैसे हों।
- सभी विकल्पों को इस दृष्टि से देखा जाना चाहिए कि उनमें सही उत्तर पाने के कोई सूत्र तो नहीं छिपे हैं। इसके लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जा सकता है:
 - (क) सही विकल्प गलत विकल्पों की तुलना में न अधिक लंबे या छोटे हों।
 - (ख) सभी विकल्प, व्याकरणिक दृष्टि से सही होने चाहिए और आधार वाक्य (स्टेम) के साथ संगत भी हों। चाहे वे प्रश्न के रूप में हो या अपूर्ण कथन के रूप में। इसी प्रकार वचन या काल आदि को सही विकल्प के चयन का आधार न बनने दें।
 - (ग) यदि कोई तर्कसंगत क्रम संभव हो तो विकल्पों को उसके अनुसार अथवा अकारादि क्रम में संयोजित करना चाहिए।
 - (घ) सभी सही विकल्पों का स्थान एक ही नहीं होना चाहिए, उन्हें बदल-बदलकर विभिन्न स्थानों पर रखना चाहिए।
 - (ङ) आधार वाक्य (स्टेम) का कोई अंश डिस्ट्रेक्टर के बाद नहीं आना चाहिए।

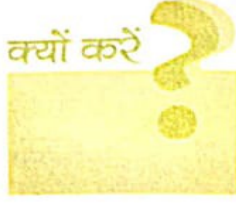
निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि यद्यपि बहु-विकल्पी प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग परीक्षाओं में सामान्य रूप से हो रहा है, परंतु हमें वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के अन्य प्रकारों का भी प्रयोग कक्षा में और चर्चा का सूत्रपात करने के लिए शिक्षण की युक्तियों के रूप में करना चाहिए। इस प्रकार की चर्चा विचारों के दृढीकरण में सहायक सिद्ध होती हैं। बहुविकल्पी प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का प्रयोग कक्षा दो तक की परीक्षाओं में किया जा सकता है। बहुविकल्पी प्रकार के प्रश्नों का उपयोग परीक्षाओं में, इसलिए अधिक हो रहा है, क्योंकि इनके परिणामों की गणना के लिए विशेषकर उनके काठिन्य और विभेदीकरण के मानकों को सांख्यिकीय आधारों पर तैयार किया जा चुका है।

16.6 रिपोर्ट

रिपोर्ट हो हिंदी में प्रतिवेदन भी कहा जाता है। रिपोर्ट लेखन के माध्यम से भी आंकलन करने में सहायता होती है। इस प्रकार के प्रश्नों में एक लेख या रिपोर्ट की आवश्यकता होती है और उसके आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। अखबारों और पत्रिकाओं में सामान्य समाचारों के अलावा गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर विशेष रिपोर्ट भी प्रकाशित

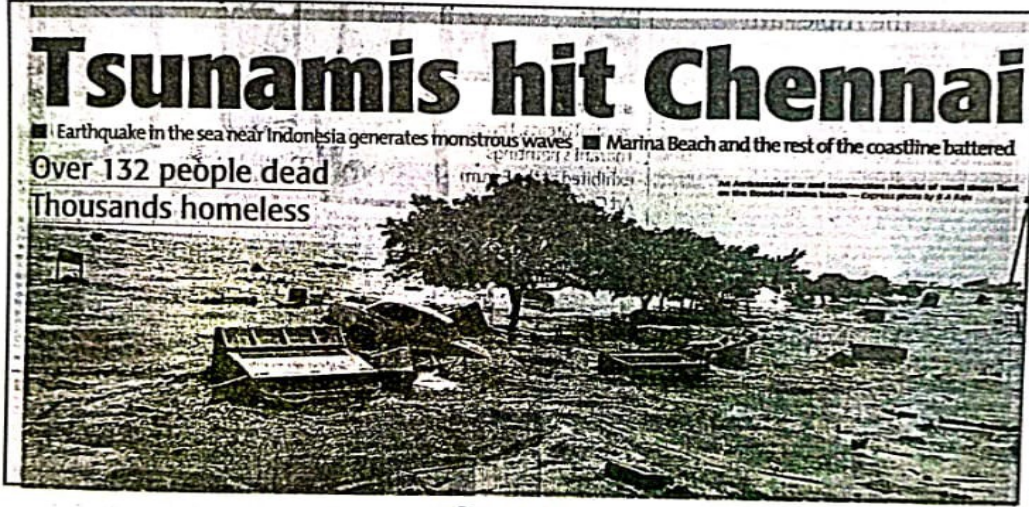
होती हैं। ऐसी रिपोर्टों को तैयार करने के लिए किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन की जाती है। उससे संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों को इकट्ठा किया जाता है। तथ्यों के विश्लेषण के जरिये उसके नतीजे, प्रभाव और कारणों को स्पष्ट किया जाता है। विशेष रिपोर्ट के भी कई प्रकार होते हैं। खोजी रिपोर्ट (इंवेस्टिगेटिव रिपोर्ट), इन-डेप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट-विशेष रिपोर्टों के कुछ प्रमुख प्रकार हैं। खोजी रिपोर्ट में रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के जरिये ऐसी सूचनाएँ या तथ्य सामने लाता है जो सार्वजनिक तौर पर पहले से उपलब्ध नहीं थीं। खोजी रिपोर्ट का इस्तेमाल आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है। इन-डेप्थ रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है और उसके आधार पर किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है। इसी तरह विश्लेषणात्मक रिपोर्ट में जोर किसी घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों के विश्लेषण और व्याख्या पर होता है जबकि विवरणात्मक रिपोर्ट में किसी घटना या समस्या के विस्तृत और बारीक विवरण को प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है। आमतौर पर विभिन्न प्रकार की विशेष रिपोर्टों को समाचार लेखन को उलटा पिरामिड-शैली में ही लिखा जाता है लेकिन कई बार ऐसी रिपोर्टों को फ्रीचर शैली में भी लिखा जाता है। चूंकि ऐसी रिपोर्ट सामान्य समाचारों की तुलना में बड़ी और विस्तृत होती हैं, इसलिए पाठकों की रुचि बनाए रखने के लिए कई बार उलटा पिरामिड और फ्रीचर दोनों ही शैलियों को मिलाकर इस्तेमाल किया जाता है। रिपोर्ट बहुत विस्तृत और बड़ी हो तो उसे शृंखलाबद्ध करके कई दिनों तक किस्तों में छापा जाता है। विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए (अभिव्यक्ति और माध्यम, एनसीईआरटी, 2007)। नीचे एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पुस्तकों से परे हमारा पर्यावरण' नामक पुस्तक से एक रिपोर्ट आधारित एक प्रश्न/गतिविधि और उसका उत्तर नीचे नमूना दिया गया है।

4.25 घर मिल गया!



- प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान के समाचार या अन्य स्रोतों से जानकारी इकट्ठा करना।
- आपदा ग्रस्त लोगों के जीवन के बारे में पता करना।
- उनके प्रति संवेदनशीलता का अनुभव करना।

क्या चाहिए— भूकंप/सूनामी की खबर



चित्र 4.31

क्या करें

इस खबर को कक्षा में ज़ोर से पढ़ें और बच्चों के पढ़ने के लिए कक्षा में चिपका दें। अब चर्चा करें—

- 🏠 यह खबर किस विषय में है?
 - 🏠 यह हादसा किस जगह पर हुआ?
 - 🏠 जो बच्चे अकेले रह गए, वो कहाँ गए होंगे?
- बच्चों ने अपनी समझ से कई उत्तर दिए। जैसे—
- 🏠 किसी रिश्तेदार के घर में
 - 🏠 किसी ने गोद ले लिया होगा
 - 🏠 किसी अनाथाश्रम में

अनाथालय में रहने वाले बच्चों का घर कौन-सा होता है? पता करो कि वे लोग वहाँ किस तरह से रहते हैं? अपनी रिपोर्ट भी प्रस्तुत करो।
एक बच्ची ने अपनी रिपोर्ट इस तरह प्रस्तुत की।

रिपोर्ट

पहले मैं SOS स्कूल में पढ़ती थी। SOS गाँव हरियाणा राज्य में फरीदाबाद के सैक्टर 28 में है। यहाँ पर सभी अनाथ बच्चे रहते हैं। लेकिन यह दूसरी जगहों से मुझे कुछ अलग लगी। मैंने बड़े चाव से देखा। यह जगह बहुत बड़ी है। जगह-जगह पर चार-चार कमरों के घर बने हैं। हर घर में माँ और उस परिवार के दस बच्चे रहते हैं। माँ सबका ध्यान रखती है। बच्चे सभी काम मिल-जुलकर करते हैं। यहाँ बहुत बड़ा स्कूल भी है। सभी बच्चे स्कूल/कॉलेज जाते हैं। इस तरह मिल-जुलकर बड़े भाई-बहन छोटे भाई-बहनों के साथ खेलते, पढ़ते, गाते-नाचते और त्योहार मनाते हैं। यह इनका अपना परिवार है। मैं जिस परिवार से मिली, उस परिवार में सबसे छोटा बेटा ऋतिक दो वर्ष का है। सबसे बड़ी बेटी है मनिका जो इंजीनियरिंग की छात्रा है। बाकी सभी स्कूल में पढ़ते हैं। मेरी दोस्ती यहाँ हमीदा से हुई। हमीदा का परिवार सूनामी में बह गया था। अब इसे फिर से एक घर, माँ, भाई और बहन मिल गए हैं। परंतु उसे अपने घर तथा परिवार वालों की याद अभी भी बहुत सताती है। उसने कहा कि वह फिर से अपनी पहले वाली खुशहाल ज़िंदगी जीना चाहती है।

उसे पत्र लिखो।

उसका फ़ोटो एक फ़ाइल में लगाकर उसका पोर्टफ़ोलियो बनाओ।

नाम

पता

कक्षा

क्या पसंद करता है?

क्या नापसंद करता है?

उसका सबसे अच्छा मित्र

तुम अपना पेड़ बनवाकर उसमें अपना और अपने किन्हीं चार अच्छे मित्रों का चित्र लगाओ। ध्यान रहे अपने उस विशेष मित्र का चित्र चिपकाना न भूलना।

विस्तार—

पता करो—

- अनाथालय/SOS गाँव में सभी प्रबंध कार्यों के लिए खर्च करने के लिए पैसा/ धन कहाँ से आता है?
- ऐसी संस्थाओं की देख-रेख कौन करता है?
- बहुत बड़े हो जाने पर ये बच्चे कहाँ रहते हैं?
- तुम्हारा यह मित्र बड़ा होकर क्या बनना चाहता है और कहाँ रहना चाहता है?

International day for
DISASTER REDUCTION
Wednesday, 14th October, 2009

Dedicated to strengthening of pre-disaster prevention, preparedness and steps for mitigation measures and prompt and efficient response, NDA has strived to train the community to face challenges of both natural and man-made disaster

Follow these Simple Procedure and Save Life & Property

Earthquakes - Do's & Don'ts <ul style="list-style-type: none">• Follow BIS codes relevant to your area for building standards• Repair deep plaster cracks in ceilings and foundations. Get expert advice if there are signs of structural defects.• Do not stay close to glass, windows, outside doors and walls, and anything that could fall, such as lighting fixtures or furniture.• Ascertain the exit plan from your building• DO NOT use the elevators during the quake• Switch off electrical gadgets and power supply• Know emergency telephone numbers (doctor, hospital, police etc)	Floods - Do's & Don'ts <ul style="list-style-type: none">• Always keep your Safety kit (medicines, identity papers, dry food, torch) ready during flood season.• Leave for safe (higher) place.• Untie domestic cattle before leaving the house.• Drink only boiled or chlorinated water• Beware of problems of cholera/ take pre-cautions Cyclones - Do's & Don'ts <ul style="list-style-type: none">• Keep monitoring the news! This will help you to prepare for a cyclone emergency• Keep some dry non-perishable food and medicines always ready for emergency use• Switch-off electrical meter/wires• Check the house, secure it that, carry out repair work for doors and window• Do not hesitate to evacuate place in a emergency• Fishermen should not go fishing in high seas after a cyclone warning	Fire - Do's & Don'ts <ul style="list-style-type: none">• Always switch off gas supply from cylinder & electrical appliances when not in use• Keep clothes, curtains & other potentially combustible items atleast 2 feet from stove/heater• Keep a fire extinguisher in your home/office & know how to use it.• Call the fire brigade the moment you detect fire• Do not overload electrical extension cords• Don't allow children to play with matches/lighters or lighters & electrical appliances like steam heater, iron and hair dryer
--	--	---

Envisioning a Safer and Disaster Resilient India
NATIONAL DISASTER MANAGEMENT AUTHORITY
Government of India
www.ndma.ni

चित्र 4.32

ऊपर दिये गए पोस्टर की विभिन्न बातों पर बच्चों से चर्चा करें। जागरूकता के लिए बच्चों की मदद से पोस्टर बनवाएँ और उन पर छोटे-छोटे संदेश लिखवाकर स्कूल में तथा आस-पास इन्हें लगवाएँ। महत्वपूर्ण बातों पर गतिविधि (Mock Drill) भी करवाएँ।

16.7 विद्यार्थियों से प्रश्नों व उत्तरों पर विस्तृत चर्चा

- परंपरागत शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया में ज्ञान शिक्षक से छात्र-छात्रातक पहुँचता है, जो कि 'एक-दिशा-मार्ग' यानी एकतरफा प्रणाली है। इसके अंतर्गत शिक्षा प्राप्त करके बच्चे जब शिक्षा के उच्च स्तरों पर पहुँचते हैं, तो वे अपने शिक्षकों से 'मग एवं जग' (mug and jug) प्रणाली के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं अर्थात् इस प्रणाली में विद्यार्थियों को खाली घड़ा समझते हुए उन्हें शिक्षकों के ज्ञान से भरे हुए 'विशाल पात्र' द्वारा भरने की आशा की जाती है।
- गतिविधियाँ या नियत कार्य करने के लिए दिये जाने वाले प्रश्न ऐसे होते हैं जिनके माध्यम से विस्तृत जानकारी का संग्रह किया जा सके। जैसा कि आप जानते हैं कि गतिविधि और टास्क ऐसे कार्य हैं जिनके लिये विस्तृत समय और क्षेत्र कार्य करना होता है इसलिये हमें अपने छात्र छात्राओं को ऐसे प्रश्न देने चाहिए जिनसे निर्धारित गतिविधि या टास्क का उद्देश्य पूरा किया जा सके।
- उद्देश्य आधारित और वस्तुनिष्ठ परीक्षण के बीच का अंतर कई बार करना कठिन होता है और इसीलिए एक को दूसरा समझ लिया जाता है। अतः इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि जब कोई प्रश्न किसी विशेष उद्देश्य या योग्यता को दृष्टि में रखकर बनाया जाता है जिसका विशेष रूप से आकलन करना होता है तो उसे उद्देश्य आधारित प्रश्न कहते हैं। परंतु जब कोई प्रश्न वस्तुनिष्ठ दृष्टि से, न कि व्यक्तिनिष्ठ दृष्टि से किसी छात्र की संप्राप्ति का आकलन करने के लिए तैयार किया जाता है तो उसे वस्तुनिष्ठ प्रकार का प्रश्न कहते हैं। वस्तुनिष्ठ प्रकार के परीक्षण के कई रूप हैं।
- रिपोर्ट हो हिंदी में प्रतिवेदन भी कहा जाता है। रिपोर्ट लेखन के माध्यम से भी आंकलन करने में सहायता होती है। इस प्रकार के प्रश्नों में एक लेख या रिपोर्ट की आवश्यकता होती है और उसके आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। अखबारों और पत्रिकाओं में सामान्य समाचारों के अलावा गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर विशेष रिपोर्ट भी प्रकाशित होती हैं। ऐसी रिपोर्टों को तैयार करने के लिए किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन की जाती है।

16.8 सारांश

इस इकाई का मुख्य फोकस ऐसे प्रश्नों पर है जो विद्यार्थियों को उनके वास्तविक जीवन, समाज और पर्यावरण से जोड़ते हैं। पारंपरिक 'मग और जग' शिक्षा प्रणाली, जहाँ शिक्षक ज्ञान का एकतरफा संप्रेषण करते हैं, छात्रों की रचनात्मकता और सक्रियता को दबा देती है। इसके

विपरीत, परिवेशीय सजगता वाले प्रश्न बच्चों के अनुभवों को केंद्र में रखकर उन्हें सोचने, प्रश्न पूछने, अवलोकन करने और समाधान खोजने की दिशा में प्रेरित करते हैं। इस इकाई में बताया गया है कि किस प्रकार खेल, प्रयोग, संवाद और स्थानीय मुद्दों को अधिगम का हिस्सा बनाकर बच्चे अधिक गहराई से और सार्थक रूप से सीखते हैं। गतिविधि आधारित प्रश्नों और रिपोर्ट लेखन के माध्यम से विद्यार्थी वास्तविक घटनाओं का विश्लेषण करना सीखते हैं। बहुविकल्पी प्रश्नों के निर्माण की विधियों पर भी इस इकाई में विशेष चर्चा की गई है, जिससे छात्र का मूल्यांकन अधिक वैज्ञानिक और उद्देश्यपरक हो सके। इकाई यह स्पष्ट करती है कि शिक्षण में केवल पाठ्यपुस्तक पर निर्भर रहने के बजाय विद्यार्थियों के परिवेश, अनुभवों और सामाजिक संदर्भों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। यह शिक्षकों को प्रेरित करती है कि वे बाल-केंद्रित, भागीदारी आधारित और सामाजिक रचनावादी दृष्टिकोण को अपनाएं। यह इकाई शिक्षकों को ऐसा सोचने और कार्य करने के लिए प्रेरित करती है जिससे शिक्षा सिर्फ सूचनाओं का आदान-प्रदान न रहकर, बच्चों के जीवन से जुड़ी, जागरूक और संवेदनशील प्रक्रिया बन सके।

16.8 अधिगम प्रतिफल

- विद्यार्थी परिवेशीय सजगता के महत्व को पहचानते हैं और शिक्षा से जोड़कर उसका विश्लेषण करते हैं।
- विद्यार्थी गतिविधि आधारित तथा रिपोर्ट लेखन से जुड़े प्रश्नों का निर्माण करते हैं और उनका शैक्षिक उपयोग समझते हैं।
- विद्यार्थी पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों और बाल-केंद्रित अधिगम प्रक्रियाओं में अंतर स्पष्ट करते हैं।
- विद्यार्थी बहुविकल्पी प्रश्नों की संरचना एवं निर्माण के सिद्धांतों को अपनाते हैं और प्रभावी प्रश्न विकसित करते हैं।
- विद्यार्थी स्थानीय परिवेश से संबंधित समस्याओं की पहचान कर उनके समाधान हेतु रचनात्मक उत्तर प्रस्तुत करते हैं।

16.10 शब्दावली

प्रश्न पत्र (Question Paper)	परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों का लिखित दस्तावेज़। इसका उद्देश्य छात्रों के ज्ञान, समझ, विश्लेषण व कौशल का मूल्यांकन करना होता है।
मूल्यांकन (Evaluation)	सीखने की प्रगति, ज्ञान और योग्यता की जांच व समीक्षा

करने की प्रक्रिया।

संज्ञानात्मक क्षमताएँ (Cognitive Abilities)	सोचने, समझने, विश्लेषण करने, सृजनात्मकता और समस्या-समाधान करने की मानसिक क्षमताएँ।
रटंत अधिगम (Rote Learning)	बिना समझे केवल याद करने की प्रक्रिया। यह गहराई से सीखने में बाधक होती है।
उद्देश्य आधारित (Objective-based)	किसी निश्चित शैक्षिक उद्देश्य या लक्ष्य को ध्यान में रखकर तैयार किया गया प्रश्न या मूल्यांकन।
परिवेशीय सजगता (Environmental Awareness)	अपने आस-पास के भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के प्रति जागरूकता और समझ।
रिपोर्ट लेखन (Report Writing)	किसी घटना, विषय या समस्या का तथ्यों पर आधारित विस्तृत विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत करने की प्रक्रिया।
गतिविधि आधारित प्रश्न (Activity-based Questions)	ऐसे प्रश्न जो छात्रों को खोज, प्रयोग, सर्वेक्षण या बातचीत जैसे कार्यों द्वारा उत्तर खोजने के लिए प्रेरित करते हैं।
बाल-केंद्रित अधिगम (Child-centered Learning)	अधिगम की वह प्रक्रिया जिसमें बच्चों की रुचियों, अनुभवों और परिवेश को ध्यान में रखकर शिक्षण किया जाता है।
मूल्य आधारित प्रश्न (Value-based Questions)	ऐसे प्रश्न जो नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व या व्यवहार संबंधी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

16.11 इकाई अंत की गतिविधियाँ

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1: 'मग और जग' प्रणाली का तात्पर्य है –

- A) बच्चों को स्वतंत्र रूप से सीखने देना
- B) शिक्षक से ज्ञान का एकतरफा प्रवाह
- C) बच्चों को ज्ञान का निर्माण करने देना
- D) शिक्षकों से बच्चों को सवाल पूछने देना

उत्तर: B

प्रश्न 2: प्राथमिक स्तर पर बच्चों के लिए सबसे प्रभावी अधिगम तरीका क्या माना गया है?

- A) व्याख्यान आधारित शिक्षण
- B) खेल आधारित अधिगम
- C) परंपरागत रटंत प्रणाली
- D) केवल पुस्तक पढ़ना

उत्तर: B

प्रश्न 3: परिवेशीय सजगता का मुख्य उद्देश्य है –

- A) बच्चों से परीक्षा में उच्च अंक लाना
- B) बच्चों को सामाजिक व पर्यावरणीय अनुभवों से जोड़ना
- C) केवल पाठ्यपुस्तक आधारित ज्ञान देना
- D) शिक्षकों का समय बचाना

उत्तर: B

प्रश्न 4: नीचे दिए गए में से कौन-सा स्रोत परिवेशीय सजगता आधारित अधिगम में सहायक है?

- A) केवल पाठ्यपुस्तक
- B) केवल शिक्षक
- C) घर, समुदाय, समाचार पत्र आदि
- D) केवल परीक्षा परिणाम

उत्तर: C

प्रश्न 5: रिपोर्ट लेखन का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

- A) निबंध लेखन का अभ्यास
- B) मौखिक परीक्षा की तैयारी
- C) गहराई से विश्लेषण कर तथ्यों को प्रस्तुत करना
- D) कविता लेखन में रुचि बढ़ाना

सही उत्तर: C

प्रश्न 6: नीचे दिए गए में से कौन सा प्रश्न गतिविधि आधारित माना जाएगा?

- A) आप बाल विवाह को कैसे रोकेंगे?

- B) हरे पेड़ काटने से क्या नुकसान होता है?
C) विज्ञापनों की सूची बनाकर प्रयुक्त भाषा का विश्लेषण करें।
D) परीक्षा में सफल होने के उपाय बताइए।

सही उत्तर: C

प्रश्न 7: बहुविकल्पीय प्रश्नों को प्रभावी बनाने के लिए कौन-सा सुझाव उपयुक्त नहीं है?

- A) सभी विकल्प समान रूप से संभावित हों
B) सही उत्तर सबसे लंबे वाक्य में हो
C) सही उत्तर स्पष्ट व संक्षिप्त हो
D) आधार वाक्य (स्टेम) पूर्ण हो

उत्तर: B

प्रश्न 8: 'खोजी रिपोर्ट' का प्रमुख उद्देश्य है –

- A) सामान्य जानकारी प्रस्तुत करना
B) पहले से ज्ञात तथ्यों को दोहराना
C) नये तथ्यों और सूचनाओं की खोज करना
D) कहानियाँ प्रस्तुत करना

उत्तर: C

प्रश्न 9: परंपरागत एकतरफा शिक्षा प्रणाली में कौन-सी समस्या है?

- A) बच्चों की रचनात्मकता का विकास होता है
B) बच्चों की जिज्ञासा बढ़ती है
C) बच्चे सक्रिय रूप से सीखते हैं
D) बच्चों की प्रक्रियात्मक क्षमता का विकास नहीं होता

उत्तर: D

प्रश्न 10: निम्नलिखित में से कौन सा कथन परिवेशीय अधिगम से जुड़ा हुआ नहीं है?

- A) बच्चे खेल-खेल में सीखते हैं
B) बच्चों को पर्यावरण से जोड़ना चाहिए
C) केवल शिक्षक ही ज्ञान का स्रोत है

D) अधिगम के लिए विविध स्रोत आवश्यक हैं

उत्तर: C

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'मग और जग' शिक्षण प्रणाली से आप क्या समझते हैं?
2. परिवेशीय सजगता वाले प्रश्नों की आवश्यकता क्यों मानी जाती है?
3. ऐसे दो उदाहरण दीजिए जिनसे यह स्पष्ट हो कि बच्चे अपने पूर्व अनुभवों से सीखते हैं।
4. खेल आधारित अधिगम किस प्रकार बच्चों की जिज्ञासा और सक्रियता को बढ़ाता है?
5. आपके विचार में एक अच्छा बहुविकल्पी प्रश्न निर्माण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? कोई तीन बिंदु लिखिए।
6. आपके विद्यालय या समुदाय में किसी सामाजिक समस्या (जैसे- बाल-विवाह, जल-संकट आदि) पर रिपोर्ट कैसे तैयार की जा सकती है? संक्षेप में बताइए।
7. कक्षा शिक्षण में विविध स्रोतों (जैसे- समाचारपत्र, पड़ोस, टीवी) के प्रयोग से छात्रों को क्या लाभ हो सकते हैं?
8. गतिविधि आधारित प्रश्न और सामान्य प्रश्न में क्या अंतर होता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
9. परंपरागत शिक्षण प्रणाली परिवेशीय अधिगम में किस प्रकार बाधा उत्पन्न करती है?
10. आप एक ऐसे प्रश्न का उदाहरण दीजिए जो रिपोर्ट लेखन से जुड़ा हो और विद्यार्थियों में पर्यावरणीय सजगता लाने में सहायक हो।

16.12 संदर्भ

1. एनसीईआरटी. (2006). मूल्यांकन की समझ. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
2. एनसीईआरटी. (2020). शिक्षा का मूल्यांकन और मूल्यांकन की विधियाँ. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
3. कुमार, कृष्ण. (2012). शिक्षा का समाजशास्त्र. दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।
4. मिश्रा, बी.एन. (2015). शिक्षण विधियाँ और मूल्यांकन. आगरा: विनय प्रकाशन।
5. वर्मा, ओ.पी. (2016). शिक्षा में मूल्यांकन. मेरठ: विनोद पुस्तक मन्दिर।

6. चौधरी, एस.एन. (2018). शिक्षा में प्रश्न निर्माण की प्रक्रिया. लखनऊ: भारतीय शिक्षण संस्थान।
7. तिवारी, रेखा. (2019). शिक्षाशास्त्र एवं मूल्यांकन. जयपुर: किताब महल।
8. शर्मा, रामनाथ. (2014). आधुनिक शिक्षण विधियाँ. दिल्ली: प्रकाशन केंद्र।
9. पाठक, एस.पी. (2015). प्रश्नपत्र निर्माण एवं मूल्यांकन तकनीक. कानपुर: चेतना पब्लिकेशन।
10. त्रिपाठी, वी.के. (2020). मूल्यांकन की आधुनिक प्रवृत्तियाँ. बनारस: शिक्षा भारती पब्लिशिंग।
11. मिश्रा, शैलेन्द्र. (2021). शिक्षा में परीक्षा प्रणाली और प्रश्नों के प्रकार. भोपाल: विद्यार्थी पब्लिशिंग।
12. एनसीईआरटी. (2008). पुस्तकों से परे: हमारा पर्यावरण. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
13. भारतीय शिक्षा अनुसंधान परिषद. (2009). शिक्षण-अधिगम मूल्यांकन: सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: बी.ई.आर.सी.
14. पाण्डेय, मधु. (2017). बाल केंद्रित शिक्षा में मूल्यांकन. इलाहाबाद: सुधा पब्लिकेशन।
15. जोशी, नम्रता. (2016). शिक्षण प्रक्रिया और प्रश्न निर्माण की कला. दिल्ली: आर्य बुक्स।
16. सिंह, वीरेन्द्र. (2018). प्रश्न पत्र विश्लेषण और सुधार के उपाय. पटना: ज्ञानदीप प्रकाशन।
17. चतुर्वेदी, एम.के. (2013). मूल्यांकन: सिद्धांत, विधियाँ एवं तकनीक. नई दिल्ली: आर. लाल बुक डिपो।
18. ठाकुर, रेखा. (2015). शिक्षा में उत्तरदायी प्रश्न निर्माण. गाजियाबाद: यश पब्लिशिंग।
19. श्रीवास्तव, अर्चना. (2020). शिक्षा में निष्पक्ष मूल्यांकन की रणनीतियाँ. लखनऊ: एजुकेशन वर्ल्ड पब्लिकेशन।
20. भारद्वाज, सी.पी. (2022). शिक्षा मूल्यांकन एवं प्रगति परीक्षण. भोपाल: यूनिवर्सल पब्लिशिंग हाउस।

مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی

اسکول برائے تعلیم و تربیت

بی۔ ایڈ (ریگولر) - B.Ed (Regular)

Semester –II Examinations- سمسٹر II امتحانات

اپریل 2025 - April

Paper: Pedagogy of Hindi– B9ED212DST



وقت: 3 گھنٹے

Maximum Marks: 70 جملہ نشانات:

Note : This question paper consists of (3) parts : Part – A, Part-B and Part-C. Number of words to answers each question is only indicative. Attempt all parts.

Part-A contains (10) compulsory questions of multiple choice/fill in the blank/very short answer type question. Answer all questions. Each question carries (1) mark. (10x1=10-marks).

Part-B contains (8) questions of which students are supposed to answer (5) questions. Answer each question in approximately 200 words. Each question carries 06 marks. (5x6=30 marks).

Part-C contains (5) questions of which students are supposed to answer (3) questions. Answer each question in approximately 500 words. Each question carries (10) marks. (3x10=30 marks).

PART -A

I. "मानव अपने जन्म से ही इस योग्य होता है कि यह कोई ना कोई भाषा सीख सके।" यह कथन किस मनोवैज्ञानिक का है ?

अ. चाम्सकी ब. वायागोत्सकी स. स्किनर द. पियाजे

II. जब बच्चा अपनी ज़रूरत को पूरा करने के लिए अपने आस-पास के लोगों के साथ सम्प्रेषण करता है इसे किस तरह का वाक् कहा जाता है ?

अ. निज वाक् ब. समाजिक वाक् स. मूक वाक् द. इनमें से कोई नहीं।

III. 'बोली' शब्द अंग्रेजी केका प्रति शब्द है।

अ. स्पीक ब. डायलोग्स स. स्पीच द. डायलेक्ट

IV. व्याकरण शिक्षण में किस प्रणाली का सर्वोच्च उपयोग किया जाता है ?

अ. निगमन ब. व्यास स. आगमन द. प्रवचन

V. संगोष्ठी किस तरह की परिस्थिति का निर्माण करता है ?

अ. विचार-चिंतन की ब. वाद-विवाद की स. मौन वाचन की द. उपरोक्त सभी।

VI. निम्न में से श्रेष्ठ-साधन कौनसा है?

अ. चलचित्र ब. मॉडल स. रेडिओ द. टेलीविज़न

VII. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए किस तरह के मूल्यांकन की आवश्यकता है?

अ. शैक्षिक ब. सहशैक्षिक स. दोनों द. इनमें से कोई नहीं।

VIII. निम्न में से कौन-सा शब्द सही है ?

अ. विस्वास ब. विश्वास स. विश्वास द. बिस्वास

IX. पाठशाला में परीक्षा किस प्रकार की होती है ?

अ. लिखित ब. मौखिक स. प्रायोगिक द. उपरोक्त सभी।

X. ब्लूप्रिंट का प्रयोग कहाँ किया जाता है?

अ. प्रश्नों के निर्माण में ब. पाठ्यक्रम के निर्माण में स. पाठ्यपुस्तक के निर्माण में द. पाठ्यचर्या के निर्माण में।

PART -B

2. जब विद्यार्थी भाषा सीखने में कठिनाई का सामना करे, एक भाषा शिक्षक होने के नाते आप उन्हें क्या सलाह देंगे ?

3. भाषा अर्जन और भाषा अधिगम में क्या अंतर है उदाहरण देकर संक्षिप्त में लिखें।

4. रटंत प्रणाली के निषेध को ध्यान में रखते हुए कक्षा में किन गतिविधियों का निर्माण करेंगे जो सीखने में आसान हो सके ?

5. कक्षा पुस्तकालय विद्यार्थियों के भाषा कौशल के विकास में कैसे सहायक हो सकते हैं ?

6. पोर्टफोलियो आधारित मूल्यांकन पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखें।

7. हिंदी भाषा विषय में प्रश्न-पत्र की रचना करते समय सृजनात्मक चिंतन वाले प्रश्न को महत्व दिया जाता है। क्यों?

8. किशोरी दास वाजपेयी के भाषा संबंधी दृष्टिकोण पर टिप्पणी लिखें।

9. सतत और समग्र मूल्यांकन बालकों के भाषा विकास के लिए कैसे सहायक हो सकता है?

PART-C

10. भाषा सीखने एवं सिखाने के बहुभाषिक दृष्टिकोण में चोमस्की और वायगोत्सकी की क्या भूमिका है ? इस पर एक निबंध लिखिए।

11. पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप आप कौन-कौन से कारक ध्यान में रखेंगे? साथ

Notes